Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारिका कहानियों और कथा-जगत की संपूर्ण पत्रिका वर्ष : 28, अंक : 435, जुलाई, 1988

प्रकाशक :
रमेश चंद्र

संपादक :
अवधनारायण मुद्गल
उपसंपादक :
सुरेश उनियाल
महेश दर्पण
वीरेंद्र जैन
विभागीय सहयोगी :
बिमला रानी
ज्ञान सिंह
प्रोडक्शन :
हरेंद्र सिंह नेगी
सुनील चौहान
सज्जा प्रबंधक :
लोकेश भार्गव

आवरण पारदर्शी : आनंद शुक्ल
आवरण सज्जा : कला विभाग
अंक सज्जा : हरिप्रकाश त्यागी

विश्व साहित्य में विषकन्याएं – 2

कथा रचनाएं

16 अलिप्त नायिका : **अमरीकी कहानी**
26 केकसी : **जगदीशचंद्र पांडेय**
30 सैली वाटसन : **इरविंग वैलेस**
36 हनीफा : **जेड.ए. बुखारी**
46 अंतःपुर की कुंआरी : **श्याम शर्मा**
48 कलावती और कंकलि : **क्षेमेंद्र**
51 त्रिया-तंत्र : **पंचतंत्र कथा**
16 संकेत कन्या : **सुभद्रा सिंह**
59 तभी तो... : **गोपाल शेखरन**
64 जयपुर की नूरजहां : **बाला दुबे**

विशिष्ट आलेख

11 पौराणिक विषकन्याएं : **डा. भगवतीशरण मिश्र**
13 रूप के अमृत में घुला जहर : **डा. कृष्णदत्त पालीवाल**
25 आधुनिक विषकन्याएं : **देवप्रिया**
40 भारत की पहली महिला जासूस : **अनिता जैन**
44 औरत जानवर है, उनका स्थान पिंजरे में है!
67 विषकन्याओं के बैर-बाण : **हरिप्रकाश त्यागी**
75 एक कवि की प्रार्थना... : **ब्रजेश्वर मदान**

अन्य रचनाएं

52 अदावत : **अजय श्रीवास्तव**
62 खबर : **ज्योति जैन**

स्थायी स्तंभ

79 सारिका कथा पहेली
8 आपकी बात
10 अपनी बात
42 अनजानी प्रेम कथाएं
57 धारा के विरुद्ध
58 नयी पत्रिकाएं
66 नयी पौद
73 हलचल
77 कृतियां

कापीराइट © 1988. बैनेट, कोलमैन एंड कंपनी लि., विश्वभर में सर्वाधिकार सुरक्षित, बिना पूर्वानुमति के सामग्री का किसी भी रूप में पुनर्प्रस्तुतीकरण वर्जित.

संपादकीय कार्यालय :
10 दरियागंज,
नयी दिल्ली-110002
दूरभाष : 271911
विज्ञापन व प्रसार
7, बहादुरशाह जफर मार्ग
नयी दिल्ली-110002
दूरभाष : 3312277

अन्य कार्यालय
डा. दादाभाई नौरोजी मार्ग
बंबई-400001
फ्रेजर रोड, पटना
अनुपम चैंबर्स, टांक रोड
जयपुर

139 आश्रम रोड
अहमदाबाद-1
13-1-2 गवर्नमेंट प्लेस ईस्ट
कलकत्ता-700062
''गंगा गृह'' तीसरी मंजिल
6-डी, नंगामबक्कम हाई रोड
मद्रास-600034

88, महात्मा गांधी रोड,
बंगलूर
407-1, तीरथभवन, क्वार्टर गेट,
पुणे-411 002
326, स्टेशन एप्रोच, सडबरी
वैंबलें मिडिलसेक्स, लंदन यू.के.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बात

नामवरजी को आयु की सीमा में नहीं बांधा जा सकता

आलोचना को सांस्कृतिक सत्ता के धरातल पर वैचारिक प्रभुत्व के लिए चलने वाले संघर्ष का माध्यम मानने वाले मूर्धन्य आलोचक डा. नामवर सिंह ने पिछले दिनों अपने जीवन के साठ वर्ष पूरे किये. साहित्यिक जीवन की शुरुआत कविता से करने वाले नामवरजी कविता की आलोचना में अधिक रमे रहे हैं. यह दीगर बात है कि कविता तक सीमित हिंदी आलोचना के दायरे को बढ़ाने की गर्ज से एक समय वे कहानी की आलोचना के क्षेत्र में भी आये थे. यह ऐसा समय था जब नयी कहानी को कहानी कला की अपनी विशेषता के साथ ही संपूर्ण साहित्य के मूल्यों के संदर्भ में देखने की आवश्यकता और कहानी-समीक्षा की एक व्यापक और निश्चित 'भाषा' के निर्माण की दिशा में वे बराबर विचार कर रहे थे.

''निःसंदेह कहानी बेहद नाजुक कला है, अश्क के दोस्त राजेंद्र सिंह बेदी की 'लाजवंती' की तरह और लाजवंती की यह बूटी अत्यंत संवेदनशील हाथों की अपेक्षा रखती है. ज्यादा कलाबाजी से भी कुम्हला सकती है और रूखे हाथों के स्पर्श से भी. देखना है कि नये कहानीकार इसे कितनी सतर्कता और सजीवता से बढ़ाते हैं.'' सन् १९५९ में 'कहानी' में प्रकाशित नामवरजी के लेख 'नयी कहानी : नये प्रश्न' का यह अंतिम अंश 'कहानी' विधा के प्रति उनकी मूलभूत चिंताओं का खुलासा करता है. कहानी जैसी लोकप्रिय साहित्यिक विधा में भावुकता के खतरे को कविता से भी अधिक देखने वाले नामवरजी पूरी सतर्कता से 'भावुक' एवं 'भावप्रवण' कहानियों में भेद करते चल रहे थे...पर जिन कथाकारों पर यकीन करके वे कहानी आलोचना के क्षेत्र में आये थे उनकी दिलचस्पी आत्मप्रचार में ज्यादा दिखाई देने लगी. गैर साहित्यिक उद्देश्यों वाले ये लोग किसी सार्थक संवाद के लिए भी तैयार नहीं दिखाई दे रहे थे. लिहाजा सन् १९६५ में 'माया' में प्रकाशित अपने अंतिम लेख में व्यावसायिकता के खतरे को रेखांकित कर वे मौन साध गये...या कहें कि कविता की आलोचना में लौट गये. व्यावसायिकता के बढ़ते दबाव से नये सृजन की संभावनाओं को वे न केवल खत्म होता देख रहे थे वरन् कहीं शिवदान सिंह चौहान के 'आलोचना-३१' के उस संपादकीय के प्रति सहमत भी थे जिसमें कहा गया था...'' राकेश, कमलेश्वर या राजेंद्र यादव ने जो 'अच्छी' कहानियां लिखी हैं, वे 'नयी' से अधिक फार्मूलाबद्ध कहानियां ही हैं, जो नये मसनूई परिभाषा सूत्रों के अनुसार लिखी गयी हैं.''

हाल के कुछ वर्षों में साक्षात्कारों के माध्यम से (जिसकी शुरुआत १९८४ के नव वर्षांक 'सारिका' से ही हुई थी) भी नामवर सिंह के आलोचक की वही चिंताएं मुखरित हुई हैं. उपरोक्त व्यावसायिकता उन्हें अधिक खतरनाक इसलिए भी लगी कि वह प्रगतिशीलता का मुखौटा लेकर सामने आयी थी. व्यावसायिकता की यह चोट महज कहानी पर ही नहीं, वे आलोचना पर भी करते हैं...और वह है विश्वविद्यालयों में कहानी संबंधी शोध प्रबंधों की बाढ़.

बहरहाल, हमारी चिंता का विषय यह है कि एक व्यापक समीक्षा पद्धति के निर्माण की दिशा में नामवरजी ने जिस गंभीरता के साथ शुरुआत की थी वह बावजूद बेहतर कहानी लेखन के अब तक वहीं की वहीं कदमताल क्यों कर रही है? इस दिशा में सार्थक कदम उठाने के संकल्प के साथ-साथ सारिका-परिवार की ओर से नामवरजी के शतायु होने की शुभकामनाएं. हालांकि 'सारिका' इस विश्वास और आस्था के साथ चलती है कि नामवरजी को आयु की किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता. उन्हें अगर बांधा जा सका तो ज्ञान की सीमाओं में ही संभवतः बांधा जा सके.

'सारिका' अपने अगस्त और सितंबर अंकों में नामवरजी पर विशेष लेख और परिचर्चा प्रकाशित करेगी.

अ. भा. शुक्ल.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौराणिक विषकन्याएं

भगवतीशरण मिश्र

पौराणिक विषकन्याओं को उन आधुनिक बालाओं की श्रेणी से कहीं बहुत ऊपर रखा जा सकता है जो अपने सौंदर्य-जनित विष से अधिक कृत्रिम विष का सहारा ले अपने आखेट को विवश और कभी-कभी बेजान भी कर देती हैं. हां सौंदर्य भी आवश्यकता से अधिक मादक हो तो वह विष की तरह ही मारक बन बैठता है और उसका मारा पानी भी नहीं मांगता. पौराणिक विषकन्याओं ने, दूसरे शब्दों में कहें तो अप्सराओं ने, मर्त्यलोक के अनेक राजर्षियों, ब्रह्मर्षियों और यहां तक कि मनुष्यों और दैत्यों को भी अपनी अनुपम रूप-शिखा की ज्वाला में दग्ध कर उनका सर्वनाश किया है, उन्हें लक्ष्य-च्युत और पथ भ्रष्ट किया है, प्राणों की बाजी लगा देने को भी बाध्य किया है. ऐसी स्वर्ग-सुंदरियों में जो सर्वाधिक चर्चा का विषय रही हैं, वे हैं, उर्वशी, मेनका, तिलोत्तमा आदि.

उर्वशी में इन सबों में सर्वाधिक भूमिका निभायी है और उसके शिकार न केवल संख्या में अधिक हुए हैं अपितु काल-विस्तार की दृष्टि से भी यह प्रथम स्थान की अधिकारिणी बनती हैं.

उर्वशी का उल्लेख वेदों से ही मिलना आरंभ होता है. वेदों में भी सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद में ही इस रूपसी का पर्याप्त उल्लेख आता है. जिस पुरुरवा को नायक बनाकर प्रसिद्ध संस्कृत कवि कालीदास ने अपने प्रसिद्ध नाटक 'विक्रमोर्वशीयम्' की रचना की और वर्तमान काल में स्वर्गीय रामधारी सिह 'दिनकर' ने अपने ख्यात काव्य-ग्रंथ 'उर्वशी' को हमारे समक्ष रखा उसी पुरुरवा और उर्वशी की प्रणयगथा ऋग्वेद में भी बीज-रूप में उपलब्ध है. वर्षों तक नृप पुरुरवा को अपने सौंदर्याग्नि में जलाकर अंततः यह छलना उस पराक्रमी को आजीवन विरह-ज्वाला में दग्ध होने को छोड़ बड़ी निर्ममता से अपने मूल स्थान स्वर्ग को लौट जाती है. यहां इसकी स्वार्थपरता और निममर्ता देखने ही योग्य है. 'विक्रमोर्वशीयम्' की कथा के अनुसार प्रतापी पुरुरवा ने इस अप्सरा की उस समय रक्षा की थी जब कुबेर के महल से लौटते समय वह राक्षसों द्वारा अपहृत कर ली गयी थी. इस उपकार का बदला इस स्वार्थपरायिणी अप्सरा ने पुरुरवा को अपने सौंदर्य-विष में तिल-तिल कर जलने के लिए छोड़ कर दिया. यह सही है कि अपने इस मर्त्य प्रेमी के साथ बहुत काल तक रही किंतु यह मात्र उस शाप की अवधि को काटने भर के लिए था जिससेवह अवधि को काटने भर के लिए था जिससे वह ग्रस्त हो गई थी. शापावधि की समाप्ति के साथ ही वह अपने प्रेमी को बिलखते छोड़ फुर्र हो गयी थी. बहुत-अनुनय-विनय के पश्चात् वह विरह-विदग्ध राजा के पास लौटी भी तो केवल अल्प अवधि के लिए और 'आयुष' नामक एक पुत्र का भार राजा पर लाद उसने जो इंद्रलोक की ओर मुख किया तो फिर इस मिट्टी की ओर पलट कर देखा भी नहीं.

पुरुरवा उर्वशी का प्रथम शिकार नहीं था. मृत्युलोक के इस प्राणी को अपने सौंदर्य से अभिभूत और परास्त करने के पूर्व इसने देवों पर भी अपने अस्त्र को आजमाया था और इसकी रूप-शिखा के जो प्रथम पतंग बने थे वे थे 'मित्र' और 'वरुण'. इसकी सुंदरता का आलम यह था कि इस पर दृष्टि पड़ते ही इन द्वि-देवों का तेज स्खलित हो गया. इसी तेज के क्रमशः ऋषि अगस्त्य और ब्रहम्मर्षि वशिष्ठ का जन्म हुआ. पर 'मित्र' और 'वरुण' मानने वाले कब थे? अपने को पतित करने वाली इस रूप-गर्विता को उन्होंने स्वर्गिक सुख से वंचित कर, दीर्घकाल के लिए मृत्युलोक का जीवन जीने का अभिशाप दे दिया और अपने इसी अभिशप्त जीवन को इसने पुरुरवा के साथ जिया.

उर्वशी के जन्म की कहानी भी कम मनोरंजक नहीं थी. एक बार 'नारायण' ऋषि घोर तपस्या में रत हुए. सदा से शंकालु और भयग्रस्त देवाधिदेव इंद्र को लगा कि अपने तप-बल के आधार पर 'नारायण' उनके सिहासन को ही हड़पना चाहते हैं. इंद्र ने अपना सदा का आजमाया हथकंडा अपनाया और कई अप्सराओं को ऋषि नारायण के तप को भंग करने-हेतु भेजा. पर इस तपोपूत ऋषि पर इस 'इन्द्रजाल' का क्या प्रभाव पड़ता? विभिन्न अदाओं में भटकती इन अप्सराओं को मुंह चिढ़ाने के लिए उन्होंने अपने उरु (जंघे) को ठोंका और उससे पैदा हो आयी एक ऐसी रूपमती जिसके रूप के सामने वहां उपस्थित सभी अप्सराओं का रूप पानी भरे. सब अपना-सा मुंह लिए लौट गयीं पर इंद्र को एक लाभ अवश्य हुआ. रूप के उनके तरकश में उर्वशी के रूप में एक ऐसा तीर आ गया था जो हर निशाने पर अचूक बैठने वाला था. 'नारायण' के उरु से उत्पन्न उर्वशी तो उनकी पुत्री ही हुई, उनका वह क्या बिगाड़ती पर बहुतों को धर्म-च्युत करने में उसने अपने संरक्षक देवराज इंद्र की अच्छी सहायता की.

एक बार इस रूपवती का मन आ गया पृथा-पुत्र अर्जुन पर. महाभारत युद्ध के पूर्व दिव्यास्त्रों से समृद्ध होने के लिए पार्थ पहुंचे हिमवान पर और तपस्या पूर्ण होने पर पिता इंद्र के राज्य का भ्रमण करने पहुंच गए इंद्रलोक. सुगठित देहयष्टि और तपस्या से दीप्त हो आये आनन वाले अर्जुन को देख कर वह उन पर बुरी तरह आसक्त हो आयी. सदाचारी पांडु-पुत्र ने उसके प्रणय-निवेदन को निष्ठुरता से ठुकरा दिया तो उसने उन्हें आजीवन नपुंसकत्व का ही श्राप दे दिया. विष-कन्या के विष के इस भीष्ण प्रभाव से चिंतित पांडुनंदन ने अपने पिता इंद्र को सारी बातें बता दीं. देवराज के बीच-बचाव से बात बहुत कुछ बनी पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरी तरह नहीं. पूरे वर्ष भर का नपुंसकत्व लेकर ही अर्जुन को वापस लौटना पड़ा. इधर द्रुपद-नंदिनी द्रौपदी को इस विष-प्रभाव का ज्ञान हुआ तो उसने सिर पीट लिया. खैर, बात वर्ष भर की ही थी अतः बहुत खलनें वाली सिद्ध नहीं हुई.

उर्वशी के पश्चात् अप्सराओं से सबसे अधिक विषैली थी मेनका. ऊपर से जितनी सुंदर, भीतर से उतनी ही कुरूप. इस विष-कन्या के अंदर भरे जहर का अंदाज इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि अपनी औरस संतान को भी निस्सहाय छोड़ वह स्वर्ग को भाग खड़ी हुई. यह संतान शकुंतला जिसे शायद अपनी मां के पाप के फलस्वरूप ही अपने ही पति दुष्यंत के दरबार में अपमानित होना पड़ा और चिरकाल तक अरण्य में परित्यक्ता का जीवन जीना पड़ा.

मेनका का यह शिकार-कोई साधारण योगी, यति अथवा तापस नहीं था. ये थे वशिष्ठ को भी मात देने वाले ऋषि राजर्षि और फिर ब्रहम्मर्षि पद तक को प्राप्त करनेवाले और अपने तपोबल से एक अलग सृष्टि की ही रचना कर देने वाले तपोमूर्ति साक्षात विश्वामित्र. हां, वही विश्वामित्र जिन्होंने दशरथ से राम, लक्ष्मण की याचना की थी और जानकी-स्वयंवर तक जिन्हें पहुंचाकर भारतीय इतिहास और भूगोल दोनों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन का सुधार बने थे.

विश्वामित्र जब घोर तप में लीन थे तो सदा की तरह सुरेंद्र का मन आशंकित हो गया—कहीं इस ढोंगी तपस्वी का ध्यान इंद्रलोक के वैभव पर ही नहीं हो और तब भेज दिया उन्होंने मेनका को. समय भी अच्छा चुना—मधुमास का, जब चर-अचर सभी मार (कामदेव) की दुस्सह मार से व्यग्र रहते हैं

मेनका ने नुपुरों की ध्वनि की, कोकिल कंठ से किसी प्रणय-गीत का गान आरंभ किया और वर्षों से मुंदी विश्वामित्र की आंखें उन्मिलित हो आयीं. ऋषि ने आंखों को कई बार मूंदा और खोला, मल-मलकर दृष्टि साफ की पर बात वहीं की वही—सामने खड़ी थी रूप की एक साक्षात् प्रतिभा. उन्होंने तप से क्षीण हो आये बाहुओं पर चिकोटी भी काटी—नहीं यह स्वप्न नहीं, सत्य था. वे जाग्रतावस्था में ही देख रहे थे रूप के एक ऐसे विग्रह को जिसके पासंग के बराबर भी रूप का निर्माण वे अपनी स्वनिर्मित सृष्टि में भी नहीं कर सकते थे. परिणाम वही हुआ जो होना था—तपस्वी का तप भंग हुआ. वर्षों की साधना धरी रह गयी. और होश आया तो वह एक अवैध कन्या के पिता बन चुके थे और उनको मोहजाल में फंसाने वाली छलना मेनका गायब हो चुकी थी. अब लाख सिर पीटें तो पीटें, रूप का विष सिर चढ़ कर बोल चुका था. शकुंतला पैदा हो चुकी थी.

रंभा, चित्रलेखा आदि कई अन्य अप्सराएं इंद्र का मनोरंजन करने के साथ-साथ कई छोटे-मोटे तपस्वियों-साधना से विचलित करती रहीं पर कमाल किया तिलोत्तमा ने. जैसे उर्वशी मूलतः इंद्र-दरबार की नहीं थी, उसी तरह तिलोत्तमा का उस समय तक कुछ अता-पता नहीं था जब तक एक भयानक देवासुर-संग्राम में सुंद और उपसुंद नामक दो राक्षस बंधुओं ने देवताओं की ऐसी की तैसी नहीं कर दी.

ब्रहमा से वरदान प्राप्त सुंद और उपसंद किसी भी देवता के मारे नहीं मर सकते थे. उन दोनों दैत्यों ने जब देवेंद्र की गद्दी तक हथिया ली तो सभी देवता दौड़े-दौड़े प्रजापति के पास पहुंचे, "महाराज! आपने तो हमें कहीं का नहीं छोड़ा."

"क्यों?" ब्रहमा ने अनजान बनते हुए पूछा.

"राक्षसों ने नायकों सुंद और उपसुंद को आपने अमर बना कर हम अमरों की मिट्टी ही पलीद कर ली. आखिर हम भी तो आप ही की संतान हैं?"

"राक्षस अमर कैसे हो सकते हैं? अमर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो केवल देवलोक-वासी हैं.'' ब्रह्मा ने आश्चर्य से कहा.

''जब वे किसी के भी मारे नहीं मर सकते हैं तो अमर तो हुए ही.'' देवेंद ने निवेदित किया, ''और यह हुआ है आप ही के वरदान के कारण.''

प्रजापति असमंजस में पड़े फिर कुछ सोच कर बोले, ''वरदान की बात आपलोगों को ठीक से ज्ञात नहीं. आखिर दैत्य आपको सही बात बताते भी कैसे?''

''तो सही वरदान क्या है?'' देवताओं की जान में जान आयी.

''सही वरदान यह है कि वे किसी अन्य के मारे तो नहीं मर सकते पर एक-दूसरे के मारे अवश्य मर सकते हैं.''

''अर्थात् अगर वे आपस में मरने-मारने पर उतर आयें तो अवश्य मर बैठेंगे?'' इंद्र ने पूछा.

''हां!'' प्रजापति ने सम्पुष्टि की.

''पर यह संभव कैसे है?'' देवेन्द्र ने शंका व्यक्त की, ''वे तो दूध-पानी की तरह मिले हुए हैं. एक दूसरे पर जान छिड़कते हैं. वे क्यों लड़ मरने लगे? अब हमारे दुर्दिन आ गए. देवता यों ही भटकते रहेंगे. उन्हें वरदान देने के पहले आपने कुछ तो सोचा होता.''

देवेंद्र की उलाहना पर प्रजापति चिंतित हुए और बोले, ''चिंता की कोई बात नहीं.''

''कैसे?''

''दैत्यों की तपस्या का फल समाप्त हुआ. उनके दुराचार का परिणाम अब सामने आयेगा. मुझे उपाय सूझ गया है.''

''कौन-सा उपाय?'' देवेंद्र हर्ष से भर कर बोले.

''विश्वाकर्मा को बुलाओ.'' ब्रह्मा ने आज्ञा दी.

''संसार की सारी सुंदरतम वस्तुओं से तिल-तिल भर सौंदर्य निकाल कर एक स्त्री-मूर्ति गढ़ो.'' विश्वकर्मा के आने पर प्रजापति ने सुझाया.

विश्वकर्मा ने ऐसा ही किया और ब्रह्मांड की सर्वश्रेष्ठ सुंदर मूर्ति बन कर खड़ी हो गयी. **ब्रह्मा ने उसमें प्राण फूंके और इस जीती-जागती सुंदरतम नारी का नाम पड़ा तिलोत्तमा.**

तिलोत्तमा का सौंदर्य इतना मारक सिद्ध हुआ कि दो शरीर पर एक प्राण सुंद और उपसुंद उसके लिए एक दूसरे पर टूट पड़े और इस संघर्ष में अपने प्राणों से हाथ धो बैठे. □

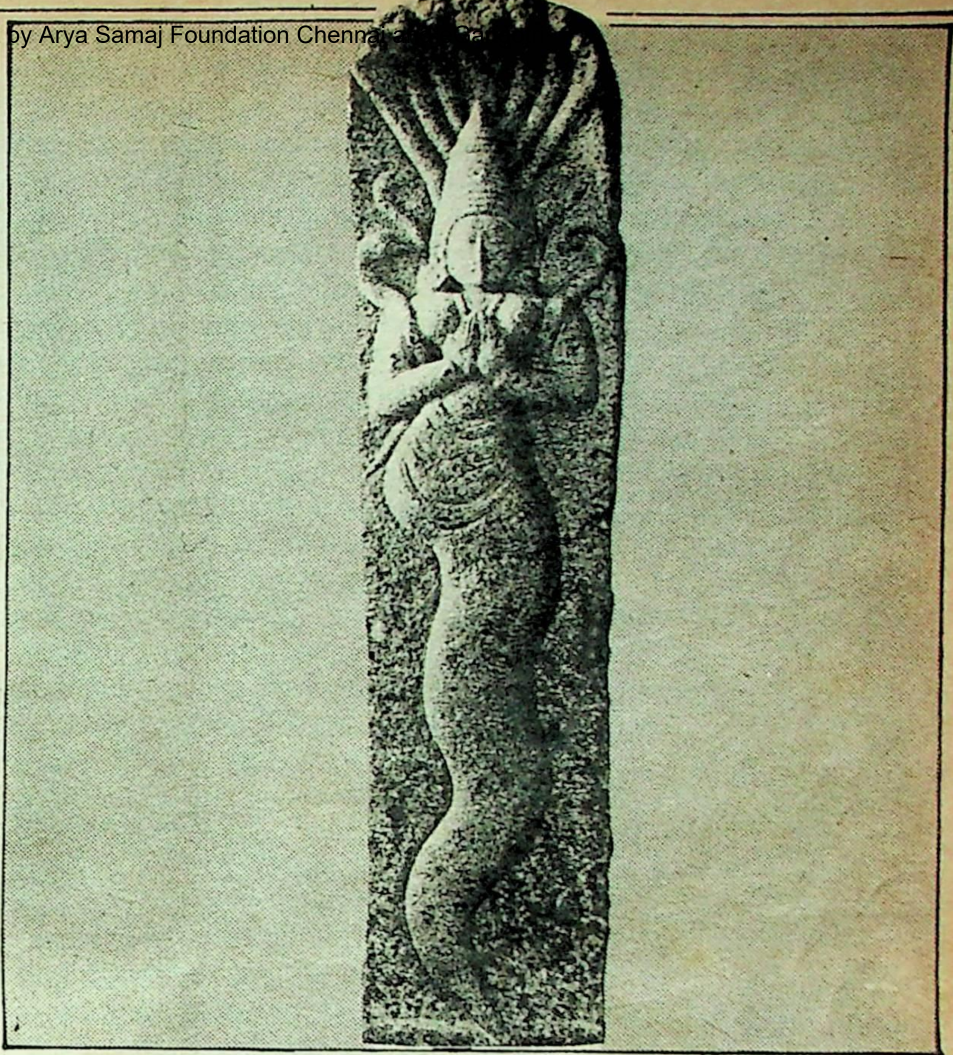

रूप के अमृत में घुला जहर

कृष्णदत्त पालीवाल

प्राचीन भारत के इतिहास, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, कामशास्त्र के लोकानुभव कई अर्थों और संदर्भों में एक जबर्दस्त चुनौती रहे हैं. इन अनुभवों पर समाज के राजनीतिक आर्थिक पक्षों की मोटी पर्तें जमीं हैं. इन पर्तों को कुरेद कर उनके भीतरी रहस्य को थाहने की आकांक्षा आज के मनुष्य में सहज ही है. फिर प्राचीन भारत में विषकन्या का प्रयोग तो एक मंत्रमुग्ध करने वाली चुनौती है और यह भारतीय बुद्धिजीवी की उस बुनियादी समस्या से भी जुड़ी है जिसमें नारी के भोगवादी समाजशास्त्र के नए अर्थ-दीपक झिलमिलाते हैं. राजाओं और रईसों के सामंतवादी विकृतवाद का मस्तिष्क, अर्थतंत्र, सामाजिक रूपंतंत्र, कामशास्त्र, कलाबोध शास्त्र, रसायन शास्त्र और मानव मनोविज्ञान के पक्ष का यह वह हाशिया है जो मिथकीय अर्थ संभावनाओं को उजागर करता है. **विषकन्या एक ऐसा मिथकीय बिंब है जिसमें** नारी देह शास्त्र का पूरा इतिहास भूगोल निहित है.

पुरुष मन में नारी रूप सौंदर्य के प्रति जो अनादि आकर्षण रहा है उसका विकृत उपयोग या शत्रु को मारने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक उपयोग इस विषकन्या प्रकरण के भीतर से दमक-चमक जाता है. कुंवारी कन्या को विषकन्या बना दिए जाने पर उसका जीवन कितना भीषण, दुर्वह, नारकीय विडंबना से युक्त हो जाता था और वे राज़नीतिक इच्छा की क्रीड़ा-कंचुक मात्र रह जाती थीं. राजा रईस अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए इन विषकन्याओं का शत्रु पर उपयोग करते थे.

यह विषकन्या प्रकरण सामंतवादी समाज में नारी शोषण की व्यथा कथा का घृणित अध्याय है. आज भी पुरुष समाज के भोगवादी अर्थशास्त्र ने नारी-शोषण के जो नए तरीके ईजाद किए हैं और... प्राचीन विषकन्या को नई शक्लों में रूपांतरित कर दिया है. उन्हें अंतःपुर के विलासी प्रसादों से निकाल कर आलीशान होटलों की वैभव चादर में लपेट दिया गया है. इस नारी देह का धड़ल्ले से राजनीतिक कार्यों में प्रयोग चलता है. आधुनिक अमानवीय तंत्र का यह नागिन दांव आज भी मौजूद है. इसलिए विषकन्याओं का प्रयोग आज भी हो रहा है. कोई भी आधुनिक 'कीलर कांड' इस सत्य की गवाही दे सकता है.

विषकन्या प्रकरण उठाते समय यह जान लेना आवश्यक है कि इन आचरणों के तीन पहलू हैं (1) इनके पीछे का देह शास्त्र-रतिशास्त्र (2) राजनीतिक इच्छा की सिद्धि (3) उनकी ऐतिहासिक परंपरा. समाजशास्त्र की यह धारण रही है कि समाज में सामाजिक रूप से प्रचलित प्रत्येक के पीछे एक प्रकार का राजनीतिक आर्थिक तंत्र सक्रिय होता है. इसके तत्ववाद को कार्य-कारक में समझना जरूरी होता है. किंतु यह समझ राजनीतिक इच्छाओं के धरती आकाश जाल को सूक्ष्मता से समझने पर पैदा होती है. इसीलिए ऐतिहासिक परंपरा के स्रोतों की ओर लाजिमी तौर पर जाना पड़ता है. इसी से स्पष्ट होता है कि नारी देह व्यापार की विलासिता और रूप-सौंदर्य की स्वस्थ दृष्टि में आकाश-पाताल का अंतर है. थोथी विलासिता की केवल भूखी-नंगी बुभुक्षा का रूप है और इसी भूख में विषकन्या प्राण ले जाती थी. विषकन्या जिसके संपर्क और संभोग से पुरुष के प्राण पखेरू उड़ जाते थे. कहना न होगा कि भारतीय समाज में यह विषकन्या-परंपरा चाणक्यबुद्धि की अनोखी उपज है. अर्थशास्त्र का लेखक कौटिल्य या विष्णु गुप्त इसी चाणक्य के अन्य नाम हैं.

राजा रईस विषकन्या के लिए ऐसी कन्या को चुनते थे जो अनुपम सुंदरी हो. जिसे मदन देवता की शक्ति प्राप्त हो. महामाया के मृण्मय विलास में जो निपुण हो सके. इन कन्याओं को काव्य और कलाओं में पारंगत किया जाता था ताकि वे पुरुष को हाव-भाव-हेला चेष्टा, उक्ति, नृत्य, गीत, वाद्य आदि से अपनी ओर खींच सकें. बौद्धकाल के पूर्व ही गणिकाओं-नर्तकियों-अप्सराओं के लिए कला-मर्मज्ञता आवश्यक गुणमानी जाती थी. 'ललित विस्तर' ग्रंथ में (पृष्ठ 497) चौंसठ कामकलाओं का उल्लेख है. कहीं-कहीं जैन ग्रंथों में इनकी संख्या बहत्तर है. किंतु बौद्ध और जैन दोनों के ग्रंथों में 64 काम कलाओं को स्थान मिला है और विशेष बात यह है कि इन्हें 64 महिला गुण कहा गया है. कालिकापुराण में कन्या संध्या से कला की उत्पत्ति को जोड़ा गया है. कला का अर्थ है चतुराई या कौशल. विषकन्या व्याकरण, छंद, ज्योति, न्याय, वैद्यक, राजनीति कला, कामकला में प्रवीण होती थी. काव्य, नाटक आख्यायिका, समस्यापूर्ति, प्रहेलिका पर उसका अधिकार होता था. रतिमस्त नारी का रूपधरण करना, अंग-अंग का श्रृंगार करना, कपड़ा रंगना, चोली बांधना, सेज बिछाने की कला उसे सिखाई जाती थी. रत्न और मणियों को पहचानना, घोड़ा, हाथी पर सवारी करना, जल विहार करना, तीतर-बटेर लड़ाना तोता-मैना पढ़ाना, जुआ खेलना, शुभाशुभ के शकुनशास्त्र का ज्ञान उसे होता था. दर्शन, गणित, ललित कलाएं (चित्र, मूर्ति, स्थापत्य, संगीत, काव्य), युद्ध आदि की कलाओं में उसे दक्ष किया जाता था. इन चौंसठ कोयल-नारी कलाओं से विष कन्याएं पुरुष को आकृष्ट करती थीं. ये ऐसी रतिमस्ता, रूप सौंदर्य-यौवना, कुंचित अलक होतीं थीं कि इनके काम-बाण से बचना कठिन होता था. पुरुष मनोविज्ञान को समझते हुए वे उसकी इन कमजोरी को निशाना बनाती थीं. वात्स्यायन ने 'कामसूत्र' में स्त्री-प्रसादन की इन कलाओं का वर्णन किया है. ध्यान देने की बात यह है कि वात्स्यायन 'कामसूत्र' में कामशास्त्रीय कलाओं के साथ अन्य सुकुमार कलाओं की भी चर्चा बराबर करते हैं. काव्यशास्त्रीय परंपरा के आचार्य क्षेमेंद्र 'कला विलास' नाम की छोटी-सी पुस्तक में वेश्याओं की 64 कलाओं का गहन विश्लेषण करते हैं. वे कहते हैं कि ये कलाएं धनापहरण की कलाएं हैं. यहां कला का सामान्य अर्थ है स्त्री आकर्षण, वशीकरण, विलास, रति-उन्मत्ता और रति देह दाहन.

आज का राजनीतिक, रईस, सामंत कला विदग्ध हो यह आवश्यक नहीं है वह शुद्ध धन से देह खरीद कर विलास करता है. पर प्राचीन भारत में ऐसी बात नहीं थी. प्राचीन भारत का राजा—रईस, श्रीमान कला-विद्या के पीछे न केवल धन लुटाता था बल्कि स्वयं भी उनमें प्रवृत्त रहता था. वह शिल्पियों कलाकारों का पोषण करता था. वह आभिजात्य था और नागरक सुबह से शाम तक कलाओं का पोषण सेवन अर्जन करता था. इसलिए गणिकाएं और विषकन्याएं इन्हें अपने रूप कला के इंद्रजाल में फांस कर मार डालती थीं. दातुन बनाने तक की कला ऐसी कन्याएं सीखतीं थीं. बराहमिहिराचार्य ने इनकी विस्तार से चर्चा की है कि कैसे ये सुगंधित दातुन बनाती थीं. यह दातुन पेड़ से तोड़ी ताजी दातुन नहीं होती थी, वह सात दिन तक सुगंधित द्रव्यों और औषधियों से सुवासित की जाती थी. गोमूत्र में हर्रे का चर्ण मिला होता था और इसके बाद इलाचयी, तेजपात, दालचीनी, मधुमारिच से सुगंधित की जाती थी. कामसूत्र साक्षी है कि दातुन के बाद अनुलेपन होता था और चंदन का अनुलेपन चलता था. स्त्रियां सुगंधित केश बनाकर जीवन पुष्प में भ्रमर-भ्रमरी की भांति केलि करतीं थी. अधर और नाखून की रंगाई चलती थी. अलक्तक चलता था.तांबूल सेवन की विधि रहती थी. माघकवि कहते हैं कि दीपशिखा सी देह, स्वच्छ धुले अंग, तांबूल से जगमगाते होंठ और सांस उड़ने वाली महीन साड़ी इन विलासिनी स्त्रियों का श्रृंगार होता था. पर 'विषकन्याएं, विषकुंभपयोगमुखम' की कहावत चरितार्थ करती थीं. वे न किसी पुरुष को अपना परिचय दे सकती थीं न अपना यौवन-रूप भोग सकती थीं न कला ज्ञान का आदर-सम्मान पा सकतीं थी. वस्तुतः वे राजा की राजनीतिक इच्छाओं का खिलौना होती थीं. जिन्हें गुप्त रखा जाता था और अवसर पर उनका उपयोग किया जाता था.

रूपवती कन्याओं को बचपन से ही थोड़ा-थोड़ा विष खिलाकर पाला जाता था. अनेक प्रकार के विषों को इनके शरीर में प्रविष्ट करा दिया जाता था. इस विष के प्रभाव से इनका शरीर ऐसा हो जाता था कि जो इनके साथ संभोग करता था, इनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिला पर उत्कीर्ण शूद्रक के मृच्छकटिकम् की मदमत्त-नायिका

सके. अभिनवाचार्य ने 'तंत्रलोक' में प्रकृति, नारीत्व की शक्ति का निरूपण करते हुए कह दिया कि बिना शक्ति के शिव शव हैं. सत्य बात यह है कि इस दर्शन की वैचारिक तत्ववादी अखंडता के मूलाधार को बार-बार खंडित करने का प्रयास हुआ पर उसे खंडित नहीं किया जा सका.

विषकन्या शब्द का व्यंजक अर्थ लोक में ज्यादा व्याप्त रहा. विष के पर्याय दो हैं—गरल तथा क्ष्वेड़. इसके नौ भेद हैं—वत्सनाभ, हारिद्र, शव तुक, प्रदीपन सौराष्ट्रिक, श्रृंगिक, कालकूट, हलाहल और ब्रहमपुत्र. आयुर्वेद शास्त्र की मान्यता है कि वैसे तो विष घातक है पर औषधि के रूप में थोड़ा-थोड़ा नित्य प्रति सेवन करने पर बड़ा उपकारी है. चाणक्य ने कई प्रकार के विष गिनाएं हैं— इनमें वृद्ध की तरुण स्त्री को भी विष कहा गया है. ऐतरेय ब्राहमण में लिखा है कि समुद्र मंथन से विष भी निकला था. इस रत्न को पान कर शिव नीलकंठ हुए. किंतु विषकन्या का विष उसके साथ संभोग से प्राणहरण का अर्थ ध्वनित करता रहा है. विषकन्याओं को लेकर ऐसी दंतकथाएं लोक में फैलती रही हैं कि उसकी भयानकता से प्राण कांप गये हैं.

राम कुमार वर्मा ने 'कौमुदी महोत्सव' नाटक में विषकन्या प्रयोग की बा नए ढंग से उठायी है किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि विषकन्या का प्रयोग इतिहास का सत्य कम है. मिथकीय कल्पना का उछाल ज्यादा है. शायद यही कारण है कि जयशंकर प्रसाद जैसा समर्थ रचनाकार अपने नाटकों में विषकन्या प्रकरण पर एकदम मौन है.

प्रश्न उठता है कि विषकन्या प्रकरण की आधुनिक सार्थकता क्या है. इसका उत्तर है कि उस राजनीतिक परिस्थिति का परिदृश्य ही बदल गया है. जिसमें उनका उपयोग होता था. प्राचीन भारतीय सामंतवाद को रौंदकर जो नया सामंतवाद ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने विकसित किया वह एक नये बुद्धिजाल का करिश्मा है. राजनीतिक प्रयोजनों की सिद्धि के लिए नारी का उपयोग आज भी नये रंगों-ढंगों वृत्तियों से हो रहा है. किंतु इस कार्य का रूप इतना बदल गया है कि उसके मूल को पकड़ पाना कठिन है. आज विषकन्या प्रयोग की बात हमारी स्मृति में सुरक्षित इतिहास का अंग भर है. जिसमें पुरुष प्रधान समाज की बर्बरता, अमानवीय तथा क्रूरता की कहानी निहित है. □

पान की हुई मदिरा पीता था, इनका अधर-चुंबन करता था या नखदंश सहता था वह मर जाता था. इसीलिए जब राजा अपने किसी शत्रु को गुप्त रूप से मारना चाहता था कि वह इस प्रकार की विषकन्या उसके पास भेजता था. संस्कृत के राजनीतिक नाटक "मुद्राराक्षस" (42/116) (नाटककार विशाखदत्त) और कथा सारित्सागर (19/81) में विषपान द्वारा तैयार की गयी सुंदरी कन्या का स्पष्ट उल्लेख मिलता है. 'मुद्राराक्षस' नाटक में मंत्री राक्षस ने जो विषकन्या प्रस्तुत की है. उससे चाणक्य ने पर्वतक का संहार किया है.

इन विषकन्याओं के आतंक से समाज त्रस्त था. पर-भोगी पुरुषों ने इस जहर का काट निकाल लिया था. ये पुरुष 'विषघ्न' कहलाते थे और प्रतिदिन इस प्रकार के विष का औषधि रूप में सेवन करते थे. यदि किसी विषकन्या के द्वारा इनके शरीर में विष प्रविष्ट हो जाए तो किसी भी प्रकार से हानिकारक प्रभाव इनके शरीर पर न पहुंचता था. विषकन्याओं के प्रभाव को नष्ट करने के लिए जब यह तरीका राजपुरुषों रईसों ने निकाल लिया तो विषकन्या-परंपरा शक्तिहीन चली गयी तो समाज में स्मृतिशेष रूप ही उसका ज्यादातर रह गया.

शैव, शाक्त, तांत्रिक आदि वामाचारियों में आकर नारी को नयी शक्ति मिलती है. उसका विषकन्या रूप गायब हो जाता है. तांत्रिक साफ कह रहे थे कि नारी योनि में ही स्वर्ण का निवास है—शरीर ही कैलाश पर्वत है उसके अधरपान में ही अमृत का स्वाद है. स्वर्ण ऊपर नहीं इसी लोक में है और वह नारी रूप में है. ऐसा प्रतीत होता है कि इन वामाचारियों ने अपनी गुप्त साधना से सामंतवादी विषकन्या जाल से समाजको मुक्त किया. पुरुष या भुजंग को नारी या भुंजगिनी के सहवास से स्वर्ण की प्राप्ति हो जाती है यह दर्शन प्रकृति-पुरुष, शिव ललिता, नर-नारी का सहज दर्शन बन गया. हालांकि वैष्णव-परंपरा का पवित्रतावादी तंत्र इस वामाचारी पद्धति का विरोध करता रहा पर वैष्णव अपने विरोध में सफल न हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलिप्त नायिका

अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अर्नशा एकबारगी सुन्न होकर रह गये थे. मूक-स्तब्ध. इस सदमे के लिए वह कतई तैयार न थे. व्हाइट हाउस में बिताये पांच वर्षों में भी उन्होंने ऐसा गहन संकट नहीं झेला था. जैसा वे इस समय झेल रहे थे. उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे उससे कैसे उबर पायेंगे.

वे अपनी भतीजी कैरोल के साथ यूरोप की यात्रा पर आये हुए थे. लंदन में उनकी भेंट हुई एक नामी पुस्तक-प्रकाशक तथा ब्रितानी मंत्रिमंडल के एक सदस्य सर ऑस्टिन ओम्र्सबाय से, जो उनके पुराने परिचित थे. इस भेंट के दौरान, सर ऑस्टिन ने उन्हें जो सूचना दी, वह उनकी परेशानी का कारण बनी हुयी थी.

यह सूचना जर्मनी के एक चोटी के उद्योगपति डाक्टर बान गोयरलिज से संबंधित थी.

डॉक्टर गोयरलिज पर द्वितीय महायुद्ध के पश्चात एक युद्ध-अपराधी के रूप में अंतरराष्ट्रीय आयोग द्वारा मुकदमा चलाया गया था. इस आयोग ने उसे एक गंभीर युद्धअपराधी का दोषी पाया था. इस आयोग के सदस्यों में अमरीका, रूस और ब्रिटेन के कुशल न्यायाधीश थे. आयोग ने डॉक्टर गोयरलिज को 20 वर्ष के कारावास का दंड प्रदान किया था. डाक्टर गोयरलिज ने अपने को निर्दोष साबित करने के अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये थे, लेकिन आयोग उन प्रमाणों से प्रभावित नहीं हुआ. इस पर डाक्टर गोयरलिज ने, जो क्रूप के बाद जर्मनी के सबसे बड़े उद्योगपति माने जाते थे, अमरीका, रूस और ब्रिटेन के राजप्रमुखों से क्षमादान की अपील की थी, इस आधार पर कि उसके जेल चले जाने पर उसका विशाल उद्योग-समूह चौपट हो जायेगा. जिससे लाखों लोग बेकार हो जायेंगे. और विश्व उद्योग को भी भारी धक्का पहुंचेगा.

अर्नशा उन दिनों अमरीका के राष्ट्रपति थे. ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने स्पष्ट कर दिया था कि ब्रिटेन का निश्चय इस संबंध में वही होगा, जो अमरीका का होगा. अर्नशा के सलाहकार डाक्टर गोयरलिज को क्षमा-दान देने के पक्ष में नहीं थे. अर्नशा चाहते तो अपने सलाहकारों की सलाह की उपेक्षा कर डा. गोयरलिज को क्षमा कर उसे जेल जाने से बचा सकते थे, लेकिन डाक्टर से पूर्व-परिचय होते हुये भी उन्होंने ऐसा नहीं किया. मगर, रूस ने डाक्टर गोयरलिज से एक गुप्त समझौता करके उसे क्षमा-दान दे दिया और अपने 'वीटो' का प्रयोग कर, उसे कारावास से मुक्त करवा दिया.

रूस से हुये गुप्त समझौते के अनुसार, डा. गोयरलिज ने रूस और पूर्व जर्मनी की औद्योगिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा दोनों देशों में बड़े-बड़े कारखाने लगाकर स्वयं अपने औद्योगिक साम्राज्य का विस्तार भी किया. अब से क्रूप से आगे निकल गये थे. और तृतीय विश्व के देशों जैसे भारत, चीन, मिस्र लीबिया आदि में कारखाने लगाकर दुनिया के इने गिने धनी और प्रभावशाली लोगों में से एक बन गये थे. उनके पास अब सब कुछ था. लेकिन, अभी तक वह अपमान के उस दंश की पीड़ा को नहीं भूले थे. जो अर्नशा ने क्षमादान न देकर उन्हें पहुंचायी थी.

इस पीड़ा और अपमान का बदला उन्होंने अपने जीवन-संस्मरण लिखकर, और उसके एक अध्याय में अर्नशा की कई करतूतों का पर्दाफाश करके लिया था. एक बड़े प्रकाशक होने के नाते, सर ऑस्टिन के हाथ उस अध्याय की प्रतिलिपि लग गयी थी, और वह वही अर्नशा को दिखाने लाये थे. अर्नशा उसे देखकर पीले पड़ गये थे. एक सफल वकील होने के कारण उन्हें यह समझते देर न लगी थी कि यदि कांग्रेस का कोई सदस्य चाहे तो इन आरोपों के आधार पर आज भी उन्हें कठघरे में खड़ा करके, उन्हें महाभियोग के चक्कर में डाल सकता है. तब, उनकी जीवन-भर की प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जायेगी.

सर ऑस्टिन ने उन्हें सूचित किया था कि डाक्टर गोयरलिज आजकल पेरिस में हैं, जहां शीघ्र ही बड़े राष्ट्रों—अमरीका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन आदि के प्रमुखों का एक शिखर सम्मेलन होने वाला है. सर ऑस्टिन के अनुसार, डाक्टर गोयरलिज शिखर-सम्मेलन के दौरान चीन की सरकार के प्रतिनिधियों के साथ हुये एक समझौते के कागजात पर हस्ताक्षर करेंगे. इस समझौते के अनुसार डाक्टर गोयरलिज चीन में परमाणु-भट्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समेत एक परमाणु-शक्ति नगर बनायेंगे, जिसका संचालन, उसके निर्माण के बाद, जर्मन वैज्ञानिकों और तकनीशियनों के हाथ में आ जायेगा. इसके अलावा, वे अपने प्रकाशक को अपने संस्मरणों की पांडुलिपि भी दे देंगे.

सर ऑस्टिन ने अर्नशा को समझाया था कि वे डाक्टर गोयरलिज से मिलकर इस संस्मरण के प्रकाशन को स्थगित करने का अनुरोध करें, या कम से कम उसे इस बात पर राजी कर लें कि प्रकाशित पुस्तक में उनके बारे में लिखा गया अध्याय नहीं रहेगा.

अर्नशा ने कहा था कि वे कोशिश करेंगे. मगर, सर ऑस्टिन के जाने के बाद वे हाथ में सिर लिये, किंकर्तव्यविमूढ़ से बैठे रहे. उनका ध्यान भंग किया उनकी भतीजी कैरोल ने. सहसा अपने कमरे से बाहर आकर उसने पूछा, ''क्या हुआ अंकल? आप इतने उदास क्यों हैं?''

अर्नशा ने कोई उत्तर नहीं दिया.

कैरोल ने अपने अंकल के पास बैठकर कहा, ''सर ऑस्टिन के आने से पहले तो आप बहुत खुश और नार्मल थे.''

अर्नशा को कैरोल के प्रश्न अनावश्यक लग रहे थे.

कैरोल ने कहा, ''आपके मित्र सर ऑस्टिन काफी दिलचस्प आदमी हैं. अंकल! आपको उनके छोटे भाई सिडनी और मेडोरा हार्ट नाम की कालगर्ल और पैडी जेनसन नाम के रंडियों के एक दलाल के उस कांड के बारे में तो पता होगा ही जिसने लोगों के मन में कुख्यात प्रोफ्यमों कांड की याद धो पोंछकर रख दी थी.''

''क्या बक रही हो, कैरोल? जबान बंद करो. सर ऑस्टिन एक प्रतिष्ठित आदमी हैं. ब्रिटेन के एक नामी मंत्री हैं. उनके भाई के बारे में कीचड़ उछालते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिए. इस बारे में अब कुछ भी बोलने की जरूरत नहीं है.''

''आपके कहने पर मैं तो चुप हो जाऊंगी, अंकल! लेकिन, इस कांड के बारे में तो सारा ब्रिटेन जानता है. सारी दुनिया जानती है. उन करोड़ों लोगों की जबान आप कैसे बंद करेंगे?''

मेडोरा हार्ट, जिस समय कैरोल और अर्नशा के बीच यह वार्तालाप हो रहा था, उस समय पेरिस के एक सार्वजनिक उद्यान में एक बैंच में सुबह की ठंडी हवा का आनंद ले रही थी. आज उसके क्लब-क्लब-लाउत्रेक की, जहां वह अर्धनग्नावस्था में नृत्य किया करती थी, छुट्टी थी, और उसने तय किया था कि वह सारा दिन मटरगश्ती में गुजारेगी. यहां कुछ देर शीतल वायु का आनंद लेकर वह अपने मनपसंद रेस्तरां में जायेगी, वहां भरपेट मनपसंद खाना खायेगी और फिर अपने छोटे से कमरे में जाकर दिन भर सोयेगी.

तभी, उसकी नजर एक समाचारपत्र पर पड़ी, जो उसकी बैंच के नीचे पड़ा था. शायद कोई गलती से छोड़ गया था. उसने अखबार उठाया और पढ़ना शुरू किया. बल्कि, यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि उसके चित्र देखने आरंभ किये, क्योंकि पढ़ना हमेशा से उसके लिए कष्टदायक अनुभव रहा है. सारे अखबार में उन अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्तियों के चित्र छपे थे, जो शीघ्र ही आरंभ होने वाले शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए अपने-अपने देशों के प्रमुखों के साथ पेरिस आये हुये थे.

एक पृष्ठ पर एक ही व्यक्ति के अलग-अलग चित्र देखकर क्रोध से उसकी आंखें जलने लगीं. ओह! तो यह शैतान सर ऑस्टिन भी अपनी पत्नी के साथ पेरिस आया हुआ था. हरामजादा! इसी की वजह से तो वह अपना देश ब्रिटेन छोड़कर फ्रांस के नगरों की खाक छानती फिर रही है, एक लावारिस आवारा की भांति!

अतीत की कड़वी यादों ने खुशमिजाज मेडोरा हार्ट को अचानक बदमिजाज बना दिया.

पैडी जेमसन से उसकी पहली मुलाकात लंदन के सोहो स्थित

न जाने कितनों का भला करके यकायक गायब हो जानेवाली अलिप्त नायिका के माध्यम से अमरीकी समाज और राजनीति का पर्दाफाश करनेवाली एक सशक्त अमरीकी कहानी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नाइट क्लब में हुयी थी. तब उसकी आयु सत्रह साल थी, और उसे इस क्लब में कैबरे-डांसर का काम करते हुए एक महीना भी पूरा नहीं हुआ था. उसे प्रति सप्ताह नौ पाउंड वेतन मिलता था, और लगभग पांच पाउंड वह ग्राहकों से टिप में वसूल कर लेती थी. उसका खयाल था कि कुछ दिनों में वह 'इंग्लैंड की महारानी से भी ज्यादा अमीर हो जायेगी.' वह हमेशा अपनी सपनों की दुनिया में खोयी रहती थी.

लेकिन, यह पैडी जेमसन, जो देखने में एक शरीफ और भला इंसान लगता था, उससे क्या कह रहा था? वह कह रहा था कि वह अगर उसकी बात मान ले, तो एक सप्ताह में इससे तीन-चार गुना ज्यादा कमा सकती है. कैसे? उसकी सैक्रेटरी बनकर. वह एक 'डैकोरेटर' है, और लंदन के उच्च वर्ग के प्रायः सभी परिवार अपने घर की सजावट उसी से करवाते हैं. उसे एक स्मार्ट और हसीन सैक्रेटरी की जरूरत थी, जो आज मिल गयी. अगर वह हां कर दे, तो कल से ही काम शुरू कर सकती है. काम करने के लिए उसे कहीं जाना भी नहीं होगा. क्योंकि उसका (जेमसन) महल जैसा आलीशान घर ही उसका आफिस होगा, और उसी के बाथयुक्त कमरे में वह रहेगी भी. रहना-खाना मुफ्त. ऊपर से वेतन चालीस पौंड प्रति सप्ताह. काम? उसके ग्राहकों को आवश्यक जानकारी देना, उनके प्रश्नों के उत्तर देना.

'ब्लडी मेरी' के दो ही पैगों ने बेहोश हार्ट को ख्वाबों की एक बिल्कुल नयी और अनजान दुनिया में पहुंचा दिया था. उसने 'हां' कह दी. जेमसन ने उसे अपनी 'राल्स रायस' में बैठाकर, शोफर से कहा, "इनका सामान इनकी जगह से लेकर, इनके साथ जल्दी से हमारे घर आ जाना."

जेमसन जितना हंसमुख और आकर्षक था उतना ही तृप्तिदायक प्रेमी भी निकला. रात को उसके साथ उसे जो सुख मिला, वह पहले किसी पुरुष से नहीं मिला था. उसका तन और मन दोनों हमेशा-हमेशा के लिये जेमसन के हो गये.

जेमसन के पास एक महीना तक रहने के बाद भी मेडोरा हार्ट को यह ठीक से नहीं पता चल पाया कि उसका 'बास' अपना डेकोरेशन का धंधा कब, कहां और कैसे करता है? हां, एक बात उसने सही कहीं थी. उसके सब ग्राहक और संरक्षण उच्चवर्ग के लोग थे. जो अक्सर शनिवार के दिन, जो जेमसन की 'पार्टी का दिन' होता था, आते थे, इन लोगों में एक भारतीय राजा, एक आस्ट्रेलियाई उद्योगपति, जो अरबपति था; एक ड्यूक, ब्रितानी मंत्रिमंडल का एक सदस्य, एक अमरीकी वायुयान-निर्माता जैसे लोग रहते थे. पार्टी के दिन जेमसन न जाने कहां से उकी हमउम्र, और हसीन लड़कियां ले आता था, जो उसके साथ जेमसन के महमानों का स्वागत करती थीं, उनके साथ नंगी या अधनंगी होकर जेमसन के निजी स्विमिंग पूल में तैरती थीं, उनकी साथी बनती थीं, और उनके हाथ से जाम लेकर पीती थीं.

कभी-कभी, नशे में धुत, मेहमान, उन्हीं के समान नशे में धुत किसी छोकरी को लेकर जेमसन के छह शयन-कक्षों में से किसी एक में चले जाते थे. मेडोरा हार्ट भी कई बार गयी थी. एक बार वह सिडनी आक्सबाय के साथ भी गयी थी, उसी सिडनी के साथ, जो हरामी सर ऑस्टिन का भाई था. एक बिगड़ा हुआ, गुस्ताख और विकृत मनोवृत्ति वाला युवक. वह उसे कतई नहीं भाता था, लेकिन जेमसन की खातिर वह उसे सह लेती थी.

... और, नौकरी के पांचवें हफ्ते में, अचानक, उसकी सपनों की प्यारी-सी दुनिया, एक भीषण आघात से चकनाचूर हो गयी.

एक रात उसने बी.बी.सी. के समाचारों में सुना कि उसका बास जेमसन खुफिया पुलिस द्वारा सेक्स, ब्लैकमेलिंग और अपने ग्राहकों से अपनी छोकरियों की मार्फत गुप्त और राष्ट्रविरोधी सूचनाएं अन्य देशों के जासूसों और कुछ खास समाचारपत्रों को ऊंची राशि पर बेचने के अपराध में पकड़ा गया है, अब उस पर मुकदमा चलेगा. समाचार के अंत में कहा गया था कि खुफिया पुलिस को पूछताछ के लिये सिडनी ओक्सबाय नामक एक युवक की तलाश है, जो जेमसन की पार्टियों में नियमित रूप से आता रहता था.

अगले दिन समाचारपत्रों के शीर्षक चीख और चिल्ला रहे थे—प्रोफ्यूमोकीलर-गर्ट कांड से भी बड़ा कांड! पार्लमेंट में तहलका! मंत्रिमंडल के गिरने के आसार! जेमसन की कॉल गर्ल्स ने राष्ट्र के लिये अहितकारी सूचनाएं विदेशी जासूसों को दी.

बेचारी मेडोरा हार्ट यह सब सुन-पढ़कर सुन्न रह गयी. वह इतनी अधिक भयभीत थी कि उसे यह भी नहीं सूझ रहा था कि अब क्या करूं? तभी, अखबार वाला अखबार डाल गया. उसने पढ़ा, मुखपृष्ठ पर ही बड़े-बड़े टाइपों में छपा था, "जेमसन सेक्स-कांड में करोड़पति सर ऑस्टिन के छोटे भाई सिडनी के लिप्त होने का पुलिस को संदेह." वह कांपकर रह गयी. क्या पुलिस उसे भी इस कांड में लिप्त करेगी?

तभी दरवाजे की घंटी बजी. उसने दरवाजा खोला. आगंतुक ने अपना परिचय देते हुए कहा, "मैं सर ऑस्टिन हूं. मिस मेडोरा हार्ट! मैं आपके मित्र और शुभचिंतक के रूप में आपके पास आया हूं, इसलिए आप मुझसे घबरायें नहीं. अच्छा, पहले तो यह बताइये कि क्या पुलिस आपसे पूछताछ करने आयी थी?"

"नहीं. अभी तक नहीं आयी."

"देखिये मिस हार्ट! आप और मेरा भाई सिडनी दोनों संकट में हैं. मैं चाहता हूं कि आप इस संकट से बची रहें. आप गवाही के लिये यहां मौजूद नहीं होंगी, तो मेरे भाई सिडनी पर भी पुलिस मुकदमा न चला सकेगी. आपके पास पासपोर्ट तो है न?"

"हां, है."

"तो आप आज शाम ही, अपने सारे सामान के साथ, हवाई अड्डे पर जाकर पेरिस जानेवाला हवाईजहाज पकड़ लीजियेगा. टिकट मैं लेकर आया हूं. इतनी रकम भी है कि आप वहां कोई जगह लेकर चुपचाप एकांत में तीन-चार महीनों तक रह सकें. तब तक, यह पचड़ा खतम हो जायेगा. फिर आपको यहां वापस बुला लिया जायेगा."

मेडोराहार्ट को यह प्रस्ताव पसंद आया. उसने सर ऑस्टिन से टिकट और रकम ले ली. और उसी शाम को हवाई जहाज से पेरिस रवाना हो गयी.

जैसा कि सर ऑस्टिन ने कहा था, सारा मामला दो-तीन महीने के अंदर ही ठंडा पड़ा. पुलिस सिर्फ जेमसन को ही सजा दिलवा सकी. सिडनी तथा इस कांड से लिप्त दूसरे लोगों के खिलाफ प्रमाणों के अभाव में वह कुछ नहीं कर पायी. मेडोरा हार्ट ने, अखबारों से यह जानकारी प्राप्त करके, सर ऑस्टिन को लिखा कि वह उसे वापस इंग्लैंड बुलाने की व्यवस्था करें. कोई जवाब नहीं. फोन किये, तो सैक्रेटरी ने बार-बार कहा, "सर ऑस्टिन मौजूद नहीं है." हार्ट को अखबारों से पता चल गया था कि इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीच सर ऑस्टिन ब्रितानी मंत्रिमंडल के एक सदस्य बन गये हैं.

सर ऑस्टिन की ओर से निराश होकर, मेडोरा हार्ट ने पेरिस स्थित ब्रितानी राजदूतावास से संपर्क किया और सब हाल बताकर उससे प्रार्थना की कि वह इसके ब्रिटेन वापस लौटने की व्यवस्था करे. उसे दो सप्ताह बाद आने के लिये कहा गया.

जब वह दो सप्ताह बाद गयी, तो उसे बताया गया कि उसके पासपोर्ट का मामला ब्रिटिश सरकार के गृह-विभाग के विचाराधीन है. क्यों? इसलिए कि हंगरी से ब्रिटेन में स्थायी रूप से बसने के लिये उसके पिता ने अपनी अर्जी में कुछ ऐसे तथ्य दिये थे, जो आधारहीन और झूठे साबित हुये. बहुत संभावना इस बात की है कि उसका पासपोर्ट जब्त कर लिया जायेगा, और वह ब्रिटेन की नागरिक नहीं रहेगी, और ऐसी हालत में फ्रांस और अन्य देशों की सरकारें भी उसे अपने देश में रखने से हिचकिचायेंगी.

राजदूतावास के क्लर्क ने उसके बहुत अनुनय-विनय करने पर उसे यह भी बताया कि उन्हें ब्रिटेन की खुफिया पुलिस से एक पत्र मिला है, जिसमें कहा गया कि ब्रिटेन से पेरिस आनेवाली मिस मेडोरा हार्ट एक बदचलन औरत है, और राजदूतावास उसे बुलाकर उसका पासपोर्ट जब्त कर ले. क्लर्क ने कहा कि वह इस मामले को तरह-तरह के बहाने करके लंबे अर्से तक स्थगित करता रह सकता है, बशर्ते कि वह उसे समय-समय पर अपने प्रेम का प्रतिदान देती रहे. हार्ट उससे झूठा वायदा करके चली आयी. मगर, उसे इतना अवश्य पता चल गया कि इस सारी शरारत की जड़ में वह हरामी सर ऑस्टिन ही है, जो नहीं चाहता कि वह वापस इंग्लैंड आये.

अब उसके सामने समस्या जीविकोपार्जन की थी. और, इसके लिए एक ही हुनर उसके पास था-कैबरे डांसर का. और, उसके इस हुनर के पेरिस में बहुत से कद्रदान थे, और वे उसे अच्छे वेतन पर अपने क्लबों में नौकरी देने पर भी तैयार थे. जब वह सबसे अधिक वेतन देने वाले क्लब के लिये काम करने के लिये तैयार हो गयी, तो उन्होंने एक शर्त रखी. शर्त यह थी कि वह उसका प्रचार 'ब्रिटेन के जेमसन-कांड की एक रहस्य पात्र मेडोरा हार्ट की नेत्ररंजक देह का खुला प्रदर्शन के रूप में करेगी. चूंकि उसे काम की सख्त जरूरत थी, इसलिए उसने यह शर्त लिखित रूप से स्वीकार कर ली.

मगर, उसके बाद जो कुछ हुआ, उसकी उसने कल्पना भी न की थी. जब वह पहली बार क्लब में डांस करने गयी, तो उसने देखा कि क्लब के बाहर उसकी ऊंचाई से दुगुना ऊंचा 'कट आउट' लगा है, और उसके नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है-'ब्रिटेन के जेमसन-कांड की एक रहस्यमयी पात्र मेडोरा हार्ट की नेत्ररंजक और मादक देह का खुला प्रदर्शन.'

इस सब के प्रचार ने उसे सारे पेरिस में कुख्यात कर दिया. वह जहां जाती लोग उसकी तरफ उंगलियां उठाकर कहते, "यही है

तोड़कर अहदे करम

जर्मनी की वह अभिनेत्री इतनी सुंदर थी कि 1950 में उसने हाहाकार मचा दिया था. वैसे मेरिया नथ स्वयं भी जानती थी कि वह सुंदर है तभी तो उसे अपना साथी ढूंढने में समय लगा. एक दिन वह उस सेवानिवृत्त अफसर हींको कुंजे से टकरायी थी. कुंजे इतिहास का कलाकार था और उसकी छोटी-सी दुकान पुरातत्व सामग्री से भरी हुई थी. वह एक चीज उठाता और एक कहानी शुरू कर देता—दिलचस्प कहानी जो बढ़ते कदम को रोक दे. मेरिया भी उसके इस चमत्कार से इतनी खिची कि उसके बहुत करीब आ गयी. वह भी कुंजे के साथ दुकान में बैठकर अंग्रेज और अमरीकन अफसरों को लुभाकर 'ब्लैकमेल' करने लगी. और जब उसे खतरे रास आने लगे तो वह और बढ़ी. फिर वह पोलिश कर्नल ग्रेगर कोवल्सकी के जासूस-चक्रव्यूह में घुस पड़ी जो इस दिनों कोलबर्ग रिंग' के नाम से मशहूर था और बर्लिन से उसका संचालन हो रहा था. कर्नल कोवल्सकी रूसी जासूसों के लिये काम कर रहा था.

मेरिया को जासूसी करने में आनंद आने लगा. अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए वह सब कुछ करने लगी यहां तक कि कलोन और फ्रंकफर्ट में उसके लिये 'प्रणय-कक्ष' भी बनवा दिये गये जिसमें वह महत्वपूर्ण अफसरों को लाती, रमण करती और उनसे रहस्य बटोरती. सबसे पहले उसके प्रेमी-कुंजे को सह सुनकर धक्का लगा. उसने एक-आध बार पता भी किया पर मेरिया बहुत दूर जा चुकी थी. कुंठाग्रस्त कुंजे ने फिर दुखी होकर आत्महत्या कर ली. वह भला कैसे सहन करता कि उसकी प्रेमिका अब जासूस-रूपाजीवा बन चुकी है. कर्नल कोवल्सकी ने मेरिया को एक विशेष काम सौंपा था-यह पता लगाना कि जर्मनी फिर से सैन्य-बल बनाने के लिए क्या प्रयास कर रहा है. जब इसकी भनक पश्चिम जर्मनी की जासूस गेहलन आर्गिनाइजेशन को लगी तो उनके कान खड़े हुए. फिर उन्होंने डाक्टर पीटरसन को डबल-एजेंट बनाकर भेजा था-जाल फैलाने. डाक्टर पीटरसन ने अपने को चांसलर एडेंयोर के दफ्तर का महत्वपूर्ण कर्मचारी बतलाया और वह मेरिया के जाल में स्वयं ही फंसा. उसने मेरिया का विश्वास जीतना शुरू किया और दबी आवाज बोलने भी लगा, "जर्मनी को फिर से सैन्य-बल जुटाना होगा." मेरिया समझती रही कि डाक्टर पीटरसन उसका दाना लपक रहा है उधर पीटरसन दोधारी तलवार चला रहा था एक बार मेरिया के साथ प्रणय-कक्ष से लौटाने पर वह और खुला, "मैं तुम्हें जर्मनी की सैन्य-योजना के बारे में महत्वपूर्ण रहस्य बतलाऊंगा." और तभी ब्रिटिश और अमेरिका जासूस संस्थाएं भी एक होकर डाक्टर पीटरसन द्वारा गलत ब्योरे और खबर मेरिया को पहुंचाते रहे.

और एक दिन जब मेरिया कलोन के डाकखाने से कर्नल कोवल्सकी का लिफाफा ले रही थी तब ' ब्रिटिश एम.आई.5 ' नामक जासूस संस्था के अफसरों ने मेरिया को धर दबोचा था. मेरिया का गिरोह फौरन ही बिखर गया. यहां तक कि कर्नल कोवल्सकी भी ना जाने कहां अलोप हो गया. जर्मन-अदालत ने मेरिया को केवल तीन वर्ष का कारावास दिया था. क्योंकि वह जानते थे कि मेरिया कैंसर की रोगी है. दो वर्ष बाद ही वह जेल में अस्पताल में मर गयी. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेमसन-कांड की मेडोरा हार्ट. खूब नाचती है.' वह बहुत परेशान होती, मगर कुछ कर नहीं सकती थी.

क्लब का मालिक हार्ट की शोहरत का पूरा लाभ उठाना चाहता था. इसलिए उसने कई पत्रकारों को राजी कर लिया. कि वे हार्ट से मिलकर उसका चटाखेदार साक्षात्कार अपने अखबार में छापें.

सबसे पहली पत्रकार जो हार्ट का साक्षात्कार लेने आयी, वह थी 'न्यूयार्क हैरल्ड ट्रिब्यून' की पेरिस-प्रतिनिधि-मिस हैजल स्मिथ.

40 वर्षीया हैजल स्मिथ को अमरीकी पत्रकार-समाज में बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता था. वह एक प्रतिष्ठित और विश्व-विख्यात पत्रकार थी. लेकिन, यह प्रतिष्ठा उसने तब अर्जित करनी आरंभ की थी जब वह उस पर, एक तरह से, थोप दी गयी थी.

वह पहले डॉयल नाम के एक अमरीकी पत्रकार की, जो बीस साल पहले उसी पद पर था, जहां आजकल वह थी, टाइपिस्ट थी. टाइपिस्ट वह इसलिए बनी थी, क्योंकि वह खुद के प्रयासों से नौसिखिया रिपोर्टर भी नहीं बन पायी थी. डॉयल ने, जिसकी जानपहचान सब देशों के राजाप्रमुखों से थी, और जिसे अमरीकी विदेशी प्रतिनिधियों का शहंशाह माना जाता था, उसे लोगों से मिलना, साक्षात्कार के लिये उनको खोलों से बाहर खींचकर लाने, और साक्षात्कार को सरल, प्रभावपूर्ण और तथ्यात्मक शैली में प्रस्तुत करने की कला सिखायी, जिसे सीखने में हैजल को कोई कठिनाई नहीं हुई, क्योंकि पत्रकारिता और खास तौर पर रिपोर्टिंग से उसे शुरू से ही लगाव था.

हैजल को सुंदरी नहीं कहा जा सकता, और न वह अल्हड़ थी. पर उसके भोलेपन में एक आकर्षण था, जो पुरुषों को सहज ही उसकी ओर खींच लाता था. डॉयल भी उसके प्रति आकर्षित हो गया था, और काफी समय तक दोनों के संबंध पति-पत्नी जैसे रहे. बाद में, डॉयल के संबंध अन्य महिलाओं से हो गये, जो हैजल से अधिक रूपवती और परिष्कृत थीं. हैजल को शुरू में कुछ धक्का तो लगा, मगर वह फिर अपने काम को पूरा समय और ध्यान देने लगी. किसी वस्तु या व्यक्ति से ज्यादा लिप्त होने की उसकी आदत नहीं थी. इसी से, डॉयल कभी-कभी उसे 'अलिप्त नायिका' कहकर उसकी हंसी उड़ाया करता था.

एक बार, डॉयल बीमार पड़ा और कई महीने तक अस्पताल में रहा. इस दौरान, पेरिस में अनेक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाएं घटीं. रूसी-जासूसों की मौजूदगी का पता लगने का फ्रांस और रूस के संबंध बिगड़ने लगे. अनेक बातों पर फ्रांस की टक्कर अमरीका से भी हुई, जो चाहता था कि वह भी ब्रिटेन की भांति खुलकर उसका समर्थन करे, और साथ दे.

हैजल ने डॉयल की गैरमौजूदगी में अपनी पहल पर इन सब घटनाओं की जो रपटें 'न्यूयार्क हैरल्ड ट्रिब्यून' को भेजीं, उससे पत्र के समाचार-संपादक अत्यंत प्रभावित हुए. उन्होंने उसे लिखा, ''फ्रांस में आजकल क्या हो रहा है, उसे तुमने बड़ी सूक्ष्मता के साथ समझने का प्रयास किया है. वहां की राजनैतिक समस्याओं का तुमने बड़ा ही प्रौढ़ विश्लेषण किया है. और उसे अपने वर्णन-नैपुण्य के साथ सुंदर प्रवाहरूपी सतर्क और सूक्ष्मदर्शी शैली में व्यक्त किया है.... मैं डॉयल को, उसके स्वस्थ होने के बाद, अमरीका बुला रहा हूं और चाहता हूं कि तुम उसका कार्य-भार संभालो.''

हैजल को इस अप्रत्याशित नियुक्ति से बड़ी प्रसन्नता हुई. लेकिन उसने उसे किसी पर व्यक्त नहीं किया. डॉयल के अलावा कोई और पुरुष उसके जीवन में नहीं था, और स्त्रियों से उसके संबंध बड़े औपचारिक थे.

कुछ महीनों बाद, सहसा, एक ऐसी घटना घटी, जिसने उसे एक विशिष्ट महिला-पत्रकार से एक गुप्त महिला-जासूस भी बना दिया.

अपने पेशेवर जीवन में उसकी मुलाकात एक फ्रीलांस रूसी पत्रकार से हुयी. रास्तोव नाम का एक पत्रकार वास्तव में के.जी.बी. (रूस की गुप्तचर संस्था) का एजेंट था, लेकिन इस बात का पता हैजल को बहुत बाद में चला. रास्तोव एक हंसमुख, आकर्षक युवक था, लेकिन उसने न कभी हैजल को अपने प्रेमपाश में बांधने का प्रयास किया, न जाहिर होने दिया कि वह कहीं से भी के.जी.बी. का जासूस है.

एक दिन पत्रकार-क्लब में साथ-साथ बीयर पीते हुए, उसने हैजल से कहा, ''एक स्कूप के बारे में जानना चाहती हो. अपने अमरीकी राष्ट्रपति के बारे में है.''

''कैनेडी के बारे में? और स्कूप? जानना तो चाहूंगी.''

''सुनो, मगर चौंकना मत. समाचार वर्तमान का नहीं, भविष्य का है, यानी अभी जन्मा नहीं है, जन्म लेने वाला है. मगर जन्म लेगा जरूर, और इसी रूप में लेगा, जिस रूप में तुम्हें सुनाने वाला हूं.''

''अजन्मे समाचार के बारे में इतना ज्यादा विश्वास क्यों?''

''इसलिए कि उसकी जानकारी उन्हीं लोगों ने मुझे दी है, जो निकट भविष्य में इस समाचार को जन्म देंगे, उसे साकार करेंगे.''

''पहेलियां मत बुझाओ. बताना हो तो साफ-साफ बताओ.''

''तो, फिर सुनो. कुछ महीनों बाद तुम्हारे राष्ट्रपति कैनेडी उलास की यात्रा करेंगे और वहां कोई अज्ञात व्यक्ति गोलियों से उनकी हत्या कर देगा. इस हत्या के लिए, एक अंतरराष्ट्रीय साजिश के अनुसार, थोस्वाल्ड नाम का एक आदमी पकड़ा जायेगा, लेकिन उसकी भी हत्या इन अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्रकारियों द्वारा कर दी जायेगी. तुम चाहो तो इस स्कूप का उपयोग कर सकती हो.''

हैजल ने सोचा, इस सूचना को अपने पत्र के माध्यम से अमरीकी सरकार या स्वयं राष्ट्रपति तक पहुंचा दे, मगर उसकी हिम्मत ऐसा करने की न हुई. उसे डर था कि खबर ठीक हो या गलत, दोनों हालतों में वह ख्वामख्वाह सी.बी.आई. या एफ.बी.आई. के चक्कर में पड़ जायेगी. उसने चुप रहना ही उचित समझा.

लेकिन, जब कैनेडी की हत्या कर दी गयी और घटनाएं वैसे ही घटीं जैसाकि रास्तोव ने भविष्यवाणी की थी, तो रास्तोव पर उसका विश्वास बढ़ गया. वह उससे और ज्यादा मिलने लगी, और वह उसे अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन और अफ्रीकी देशों के बारे में ऐसे समाचार देने लगा, जो के.जी.बी. के एजेंट एकत्र करते थे, और सोच-समझ कर ऐसे ही समाचारों को प्रकाशन के लिए बाहर जाने देते थे, जो उनके हित में होते थे.

इन समाचारों के पाने के एवज में हैजल को कभी-कभी अपनी देह रास्तोव को देनी पड़ती थी. पर, उसे यह सौदा बुरा नहीं लगता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था. रास्तोव यूं भी आकर्षक और स्वस्थ युवक था, और किसी भी पुरुष को अपनी देह अर्पित करते समय वह देह को ही सहवास का सुख उठाने देती थी. उसकी 'स्व' उससे अलग ही रहता था, अलिप्त, अप्रभावित!

मेडोरा हार्ट के बारे में हैजल ने पत्रों में काफी पढ़ा था, मगर उससे मिलने का विस्तार उसके मन में कभी नहीं आया था. लेकिन, उसके अखबार के समाचार-संपादक ने उससे कहा था कि वह उससे मिले और उस से पूछे कि वह आजकल पेरिस में क्या कर रही है.

हैजल ने हार्ट के क्लब के मैनेजर से संपर्क स्थापित किया, और उसने इंटरव्यू की तारीख को समय पक्का कर दिया. मगर, एक मामूली कैबरे डांसर से, भले ही वह जेमसन-कांड की वजह से दुनिया भर से कुख्यात हो चुकी हो, इंटरव्यू इतना तूफानी होगा, यह कल्पना उसने कभी न की थी. हार्ट ने उसे, आते ही, जैसे आड़े हाथों लिया, वह उसके लिए एक निराला अनुभव था.

"तुम मेरा इंटरव्यू लेने नहीं आयी हो, मेरे घावों पर नमक छिड़कने के लिये आयी हो. खुद औरत होकर, औरत की जलालत को समझने की कोशिश नहीं करती? क्या फर्क है तुम में, और उस कमीने जेमसन में? उसने भी मेरा शोषण कर, पैसा और नाम कमाया, तुम भी मेरे बारे में चटपटी और गदी बातें लिखकर अपने अखबार को पैसा कमाने का मौका दोगी. बोली, क्या चाहती हो, पूछो. वैसे, पूछने की जरूरत भी क्या है? जो जी में आये लिख लो." हार्ट इसी रौ में बोलती रही.

हार्ट ने हैजल को रुककर कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया. वह हार्ट के प्रति सहानुभूतिशील हो आयी. वह पत्रकार बाद में है पहले नारी है. और नारी की दृष्टि से देखने पर उसे लगा कि हार्ट एक गणिका बाद में, एक असहाय, शोषित और पीड़ित नारी पहले है. उसने कहा, "मान लो, और मुझ पर विश्वास करके मान लो कि मैं तुम्हारी बड़ी बहन हूं. इस नाते को मानकर अपने बारे में कुछ कहना चाहती हो, वही मैं लिखूंगी, अपनी ओर से एक शब्द भी नहीं.

हार्ट ने शंकित निगाहों से हैजल को देखा. लेकिन, पाया कि हैजल वाकई जो कुछ कह रही है, ईमानदारी से कह रही है, और उस पर विश्वास किया जा सकता है. उसने रोते-रोते अपनी कहानी सुनायी और कहा, "मेरे पास सर ऑस्टिन को नीचा दिखाने और बदला लेने के लिये एक हथियार हाथ में आया है. मगर में अकेली उसका इस्तेमाल नहीं कर सकती. मैं बहुत कमजोर हूं. और वह बहुत ताकतवर. लेकिन, कोई मेरी मदद के लिए खड़ा हो जाये, तो मैं उसे नीचा दिखा सकती हूं."

"मैं तुम्हारी मदद करने के लिए तैयार हूं. हर तरह की मदद."

हार्ट ने फिर हैजल की आंखों में झांका. वह फिर आश्वस्त हुई कि हैज़ल पर भरोसा किया जा सकता है, और वह अवश्य उसकी सहायता करेगी. उसने कहा, "सर ऑस्टिन के चित्रों के साथ उसकी बीवी के चित्र भी छपे हैं. वह ऊंचे खानदान की है. बहुत सुंदर है, बहुत अमीर है. मेरे एक आर्टिस्ट मित्र नार्दे की प्रेमिका भी रह चुकी है. जब वह उसकी प्रेमिका थी तब उसकी एक न्यूड पेंटिंग बनायी थी. जो इस समय मेरे पास है."

"तुम्हारे पास कैसे आयी?"

"नार्द मेरा भी मित्र है, और एक साल पहले मेरा प्रेमी भी था. तब मैंने उससे कुछ नहीं मांगा था, दो दिन पहले यह सोचकर कि

देश की दासी मार्सेल

सन् 1951.
उस दिन मिस्र में एक अंग्रेज व्यापारी आया था जिसने देखते ही देखते कई दोस्त बना डाले. वास्तव में यह व्यक्ति व्यापारी नहीं था—यह था इजराइली जासूसी संस्था का मंजा हुआ आफीसर कर्नल एब्राहम दर. मिस्र में अपना जाल फैलाने ही यह आया था. नये-नये चेहरों में इसने एक सलोना चेहरा भी ढूंढ निकाला था-फ्रेंच यहूदी विक्टोरिनों जिसे सब मार्सेल कहकर पुकारते थे. वैसे उसका पूरा नाम था मार्सेल मिनिओ.

चौबीस वर्षीय मार्सेल ऐथलीट भी थी. सुंदर कसा हुआ बदन, आकर्षक चहेरा-और भला क्या चाहिये एक जासूस को. धीरे-धीरे कर्नल दर की जासूस—मंडली पनपने लगी और मार्सेल जरूरी खबरें इधर-उधर से बटोरती रही.

सन् 1954 का सबसे भयंकर षड्यंत्र रचा जा रहा था जिसमें ब्रिटिश और अमरीकन एंबेसी में बम रखने थे. वे जानते थे कि विस्फोट होते ही राजनीतिक विस्फोट भी होगा और प्रेसीडेंट नासिर के खिलाफ ये दोनों देश हो जायेंगे.

इस षड्यंत्र का ताना-बाना बुना जा रहा था कि तभी एक इजराइली एजेंट पाल फ्रैंक ने भांडा फोड़ दिया और मिस्र की जासूस-संस्था ने फौरन ही धर-पकड़ शुरू कर दी. एब्राहम दर तो पहले ही भाग गया, पर मार्सेल को यह नहीं पता था कि उसका पीछा मिस्र के जासूस कर रहे हैं. जब मार्सेल मैक्स के यहां पहुंची तब वह अपने ट्रांसमीटर पर टेल अबीन को खबरें दे रहा था. और तभी मिस्र के जासूसों ने धर दबोचा, मार्सेल पकड़ी गयी. उसे तरह-तरह की यातनाएं दी गयीं. एक बार तो उसने खिड़की से कूद कर आत्महत्या करने का प्रयास भी किया पर विफल हुई.

अदालत ने उसे पंद्रह वर्ष की सजा सुनायी थी. चौदह वर्ष उसने मिस्र के जेल में काटे और फिर जब 'छः दिन का युद्ध समाप्त हुआ तब उसके देश ने कैदियों की अदल-बदल में उसे सन् 1965 में छुड़ा लिया.

अपने जीवन-वसंत के बहुमूल्य चौदह वर्ष पत्थर के पिंजरे में काटकर थकी हारी मार्सेल जब अपने देश की धरती पर उतरी तब उसे उचित सम्मान दिया गया. फूल मालाओं से उसे लाद दिया गया.

उसके पतझड़ में एक बार फिर आशाओं की कोपलें उगने लगीं और फिर उसने दिसंबर 1971 में इजराइली कर्नल अली बोगर से विवाह किया. उसका विवाह बड़े धूमधाम से हुआ था और विवाह के प्रीतिभोज में इजराइल की प्रधानमंत्री गोल्डा मायर अन्य फौजी जनरल एवं जासूस अफसरों के साथ आयी थीं. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पेंटिंग मेरे काम आ सकती है, मैंने उससे वह मांगी. उसने खुशी-खशी वह मुझे उपहार में दे दी."

"वह पेंटिंग तुम्हारे कैसे काम आ सकती है?"

"उसे दिखाकर मैं उसे ब्लैकमेल कर सकती हूं. इसे मजबूर कर सकती हूं कि मेरे इंग्लैंड वापस लौटने पर उसने प्रतिबंध लगाये हैं, वह उन्हें वापस ले."

हैजल ने कुछ देर सोचकर उससे कहा, "यह काम तुम्हारे बस का नहीं है. इसे मुझ पर छोड़ दो. मेरे साथ वह पेंटिंग लेकर किसी फोटो-स्टूडियो में चलो. वहां हम उसकी एक रंगीन ट्रांसपेरेंसी निकलवायेंगे."

डाक्टर गोयरलिज के भव्य कार्यालय से बाहर आते हुए भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति अर्नशा पहले से भी अधिक अपमानित और व्यथित अनुभव कर रहे थे. पहले तो डॉक्टर ने उनसे मिलने से ही इंकार कर दिया था. लेकिन दुबारा अनुनय-विनय करने पर वह उन्हें सिर्फ दस मिनट देने के लिये राजी हुआ था. इस मुलाकात में उसने अर्नशा की इस प्रार्थना को कि वह अपने शीघ्र प्रकाश्य संस्मरणों में से उनसे संबंधित अध्याय को निकाल दे, ठुकरा दिया था, और उन्हें खूब खरी-खोटी सुनायी थी." तुम एक अयोग्य, कमजोर और कच्चे किस्म के राष्ट्रपति थे, मिस्टर अर्नशा. तुम्हारी अक्ल का दीवाला निकल गया था, और तुमने अपना सारा कार्यभार अपने विदेश-सचिव मेडलाक को सौंप रखा था. तुम उसके हाथों की कठपुतली बने हुए थे. मेडलाक की ढुलमुल नीतियों के कारण ही चीन को अमरीकी प्रोफेसर वार्ने की, जो अमरीका छोड़कर चीन चला गया था, न्यूट्रॉन बम मिला. इतना ही नहीं, तुमने मेडलाक की इस नीति पर चलकर कि अमरीका चीन को जितना शक्तिशाली बनायेगा, उतना ही वह उसके साथ मिलकर रूस का विरोध करेगा कि प्रक्षेपास्त्र निर्माण करने के लिये आवश्यक सामग्री भी दी. जिसकी सहायता से वह अपने-न्यूट्रान, हाइड्रोजन और परमाणु बम, जो तुमने ही से बनाने दिये, दूसरे देशों पर फेंक सकता है. चीन तुम्हारी अदूरदर्शी नीतियों के कारण ही विश्वशांति के लिये खतरा बना."

"लेकिन मैंने कभी ऐसा नहीं किया," अर्नशा ने हताश स्वर में कहा था.

"तो क्या ये कागजात झूठे और नकली हैं?" डाक्टर गोयरलिज ने एक फाइल उनके सामने फेंकते हुए कहा.

फाइल में ऐसे कुछ कागजों की जेरोक्स प्रतियां थीं, जिसमें उन्होंने अमरीकी राष्ट्रपति की हैसियत से गोयरलिज उद्योग-समूह को एक अधिकार दिया था कि वह प्रक्षेपास्त्रों के निर्माण और न्यूट्रान बम के विकास से संबंधित सामान तथा प्रौद्योगिकी लाल चीन को अल्बानिता और शहनाई की मार्फत दे. उसका भुगतान अमरीकी सरकार अपने गुप्त खाते से गोयरलिज उद्योग समूह को करेगी. पत्र व्हाइट हाउस (राष्ट्रपति भवन) की स्टेशनरी पर था, और हस्ताक्षर उन्हीं के थे. अब कुछ कहने-सुनने को बाकी नहीं रह गया था. उन्होंने हिम्मत करके निवेदन किया, "डॉक्टर गोयरलिज, मुझ पर रहम करो. मुझे तबाह मत करो. उस अध्याय को पुस्तक से निकाल दो."

"क्यों निकाल दूं?" जब तुमने मुझे जाने से रोकने का कोई प्रयास नहीं किया, तो मैं तुम्हें तबाह न होने देने के लिये क्यों प्रयास करूं? अब तुम जा सकते हो, अर्नशा. तुम्हारे दस मिनट पूरे हो गये हैं."

गोयरलिज के कार्यालय से बाहर आते समय भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति अर्नशा जितना अपमानित महसूस कर रहे थे, वैसा उन्होंने जीवन में पहले कभी महसूस नहीं किया था. उन्हें लग रहा था, जैसे कोई उनके अंग-अंग में कांटे चुभ रहा है.

बाहर आये, तो एक महिला ने उनका अभिवादन किया, और उनसे बातें करने के लिये रुक गयी. वे उसे पहचान नहीं पाये. तब, महिला ने अपना परिचय स्वयं उन्हें देते हुए कहा, "गुडमार्निंग, मिस्टर अर्नशा. मैं हैजल स्मिथ हूं. 'न्यूयार्क हैरल्ड ट्रिब्यून' की पेरिस प्रतिनिधि. भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति को मेरा अभिवादन."

"ओह! एक महिला पत्रकार? कैसी हैं आप?"

"मैं ठीक हूं. मगर आप कुछ परेशान नजर आते हैं."

"अ....हां! असल में....."

"आइये, मेरी कार में थोड़ी देर के लिये बैठ जाइये, और ठीक समझें तो अपनी परेशानी की दास्तान मुझे सुनाइये. हो सकता है, मैं आपके कुछ काम आ सकूं."

डूबते अर्नशा को तिनके का सहारा मिला. उन्होंने हैजल का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया. बाद में उन्होंने सहृदय हैजल को अपनी सारी व्य—था कथा, बिना कुछ छिपाये, सुनायी. हैजल ने कहा, "आप मुझे अपना पता और फोन नंबर देने की कृपा करें. मैं आपसे दो-तीन दिन बाद संपर्क करूंगी."

'न्यूयार्क हैरल्ड ट्रिब्यून' जैसे विश्वविख्यात पत्र का नाम सुनते ही सर ऑस्टिन की पत्नी फ्लर हैजल को इंटरव्यू देने को तैयार हो गयी.

फ्लर अपने जमाने की इनीगिनी विश्वसुंदरियों में से एक थी. उसके असंख्य प्रेमी प्रायः सभी देशों व जातियों के थे, और उनके कारण उसके इर्दगिर्द अनेक स्कैंडल भी उछले थे. मगर, चतुर, बुद्धिमता फ्लर उन सबका अतिक्रमण कर, सर ऑस्टिन जैसे प्रतिष्ठित और गणमान्य पुरुष से विवाह कर, लोगों के सामने अपनी एक नयी छवि उभारने के लिये प्रयत्नशील रहती थीं. फ्लर ने थोड़ी देर बात करते ही, हैजल भांप गयी कि उसके इंटरव्यू के माध्यम से फ्लर अपनी किस छवि के साथ दुनिया के सामने आना चाहती है. उसने बड़ी सफाई से इंटरव्यू के प्रवाह को उसी ओर मोड़ा.

इंटरव्यू की समाप्ति पर जब दोनों महिलाएं काफी पी रही थीं तब हैजल ने फ्लर से पूछा, "क्या आप विश्वविख्यात कलाकार नार्दे से परिचित हैं?"

"नार्दे....नार्दे? नाम तो सुना है, मगर...."

"उनका दावा है कि आप वर्षों पूर्व उनकी प्रेमिका थीं, और आपने न्यूड पेंटिंग बनवायी थी."

"न्यूड पेंटिंग, मेरी न्यूड पेंटिंग?"

"जी हां. शायद यह ट्रांसपेरेंसी देखकर आपकी याददाश्त ताजा हो सके. यह देखिये, यह नार्दे द्वारा बनायी गयी आपकी ही उस न्यूड पेंटिंग की ट्रांसपेरेंसी है, जो इस समय मेरे कब्जे में है."

"मैं... न्यूड पेंटिंग.... यह क्या बकवास है? क्या तुम मुझे इस बहाने ब्लैकमेल करने की कोशिश कर रही हो, डियर? मगर ब्लैकमेल करना एक जुर्म है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैं एक मामूली महिला-पत्रकार [illegible] हूं? आप इस धनी और प्रभावशाली विश्वविख्यात महिला हैं. आपके पति ब्रिटेन के एक मंत्री और प्रमुख पुस्तक-प्रकाशक हैं. आप दोनों के सामने मेरी क्या बिसात?''

फ्लर ने दुनिया देखी थी. वह समझ गयी कि उसकी न्यूड पेंटिंग का यह चित्र दिखाकर यह चालाक औरत या तो उससे कुछ वसूलना चाहती है, या कोई काम कराना चाहती है. मगर क्या? उससे सीधे पूछना ही ठीक रहेगा. उसने पूछा, ''साफ-साफ कहो, इस पेंटिंग के बदले क्या चाहती हो?''

''अच्छा किया कि आपने साफ-साफ पूछ लिया. इससे हम दोनों का समय बच जायेगा. देखिये, यह पेंटिंग तो आपके हाथ आने वाली नहीं है, हालांकि मैं आपको यह आश्वासन देती हूं कि मैं कभी उसका दुरूपयोग नहीं करूंगी, न होने दूंगी..... अपने पति से कहिये कि एक सप्ताह के अंदर-अंदर मेडोरा हार्ट नाम की लड़की के कागज पक्के और वैध करके उसके इंग्लैंड लौटने की व्यवस्था कर दे उसके हाथ में बतौर हर्जाना 2500 पौंड देकर. और यदि उन्होंने ऐसा न किया, तो मैं आप दोनों की जिंदगी में ऐसा तूफान खड़ा कर दूंगी कि आप दोनों किसी को अपना मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहेंगे. मैं चुप बैठ जाने वाली मेडोरा हार्ट नहीं, शोर और तूफान मचाने वाली हैजल स्मिथ हूं, जिसका घनिष्ठ परिचय कम से कम एक दर्जन प्रभावशाली पत्रों के संपादकों से हैं.''

तीन दिन के अंदर ही, मेडोरा हार्ट के ब्रिटेन वापस जाने का प्रबंध हो गया. जाने से पूर्व, उसने हैजल से मिलने और उसका शुक्रिया अदा करने के बहुत प्रयास किये, मगर हर बार, उसे यह मालूम पड़ा कि हैजल शिखर सम्मेलन की रिपोर्टिंग में व्यस्त है, निराश, मेडोरा हार्ट हैजल से मिले बिना ही वापस इंग्लैंड चली गयी. उसे यह बात कभी भी नहीं पता चलेगी कि मेडोरा हार्ट का काम पूरा करने के बाद, हैजल उसकी ओर से एकदम अनासक्त और उदासीन क्यों हो गयी थी—अलिप्त नायिका.

अब उसका ध्यान भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति अर्नशा को डॉक्टर गोयरलिज के चंगुल से मुक्त करने के प्रयासों में लगा था. और वह मन ही मन जानती थी कि इन प्रयासों के सफल होते ही वह अर्नशा के प्रति भी अनासक्त और उदासीन हो जायेगी. लोग उसे 'अलिप्त नायिका' कहते हैं, तो गलत नहीं कहते, शायद!

दो दिनों तक, रोस्तोव की सहायता से वह चीनी प्रधानमंत्री, उसके सलाहकारों और चीनी प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों से मिलने में व्यस्त रही. पत्रकार के रूप में भी, और जासूस के रूप में भी.

पत्रकार के रूप में उसने रोस्तोव के कहने पर रूस और चीन के संबंधों के बारे में जो रपट दी, उसमें कहा गया था कि सीमा-विवाद तथा अहं समस्या से पीड़ित होने के कारण भले ही दोनों देशों से संबंध पहले जैसे प्रगाढ़ न दिखायी देते हों, लेकिन दोनों देश सैद्धांतिक रूप से कम्यूनिस्ट पहले हैं, विरोधी बाद में. जहां कम्यूनिज्म के हितों की रक्षा का प्रश्न आयेगा, दोनों सब मतभेद भुलाकर एकजुट हो जायेंगे. हैजल को दी गयी एक विशेष भेंट में चीन के प्रधानमंत्री ने इस नीति की पुष्टि की थी. रूस ने भी अप्रत्यक्ष रूप से इस बात की सच्चाई को स्वीकार किया था.

'न्यूयार्क हैरल्ड ट्रिब्यून' में इस रपट के प्रकाशन के बाद, न्यूज एजेंसियों ने इसे अन्य सभी समाचारपत्रों को प्रकाशनार्थ भेजा, और उन्होंने उसे सहर्ष प्रकाशित किया, क्योंकि यह रपट अन्य [illegible] थी, जिसमें कहा गय था कि चीन और रूस जो पहले भाई-भाई थे, अब कट्टर शत्रु हैं. हैजल ने वस्तुस्थिति का ज्यादा सही आकलन प्रस्तुत किया था.

मगर, इन दो दिनों में जो सबसे कीमती सूचना उसे मिली, वह चीनी प्रधानमंत्री से नहीं, उनकी पत्नी से मिली.

चीन के प्रधानमंत्री की पत्नी अंग्रेजी बड़ी साफ और शुद्ध बोल लेती थीं. अंग्रेजी के अलावा उसका फ्रेंच पर भी अच्छा अधिकार था. जब हैजल प्रधानमंत्री के कक्ष के बाहर बैठी अपने बुलावे का इंतजार कर रही थी, तो उसने देखा कि उनकी पत्नी कक्ष से बाहर आयीं; और उस बाहरी कक्ष में, जहां वह बैठी थी, किसी को फोन करने लगीं. फोन करने से पूर्व, उसने हैजल की ओर क्षण भर के लिए देखा, और फिर फ्रेंच भाषा में फोन करने लगीं. उसका ख्याल था कि हैजल को फ्रेंच भाषा नहीं आती होगी, पर हैजल फ्रेंच अच्छी तरह जानती थी.

प्रधानमंत्री की पत्नी फोन पर किसी से कह रही थीं ''किसी से कहना मत, लेकिन मुझे अभी-अभी अपन पति से मालूम हुआ है कि चीन की सरकार द्वारा जैसेही डाक्टर गोयरलिज चीन में अपने परमाणु नगर कर निर्माण पूरा कर लेगा, उस परमाणु नगर का राष्ट्रीयकरण हो जायेगा, और डॉक्टर गोयरलिज को चीन से बाहर निकाल दिया जायेगा. चूंकि चीन राष्ट्रसंघ का सदस्य नहीं है, इसलिए वह अंतरराष्ट्रीय अदालत में कोई शिकायत भी नहीं कर सकेगा. उसकी अरबों की जो हानि होगी, वह अलग. चीन इसी प्रकार पूंजीवादियों से बदला लेगा.....''

जैसे किसी अंधेरी गली में एक रास्ता दिखायी दे गया हो. हैजल को लगा कि वह अपने राष्ट्र के भूतपूर्व राष्ट्रपति अर्नशाा को बचा सकेगी.

जिस दिन शिखर सम्मेलन समाप्त हुआ, उसी रात को डाक्टर गोयरलिज ने चीनी प्रतिनिधिमंडल के सब सदस्यों को पेरिस के सबसे शानदार होटल में एक भव्य भोज दिया. यह भोज अगले दिन चीनी सरकार और डाक्टर गोयरलिज के बीच परमाणु-नगर के निर्माण के समझौते पर हस्ताक्षर करने के उपलक्ष्य में दिया गया था.

हैजल ने चीन के प्रधानमंत्री का जो इंटरव्यू लिया था, उससे वे बहुत हर्षित और प्रभावित हुये थे, चूंकि उसने प्रधानमंत्री महोदय के विचारों को बिना तोड़े-मरोड़े उसी रूप में व्यक्त किया था, प्रधानमंत्री के कहने पर इस भोज में हैजल को भी आमंत्रित किया गया था.

हैजल ने इस अवसर का लाभ उठाकर, डाक्टर गोयरलिज के और निकट आने का प्रयास किया. चूंकि उसका परिचय स्वयं चीन के प्रधानमंत्री ने डाक्टर गोयरलिज से कराया था. इसलिए डॉक्टर गोयरलिज ने भी उसके साथ ऐसे व्यवहार किया, मानो वह अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति ही हो.

उसके अनुरोध पर डाक्टर गोयरलिज भोज के तुरंत बाद, हैजल की एक विशेष इंटरव्यू देने को तैयार हो गये. हैजल ने उनसे कहा कि वह प्रस्तावित परमाणु-नगर का पूरा विवरण और पूरी रूपरेखा चाहती है, और वह उसे रात में ही अपने पत्र को प्रेषित कर देगी, जिससे वह इस सचित्र विवरण को समझौते के हस्ताक्षर के समाचार के साथ प्रकाशित कर सके.

डा. गोयरलिज की खुशी का ठिकाना न था. उनकी योजना को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतनी उम्दा पब्लिसिटी की [illegible] विज्ञापन-एजेंसी या जन संपर्क संस्था भी भारी रकम देकर नहीं कर सकती थी. भोज के पश्चात् वे अपनी शानदार मर्सिडीज में उसे 40 शयन-कक्षों वाले अपने निवास-स्थान पर ले गये, जहां उन्होंने विस्तार के साथ अपनी परमाणु-नगर योजना के बारे में हैजल को बताया. हैजल ने हाथ के हाथ उसे अपने शब्दों में लिया, सब चित्र रेडियो फोटो पद्धति से और विवरण सीधे फोन द्वारा अपने कार्यालय को प्रेषित कर दिया.

डा. गोयरलिज जो स्वयं 70 वर्ष की आयु में भी कर्मठ व्यक्ति थे, और कार्य-कुशलता के प्रशंसक थे, हैजल की मुस्तैदी और कार्यक्षमता से बहुत प्रभावित हुये.

सुबह, नाश्ता करते-करते, हैजल ने डाक्टर गोयरलिज से कहा, ''मैं इसे अपना परम सौभाग्य मानती हूं कि आपसे भेंट हो सकी. आप सचमुच विलक्षण व्यक्ति हैं.''

''शुक्रिया! मगर मैं अपने अंदर कोई विलक्षणा नहीं पाता.''

''चीन जैसे देश के साथ जिसका आचरण अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में सदा अनुमान का विषय रहा है, और जिसके साथ अमरीका और रूस जैसे देश भी अपने संबंध कभी स्थायी और सुदृढ़ नहीं कर पाये, आपने अच्छे संबंध स्थापित कर सचमुच अपनी विलक्षणता का परिचय दिया है. यदि मैं गलती नहीं करती हूं, तो चीन के साथ आपके व्यापारिक संबंध हमारे राष्ट्रपति अर्नशा के काल में आरंभ हुए थे.''

''अ.. हां.''

''आप ही के माध्यम से उन्होंने प्रक्षेपास्त्रों के निर्माण संबंधी प्रौद्योगिकी तथा आवश्यक सामग्री दो देशों के जरिये भिजवाये थे.''

''मैंने अपने शीघ्र प्रकाशित होने वाले संस्मरणों में इसका सविस्तार वर्णन किया है.''

''हां, मैंने सुना है. और, यह भी सुना है कि आप उन्हें एक अयोग्य, लापरवाह और..... राष्ट्रविरोधी तक रहा है.''

''हां, अर्नशा के बारे में मेरा यह मत है.''

''हूं... यदि उन्होंने चीनियों को यह सामग्री और जानकारी देकर कोई अपराध किया, तो... तो क्या आप भी उनके साथ इस अपराध में सहभागी नहीं थे?''

''नहीं. मैं एक व्यापारी हूं. जहां लाभ देखता हूं, पैसा लगाता हूं, या मेहनत करता हूं.''

''ठीक! आप व्यापारी हैं. और मेरा ख्याल है कि हर व्यापारिक सौदे को हाथ में लेने से पहले उसे खूब ठोक-बजा लेते होंगे, यह जानने के लिये कि आपको उसमें हानि तो नहीं होगी?''

''यह तो पहली सतर्कता है, जो हर व्यापारी बरतता है... मगर आप यह सब सवाल मुझसे क्यों कर रही हैं, मिस हैजल स्मिथ?''

'' आपके हित में ही कर रही हूं.''

''मैं आपका मतलब नहीं समझा.''

''अभी समझाती हूं. अच्छा, एक क्षण को कल्पना कीजिये कि आपसे आपके खर्चे पर परमाणु नगर का निर्माण करवाने के बाद, चीन की सरकार आपकी छुट्टी कर देती है, और न आपका भुगतान करती है, न आपके साथ किये जाने वाले समझौते की अन्य शर्तों का पालन करती है, तो आप क्या करेंगे?''

''यह नामुमकिन है. ऐसा नहीं हो सकता. कभी होगा भी नहीं.''

''लेकिन यदि ऐसा हो जाता है तो.... तो, आप क्या करेंगे?''

''मगर...'' कहकर डाक्टर गोयरलिज विचारमग्न हो गये.

हैजल कहती रही, ''चीन अभी तक राष्ट्रसंघ का सदस्य नहीं है और न ही अंतरराष्ट्रीय अदालत को मान्य करता है. अगर वह आपके साथ समझौता करके आपको भुगतान नहीं करता, समझौते की किसी या सब शर्तों को भंग करता है, तो आपके पास सहने और चुप बैठने के अलावा कोई और चारा न होगा. दुनिया का कोई भी व्यक्ति, कोई भी ताकत आपकी सहायता नहीं कर पायेगी.''

डाक्टर गोयरलिज अभी तक खामोश सुन्न-बैठे थे. वे मन ही मन अपने को कोस रहे थे कि इतने समझदार व्यापारी होते हुए भी उनसे ऐसी भयंकर चूक कैसे हो गयी. चीन पर इस सीमा तक इतना अधिक विश्वास उन्होंने कैसे कर लिया?

तभी, हैजल ने कहा, ''मैं पिछले दो दिनों से चीनी प्रतिनिधिमंडल के छोटे-बड़े सदस्यों के बीच रही हूं, उनसे काफी बातें की हैं, कि चीन का यही इरादा है, जिसकी कल्पना करने को मैंने आपसे कहा था. चीन की सरकार आपके साथ अवश्य विश्वासघात करेगी.''

अब डाक्टर गोयरलिज संभले. बोले, ''आपने मुझे बचा लिया.''

''अब आपका इरादा क्या करने का है?''

''मैं कल चीनियों से समझौता तो करूंगा, लेकिन एक-दो शर्तें अपनी भी रखूंगा.''

''मुझे खुशी है कि मैं आपके कुछ काम आ सकी. अच्छा, इजाजत चाहती हूं.''

''नहीं, आप ऐसे नहीं जायेंगी, मिस हैजल! मैं नाशुक्रा आदमी नहीं हूं.'' कहकर वे अंदर गये और एक चैकबुक लेकर लौटे. एक खाली चैक पर अपने हस्ताक्षर करके उन्होंने कहा, ''आप इसमें जितनी रकम चाहें, भर सकती हैं. यह आपकी फीस होगी, मेरी आंखें खोलने के लिये.''

''मैंने आपसे कुछ लेने के लिये आपको यह गुप्त सूचना नहीं दी थी, डॉक्टर! मगर आप कुछ देना ही चाहते हैं, तो मुझे रकम नहीं, आपसे बदले में कुछ और चाहिये.''

''कुछ और? क्या?''

''सिर्फ यह तो कि आप अपने संस्मरणों में से अर्नशा वाला अध्याय निकाल दें.'' डाक्टर गोयरलिज ने कहा कुछ नहीं, मगर चकित से हैजल को देखते रहे.

अर्नशा हैजल से फोन पर यह जानकर कि डा. गोयरलिज ने उनके बारे में लिखे गये अध्याय को अपने संस्मरणों में से निकालने का वायदा कर लिया है, कुछ क्षण के लिये अवाक् रह गये. और, जब वह उससे कुछ कहने को तैयार हुये तो उधर से फोन कट चुका था.

उन्होंने हैजल स्मिथ को ढूंढने का बहुत प्रयास किया, लेकिन हर जगह से यह मालूम पड़ा कि वह एक सप्ताह के लिये पेरिस से बाहर कहां चली गयी थी, कोई नहीं जानता था.

अर्नशा उसे जितना खोजते रहे, वह उनसे उतना ही दूर भागती रही. अब वे महत्वहीन... अर्थहीन हो गये थे—उस अलिप्त नायिका के लिये... □

प्रस्तुति : हरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक विषकन्याएं

देवप्रिया

स्कॉटलैंड का एक बहुत खूबसूरत शहर है—एडिनब्रा. यह शहर दुनिया भर के सैलानियों को आकर्षित करता रहा है. पर करीब सवा साल पहले एडिनब्रा का नाम 'आधुनिक विषकन्याओं' से भी जुड़ गया. एक सर्वेक्षण में यह पाया गया कि इस शहर की अधिकांश वेश्याएं एड्स के घातक रोग से पीड़ित हैं. वे यह रोग अपने ग्राहकों से ले कर फिर वापस उन्हीं को दे देती हैं.

वैसे तो पश्चिम के अधिकांश आधुनिक नगरों में ये विषकन्याएं आज मौजूद हैं, लेकिन एडिनब्रा और एड्स का संबंध इसलिए भी लगभग कुख्यात हो गयाकि वहां पर नशीली औषधों के रोगी काफी थे. ये रोगी इन औषधों को अपने खून में पहुंचाने के लिए जिन सुइयों का इस्तेमाल करते थे, वे एक से दूसरे हाथ में जाती थीं. नतीजा यह हुआ कि इन रोगियों ने वेश्याओं के संपर्क में आकर एड्स के वायरस को फैलाने का काम किया और चूंकि एड्स का वायरस अपना घातक रूप कभी कभी पांच-छह बाद भी दिखा सकता है इसलिए यह बताना बड़ा मुश्किल हो जाता है कि किसी शहर में आने वाले पांच सालों में एड्स के कितने और रोगी बढ़ जायेंगे.

पश्चिम के सिनेमा में जेम्स बांड की आधुनिक छवि आज से 26 साल पहले पर्दे पर आयी थी. कई अर्थों में जेम्स बांड पश्चिमी सभ्यता का प्रतीक बन गया था. उसके एक हाथ में पिस्तौल होती थी और दूसरे हाथ में एक दर्जन लड़कियां भी दिखायी देती थीं. जासूसी के खतरनाक कारनामे दिखाते हुए, वह जिस किसी भी लड़की के संपर्क में आ जाता था, उसे वह बिस्तर पर ले जाना न भूलता था! लेकिन जेम्स बांड ने पिछले साल जब अपनी इस छवि के 25 साल पूरे किये, तो जो नयी फिल्म 'लिविंग डे नाइट' रिलीज हुई उसमें जेम्स बांड के पिस्तौल वाले कारनामे तो बरकरार थे, पर इन प्रेमिकाओं की संख्या काफी कम हो गयी थी. बल्कि इस पूरी फिल्म में जेम्स बांड अपना अधिकांश समय एक ही लड़की के साथ बिताता है. क्यों?

•पश्चिम में यह मान लिया गया कि अब अगर मीडिया में इस तरह के अय्याश नायकों को बढ़ावा दिया जायेगा, तो विषकन्याएं बढ़ती ही चली जायेंगी

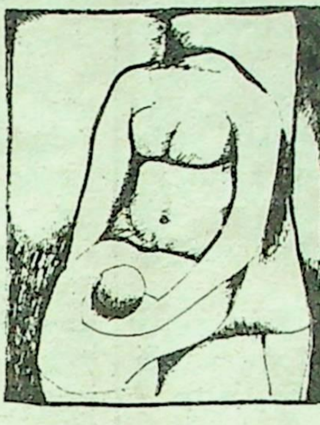

टेलीविजन के धारावाहिकों की पटकथाओं में आवश्यक सुधार किये गये. उच्छ्रंखल किस्म के नायकों को नये रूप में पेश किया गया. पिछले साल लंदन में एक ऐसा टी.वी. धारावाहिक बहुत लोकप्रिय सिद्ध हो रहा था, जिसका अधेड़ नायक एड्स का शिकार हो जाता है और वह अपनी पुरानी जिंदगी के मुक्त प्रेम संबंधों को दर्दनाक ढंग से याद करता है. लेकिन अब कुछ हो नहीं सकता है. विष उनके खून में प्रवेश कर चुका है.

यह अब एक बहुत जानी हुई बात है कि एड्स और समलैंगिकता का काफी गहरा संबंध है. लेकिन यह रोग वेश्याओं और ऐसी स्त्रियों से बड़ी आसानी से फैल जाता है, जो बिना किसी दिक्कत के किसी भी पुरुष के बिस्तर में चली जाती हैं.

आज पश्चिम में लोग एड्स को लेकर काफी डरे हुए हैं, लेकिन विकासशील और पिछड़े हुए देशों में तो इस तरह के रोग और भी अधिक घातक सिद्ध होते हैं. पश्चिम में कम से कम कुछ चीजों पर नियंत्रण किया जा सकता है. मीडिया की मदद से लोगों को डराया और धमकाया जा सकता है. लेकिन भारत सरीखे देशों में विषकन्याएं सेक्स से जुड़े तमाम दूसरे लोगों के उलपब्ध टीके ही नहीं लगवाती हैं, वे भला एड्स को आंधी को कैसे रोक पायेंगी.

शुरू-शुरू में जब पश्चिम में एड्स का काफी हो हल्ला हुआ था, तो भारत में सोचा जा रहा था कि यह रोग हमसे बहुत दूर है. लेकिन ऐसा है नहीं. यह भी सोचा जा रहा था कि इस रोग की तस्वीर कहीं बढ़ा चढ़ाकर तो नहीं पेश की जा रही है. इसके पीछे कहीं 'चर्च' तो नहीं है. बहरहाल अब स्थिति काफी बदल चुकी है. यह स्पष्ट हो गया है कि आधुनिक युग में हमें इस रोग कोदूर का या अजनबी मानने की गलती नहीं करनी चाहिए. पर सवाल यह है कि इस रोग का मुकाबला कैसे किया जाये?

भारतीय चिकित्सकों और विशेषज्ञों ने तरह तरह से सुझाव दिये हैं. एक सुझाव तो यही है कि विदेशियों को जांच के बाद ही देश मेंआने दिया जाये. पर यह सुझाव बहुत व्यावहारिक नहीं है. दूसरा सुझाव और भी दिलचस्प है. इसके अनुसार, विदेशी स्त्रियों से सेक्स संबंध कानूनी रूप से रोके जायें. अपने आप में यह एक हास्यापद सुझाव है और व्यक्ति की स्वाधीनता पर खुला प्रहार है. ऐसा मान लिया गया है कि पश्चिम से आने वाली हर स्त्री मुक्त संबंधों में विश्वास करती है. इसी मानसिकता के कारण अनेक अकेली विदेशी महिलाओं को भारत के महानगरों अति आधुनिक बस्तियों में भी रहना मुश्किल हो जाता है. अधिकांश भारतीय इन महिलाओं को 'वेश्या' हो समझते हैं.

आज अधिकांश देशों में उस दिन का इंतजार किया जा रहा है जब एड्स का टीका मिल जाये. तब शायद 'एक स्त्री एक प्रेम ' का शोर फिर से धीमा पड़ जाये. लेकिन सुख के नर्क में डूब जाने की इच्छा रखने वाली आधुनिक सभ्यता इस तरह की चेतावनियों को बहुत महत्वपूर्ण नहीं मानती है. मीडिया ने पिछले दो सालों में एड्स के बारे में इतना अधिक लिखा है, पर इसके बावजूद बड़ी संख्या में लोग विषकन्याओं को गले लगाते हैं. शायद इस उम्मीद के साथ कि हर किसी में तो ये घातक रोग होते नहीं हैं. सिगरेट की डिब्बी के साथ तो यह चेतावनी रहती ही है कि 'धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है' पर सिगरेट पीने वाले इस पंक्ति का शायद अब अर्थ भी नहीं समझते होंगे. हो सकता है कि निकट भविष्य में कोई कानून बना दिया जाये कि वेश्या रूपी विषकन्याएं अपने गले में इस तरह को चेतावनी लटकाये रहें. 'हमारे साथ संबंध आपकी मृत्यु का कारण बन सकता है.' और धीरे धीरे इस तरह की चेतावनी भी अर्थहीन नजर आने लगेगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केकसी

जगदीशचंद्र पांडेय

वैसे यह बात नहीं कि दिवोदास सोमाली और माल्यवान के नाम से अपरिचित थे. यह दूसरी बात थी कि वे उस केकसी के नाम से अपरिचित थे जिसने धूल में मिल आये इन दोनों को संसार प्रसिद्ध बनाने में एक अजीब भूमिका निभाई थी. कारण वह नारी थी जिसके कारण राक्षस एक बार फिर इंद्र के सामने तनकर खड़े हो आये. अन्यथा तो शायद रक्ष संस्कृति का नाम लेनेवाला तक संसार में कोई बचा नहीं रहता. पर बावजूद इसके संसार ने नारी की ऐसी भूमिकाओं की ओर देखा कहां है. संसार ने तो केवल पुरुष को सराहा है. भारद्वाज भी इसके अपवाद नहीं थे. तभी तो उनके मुंह से दिवोदास ने इनका नाम कई बार सुना था. बल्कि एक बार तो भारद्वाज ने यहां तक कहा था, "दिवो, अगर तुम्हें सोमाली और माल्यवान से ज्ञान प्राप्त करने का सुअवसर मिल पाता तो जाने संसार का कितना बड़ा कल्याण होता. क्योंकि इस समय संसार को जिस ज्ञान की आवश्यकता है उसमें इस समय सारे संसार में उनसे कोई मुकाबला नहीं कर सकता" तभी तो उनके मन में उनके प्रति धारणा थी—वे दोनों वैसे ही ज्ञानी होंगे जैसे वसिष्ठ, विश्वामित्र, शौनक आदि.

मगर आज जब उन्होंने भारद्वाज की बातें सुनीं तो स्तब्ध रह गये. उन्हें यह समझने में देर नहीं लगी—सोमाली और माल्यवान सही अर्थों में उसके गुरुदेव के प्रतिद्वंदी हैं. उनकी चिंता का कारण था—उसके गुरुदेव उनके जिन प्रहारों के उत्तर की उससे अपेक्षा करते हैं उनके बारे में चौकसी केवल तब बरती जा सकती है जब उनकी असलियत का उन्हें पता चले. इसीलिए उसके बाद उन्होंने उनके बारे में भारद्वाज से कई बार पूछा. पर वे थे कि उसकी हर बात को अब टाल जाते थे. नतीजा यह कि इसके बाद उन्होंने उनके बारे में अपनी तरह से खोजबीन शुरू की. उनके पास अब जो भी ऋषि-मुनि आते थे वे उनसे सोमाली और माल्यवान के बारे में बातें करते. और तो उनके बारे में बता नहीं पाये. शौनक से उन्हें उन तथ्यों का पता चला—जिनकी जानकारी मिलते ही वे चौंक पड़े. एक तो अब एक सोमाली और माल्यवान अपने असली रूप में आ चुके थे. यानि कि वे लंका में रावण का राज्य स्थापित कर चुके थे. दूसरे दिवोदास को उनके उस अतीत का पता चला जो उनकी लगन और दृढ़ संकल्प की एक अनोखी मिसाल तो थी ही साथ ही उनकी लगन के पीछे वह केकसी थी जिसने उन्हें धूल से उठाकर संसार प्रसिद्ध बनाया था.

इनके सबसे बड़े भाई माली का उस समय लंका में राज्य था जिस समय दिवोदास के राज्य में प्रहलाद के पुत्र विरोचन का राज्य था. तब विरोचन और इंद्र के बीच संसार प्रसिद्ध युद्ध हुआ था. तब माली, सोमाली और माल्यवान विरोचन की मदद को आये थे. मगर उस युद्ध का परिणाम कि विरोचन के साथ न केवल माली मारा गया वरन विरोचन, माली, सोमाली और माल्यवान के सारे पुत्र तथा बंधु-बांधव मारे गये. यानि कि वह युद्ध राक्षसों के लिए काल बन आया जिसमें न केवल उनकी पूरी शक्ति खत्म हो आयी वरन संसार से शुक्राचार्य का वह वर्चस्व तक हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हो आया जिसके बल पर वे देवताओं को अब तक लगातार चुनौतियां देते आये थे क्योंकि वे एक ऐसी विद्या जानते थे कि जिसके बल पर वे राक्षसों के मृतयोद्धाओं को जिंदा कर देते थे. शुक्राचार्य की यही तो विद्या देवताओं के लिए परेशानी का कारण थी. पर इस युद्ध में शुक्राचार्य ने राक्षसों का अनमने मन से साथ दिया. कारण बलि से लेकर प्रहलाद तक ने उनकी सलाह की उपेक्षा की थी. प्रहलाद ने उनकी इच्छा के खिलाफ इंद्र से संधि जो की थी. इसलिए मौके का फायदा उठा इंद्र ने इस युद्ध में ऐसा कत्लेआम करवाया जैसे उसने संसार से राक्षसों का बीज ही समाप्त करने का संकल्प ले डाला हो.

यह बात दूसरी थी कि नियति को यह मंजूर नहीं था, आखिर नियति यह जो जानती थी कि बिना राक्षसत्व के देवत्व की महत्ता असंभव है. सचमुच यही बात थी कि जब देवता सारे राक्षसों का क़त्लेआम कर रहे थे तब सोमाली और माल्यवान न केवल देवताओं और इंद्र के घेरे से बच निकले, वरन वे पाताल लोक या वर्तमान सोमाली लैंड में ऐसे जा छिपे जैसे दोनों इस युद्ध से यह एहसास कर चुके हों कि इंद्र से बदला अस्त्र शस्त्रों से नहीं दिमाग से लिया जा सकता है. क्योंकि इंद्र ने इस युद्ध में राक्षसों की औरतों तक को बख्शा नहीं था. वह तो इनका सुभाग था कि ये किसी तरह से चार वर्षीया केकसी को अपने साथ ले जाने में सफल हो गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यथा तो शायद इनके पूरे वंश का ही नाश हो जाता.

ऊपर से इस युद्ध के बाद इंद्र ने लंका का अधिपति कुबेर को बना दिया. अज्ञातवास के दौरान जब इन्हें लंका की नयी स्थिति का पता चला तो वे पूरी तरह खीझ उठे. अब तक वे समझे थे—यदि लंका का राज्य किसी कमजोर के हाथों चला गया हो तो वे किसी न किसी तरह लंका में फिर अपना राज्य स्थापित करेंगे. कुबेर के कारण अब लंका को हथियाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हो आया था. कुबेर के कारण अब ये दोनों इस बात के लिए चिंतित हो आये—देवता अब लंका में उनके अनुयायियों का छांट छांटकर कत्ल करवायेंगे. इसीलिए वे काफी परेशान हो आये. मगर वे इतने पर भी हताश नहीं हुए. उन्होंने संकल्प लिया—वे अपने जीते जी हर हालत में लंका को वापस लेंगे.

मगर ऐसा हो पाना आसान नहीं था. इसके लिए उन्हें महान योद्धाओं की जरूरत थी. उनकी अब वर्तमान स्थिति यह थी कि योद्धाओं का मिलना तो अलग, वे अपने दुखों को हल्का करने किसी से अपने मन की बात तक कह नहीं सकते थे. उनके पास शक्ति होती तो वे योद्धा तैयार कर सकते थे. वे तो स्वयं पाताल लोक में छद्म वेश में समय काट रहे हैं. असलियत को बताने में तक खतरा था—कहीं ऐसा न हो जिसे वे अपना समझें वही इंद्र को उनके जिंदा होने की खबर दे दे. इसीलिए वे पूरी तरह परेशान थे. अलबत्ता उनके लिए थोड़ी राहत की बात यह थी कि नन्हीं-सी गुड़िया केकसी के माध्यम से वे अपने दुखों को हल्का किया करते थे. उस तरह-तरह की कहानियां सुनाने के बहाने वे अपने मन की खीझ कम किया करते थे. यह दूसरी बात थी कि जैसे-जैसे केकसी बड़ी होती गयी वैसे-वैसे उनके लिए यह साधन भी खत्म हो आया. केकसी दिखने में बेहद सुंदर थी. चौदह पंद्रह साल की होने पर तो उसे देख उन्हें कुछ आशा बंधी. उसी के बल पर उन्होंने आपस में योजना बनाई-संतान प्राप्ति की इच्छा से अगर केकसी को विश्रवा के पास भेजा जाये और विश्रवा राजी हो जाये तो उनका काम बन सकता है. कारण इस प्रकार केकसी का बच्चा कुबेर का भाई हो जाने पर कुबेर के खिलाफ चाहे उन्हें विश्रवा का समर्थन न मिले पर केकसी के बच्चे का विरोध भी नहीं होगा. मगर प्रश्न यह था—यह बात बेटी से कही जाये तो कैसे. हालांकि उन दिनों ऐसी इच्छा जाहिर करना मान्य था. फिर राक्षसों में तो मुक्त सहवास तक मान्य था. मगर यहां प्रश्न अपनी इच्छा का नहीं था. यहां प्रश्न केकसी की इच्छा से जुड़ा हुआ था. पर मजबूरी ऐसी थी कि उन्हें अंततः ये बातें केकसी से कहनी पड़ीं. सुनकर वह चौंकी थी. पर चाचा की पूरी बात सुन कर वह राजी हो गई. पिता तथा चाचा के दुख का उसे भी तो पता था. पर इसके बावजूद उसने एक नया ही प्रश्न खड़ा कर दिया—वैसे वह अपनी ओर से तो कुछ कहेगी नहीं पर यदि विश्रवा जी ने उससे शादी करने की बात कही तो वह उसे स्वीकारेगी क्या.....

सचमुच इस प्रश्न के बारे में सोमाली और माल्यवान में से किसी ने सोचा नहीं था. फिर ऐसा हो आने पर पेचदिगियां भी कम

विश्रवा केकसी को देखते ही मोहित हो गये. उन्होंने उससे शादी की बात कह दी. केकसी सुंदर जो थी. उन्हें क्या पता था आगे चलकर केकसी उसके अपने लिए समस्या बनने वाली है.....

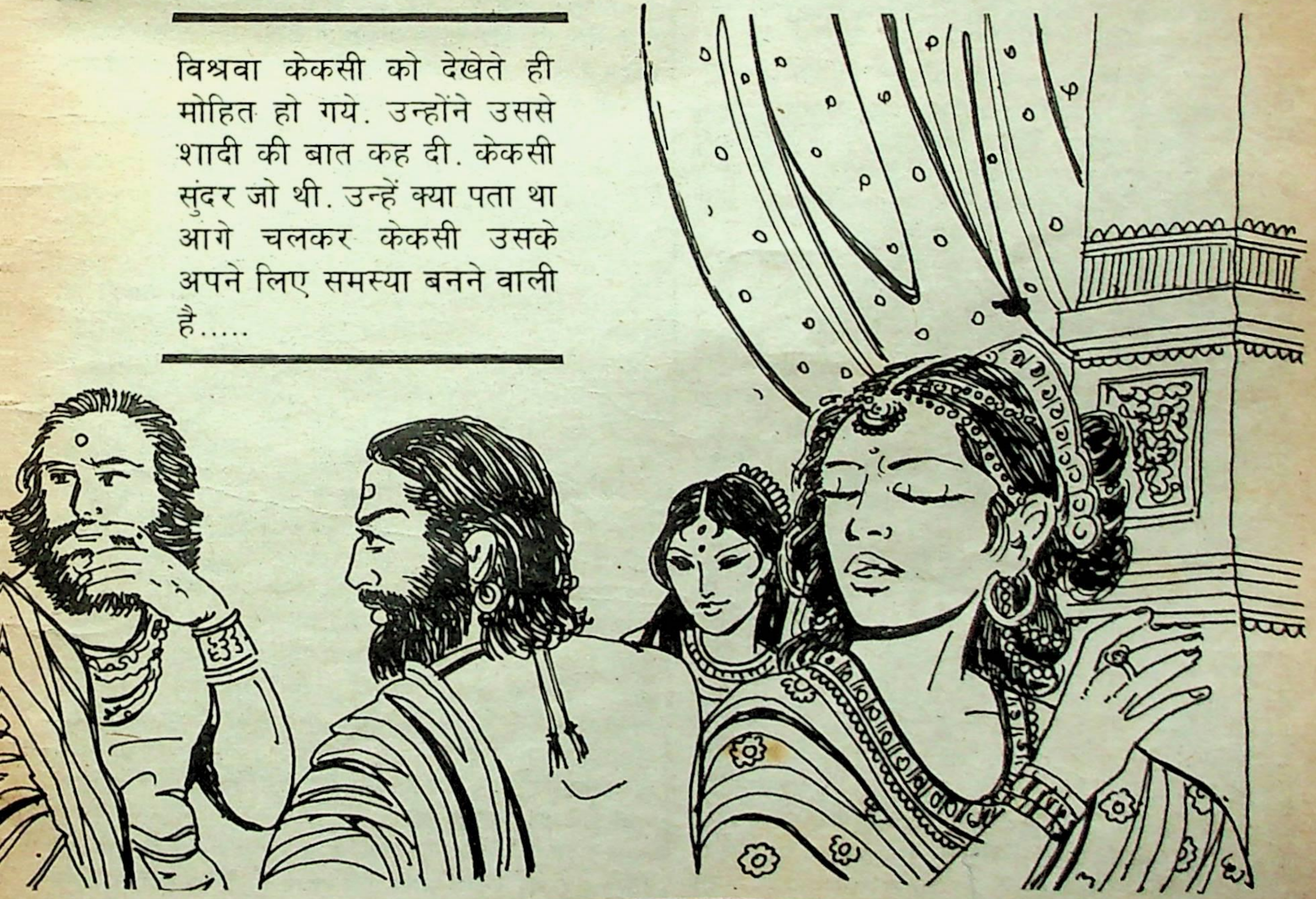

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं थीं. पहले तो लंबे समय तक केकसी के लिए अपना राज छिपाये रहना कठिन था. फिर बच्चे के विश्रवा के संरक्षरण में पलने पर खतरा यह भी था—कहीं वह उलटा उनका विरोधी न हो आये. पर बावजूद इसके बहुत सोच-विचार कर कूटनीति के तौर पर सोमाली ने केकसी को माल्यवान ने संरक्षण में विश्रवा के पास भेज दिया. विश्रवा केकसी को देखते ही मोहित हो गये. उन्होंने उससे शादी की बात कह दी. केकसी सुंदर जो थी. उन्हें क्या पता था आगे चलकर केकसी उनके अपने लिए समस्या बनने वाली है. बस अब क्या था, विश्रवा की इस बात के कारण सोमाली और माल्यवान की पूरी तरह बन गयी. कूटनीति के तौर पर पहले तो वे दूर रहे. फिर जब केकसी के रावण और एक पुत्र और हो आये तो वे भी विश्रवा के आश्रम में चले आये. भला पत्नी के पिता और चाचा पर विश्रवा को शक कैसे हो सकता था.

जबकि सोमाली, माल्यवान और केकसी थे कि बचपन से ही रावण को कुबेर के खिलाफ तैयार करने में जुट गए. सोमाली ने रावण का नाम भी काफी सोच समझकर रखा था. रव का अर्थ आंधी तूफान जो था. यानि कि वे रावण को ऐसा बनाना चाहते थे जिसके नाम भर से लोग ऐसे कांपें जैसे आंधी और तूफान धरती को कंपाती है. बल्कि इन्होंने तो ऐसा तक किया कि कुबेर जब कभी पिता के पास आता, ये तीनों रावण को उसे ऐसे दिखाते थे जैसे कुबेर उसका बड़ा भाई न होकर उसका नंबर एक शत्रु है. ऊपर से रावण के मन में सौतेलेपन का जहर भी कम नहीं था. रावण बड़ी मां के हर व्यवहार का उल्टा अर्थ लगता था.

इस सारे प्रकरण का आश्चर्य तो यह था कि सोमाली, माल्यवान और केकसी यह सब करते हुए भी अपने असली रूप को छिपाये हुए थे. दो बार ऐसे अवसर आये जब उनकी चालों का भांडा फूट सकता था. दोनों बार उनको पहचाननेवाला इंद्र वहां आया था. पर वे इतने कुशल थे कि ठीक मौके पर किसी न किसी बहाने आश्रम से दूर हो जाते थे. खतरा जो था—इंद्र इनको देखते-ही सारी चालें भले ही भांप नहीं पाये. मगर इतना तो भांप ही सकता था कि केकसी की विश्रवा की पत्नी बनने के पीछे कोई न कोई चाल जरूर है. जहां तक केकसी की बात थी उसे इंद्र पहचानता कैसे. उसे तो उसने कभी देखा ही नहीं था. फिर केकसी के छिपने पर राज खुल जाने का भी तो खतरा था. तभी तो केकसी इंद्र का आतिथ्य-सत्कार करने में सबसे आगे रहती थी. ऊपर से वह चतुर इतनी थी कि पत्नी होते हुए जिस तरह से वर्षों से विश्रवा से अपना राज छिपाये हुए रही उसी तरह उसने इंद्र की भी आंखों में धूल झोंक दी.

यह अलग बात थी कि काफी अर्से बाद ये तीनों भारद्वाज की निगाह से बचे नहीं रह सके. इंद्र के आने की तो इन्हें पूर्व सूचना मिल जाती थी. भारद्वाज के आने की थोड़े इन्हें पूर्व सूचना मिली थी. फिर भारद्वाज के आने का संयोग भी ऐसा हो आया, जिस समय भारद्वाज विश्रवा के आश्रम में दाखिल हुए उस समय सोमाली, माल्यवान, केकसी और रावण एक साथ खड़े थे. हालांकि केकसी को वे फिर भी पहचान नहीं पाये. उन्होंने उसे नन्हीं गुड़िया के रूप में देखा था. पर सोमाली और माल्यवान को वे पहचान गये. यह देख उनका खून खौल गया. पर विश्रवा जी के प्रति उनके मन में आदर था इसीलिए गुस्से को पी गये. उन्होंने सुन जो रखा था कि विश्रवा जी ने दूसरी शादी कर ली है. पर बावजूद इसके विश्रवा को प्रणाम करने के तुरंत बाद वे अपने को रोक नहीं पाये. मुस्कराते हुए बोले, "मुनिवर, आपकी तो जवानी बुढ़ापे में फिर लौट आयी है. वैसे यह तो मैंने सुना था कि आपने दूसरी शादी कर ली है. पर..."

"अरे भारद्वाज..." कहते कहते विश्रवा ने भारद्वाज की बात बीच में ही काट दी. फिर तनिक मुस्कुराते हुए बोले, "भाई मनुष्य देह की कमजोरी की बातें जो हुई? खैर ये बातें छोड़ो, अपनी बातें सुनाओ."

"मुनिवर मेरा तो हाल ठीक है." कहते हुए भारद्वाज ने आसमान की ओर देखा, "पर मुझे आपका हाल बेहाल लगता है."

"क्या मतलब?" भारद्वाज पर उन्हें भी अटूट विश्वास था.

"मेरे ख्याल से जिसे आपने अपनी दूसरी पत्नी बना रखा है वह उसी सोमाली की पुत्री है जिसे हम अब तक मृत समझे हुए थे."

अब भारद्वाज खुलकर सामने आ गये थे. उन्होंने विश्रवा से यह तक कह डाला कि जिसे आपने कुबेर की विमाता बनाया है वह कुबेर की हत्यारिन बनने वाली है. मगर अब विश्रवा थे कि भारद्वाज की हर बात का विरोध करने लगे. उनका कहना था-भला संसार में सगा भाई भाई को मारता है क्या? और तो और उन्हें केकसी पर पूरा विश्वास था. वह ऐसा नहीं करवा सकती है. उसने तो उनकी अब तक ऐसी सेवा की थी कि उन्हें कुबेर की मां की सेवा फीकी लगा करती थी. तभी तो जब विश्रवा माने ही नहीं तो भारद्वाज बोले थे, "जरा केकसी से जाकर तो पूछिये तुम्हारा पिता सोमाली और चाचा माल्यवान हैं या नहीं. बल्कि मेरा तो ख्याल है अगर आपने अब जरा भी और देर की तो शायद आप केकसी से यह पूछ भी नहीं पाओगे......."

सचमुच हुआ भी यही. विश्रवा केकसी की कुटिया में बाद में पहुंचे, तब तक सोमाली, माल्यवान आदि वहां से कभी के भाग चुके थे. तभी तो क्षुब्ध हो विश्रवा ने अपने सारे शिष्यों को इनको पकड़ने को दौड़ाया. यह तो क्या इसके बाद स्वयं भारद्वाज तक सोमाली आदि को पकड़ने भागे. पर फिर उनका पता ही नहीं चल पाया कि वे भागे हैं तो किस ओर. आखिर जिन्हें भारद्वाज अपना प्रतिद्वंदी मानते थे वे इतने मामूली कैसे हो सकते थे जो उनका आसानी से पता चल जाये. वे तो भारद्वाज से भी अधिक तेज थे. जितनी देर में भारद्वाज विश्रवा के पास पहुंचे उतनी ही देर में वे केकसी के चारों बच्चों को साथ ले वहां से भाग निकले. कारण, एक भी बच्चे के विश्रवा के पास फंसे रहने पर खतरा था—विश्रवा की शर्त उन्हें माननी पड़ सकती है. यही वजह थी कि इस नये सत्य का पता लगने पर विश्रवा पूरी तरह हक्के-बक्के रह गये. उनकी आंखों के सामने केकसी के सानिध्य के वे सारे के सारे क्षण बार-बार याद हो आते थे जिसके साथ उनके जीवन के पंद्रह-सोलह वर्ष का कालखंड जुड़ा हुआ था. इतनी लंबी अवधि में एक बार भी तो ऐसा नहीं हुआ था जिसमें केकसी पर संदेह किया जा सकता था. और तो और उसने कुबेर की मां तक का मन जीता हुआ था. उसकी भी वह बहुत सेवा किया करती थी. मगर आज उसका इस प्रकार भागना ऐसा था जिसने सारी बातों को नया ही अर्थ दे डाला था.

जब इंद्र को इन बातों का पता चला वह भी स्तब्ध रह गया. इन सारी बातों का असली असर उसी पर तो पड़ना था. तभी तो उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हें खोजने अपने पूरे दल-बल को झोंक दिया. और तो और उसने सैकड़ों नाविकों को समुद्र में उतार दिया. पर अब वे किसी की भी पकड़ में नहीं आ सके. सुरक्षा की दृष्टि से वे मयदानव के राज्य में पहुंच गये थे. मयदानव भी उन्हें देख फूला नहीं समाया. उनके पास योद्धा तो कई थे पर कूटनीतिज्ञ एक भी नहीं था. उसे अब एक साथ अपने दो माने हुए कूटनीतिज्ञ मिल गये थे. यह अलग बात थी कि उसकी भी आंखें लंका पर थीं. इसके लिए उसने भी अपनी ओर से प्रयास शुरू कर रखे थे. देवताओं की जगत प्रसिद्ध सुरा-सुंदरियोंवाली कमजोरी का लाभ उठाने के लिए उसने भी देवताओं के पास राक्षस कन्याएं भेजनी शुरू कर दी थीं. ऊपर से सूर्यवंश की स्थापना होते ही उसने भी देवताओं को लड़ाना शुरू कर डाला था. हालांकि मयदानव की इन बातों से सोमाली तथा माल्यवान प्रसन्न हुए, पर लंका वाली बात से वे भी परेशान हो उठे. मगर माल्यवान इतना तेज था कि उसने एक नयी ही तरकीब खोज निकाली. वह यह कि उसने मय की पुत्री मंदोदरी से रावण की शादी करवा डाली. ताकि रावण के हाथों मयदानव का भी सपना पूरा हो और उनका अपना भी.

उधर अब कुबेर की स्थिति यह थी कि वह भले ही सुरा और सुंदरी में हर क्षण, हर पल खोया नहीं रहता था पर इनका वह रसिक अवश्य हो आया था. उसकी इसी कमजोरी का लाभ उठाने अब सोमाली और माल्यवान तन आये. अब वे अपने में से खूबसूरत राक्षस कन्याओं को सुनियोजित ढंग से कुबेर के पास भेजने लगे.

इस पर भी इस सारे प्रकरण का आश्चर्य यह कि राक्षस कन्याओं को प्रशिक्षित करने का कार्य केकसी संभाले हुए. थी. उसे कुबेर की कमजोरियों तथा भलाइयों का और भी बारीकी से पता था. हालांकि ऊपरी दृष्टि से उसके ये कार्य ऐसे थे जिन्हें एक मां किसी कीमत में नहीं कर सकती थी. आखिर वह कुबेर की विमाता ही सही, मां तो थी ही. इसके पीछे उसकी भी एक गहरी चाल थी. वह कुबेर को लंका से हटाकर लंका में रावण का अधिपत्य तो स्थापित करना चाहता थी. पर कुबेर को किसी कीमत में मरवाना नहीं चाहती थी. पिता और चाचा पर उसे तनिक भी विश्वास नहीं था कि वे कुबेर को जिंदा रहने देंगे. इसीलिए मजबूरी में उसने यह कार्य अपने हाथों में लिया था.

सचमुच यह भी केकसी की कार्य कुशलता का परिणाम था कि एक ओर वह प्रशिक्षित राक्षस कन्याओं को कुबेर के पास भेजती वहीं दूसरी ओर रावण की रक्षा व्यवस्था की बागडोर धीरे-धीरे अपने हाथ में कुछ ऐसे ले ली कि ज्यों-ज्यों रावण का दबाव लंका में बढ़ता चला गया त्यों-त्यों वह कुबेर की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगी. वह अपने विश्वासपात्रों के माध्यम से कुबेर को रोज नये-नये कमरों में सुलाने लगी. और तो और उसने तीन बार कुबेर के ऊपर हो सकनेवाले घातक हमलों तक को विफल कर दिया. जब उसने देखा कि रावण के बढ़ते प्रभाव से कुबेर का महल तक बचा नहीं रहा तो उसने कुबेर को चोर दरवाजे से निकालकर भारद्वाज के आदमियों के हवाले ऐसे किया जैसे अपने इस कृत्य के माध्यम से वह भारद्वाज को एहसास करा देना चाहती हो कि प्रतिद्वंदिता उनकी और उसके पिता और चाचा के बीच है. दीदी और उसके बीच नहीं. नारी होने के नाते वह सब कुछ सह सकती है पर दीदी की कोख का सूना होना वह कदापि नहीं सह सकती. □

बीसवीं सदी की विष-कन्या

महाराजा रणधीर सिंह के दरबार में राग-रंग छिड़ा हुआ था. उनकी चहेती गायिका अजरा शमीम मचल – मचलकर गजल अदा कर रही थी. और महाराजा तो जैसे लुटे जा रहे हों—सुध-बुध खोये अजरा को निहारते जाते.

महाराजा रणधीर सिंह एक दबंग राजा थे. उनकी रियासत में अंग्रेज कर्नल ब्रैंडन एजेंट के पद पर रहता था. उन दिनों राजे-महाराजे अंग्रेज रेजीडेंट की लल्लो-चप्पो किया करते थे. पर महाराजा रणधीर सिंह दूसरी ही मिट्टी के बने हुए थे. और जब देश-प्रेम की लहर उनके राज्य में फैली तो बजाय उससे बचने के उन्होंने उसे प्रोत्साहन भी दिया.

कर्नल ब्रैंडन चौंका. उसने वाइसराय के दफ्तर का दौरा भी किया और वहां इस नतीजे पर पहुंचे कि महाराजा को इस बिना पर तंग नहीं किया जा सकता. हां-अगर उन्हें किसी तरह से खत्म कर दिया जाय तो गद्दी पर उनके बेटे को बैठाया जा सकता है जो इंग्लैंड में पढ़-लिखकर आधा अंग्रेज तो बन ही चुका है. फिर इस षड्यंत्र पर कर्नल ब्रैंडन दिमाग दौड़ाने लगा. कुछ चाटुकारों की मदद से उसने यही तय पाया कि महाराजा साहब दरबारी गायिका अजरा पर लट्टू हैं और उसके कहने में भी हैं.

और जिस दिन जन्म-दिवस का जशन हुआ तो अजरा अपने गुलाबी पिशवाज में अप्सरा लग रही थी. फिर उसने गजल छेड़कर महाराजा साहब को दीवाना बना डाला. और फिर वह जहर का प्याला लेकर आगे बढ़ी. उसी वक्त रियासत के बूढ़े दीवान गोपाल सिंह ने कड़क कर कहा, "ठहरो!"

बीसवीं सदी की विष-कन्या रंगे हाथों पकड़ी गयी. जब वह शराब कुत्ते को दी गयी तो वह आधा घंटे में ही मर गया. महाराजा रणधीर सिंह सहम गये. अजरा ने यह सब किया? उस अजरा ने जिस पर वे भंवरे की भांति दिन-रात गुंजन करते थे. उस अजरा ने जिसे उन्होंने क्या कुछ नहीं दिया-मकान, जायदाद, हीरे, मोती और यहां तक कि अपना दिल भी. दरबार के लोग भड़क उठे और बोले, "महाराजा सा, इस को सजाये मौत दी जाये."

महाराजा रणधीर सिंह बोले, "नहीं, इसे मैंने अपने संरक्षण में रखा है इसलिये इसे मार नहीं सकता. हां, अलबत्ता इसे वह सजा दी जायेगी जिसे सुनकर यह कांप जायेगी." और महाराजा रणधीर ने नौकरों से कहा, "इस हरामजादी को मादर जात नंगा कर दिया जाये. और इसी हालत में इसे बाजार से निकाला जाय."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैली वाटसन

इरविंग वैलेस का प्रसिद्ध उपन्यास 'द मैन' एक ऐसे नीग्रो सिनेटर की कथा है, जो संयोगवश अमरीका का राष्ट्रपति बन जाता है. उसे अपदस्थ करने के गोरे सिनेटरों के चक्र-कुचक्र और उसमें एक सुप्रसिद्ध सिनेटर की पुत्री मिस सैली वाटसन के कारनामों का इतिवृत्त प्रस्तुत करता इसी उपन्यास का रोचक अंश—

अमरीका के पहले नीग्रो राष्ट्रपति डिलमैन ने उसे इंटरव्यू के लिये बुलाया है, यह सूचना अपने नीग्रो मित्र तथा डिलमैन के जीवनी-लेखक लेराय से प्राप्त करने के बाद से 21 वर्षीया मिस सैली वाटसन का दिल तेजी से धड़कना शुरू हो गया था. और यह धड़कन राष्ट्रपति के कार्यालय में प्रवेश करने के बाद भी नहीं रुकी थी. उसे डर लग रहा था कि इस धड़कन के कारण कहीं वह डिलमैन के प्रश्नों के उत्तर देते समय गड़बड़ा न जाये. तब तो उसकी योजना पूरी तरह फेल हो जायेगी. वह तो अच्छा हुआ कि राष्ट्रपति महोदय उससे बातचीत करना शुरू भी न कर पाये थे कि किसी से लंबी फोन-वार्ता में उलझ गये, जो पांच-छह मिनट तक चली. इस दौरान, सैली को अपनी दिल की धड़कनें शांत करने में काफी हद तक सफलता मिल गयी. उसने चुपचाप अपना मेकअप भी, इस बीच ठीक कर लिया.

फोन-वार्ता से निपटकर, जैसे ही डिलमैन उसकी ओर मुखातिब हुए, उसने उन्हें कुछ पूछने का मौका दिये बिना, खुद अपने बारे में बताना आरंभ कर दिया. वह यह निश्चय करके आयी थी कि उसे राष्ट्रपति की 'सोशल सैक्रेटरी' बनना ही है, हर हालत में. काली त्वचा के बावजूद, उसे डिलमैन इतने अनाकर्षक न लगे थे, जितना उसने आने से पहले सोचा था. उसे उनमें बस एक ही खामी नजर आ रही थी, और वह यह कि उन्होंने उस जैसी सुंदर, मोहक, आकर्षक युवती की ओर एक बार भी प्रशंसाभरी निगाहों से नहीं देखा था. इसका कारण शायद यह हो कि अभी उनका ध्यान कहीं और केंद्रित था. मगर, उसे यह काफी नागवार लगा था.

उसने कहना शुरू किया, "आप इसे बड़बोलापन मानेंगे. राष्ट्रपति महोदय, मगर मैं जो कुछ कह रही हूं, पूरी ईमानदारी के साथ कह रही हूं. मैं पूरे विश्वास के साथ यह मानती हूं कि मुझसे ज्यादा योग्य और कर्मठ 'सोशल सैक्रेटरी' आपको शायद ही मिले. मैं दक्षिण के एक प्रमुख सिनेटर मिस्टर हौयट वाटसन की पुत्री हूं. कालेज के दिनों में हर किस्म के लोगों से मिलने का मुझे शौक रहा है. मैं हर किसी के साथ आसानी से घुल-मिल जाती हूं. लोगों के मन में क्या है, और वे किस बात से 'मोटिवेट' होते हैं, यह मैं सहज रूप से जान लेती हूं. पिछले दो राष्ट्रपतियों की 'सोशल सैक्रेटरी', मिस लॉरेल, मिस टकरमॅन और मिस बाल्ड्रिज से मेरा घनिष्ठ परिचय रहा है. इस पद पर कार्य करने की मेरी तीव्र इच्छा को जानकर उन्होंने मुझे इस पद की क्या अपेक्षाएं हैं, यह सब बता दिया था. इस प्रकार प्रत्यक्ष अनुभव न होते हुए भी मैं जानती हूं कि मुझे क्या करना होगा, इसलिए मुझे किसी प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होगी. वाशिंगटन की किसी भी नामी 'सोशलाइट' से आप मेरे बारे में पूछकर देख सकते हैं. वे सब मेरी रुचियों और मेरे व्यवहार-कौशल की तारीफ करेंगी, ऐसा मेरा पूरा विश्वास है. अपनी मां की मृत्यु के बाद, मैं अपने व्यस्त पिता की सोशल सैक्रेटरी रही हूं. उनसे मिलनेवाले उच्चवर्गीय लोग भी मेरे शऊर की तारीफ करेंगे. वाशिंगटन के उच्चवर्गीय गोरे लोगों के अलावा, नीग्रो समाज के प्रायः सभी संभ्रांत और नामी लोगों को भी मैं बखूबी जानती हूं. और तो और, आप अपने सैक्रेटरी ऑफ स्टेट मिस्टर ईटन से मेरे बारे में पूछकर देख लीजिये."

इतनी देर के बाद, डिलमैन को, जो अब तक सुने ही जा रहे थे, कुछ कहने का मौका मिला. उन्होंने पूछा, "मिस्टर ईटन आपसे परिचित हैं, मिस वाटसन?"

"आप खुद उन्हीं से पूछकर देख लीजिये," मुस्कराते हुए मिस वाटसन ने कहा.

"ठीक है. मैं उनसे पूछकर देखता हूं... आप इस बीच बाहर मेरी सैक्रेटरी मिस फास्टर के पास बैठिये, कुछ मिनट के लिये."

मिस फास्टर के पास जाते-जाते, मिस वाटसन सोच रही थी कि न मालूम ईटन-उसके नवीनतम प्रेम-उसकी इस नौकरी के बारे में, जिसका जिक्र उसने अभी तक उनसे नहीं था, क्या कहेंगे? काश! ईटन को ज्ञात होता कि वह जो कुछ कर रही है, उसी के हित में कर रही है, अपने लिये नहीं. यदि उसने उसके खिलाफ डिलमैन से कुछ कहा, तो...तो...वह हमेशा-हमेशा के लिये ईटन से संबंध-विच्छेद कर लेगी... हां, वह उससे कोई संबंध नहीं रखेगी, यह तय है.

करीब पांच मिनट के बाद, डिमलैन ने उसे वापस बुलाया.

जैसे ही, उसने राष्ट्रपति के कार्यालय में प्रवेश किया, राष्ट्रपति डिलमैन ने मुस्कराते हुए उसका स्वागत किया, और कहा, "व्हाईट हाउस में आपका स्वागत है, मिस वाटसन? मेरे सैक्रेटरी ऑफ स्टेट ने तो आपकी इतनी ज्यादा तारीफ कर डाली कि एक क्षण के लिये तो मैं डर गया कि मैं खुद आप जैसी अन्यतम सोशल सैक्रेटरी के लायक हूं भी या नहीं. खैर मुझे खुशी है कि आप जैसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार-कुशल, लोकप्रिय तथा आकर्षक युवती मेरी सामाजिक छवि को दुरुस्त रखने में मेरी सहायता करेंगी. पुनः आपका स्वागत.''

व्हाईट हाउस से बाहर आते ही मिस वाटसन ने सैक्रेटरी ऑफ स्टेट ऑर्थर ईटन के व्यक्तिगत नंबर पर उसे फोन किया. वह बेहद खुश थी कि राष्ट्रपति भवन में उसने जो तीर चलाया था, वह निशाने पर बैठा. उसे उम्मीद थी कि उसका दूसरा तीर भी निशाने पर ही जाकर बैठेगा.

''हैलो, सैली क्या हुआ?''

''मेरा काम हो गया. मुझे सोमवार को काम पर हाजिर होना है. ओह! मैं कितनी खुश हूं. मगर, इस खुशी के लिये मैं तुम्हारी अहसानमंद हूं, आर्थर.''

''नहीं, तुम्हें यह पद तुम्हारी योग्यता के बल पर मिला है. मैंने डिलमैन से साफ-साफ कहा कि सोशल सैक्रेटरी के पद के लिये तुम्हें मिस सैली वाटसन से ज्यादा स्मार्ट, लोकप्रिय, चतुर और अकलमंद लड़की सारे वाशिंगटन में क्या, सारे अमरीका में नहीं मिलेगी. बधाई, सैली.''

''आर्थर! मैं तुम्हारे अहसान का बदला कैसे चुकाऊं?''

''बस, अपना काम पूरी लगन से करती रहो.''

''नहीं, मैं दूसरे तरीके से यह बदला चुकाना चाहती हूं. तुम्हारी पत्नी तो न मालूम कब लौटेगी? लौटेगी भी या नहीं, कौन जाने. घर पर अकेलापन तो बहुत खलता होगा.''

''बहुत ज्यादा. कभी-कभी तो...खैर, वह छोड़ो.''

''नहीं, तुम भले ही मुझे छोड़ना चाहो, मुझे तुम्हें नहीं छोड़ना है. कल रात के खाने पर मैं, और सिर्फ मैं, तुम्हारे साथ रहूंगी. कम से कम 'हां' तो कहो.''

''अ...हां...मगर.''

''अगर-मगर कुछ नहीं. मैं ठीक सात बजे आऊंगी. मेरे और तुम्हारे बीच कोई और नहीं होना चाहिये, आर्थर!''

''अ... ठीक है. मेरी योजना तो अभी से शुरू हो गयी है.''

''इस बार मैं तुम्हें निराश नहीं करूंगी. पिछली बार, तुम्हें अचानक 'व्हाईट हाउस' जाना पड़ गया था, इसलिए... खैर मेरा इंतजार करना.'' कहकर उसने फोन रख दिया. वह खुश थी, क्योंकि उसका दूसरा तीर भी ठिकाने पर बैठा था.

अजीब लड़की थी मिस सैली वाटसन.

कुछ लोग होते हैं, जिन्हें खतरों में जीने में ही आनंद मिलता है. परंपराओं को लात मारकर, स्वेच्छाचारिता को अपनाने में ही 'थ्रिल' महसूस होता है, जिनके लिये जिंदगी बेमानी हो जाती है, जब उसमें से खतरे...स्कैंडल...स्वच्छंदताएं दूर हो जायें. जिन्हें सपाट, सुरक्षित जीने की राह पसंद नहीं, जो जिंदगी के उबड़खाबड़ रास्ते पर दुस्साहसी बनकर अंधाधुंध भागना पसंद करते हैं. सैली ऐसे ही लोगों में से एक थी.

सात-आठ साल पहले, जब वह सिर्फ 14 वर्ष की थी, उसे हिप्पियों की संगत में मारिजुआना के सेवन की लत लग गयी थी. जब उसके पिता ने उसे इस लत से मुक्त कराने के प्रयास किये थे, तो उसने चाकू से अपनी कलाई की नसों को चीरकर आत्महत्या करने का प्रयास किया था. अस्पताल से अपना इलाज (मारिजुआना के दुष्प्रभावों का) कराने के बाद जब वह वापस घर लौटी, तो एक सप्ताह के अंदर ही अपने से सिर्फ तीन साल ज्यादा आयु के एक आवारा प्यूटोकेरियन लड़के के साथ भाग गयी थी. सिनेटर ने इस समाचार को प्रकाशित या प्रसारित नहीं होने दिया था; और खुफिया पुलिस की मदद से उसे पकड़वाया था, और लड़के को पुलिस द्वारा देश-निकाला करा दिया था. घर पर आकर, उसने अपनी परेशानियों के लिये खुले आम अपने माता-पिता को जिम्मेदार ठहराया था, और फिर आत्मघात करने का प्रयास किया था, क्योंकि उसे असली शांति मौत में ही दिखायी देती थी.

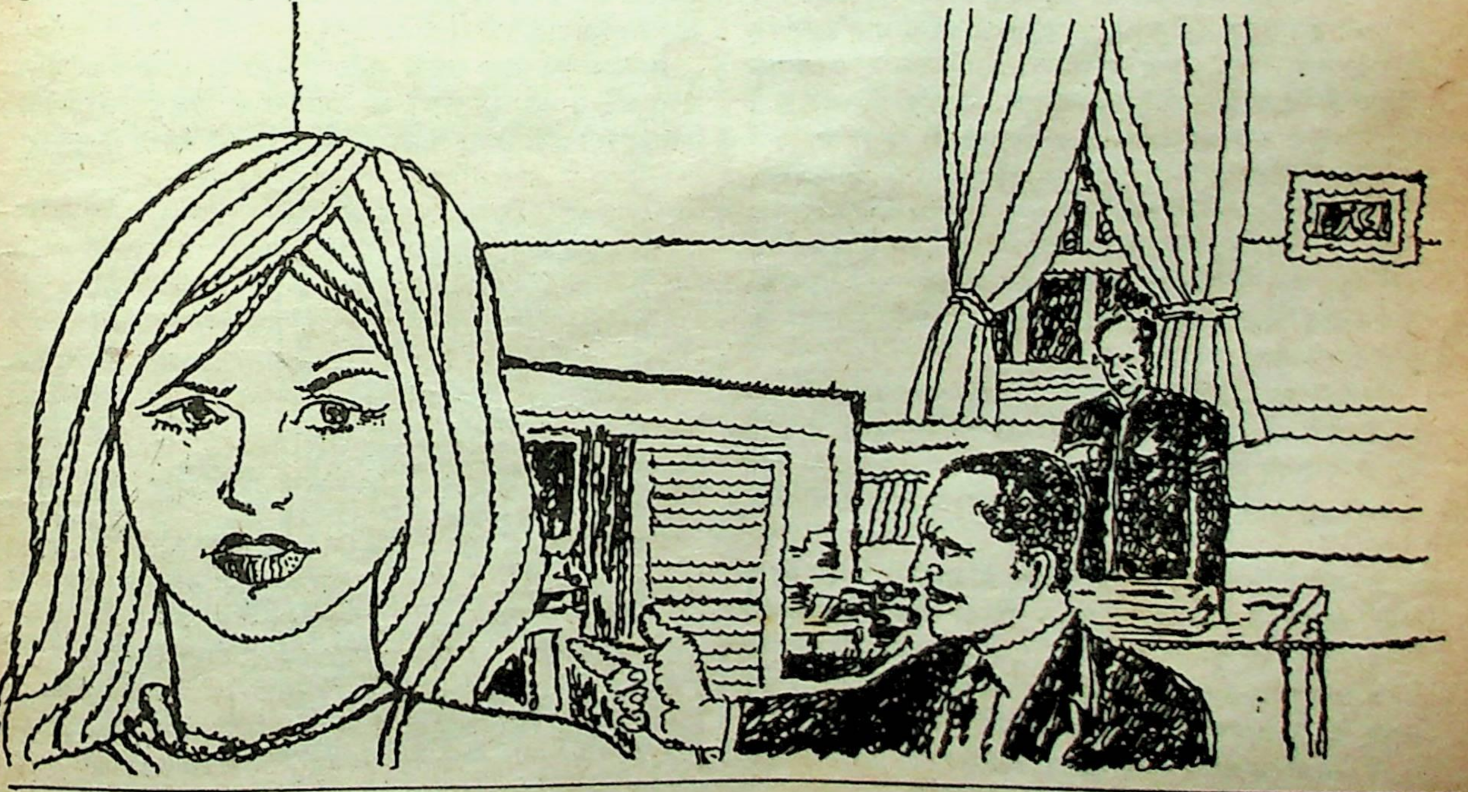

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीति या राजनीतिज्ञों में उसकी रुचि कभी भी नहीं रही थी, यद्यपि स्वयं उसके पिता राजनीति में सक्रिय थे. लेकिन, एक शाम उसे अपने पिता के साथ राजनीतिज्ञों की एक डिनर-पार्टी में जाने का मौका मिला. संयोग से उसे जो सीट मिली, वह ईटन की सीट से ठीक सामने थी, जहां से वह उसे न सिर्फ साफ-साफ देख सकती थी, उसकी 'जादुई' आवाज भी सुन सकती थी. नतीजा यह हुआ कि वह प्रथम द्रष्टि से ही सैक्रेटरी ऑफ स्टेट को अपना दिल दे बैठी

ईटन-अमरीका के सैक्रेटरी ऑफ स्टेट, एक विवाहित और प्रतिष्ठित हस्ती इस छोकरी का प्रणय-निवेदन सुनकर सकपकाकर रह गये. कोई और लड़की होती, तो वह उसे वहीं रफा-दफा कर देते, मगर वह, कुछ भी हो, एक प्रभावशाली सिनेटर की पुत्री थी. मोहक और आकर्षक थी. जवान थी, उनकी बेटी की आयु की. ईटन फिसल गये. मगर, अपने को थोड़ा संभालकर धीरे से बोले, "मैं... आप जैसी प्यारी और हिम्मती लड़की से पहली बार मिल रहा हूं. कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा."

"सपना तो जब शुरू होगा, जब हम दोनों एक दूसरे के और निकट आयेंगे."

"मगर मैं ठहरा एक अधेड़ आदमी. मेरा ख्याल है कि तुम्हारी जैसी शोख और हसीन लड़की के सैकडों युवक प्रेमी होंगे."

"हजारों भी हो सकते थे, मगर एक भी नहीं है. मैं कच्चे-बच्चों से कोई वास्ता नहीं रखती. मुझे सभ्य और सरस पुरुष पसंद हैं... आप जैसे."

सैली का दु:साहस देखकर ईटन दंग रह गये. कई मिनट तक खामोश शून्य में ताकने के बाद उन्होंने पूछा, "तुम मुझसे क्या चाहती हो, सैली?"

"मैं मिसेज ईटन बनना चाहती हूं—जल्दी से जल्दी. और, यह भी जानती हूं कि जहां चाह है, वहां राह निकल ही आती है."

इसमें कोई संदेह नहीं था कि ईटन का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था. दिलकश चेहरा, सौम्य, मधुर स्वर और व्यवहार. उसके इस व्यक्तित्व की बदौलत ही एक दशक पूर्व, अमरीका के सबसे धनी घरानों में से एक की एकमात्र उत्तराधिकारी के ने जो सदा तथाकथित प्रेमियों से घिरी रहती थी, उसे अपना पति बनाया था. दोनों के दिल मिले, शरीर भी मिले, मगर स्वभाव कभी नहीं मिल पाया. इसी कारण के पिछले दो-तीन वर्षों से ईटन से अलग रह रही थी, और अब हालत यह आ गयी थी कि उसने ईटन की तथाकथित 'मानसिक क्रूरता' से छुटकारा पाने के लिये तलाक की तैयारियां कर ली थीं.

सैली ने जब ईटन से प्रणय-निवेदन किया था, तो वह इस स्थिति से अनजान थी. लेकिन, जब उसे स्थिति का पता चला तो ईटन की पत्नी बनने का उसका निश्चय, जिसका पता उसे और ईटन को छोड़कर किसी तीसरे व्यक्ति को नहीं था, और भी दृढ़ हो गया.

डिलमैन किन विचित्र और अप्रत्याशित परिस्थितियों में अमरीका के राष्ट्रपति बने थे, इसकी जानकारी सैली को टेलीविजन पर समाचार संबंधी कार्यक्रम देखकर हुई थी. कारण समाचारपत्र पढ़ने का शौक उसे कभी नहीं रहा था. उसे मालूम था कि भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति, जिन्हें लोग प्यार से 'टी.सी.' कहा करते थे, रूसी नेताओं के साथ बात करने के लिये क्रेमलिन गये हुए थे, वहां जिस 600 वर्ष पुराने महल में उन्हें ठहराया गया था, उसकी छत गिर जाने से उनकी मृत्यु हो गयी थी. चूंकि उनके प्रमुख सहायक-उप राष्ट्रपति का निधन कुछ समय पूर्व ही हुआ था, इसलिए अमरीकी संविधान के प्रावधानों के अनुसार, स्पीकर मैक्फरसन को राष्ट्रपति-पद के लिए चुना गया. लेकिन, दुर्भाग्य से, और संयोगवश मैक्फरसन भी उस समय एक अस्पताल में मौत से जूझ रहे थे. टी.सी. की मृत्यु के कुछ घंटे बाद ही शोक-स्तब्ध अमरीकी जनता को पता चला कि मैक्फरसन भी चल बसे.

अमरीकी संविधान के प्रावधानों के अनुसार, वरीयता-क्रम में अब नंबर था-अमरीकी सिनेट के 'प्रोटेन्यो' अध्यक्ष का. वे निकले, एक नीग्रो सिनेटर डिलमैन. संविधान के प्रावधानों का आदर करते हुए; मुख्य न्यायाधीश ने उन्हें ही राष्ट्रपति पद की शपथ दिलायी और इस प्रकार अमरीकी इतिहास में पहली बार एक नीग्रो को राष्ट्रपति बनने का गौरव प्राप्त हुआ.

डिलमैन का राष्ट्रपति बनना अधिकांश सिनेटरों को नहीं भाया था. एक तो इसलिये कि डिलमैन नीग्रो थे, और अमरीका के इतिहास में आज तक किसी नीग्रो ने राष्ट्रपति बनकर अमरीका पर शासन नहीं किया था. और दूसरे, अधिकांश सिनेटर ईटन को, जिनका नंबर वरिष्ठता-क्रम में डिलमैन के बाद आता था, येन-केन प्रकारेण राष्ट्रपति की कुर्सी पर बैठाना चाहते थे.

ऐसे सिनेटरों में सैली के पिता भी एक थे. उनके पास, इस संबंध में, अन्य सिनेटरों के दर्जनों फोन रोज आते थे, जिन्हें सैली पास के अपने कमरे में बैठकर, बड़े ध्यान से सुनती थी. यदि ईटन राष्ट्रपति बन गये, तो वह अमरीका की 'प्रथम महिला' बन जायेगी. कारण ईटन ने तीन-चार बार उसके साथ सोने के बाद, उसे यह वचन दे दिया था कि जैसे ही उसे अपनी पत्नी से तलाक मिल जायेगा, वह उससे विवाह कर लेगा. मगर, साथ ही उसने सैली से एक वचन भी ले लिया था कि विवाह तक वह इस बात को सबसे गुप्त रखे.

सिनेटरों की फोन-वार्ताएं सुनकर, सैली को दो बातों का पता चला था. वे सब गुप्तचरों की सहायता से डिलमैन की छिपी कमजोरियां तथा उसके जीवन के ऐसे गुप्त भेद जानने में लगे थे,

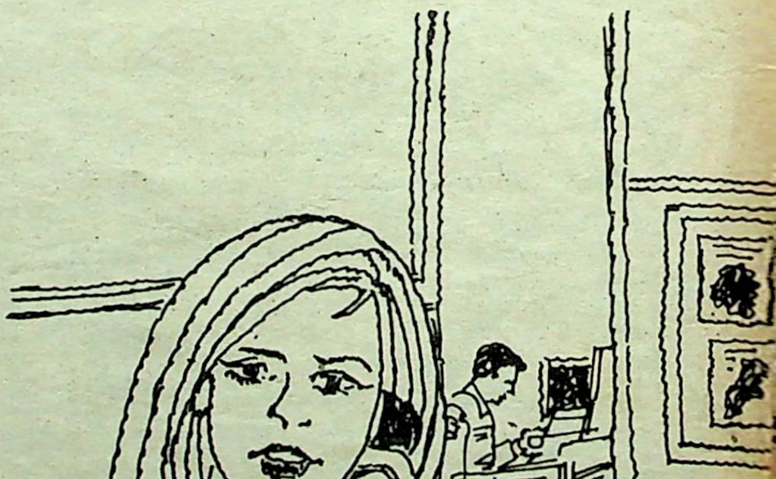

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनके पता चलते ही वे सिनेट में उन पर महाभियोग लगाकर, और उसे मुख्य न्यायाधीश की अदालत में घसीटकर, अपदस्थ करा सकें. दूसरे-उसे देशद्रोही या कम्यूनिस्ट सिद्ध कर उसकी छुट्टी कर देना.

षड्यंत्रों और खतरों में गहरी दिलचस्पी रखनेवाली सैली को इस जानकारी से जो खुशी हुई, जो 'थ्रिल' मिला, उसका बयान करना नामुमकिन है. उसने मन ही मन तय किया कि यह काम स्वयं करेगी. किसी और पर निर्भर नहीं रहेगी. डिलमैन का पर्दाफाश करने में वह अकेली ही समर्थ है. इतना अधिक विश्वास था उसे अपनी जासूसी क्षमता पर.

लेकिन, इस काम को अंजाम करने के लिये, पहली जरूरत है, राष्ट्रपति भवन में प्रवेश पाने की. इस बारे में काफी सोच विचार कर वह इस निश्चय तक पहुंची कि डिलमैन की सोशल सैक्रेटरी बनकर वह उसके काफी निकट आ सकेगी, और सोशल सैक्रेटरी बनने की सब योग्यताएं उसमें मौजूद हैं. टेलीविजन की मार्फत उसे यह जानकारी भी मिल चुकी थी कि डिलमैन के राष्ट्रपति बनते ही भूतपूर्व राष्ट्रपति टी.सी. की सोशल सैक्रेटरी ने त्यागपत्र दिया था.

वह चाहती, तो इस पद को पाने के लिये अपने पिता से सीधा कह सकती थी, लेकिन अपने पिता को इस बारे में कुछ भी नहीं बताना चाहती थी. वह अपनी इस योजना के बारे में किसी को भी नहीं बताना चाहती थी. ईटन तक को नहीं.

सहसा, उसे याद आयी लेरोय पूल नामक नीग्रो लेखक की, जो उन दिनों डिलमैन की जीवनी लिखने में व्यस्त था. वह पूल को जानती थी, और एक बार उसके साथ सो कर उसे उपकृत भी कर चुकी थी. उसने उसे फोन किया, और बताया कि वह राष्ट्रपति की सोशल सैक्रेटरी बनने की इच्छुक है. और वह डिलमैन से उसकी सिफारिश करे. लेरोय शुरू में तो तैयार न हुआ. लेकिन सैली के बहुत अनुनय-विनय करने पर राजी हो गया.

लेरोय पूल के कहने पर डिलमैन सैली से इस पद के बारे में मिलने के लिये राजी हो गये थे.

सैली इस इंटरव्यू के दौरान ईटन के नाम का उपयोग नहीं करना चाहती थी, लेकिन जब उसने देखा कि डिलमैन उसकी नियुक्ति के बारे में [illegible] दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं, तब उसने 'ट्रंप कार्ड' की भांति उसके नाम का उपयोग किया था. और, उसका यह तीर भी निशाने पर बैठा था.

ईटन ने बाद में, उससे उत्सुकतावश पूछा था कि वह राष्ट्रपति की सोशल सैक्रेटरी बनने के लिये इतनी इच्छुक क्यों है, तो उसने सवाल को यह कहकर टाल दिया था कि खाली बैठे-बैठे वह बोर हो जाती है, और इस बहाने उसका मन लगा रहेगा.

डिलमैन की सोशल सैक्रेटरी बनकर वह हमेशा इस ताक में रहती थी कि उसे डिलमैन के बारे में कोई भी ऐसी छोटी-बड़ी जानकारी मिल जाये, जो उसके विरोधियों के काम आ सके. लेकिन, बहुत कोशिश करने पर भी उसे इस दिशा में कोई सफलता नहीं मिली थी.

स्थिति का व्यंग्य देखिये, एक दिन, अचानक, उसे एक ऐसे गुप्त भेद का पता चला, जो ईटन के लिये उपयोगी होने के स्थान पर उसे, उल्टे, गहरे संकट में डाल सकता था.

नन्हें से अफ्रीकी देश बोरोजा पर रूस का प्रभुत्व दिनोंदिन बढ़ता जा रहा था. रूस उसे अनेक देशों में स्थित फर्जी संस्थाओं की मार्फत उसके विद्रोहियों को हथियार देता जा रहा था, ताकि वे उनका उपयोग अमरीका के समर्थन से बनी और टिकी सरकार को गिराने के लिये कर सकें. राष्ट्रपति को जब यह सूचना अन्य स्रोतों से प्राप्त हुई, तो उन्होंने सी.आई.ए. के प्रमुख मांटगुमरी स्कॉट को बुलाकर पूछा, ''आपके जासूस बोरोजा में सक्रिय तो हैं न?''

''जी हां, बहुत अधिक सक्रिय हैं.''

''तो फिर उन्हें उन हथियारों के बारे में पता क्यों नहीं लगा, जो रूस उन्हें पिछले कुछ दिनों से देता चला आ रहा है?''

स्कॉट चकित रह गया. उसने कहा, '' उसका जिक्र तो मैंने पिछले सप्ताह की अपनी हर दैनिक रपट में किया है. आश्चर्य है कि वह आपको क्यों नहीं मिली?''

डिलमैन ने इस मामले की फौरन जांच करवायी. जांच से पता चला कि उन रपटों को सैक्रेटरी ऑफ स्टेट ईटन दबाये बैठे थे. क्यों? यह तो वही जानें.

बहुत नाराज हुए डिलमैन. स्कॉट से बोले, ''राष्ट्रपति ट्रूमैन ने जब सी.आई.ए. की स्थापना की थी, तो उसके अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिये थे कि सी.आई.ए. के जासूस जो जानकारी एकत्रित करें, वह उन्हें सीधी और फौरन मिले. यदि ईटन ने आपकी रपटों को अपने पास रखा है, तो उन्होंने मेरे साथ विश्वासघात किया है.''

स्कॉट ने कहा, '' परंपरा यही रही है कि सी.आई.ए. की रपटें सीधी और शीघ्रातिशीघ्र राष्ट्रपति को मिलें. जब ऐसा नहीं होता, तो कभी कभी उसके परिणाम बड़े भयंकर हो जाते हैं. राष्ट्रपति आइसनहॉवर के काल में सी.आई.ए. ने मैक्सिको से राष्ट्रपति महोदय को यह गुप्त सूचना दी थी कि विरोधी नेता कैस्ट्रो कम्यूनिस्ट हैं, और रूस की मदद से मैक्सिको के सर्वेसर्वा बनना चाहते हैं, ताकि रूसी षड्यंत्र में शामिल होकर अमरीका के लिए परेशानियां खड़ी कर सकें. अज्ञात कारणों से यह सूचना आइसनहॉवर को नहीं मिली, और वे कैस्ट्रो को वह मानते रहे, जो वह असल में नहीं था.:.. अब बोरोजा की रपटों के बारे में असल में क्या हुआ, और क्या नहीं, यह मालूम करके उसके विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक कार्यवाही करना आपका [illegible] नहीं चाहता."

"मैं कार्यवाही करूंगा, और ईटन को अपना पद छोड़ने को मजबूर करूंगा."

यह बातें, जो सैली ने छिपकर सुनीं शाम को देर को खत्म हुईं. आधा घंटे बाद, व्हाईट हाउस में एक राष्ट्र के प्रमुख के स्वागत में नाचने गाने का कार्यक्रम था, और उसके बाद डिनर. चूंकि यह एक सामाजिक कार्यक्रम था, जिसमें प्रतिष्ठित अमरीकी भी भाग लेने वाले थे, इसलिए सैली की उसमें मौजूदगी अनिवार्य थी. वस्तुतः, जो सांस्कृतिक कार्यक्रम बना था, उसे बनाने में उसका बड़ा हाथ था.

राष्ट्रपति और स्कॉट के बीच हुई बातचीत से उसने इतना तो जान लिया कि उसके प्रेमी ईटन का पद खतरे में है. आधा घंटे बाद शुरू होने वाला समारोह न होता तो वह फौरन ईटन के कार्यालय में जाकर उन्हें सब कुछ बता देती, लेकिन अब यह संभव न था. और, फोन पर उन्हें साफ-साफ कैसे बताया जा सकता था?

वह काफी परेशान हो उठी, और अपनी परेशानी को दूर करने के लिए उसने छिपकर जरूरत से ज्यादा शराब पी ली. इस दौरान, उसके अवचेतन में एक ही विचार छाया था, और वह यह कि उसे ईटन को बचाना है.... ईटन को बचाना है.... हर हालत में ईटन को बचाना है.

नशे की हालत में उसके दिमाग में एक तरकीब आ गयी. इस तरकीब का तीर भी निशाने पर बैठा, तो उसके होने वाले जीवन-साथी के सिर पर मंडराता संकट तो टल ही जायेगा, उल्टे डिलमैन चक्कर में आ जायेगा. उसकी निराशा आशा में बदल गयी.

जब संगीत व नृत्य का सांस्कृतिक कार्यक्रम आरंभ हुआ, तो उसने डिलमैन के पास जाकर कहा, "सर, ऐसा लगता है, मुझे शराब चढ़ गयी है. मैं कुछ देर आराम करने जाती हूं."

सहानुभूतिशील डिलमैन ने कहा, "तुम घर जा सकती हो."

"नहीं, सर! मैं थोड़ी देर आराम करके, वापस आ जाऊंगी."

"जैसा तुम ठीक समझो."

वह लड़खड़ाती हुई, व्हाईट हाउस के लिंकन रूम में पहुंची, जिसे डिलमैन ने अपना बैडरूम बना लिया था. उसके सौभाग्य से रूम के बाहर या अंदर उसे कोई अनुचर नहीं मिला.

उसकी तबियत ज्यादा पी लेने के कारण सचमुच खराब थी. कुछ देर तक राष्ट्रपति के बिस्तर पर लेटने के बाद, वह अपने को थोड़ा बेहतर अनुभव करने लगी.

कमरे में हल्की-सी रोशनी ही थी. फिर भी उसे बिस्तर के पास रखी हुई मेज पर रखा राष्ट्रपति का ब्रीफकेस दिखायी दे गया. अरे! इसी की तो उसे तलाश थी! दरवाजा अंदर से बंद करके वह उस ब्रीफकेस के कागजों को टटोलने और ध्यान से पढ़ने लगी. उसकी दिलचस्पी जिन कागजों में थी, वे उसे सबसे अंत में मिले. ये कागजात उस जांच से संबंधित थे; जो राष्ट्रपति के स्कॉट द्वारा भिजवाये गये बोरोजा के बारे में प्राप्त जानकारी के उन्हें न मिलने के बारे में करवायी थी. ओह! इन कागजों को देखकर ईटन कितना खुश होंगे! उसने उन कागजों को अपने पर्स में छिपा लिया. अब उसका यहां कोई काम न था. उसकी तबियत भी ठीक हो चली थी. उसने सोचा कि अब चलना चाहिये.

–कि तभी किसी ने बाहर से दरवाजा खटखटाया. वह कांप [illegible] ति ही होने चाहिए.

जब उसने अंदर से बंद दरवाजा खोला, तो यह देखकर अवाक और स्तब्ध रह गयी कि सचमुच राष्ट्रपति डिलमैन ही दरवाजे के बाहर खड़े थे. तभी, उसे अपनी तरकीब की याद आयी, और वह लड़खड़ाती हुई बैड पर लुढ़क गयी.

डिलमैन ने उसके पास आकर पूछा, "मिस वाटसन...तुम? और यहां?"

वह निश्चल पड़ी रही. डिलमैन ने उसे जोर से हिलाया. वह आंखें मलती हुई उठी, और आंखें बंद रखकर, लड़खड़ाते स्वर में पूछने लगी; "मैं कहां हूं... आप कौन हैं?"

"मिस वाटसन, तुम इस वक्त मेरे बैड पर हो, और काफी नशे में दिखायी देती हो. अच्छा हुआ, इस वक्त कोई और मेरे साथ नहीं है, नहीं तो मालूम नहीं, वह क्या अनुमान लगाता. खैर, तुम इसी वक्त उठकर किसी और कमरे में जाकर आराम करो."

"ओह! आप हैं सर!... मैं बहुत शर्मिंदा हूं. सर! मैं... मैं अभी जाती हूं."

"अगर तुम अकेली जाने में असमर्थ हो, तो मैं तुम्हारी सहायता के लिये मिस क्रेल को बुलाऊं?"

"नहीं, आप कोई कष्ट न करें, सर. मैं बस.. जा रही हूं," कहकर जैसे ही वह जाने के लिए बैड से उठी, उसकी पर्स में रखे सब कागज फर्श पर बिखर गये. डिलमैन ने उन्हें समेट लिया. और फिर, सैली से पूछने लगे, "क्या तुम इन कागजों के लिये खुद ही यहां आयी थीं मिस वाटसन या ईटन ने तुम्हें भेजा था? सच बताओ." सैली ने अब अपनी सोची हुई तकरीब का तीर चलाया.

"सच बताऊं? तो; फिर सच तो यह है राष्ट्रपति महोदय कि मैं यहां इसलिए आयी कि आपने ही कार्यक्रम के बीच में से मुझे यहां भेजा था. और, मुझे फांसने के लिये ये कागज भी आप ही ने मेरे पर्श में रखे थे. यही सच है, और अब यही सच सारे अमरीका को उस अदालत में दिये गये मेरे बयान से पता चल जायेगा, जो आपके खिलाफ लगाये गये महाभियोग की सुनवायी कर रही है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप मुझसे व्यक्तिगत मामले के बारे में फौरन मिलना चाहते थे, राष्ट्रपति महोदय?" ईटन ने डिलमैन के कार्यालय में प्रवेश करके पूछा. "मैं मौजूद हूं."

"ईटन, मैं तुम्हारा इस्तीफा चाहता हूं.. इसी वक्त... मेरी कैबिनेट से और स्टेट डिपार्टमेंट से."

"क्या मैं इस अप्रत्याशित मांग का कारण नहीं जान सकता?"

"क्या तुम्हारी जासूस, मिस सैली वाटसन ने वह कारण तुम्हें नहीं बताया?"

"उसने तो मुझे और मेरे कुछ सिनेटर—मित्रों को, जो मुख्य न्यायाधीश के सामने आपके विरोध में खड़े हैं, सिर्फ इतना बताया कि आपने उसे बहाने से अपने बैडरूम में बुलाया, और वहां उसकी इज्जत लूटने की कोशिश की, और वह किसी से इस बारे में कुछ कहे नहीं, इसलिए उसके पर्स में न जाने कैसे कागज ठूंस दिये. और, वह यही बयान अदालत में भी देने वाली है. जहां तक बोरोजा के बारे में सी.आई.ए. की कुछ रपटें दबा लेने और आपको न दिखाने का सवाल है, इस मामले में मैंने जो कुछ किया, अपने देश के हित में किया. एक नन्हें से अफ्रीकी देश को, जिसमें सौ फीसदी लोग आप कैसे काले और नीग्रो ही रहते हैं, रूस के चंगुल से बचाने के लिए हम गोरे अमरीकी सैनिकों का खून नहीं बहा सकते. सिनेट के अधिकांश सिनेटर मेरी इस राय से सहमत हैं, और आपको बोरोजा पर अमरीकी आक्रमण करने की इजाजत कभी नहीं देंगे."

डिलमैन ने कहा, "मुझे तुम्हारा इस्तीफा चाहिये. अभी. इसी वक्त. मुझे तुमसे कोई बहस नहीं करनी है. यदि तुमने ऐसा नहीं किया, तो तुम्हें जर्बदस्ती तुम्हारे कार्यालय से बाहर निकाल दिया जायेगा. क्या तुम चाहते हो कि ऐसी नौबत आये?"

"मैं ऐसी नौबत नहीं आने दूंगा, लेकिन आपके सच्चे शुभचिंतक होने के नाते, चाहता था कि वह नौबत भी न आये कि आपको इस मुकदमें में जलील होकर अपने पद से हटना पड़े. मगर, आप खुद ही यह मुसीबत मोल ले रहे हैं, तो मैं क्या कर सकता हूं?"

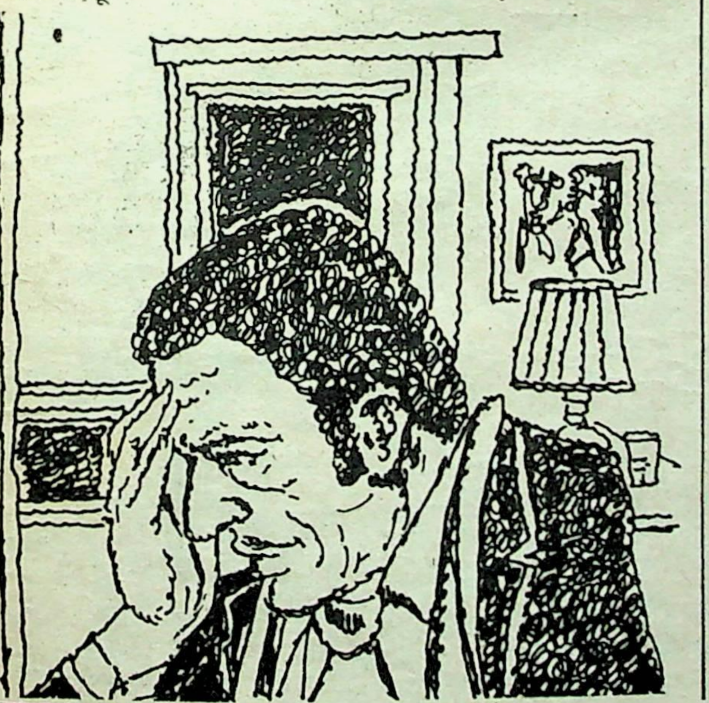

जैसा कि ईटन ने भविष्यवाणी की थी, डिलमैन को अपने खिलाफ लगाये गये महाभियोग के मुकदमे में सबसे जबर्दस्त सामना सैली की ओर से करना पड़ा, जो उन्हें पूरी तरह से नंगा करने पर तुली थीं. उनके खिलाफ लगाये गये अन्य आरोपों का प्रत्युत्तर उनके वकीलों (मैनेजरों) ने दिया, लेकिन इस विशेष आरोप से अपना बचाव करने के लिये उन्हें खुद भी जाना पड़ा

विरोधी सिनेटरों के वकीलों ने जो कुछ सैली को सिखाया-पढ़ाया था, उसने उसके अलावा अपनी ओर से भी काफी मिर्च-मसाला जोड़कर मामले को जो मोड़ दिया, उसने राष्ट्रपति फिल्मों के एक बलात्कारी खलनायक नजर आने लगे, और सैली एक ऐसी अबोध किशोरी, जो जबरन बलात्कार का शिकार हुई हो.

मगर, सैली के इस बयान के बाद, ईटन ने भी अपनी भूमिका बदल दी. उसकी पत्नी ने यह देखकर कि मुकदमें के बाद डिलमैन की व्हाईट हाउस से छुट्टी हो जायेगी और उसका स्थान ईटन लेगा, तलाक का विचार त्याग दिया, और ईटन के साथ आकर रहने लगी. उसके मन में 'अमरीका की प्रथम महिला' बनने की महात्वाकांक्षा, जो अब तक सैली को प्रेरित करती आ रही थी, जाग उठी. उसने ईटन को अल्टीमेटम दिया कि वह सैली से मिलना-जुलना बंद करे, नहीं तो वह उसकी राष्ट्रपति बनने की आकांक्षा का कबाड़ा करके रख देगी. ईटन जानता था कि प्रभावशाली के जो कह रही है, वह करके दिखा भी सकती है. वह सैली के साथ रुखाई से पेश आने लगा. यह रुखाई बाद में शत्रुता में बदल गयी.

ईटन के इस हृदय-परिवर्तन ने सैली की आंखें खोल दीं. प्रतिशोध की आग में जलते हुए उसने शपथ खायी कि वह ईटन को नेस्तनाबूद करके रख देगी, और डिलमैन को, जिसने स्वयं उसका कुछ नहीं बिगाड़ा था, न्याय दिलायेगी.

उसने अपने पिता को सब बातें साफ-साफ बता दीं. कुछ भी नहीं छिपाया, न अपना झूठ, न अपना धोखा. पिता जो अब तक डिलमैन का विरोध करते आ रहे थे तब डिलमैन के समर्थक हो गये. उन्होंने 40 के करीब ऐसे गोरे सिनेटरों को, जो उन्हीं की भांति डिलमैन के विरोधी थे, डिलमैन के बारे में सब सच-सच बताकर, डिलमैन का समर्थन करने के लिये राजी कर लिया.

मुकदमे की सुनवायी के बाद, मुख्य न्यायाधीश ने सब सिनेटरों को अलग-अलग बुलाकर पूछा, "क्या आप राष्ट्रपति के विरुद्ध लगाये गये महाभियोग के आरोपों को सच मानते हैं?"

सिनेटर "हां" या "ना" कहकर आते-जाते रहे.

राष्ट्रपति को उसके पद से तभी हटाया जा सकता था, जब दो-तिहाई सिनेटर उन्हें दोषी मानें. जब मुकदमा शुरू हुआ था, तब 80 प्रतिशत से अधिक उनके विरोधी थे.

उनसे पूर्व, एंड्रयू जान्सन नामक जिस अमरीकी राष्ट्रपति के विरुद्ध सौ वर्ष पूर्व महाभियोग लगाया गया था, वे मतदान में सिर्फ एक मत से जीते थे.

संयोग ही कहा जायेगा इसे कि अंतिम मतदान में डिलमैन भी सिर्फ एक ही मत से जीते.

जिस सिनेटर के मत ने उन्हें विजय दिलायी, उन्हें उनके पद पर बने रहने दिया गया, वह सिनेटर था वाटसन. सैली वाटसन का पिता. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनीफा

जेड. ए. बुखारी

1943 की बात है. मित्र-सेनाएं उत्तरी अफ्रीका में बैठी युद्ध का नक्शा तैयार कर रही थीं. जनरल आईजनहावर और उनके साथियों ने मनसूबा तैयार किया कि मित्र-सेनाएं अचानक सिसली में उतार दी जायें. स्पष्ट बात है कि यह मनसूबा गुप्त रखा गया और हर प्रकार से पूरा प्रबंध किया गया कि गिनती के कुछ अफसरों के सिवा किसी को इसकी खबर न हो.

जिन अफसरों को इस भेद का पता था, उनमें से एक जवान अमरीकी था. यह साहब बड़े विलासी थे. उन दिनों एक लड़की से उनकी बहुत गाढ़ी छन रही थी. यह लड़की वास्तव में डच नहीं थीं, डच बनी हुई थी. असल में वह जर्मन लड़की थी. उसका नाम हनीफा था. वह बेहद सुंदर, मेहमानदारी में प्रवीण, बातचीत में शिष्ट और मोहक थी.

जनरल आईजनहावर के खुफिया दफ्तर में निश्चय हुआ कि मित्र-सेनाएं सिसली में उतरें. सुबह को निश्चय हुआ और शाम को उसकी सूचना जर्मनी को मिल गयी. जनरल आइजनहावर के सब किये-धरे पर पानी फिर गया. मित्र-सेनाओं ने वह मुंह की खाई कि उसकी सेना के बड़े-बड़े सलाहकार बैठे जख्म चाटते रहे.

अब चिंता यह हुई कि जर्मनों को कैसे पता चला कि मित्र-सेनाएं आक्रमण करने वाली हैं. सिसली में तो जर्मनों की सेना नहीं थी और अगर थी भी, तो बहुत मामूली. यह कैसे हुआ कि उन्होंने मित्र-शक्तियों के आक्रमण के दिन से ठीक पहले पूरी सेना वहां बुला ली. ज़रूर कोई घर का भेदी है, जिसने मित्रशक्तियों की यह लंका ढाई है.

यह ढूंढ मची हुई थी कि वह अमरीकी मेजर साहब मुंह बिसूरे हुए आये, जो हनीफा के साथ रंग-रलियां मनाने में मशगूल थे. यह साहब उदास बैठे थे कि किसी ने पूछा, "क्यों भई, क्या हुआ?"

आंखों में आंसू भरकर उन्होंने फरमाया, "मेरी हनीफा कहीं चली गयी."

होते-होते यह खबर सब में मशहूर हुई कि हनीफा मेजर साहब को छोड़कर भाग गयी है. जब यह खबर खुफिया दफ्तरवालों के पास पहुंची, तो उनके कान खड़े हो गये. मेजर साहब की तलबी हुई और उनसे पूछ-ताछ हुई. पता चला कि उन हजरत ने इश्क की तरंग में आकर हनीफा को बता दिया था कि हम अमुक तारीख को सिसली पर हमला करनेवाले हैं.

उन दिनों खुफिया कार्रवाइयों के इंचार्ज जनरल डनोवन थे. उनके साथ उनके सहायक दो अफसर थे. उन तीनों ने सलाह की कि जो हुआ, सो हुआ. अब ऐसी तदबीरें करनी चाहिए कि हनीफा को यह खयाल भी न गुजरे कि हम उस पर शक कर रहे हैं. हनीफा को यह खयाल रहा कि मुझ पर किसी को संदेह नहीं, तो वह फिर किसी न किसी दिन जासूसी करने आ निकलेगी. फिर जो हो, सो हो.

इस बात को कोई महीना भी न बीता था कि एक नौजवान अफसर खुशी-खुशी कैंटीन में आये और फरमाया कि हनीफा हालैंड से लंदन आ गयी है.

उसको क्या मालूम कि इस जालिम हसीना का यहां किस-किस को इंतजार था. खुफिया दफ्तरवालों ने जब सुना कि बी साहिबा तशरीफ ले आयी हैं, तो बहुत खुश हुए. इधर बी साहिबा थीं कि खुलेआम होटलों में, क्लबों में, सैर-तमाशों में सैनिक अफसरों से मिलती थीं और उनका जी बहलाती थीं.

इस औरत की मौजूदगी से क्या फायदा उठाया जाये? किस तरह इस औरत को धोखा दिया जाये? किस तरह इस औरत के जरिये जर्मनों को गलत सैनिक सूचनाएं दी जायें? वह क्या सूचना हो, जो गलत भी हो, और जर्मनों को बेहद गलतफहमी में डाल दे! यह थे वह सवाल, जो खुफिया दफ्तर के अफसरों के मस्तिष्क में चक्कर लगा रहे थे.

उन दिनों मित्रशक्तियां अपनी सेनाएं नारमंडी में उतारने वाले थे और हमले की तैयारियां पूरी कर रहे थे, लेकिन साथ ही साथ उसके जासूस सूचना पहुंचा रहे थे कि जर्मनों को इस आक्रमण की तैयारियों का पूरा-पूरा पता है और वह मुकाबले के लिए हर प्रकार की जवाबी तैयारियां कर रहे हैं.

अब सैनिक खुफिया दफ्तर ने यह तजवीज सोची कि हमले की दिशा बदलने की झूठी तैयारी की जाये और यह प्रकट किया जाये कि चूंकि मित्र-शक्तियों को जर्मनी की जवाबी तैयारी का हाल मालूम हो गया है, इसलिए अब वह नारमंडी में अपनी सेनाएं नहीं उतारेंगे, बल्कि नारमंडी के बजाय हालैंड पर हमला करेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्रशक्तियों के गुप्तचर विभाग को यह विश्वास था कि यह कमबख्त औरत इस बला की हसीन है और इस बला की जहीन है कि जिस अफसर पर चाहे, अपना जादू चला दे और उससे किसी न किसी प्रकार खुफिया से खुफिया राज भी उगलवा ले.

अब यह तलाश हुई कि वह अफसर कौन हो, जिससे यह लड़की राज उलगवा ले. अतः एक बहुत लायक, खूबसूरत, बहुत जवान अफसर ढूंढ निकाला गया, मगर मुसीबत यह आ पड़ी कि अफसर इतना बड़ा एक्टर न था कि हनीफा को झांसे में ले आये. अगर इस अफसर को मालूम हो गया कि यह औरत जासूस है और मैं उसको गलत सूचना देकर झांसे में ला रहा हूं, तो यह व्यक्ति उस औरत के साथ गर्मजोशी से न मिल सकेगा और वह औरत ताड़ लेगी कि दाल में जरूर कुछ काला है.

निश्चय यह हुआ कि उस नौजवान अफसर जान को यह न बताया जाये कि वह औरत जासूस है है और न उसको यह बताया जाये कि जिस हमले की तैयारी के कामों पर तुम को लगाया जा रहा है, वह वास्तव में शत्रु की आंखों में धूल झोंकना है.

अब इस समस्या पर सोच-विचार होने लगा कि कोई ऐसा संस्थान हो जिसमें हालैंड पर हमले की तैयारी का झूठा मनसूबा तैयार किया जाये.

इस के लिए एक फिल्म-कंपनी बनायी गयी. वार्डो स्ट्रीट, लंदन में उसका बाकायदा दफ्तर और स्टूडियो बनाया गया. उस कंपनी में सब के सब हालैंड के वासी रखे गये. देशभक्त, स्वदेश से हिटलर की मार खाकर निकले हुए लंदन में शरणार्थी. इस फिल्म-कंपनी का काम यह था कि हालैंड के लुटे-पुटे लोगों के बारे में डोकूमेंटरी फिल्में बनाये. पंफलेट जारी करे और किसी न किसी तरीके से यह पंफलेट हालैंड में पहुंचाये, ताकि वहां के लोगों का हौसला बढ़े और वह यकीन कर लें कि एक न एक दिन मित्रशक्तियां हम को हिटलर के चंगुल से छुड़ा देंगी.

इस कंपनी में मित्रशक्तियों ने असहाय हालैंडवासियों की मदद के लिए अपने दो-चार अफसर भी नियुक्त कर दिये. इन अफसरों में एक तो जान था और दो-चार अन्य. इनसे कहा गया कि देखो, कानों कान किसी को इसकी खबर न हो कि मित्र-शक्तियां हालैंड में अपनी सेनाएं उतारनेवाली हैं.

यह संस्थान कुछ ही सप्ताह में अपना काम करने लगा. धड़ाधड़ डोकूमेंटरी फिल्में बनने लगीं. पंफलेट छपने लगे और संस्थान में काम करने वाला हर 'डच' यह समझने लगा कि मैं अपने देश को आजाद कराने के लिए काम कर रहा हूं.

जब इस संस्थान का काम संतोषजनक रूप में चलने लगा, तो इस बात की तदबीरें होने लगीं कि जान और हनीफा को एक दूसरे से मिलाया जाये. उन दिनों हनीफा एक अन्य अफसर के साथ रंगरलियां मना रही थी, मगर उस अफसर का इस फिल्मी संस्थान से दूर का भी संबंध न था, और न उचित समझा गया कि उस अफसर को संस्थान में शामिल कर लिया जाये. बहुत सोच-विचार के बाद एक बहुत बड़ी दावत की घोषणा की गयी. इस दावत में बहुत से अफसरों को बुलाया गया, जिनमें जान भी था, और वह अफसर भी, जिनके साथ हनीफा गुलछर्रे उड़ा रही थी. तरकीब ऐसी चली गयी कि उस अफसर ने कह-सुनकर हनीफा के नाम भी निमंत्रण-पत्र जारी करा दिया.

ऐन दावत के दिन उस अफसर को एक सरकारी काम पर छह-सात सौ मील दूर हवाई जहाज के जरिये भेज दिया गया और यों हनीफा उस अफसर के बगैर दावत में शामिल हुई यानी कबाब बगैर हड्डी के.

यह दावत क्या थी, मदिरा-पान सभा थी. शराब पानी की तरह बह रही थी और संगीत ऐसा बज रहा था कि उन्माद की अवस्था दुगनी हो रही थी.

हनीफा का महफिल में आना था कि महफिल जगमगा उठी.

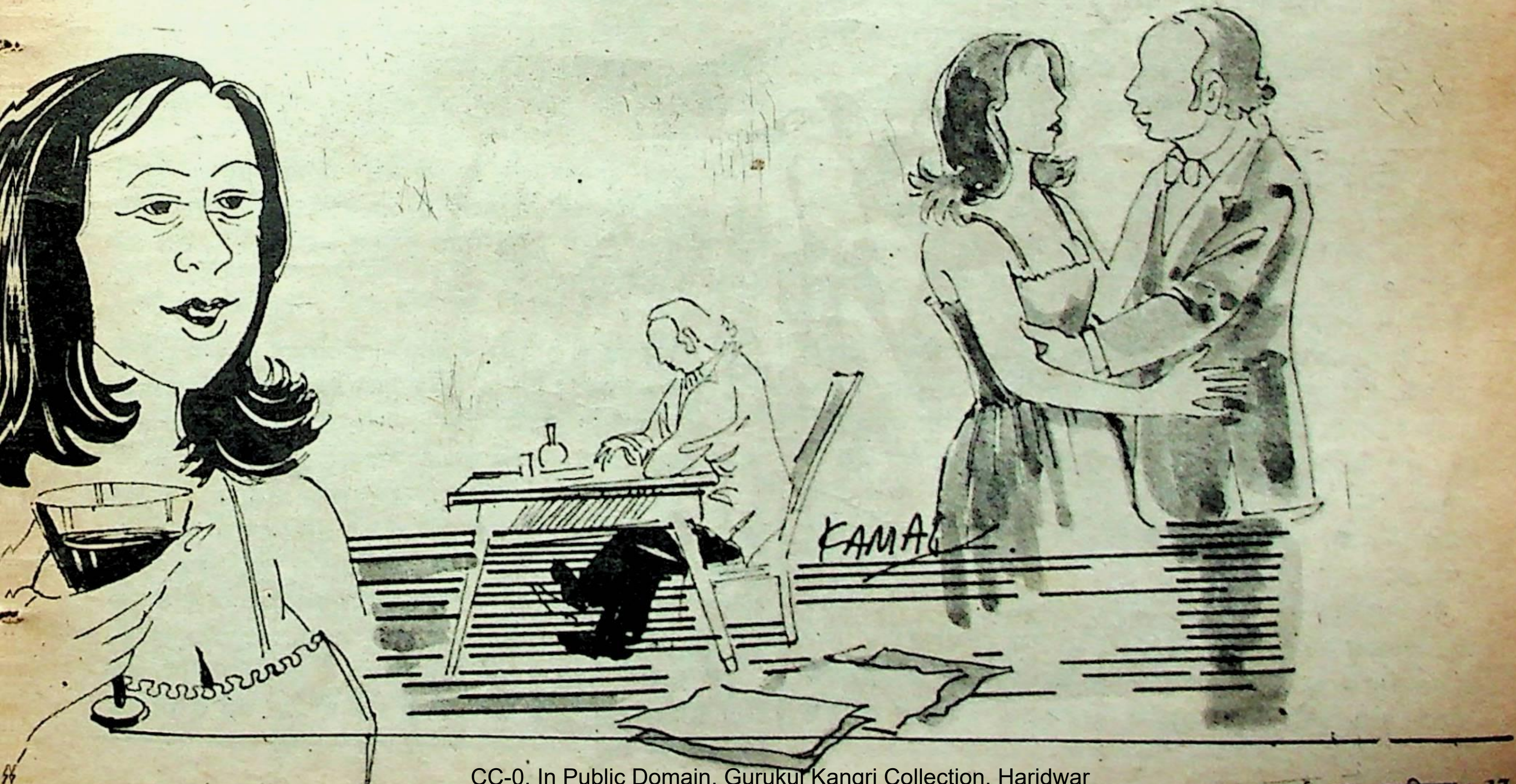

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी निगाहें हनीफा के चेहरे पर जम कर रह गयीं. खुफिया दफ्तर का एक अफसर आगे बढ़ा और उसने बहुत तपाक से हनीफा का स्वागत किया.

शराब का दौर चला. दिल-दिमाग पर सरूर छा गया और आंखों में लाल-लाल डोरे पड़ने लगे.

खुफिया दफ्तर के अफसर शराब के नशे में बदमस्त होने वाले कहां, मगर अब के उसने अपने ऊपर ऐसा सरूर आच्छादित किया था कि हनीफा भी उसके चक्कर में आ गयी. दोनों उठकर नृत्य करने लगे. घूम-घूमकर और झूम-झूम कर!

जान इस दुनिया से अलग एक मेज पर अकेला बैठा शराब के कड़वे घूंट गले से उतार रहा था. न जाने उसको अकेलापन काट रहा था या अपने किसी खयाल में गर्क था.

नृत्य करते-करते जब खुफिया अफसर की नजर जान पर पड़ी, तो उसने हनीफा से कहा कि देखो, इस आदमी की तरफ निगाह उठा कर भी न देखना! हनीफा बोली, " कौन आदमी?" खुफिया अफसर ने कहा, "वह सुनहरी बालों वाला. अपने आप को बहुत बड़ा खुफिया अफसर समझता है. घमंड इसको यह है कि कोई लड़की मेरे चंगुल से बच कर नहीं जा सकती और खुदा जाने लड़कियों को क्या हो गया है. जिस को देखो, उस पर जान छिड़कती है. दो-चार बार यह शत्रु की सेना में घुसकर उसके राज क्या मालूम कर लाया कि जमीन पर घमंड के मारे उसका पांव ही नहीं टिकता!"

अब जो नृत्य कुछ देर के लिए खत्म हुआ, तो खुफिया सैनिक अफसर कहीं इधर-उधर टल गया. कोई बीस-पच्चीस मिनट बाद आकर देखता है, कि हनीफा और जान एक दूसरे से आलिंगनबद्ध हैं और हरे-भरे पौधों की तरह नृत्य में लहर रहे हैं..

राग-रंग और नृत्य-सरूर की महफिल रात गये तक चलती रही. कोई दो-ढाई बजे जब महफिल खत्म हुई, तो बहकी-बहकी निगाहें, लड़खड़ाते हुए कदमों के साथ लोग नृत्यशाला से बाहर निकलकर गाड़ियों में बैठने लगे और अपने-अपने घर की राह लेने लगे. एक टैक्सी में हनीफा सवार हुई और उसके साथ जान भी.

हनीफा के निवास-स्थान पर गुप्तचर पहले ही से नियुक्त थे. उन्होंने गुप्तचर सैनिक कार्यालय को सूचना दी कि जान हनीफा के साथ उसके निवास-स्थान में प्रवेश कर गया है. अगले दिन सुबह नौ बजे गुप्तचर ने फिर सूचना दी कि अभी-अभी जान टैक्सी में बैठकर दफ्तर की ओर गया है.

हनीफा जर्मन जासूसा और सीधे-सादे कप्तान जान की दोस्ती हो गयी और वह भी ऐसी कि दोनों एक दूसरे पर आसक्त थे. एक दूसरे के साथ-साथ छाया की तरह. कप्तान जान तो मनप्राण से उस पर मोहित था, मगर वह प्राणों से कप्तान पर कुरबान थी लेकिन दिल से जर्मनों के साथ थी. कमबख्त प्रेम की पेंगें भी बढ़ाती थी और मित्रशक्तियों के सैनिक भेदों पर हाथ भी डालती जाती थी.

जब कप्तान जान और हनीफा आपस में खूब घुल-मिल गये और खुफिया दफ्तरवालों को यकीन हो गया कि दोनों एक दूसरे के चंगुल में हैं, तो उन्होंने कप्तान जान को बड़ी-बड़ी कानफ्रेंसों में बुलाना शुरू किया. ऐसी कानफ्रेंसें, जो बंद कमरों में होती थीं, ऐसे कमरों में, जिनके अंदर की आवाज बाहर नहीं जाने पाती, ऐसे कमरे जिन के बाहर बीस-बीस फुट तक कांटेदार तार के गुच्छे पड़े होते हैं और बीस फुट के बाहर सशस्त्र पहरा होता है.

कप्तान जान ऐसी कानफ्रेंसों में बुलाया जाता था. ऐसी कानफ्रेंसों में हालैंड पर सेनाएं उतारने की तैयारियों का जिक्र किया जाता था, और आक्रमण के प्रबंधों के बारे में बहस की जाती थी.

लंदन में तो यह कुछ होता था और उधर जर्मनी में मित्रशक्तियों के गुप्तचर इस टोह में रहते थे कि इन कानफ्रेंसों का हाल यहां जर्मनी में हिटलर को मालूम होता है या नहीं. वे फौरन सूचना देते थे कि हिटलर के हाई कमांड को मालूम हुआ है कि अमुक स्थान पर लंदन में कानफ्रेंस हुई है और उस में हालैंड पर आक्रमण करने की तैयारियों पर बहस हुई थी.

होता यह था कि लंदन की कानफ्रेंसों की सभी बातें कप्तान जान अपनी सादगी में हनीफा को बता देता था, और हनीफा यह बातें खुफिया तरीके से जर्मनी पहुंचा देती थी.

लंदन के खुफिया दफ्तर ने हनीफा को और झांसा देने के लिए एक तरकीब चली. कप्तान जान को हुकम दिया कि तुम्हें बहुत खुफिया कागजात ले कर फ्रांस जाना है. एक खुफिया विमान का प्रबंध कर दिया गया है. यह विमान तुम को इंग्लिश चैनल के पार ले जायेगा और जर्मन सैनिकों के पीछे उतार देगा. वहां तुमसे हमारा एक जासूस आ मिलेगा. उसे यह कागजात दे देना. कल रात को बारह बजे सफर के लिए तैयार हो जाओ और अमुक हवाई अड्डे पर पहुंच जाओ.

इन गुप्तचरों ने जो हनीफा के घर पर नियुक्त थे, सूचना दी कि कप्तान जान रो-रोकर हनीफा से विदा हुआ.

मित्रशक्तियों के जासूस ने जर्मनी से सूचना दी कि लंदन से हिटलर के खुफिया दफ्तर को खबर मिली है कि एक जासूस इंग्लैंड से फ्रांस के तट पर अमुक समय उतरेगा. वह कुछ कागजात वहां किसी जासूस को देगा. जो जासूस लंदन से आ रहा है, उसे न किसी प्रकार का नुकसान पहुंचाया जाये, न उसे गिरफ्तार करने का प्रयत्न किया जाये, लेकिन उस जासूस पर अवश्य नजर रखी जाये, जिस को लंदन का जासूस कागजात का पुलिंदा देगा.

यही हुआ. कप्तान जान रात के अंधेरे में फ्रांस पहुंचा. उससे एक जासूस मिला और कागजात लेकर चला गया. कप्तान जान सही सलामत लंदन पहुंच गया, लेकिन उस दूसरे जासूस को जर्मनों ने मार डाला.

अब हनीफा की हिटलर के खुफिया दफ्तर में धाक बैठ गयी. सब को यकीन हो गया कि हनीफा बहुत गजब की जासूसा है, इसलिए उसकी बातों पर एतबार कर लेना चाहिए, लेकिन कुछ जर्मन जनरल शक्की स्वभाव के थे.

जब जर्मन जरनैलों के संदेह की खबर लंदन के खुफिया दफ्तर वालों के पास पहुंची, तो वह सोच में पड़ गये कि ऐसी कौन-सी तदबीरें की जायें कि जर्मन जरनैलों के दिल में कोई संदेह न रहे और वह सचमुच समझने लगें कि मित्रशक्तियां नारमंडी के तट पर नहीं, बल्कि हालैंड के तट पर अपनी सेनाएं उतारने वाली हैं.

इस संदर्भ में लंदन के खुफिया दफ्तर ने दो तदबीरें कीं और वह दोनों सफल रहीं. एक तदबीर तो यह थी कि उन लोगों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरगरमियां तेज कर दी जायें, [illegible] कार्रवाइयां कर रहे थे. इन के एक नेता को खुफिया विमान के द्वारा लंदन बुलवाया. वह 'डच' था और वह अंग्रेज. जरूरत इस बात की पड़ी कि बीच में कोई भरोसेवाला अनुवादक हो. खुफिया दफ्तर के एक बड़े अफसर ने कप्तान जान से ज़िक्र किया और कहा कि अनुवादक के बिना काम बनेगा नहीं और भरोसेवाला अनुवादक मिलना बेहद मुश्किल है. कप्तान जान यह सुनकर पहले तो कुछ हिचकिचाया. फिर बोला, "मैं एक औरत को जानता हूं. हालैंड की रहने वाली है. मेरी अच्छी दोस्त है. और औरत काबिले-एतबार है."

खुफिया दफ्तर का अफसर बोला, "हां, अगर तुम्हें उस पर एतबार है, तो हमें भी कोई एतराज नहीं. उसका नाम और पता दे दो, ताकि मैं अपने तौर पर भी कुछ जांच कर लूं कि वह औरत भरोसे के काबिल है या नहीं."

खुफिया दफ्तरवालों को हनीफा के बारे में जांच तो क्या करनी थी, उन्होंने तो पांसा फेंका था कि अनुवादक का जिक्र करेंगे, तो जान हनीफा का नाम लेगा. हम हनीफा को बुला लेंगे और उसके सामने हालैंड से आये हुए जासूस के साथ बातें करेंगे. हनीफा जब अपने कानों से सारी बातें सुन लेगी, तो उसको और यकीन हो जायेगा कि मित्रशक्तियां हालैंड पर हमला करने की तैयारियां कर रही हैं और जाहिर बात है कि वह सारी बातचीत जर्मनी पहुंचायेगी.

हालैंड से वह खुफिया आदमी आया. खुफिया कमरे में उसके साथ खुलकर बातें हुईं कि मित्रशक्तियां हालैंड के तट पर अपनी सेनाएं उतार रही हैं.

हनीफा अनुवादक के कर्त्तव्य निभा रही थी. इसलिए सब कुछ सुन रही थी और खुश हो रही थी कि सब हालात सीधे उसे मालूम हो गये.

हनीफा ने यह सब हालात जर्मनी पहुंचा दिये. वहां सब लोग बौखला गये कि अब क्या होगा. और क्या करते, अपनी सेनाओं को नारमंडी के तट से हटाने की तदबीरें करने लगे.

जब मित्रशक्तियों के जासूसों ने खबर पहुंचायी कि जर्मन नारमंडी से अपनी सेनाएं हटाने की तदबीर कर रहे हैं, तो वह बहुत ही खुश हुए कि तीर निशाने पर बैठा.

उन्होंने हनीफा को उस फिल्म-कंपनी के दफ्तर में नौकर रख लिया और सारे प्रापेगंडे का काम उसके सुपुर्द कर दिया.

अब रात-दिन फिल्मों के मसौदे तैयार होने लगे. फिल्म-कैमरे रात-दिन चलने लगे. एक्टरों की रेलपेल हो गयी. छापेखाने को हुकम दिया गया कि चौबीस घंटे खुला रहे और चौबीस घंटे हमले के बारे में निर्देश और कागजात छापता रहे.

इन सब कामों में हनीफा को प्रमुख रखा गया. वह यहां का काम भी करती थी और यहां के कागजात के एक-एक पुरजे की नकल जर्मनी भी खुफिया तौर पर भेजती थी.

कप्तान जान गरीब बिल्कुल निर्दोष था. उसे क्या मालूम कि हनीफा शत्रु की जासूसा है और शत्रु को सूचनाएं भेज रही है. खुफिया दफ्तरवालों को सब से बड़ी चिंता यह थी कि कप्तान जान को यह न मालूम होने पाये कि हनीफा शत्रु की जासूसा है, तो वह सारा भांडा फोड़ देगा. उस समय हनीफा को गिरफ्तार कर के खत्म कर देना पड़ता और बना-बनाया खेल बिगड़ जाता और शत्रु तक हालैंड पर हमले की खबर पहुंचाने वाला कोई न रहता.

मित्रशक्तियों के जासूसों ने जर्मनी से सूचना दी कि हिटलर की हाई कमांड उस सैनिक नक्शे की तलाश में है, जिसके अनुसार मित्रशक्तियां अपनी सेनाएं हालैंड पर उतारने वाली हैं. इस युद्ध-नक्शे को प्राप्त करने के लिए उन्होंने अपने जासूसों को लंदन में कहला भेजा है, इसलिए सावधानी अनिवार्य है.

सावधानी कैसी! लंदन का खुफिया दफ्तर तो चाहता ही यही था कि किसी न किसी प्रकार यह युद्ध-नक्शा जर्मनी के जासूसों के हाथ लग जाये और वह उसे जर्मनी भेज दें, ताकि वहां वालों को यकीन हो जाये कि मित्रशक्तियां नारमंडी में नहीं, बल्कि हालैंड में अपनी सेनाएं उतारने की तैयारियां कर रही हैं. लंदन के खुफिया दफ्तर ने बहुत सावधानी से मित्र-शक्तियों की सेनाओं को हालैंड में उतारने का नक्शा तैयार किया. यह नक्शा हर दृष्टि से पूर्ण था और बिलकुल वैसा ही था, जैसे युद्ध का असल नक्शा होना चाहिए. यह नक्शा पूरा हो गया, और तिजौरी में रख दिया गया, तो इस तदबीर पर विचार होने लगा कि हनीफा को यह नक्शा चुराने पर किस प्रकार उकसाया जाये.

खुफिया दफ्तर का बड़ा अफसर तीन बार अपनी चाबियां मेज पर यों छोड़कर चला गया, जैसे भूल गया हो, मगर हर बार आकर देखा कि चाबियां ज्यों की त्यों पड़ी हैं और किसी ने उनको छुआ तक नहीं. एक बार उसने अपनी चाबियां कप्तान जान को भी दे दीं और देकर भूल गया. खयाल उसका यह था कि शायद जान यह चाबियां घर ले जाये और वहां हनीफा चोरी से उन चाबियों जैसी दूसरी चाबियां बनवा ले.

एक दिन खुफिया दफ्तर के बड़े अफसर ने युद्ध-नक्शा तिजोरी से निकाला. कप्तान जान और एकाध अन्य अफसर को दिखाया और आवश्यक विचार-विमर्श के बाद नक्शे को फिर तिजोरी में रख दिया और जान से कहा, "आओ, बाहर चलें. खाना खायें." मतलब उसका यह था कि जान को दफ्तर से बाहर ले जाऊं, ताकि हनीफा अकेली दफ्तर में रह जाये.

जब खुफिया दफ्तर का बड़ा अफसर जान को लेकर बाहर गया, तो हनीफा ने काम शुरू कर दिया. अपना हैंड-बैग खोला और उसमें से तिजोरी की वह चाबी निकाली, जो उसने बनवा रखी थी. चाबी को तिजोरी के ताले में डाला. खट की आवाज आयी और तिजोरी खुल गयी. हनीफा ने नक्शे निकाले. मेज पर फैलाये और माचिस के बराबर कैमरे से उन नक्शों की धड़ाधड़ तस्वीरें ले लीं.

हनीफा ने सब काम पूरा कर लिया था. नक्शे की तस्वीरें उसके कैमरे में थीं. उसने असल नक्शे फिर तिजोरी में रख दिये. तिजोरी का ताला बंद कर दिया और बाहर सड़क पर आ गयी.

अब हनीफा का केवल एक ही काम रह गया था और वह यह कि इंग्लैंड से भागकर जर्मनी पहुंचे और इंग्लैंड के युद्ध-नक्शे हाई कमांड में पेश करे.

हनीफा जर्मनी पहुंची. नक्शे हाई कमांड के सामने पेश किये. वहां सख्त भगदड़ मच गयी और बहुत तेजी से हिटलर की सारी सेना हालैंड में जमा हो गयी.

छह जून, 1944 का सूर्य उदय होने में अभी कुछ क्षण बाकी थे कि मित्रशक्तियों की सेना नारमंडी के तट पर उतरी और हिटलर का चढ़ा हुआ सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया. □

प्रस्तुति : सुरजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की पहली महिला जासूस

अनिता जैन

द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान अनेक महिलाओं ने अपनी जान पर खेलकर जर्मन ज्यादतियों के खिलाफ संघर्ष में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी. ऐसी वीरांगनाओं में एक भारतीय महिला भी थी, जिसका नाम अंतर्राष्ट्रीय जासूसी के इतिहास में कभी भुलाया नहीं जा सकता. इस महिला का नाम था—राजकुमारी नूर इनायत खां.

नूर अंग्रेजों के खिलाफ लंबे संघर्ष करनेवाले वीर टीपू सुलतान की वंशज थी. उसके पिता सूफी संत थे. सन् 1914 में नूर का जन्म मास्को में हुआ था. उसकी जिंदगी का अधिकांश भाग फ्रांस में ही बीता था. युद्ध छिड़ने तक वह रेडियो के लिए बच्चों की कहानियां लिखा करती थी.

जब फ्रांस पर जर्मन सेना का अधिकार हो गया तो वहां से भागकर इंग्लैंड चली गयी. वहां उसने ब्रिटिश सेना को अपनी सेवाएं अर्पित कीं. उसके सौंदर्य और बुद्धिमत्ता से ब्रिटिश सैनिक अधिकारी बेहद प्रभावित हुए. पहले उसे गुप्त वायरलैस संचालन का प्रशिक्षण दिया गया. फिर ब्रिटिश गुप्तचर सेवा से उसे अंतर्राष्ट्रीय जासूसी के लिए अपने साथ ले लिया.

नूर का व्यक्तित्व इतना आकर्षक और प्रभावित करनेवाला था कि जो भी उससे एक बार बात कर लेता, वह उसका पुजारी होकर रह जाता. हालांकि नूर अत्यंत भावुक और तेज मिजाज की थी, और जासूसी जैसे काम के लिए अयोग्य साबित हो सकती थी, फिर भी दुस्साहसी और निष्ठावान होने के कारण ब्रिटिश अधिकारियों ने उसे जर्मन शिकंजे में जकड़े फ्रांस में भेजने का निश्चय किया.

फ्रांस में गोपनीय सूचनाएं इकट्ठा कर गुप्त रेडियो द्वारा उन्हें ब्रिटिश गुप्तचर विभाग को भेजने का महत्वपूर्ण कार्य उसे सौंपा गया. 16 जून, 1943 की रात्रि को डायना रोडेन सेसिल लेफोर्स नामक दो महिलाओं के साथ नूर को एक जलयान द्वारा फ्रांस की ओर घाटी पर उतार दिया गया. फ्रांस में ब्रिटिश गुप्तचर सेवा के अधिकारी हेनरी दैरीकोर्ट ने तत्काल उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया. नूर को पेरिस में हेनरी गैरी नामक ब्रिटिश गुप्तचर के साथ रखा गया. हेनरी जर्मनी के खिलाफ महत्वपूर्ण सूचनाएं एकत्र करने के साथ-साथ विध्वंसक कार्य भी किया करता था. उसके साथ काम करने वाले गुप्तचर हैरान थे कि इस बेहद खूबसूरत नाजुक महिला से जासूस का जोखिम भरा कठिन कार्य कैसे हो पायेगा? लेकिन काम के प्रति अपनी निष्ठा, कुशाग्रबुद्धि, और कार्य-कुशलता के द्वारा जल्दी ही नूर इनायत ने उनका भ्रम दूर कर दिया.

कुख्यात जर्मन राजनीतिक पुलिस 'गेस्टापो' उन दिनों फ्रांस में मित्र राष्ट्रों की जासूसी और विध्वंसात्मक कार्यवाहियों से त्रस्त थी एवं व्यापक पैमाने पर संदिग्ध जाससों की धर-पकड़ कर रही थी.

फलस्वरूप राजकुमारी नूर इनायत को कुछ दिनों चुपचाप और निष्क्रिय रहना पड़ा. फिर उसने अपने गुप्त रेडियो संदेश भेजने प्रारंभ कर दिये. इन संदेशों में मित्र राष्ट्रों के जासूसों की गिरफ्तारी के बारे में विस्तृत जानकारी थी. ब्रिटिश अधिकारियों को आशंका हुई कि जर्मनों को नूर का सुराग मिलने पर वे उसे मृत्युदंड देने से हिचकेंगे नहीं. अतएव उन्होंने नूर को तत्काल लौटने का आदेश दिया. लेकिन नूर इसके लिए राजी नहीं हुई. उसका कहना था कि मेरे यहां से हटने पर गुप्तचर विभाग का बहुत-सा काम ठप्प ही जायेगा, अतः मेरा स्थान लेने जब तक यहां कोई आ नहीं जाता, तब तक मैं यहां से हटूंगी नहीं.

जर्मन पुलिस ने शीघ्र ही फ्रांस में ब्रिटिश गुप्तचरों के संगठन का पता लगा लिया और उसमें जासूस छोड़ दिए.

ब्रिटिश अधिकारियों को नूर के संदेश मिलने यकायक बंद हो गये. कुछ दिनों बाद संदेश मिलना फिर प्रारंभ हुए तो उनकी भाषा और ध्वनि में कुछ अंतर था. इससे ब्रिटिश अधिकारियों को संदेह हुआ कि नूर कहीं 'गेस्टापो' के हाथों तो नहीं पड़ गई!

अक्तूबर 1943 में पैरिस के फोश एवेन्यू स्थित अपने फ्लेट में से नूर को हिरासत में ले लिया गया. उसका सहयोगी साथी हैनरी गैरी और उसकी पत्नी जैनी भी गिरफ्तार कर लिए गये.

'गेस्टापो' के शिकंजे में कैद हो जाने के बाद नूर को तरह-तरह की यातनाएं देकर उससे गोपनीय जानकारी हासिल करने की भरसक चेष्टाएं की गयीं लेकिन फूल-सी सुकुमार उस बहादुर नारी ने पूरी दृढ़ता से कोई भी जानकारी देने से स्पष्ट इन्कार कर दिया. उसकी इस निष्ठा से कठोर और बेरहम जर्मन भी प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सके. अपने गुप्त दस्तावेजों में उन्होंने नूर की दृढ़ता और देश के प्रति निष्ठा की भूरि-भूरि सराहना की.

पैरिस में बंदी रहते हुए नूर ने दो बार भागने की असफल कोशिश भी की. उस पर काबू पाना आसान नहीं था, अतएव 'गेस्टापो' ने उसे जर्मनी भेज दिया.

नूर का वायरलैस-सैट, गुप्त-संदेश प्रणाली तथा महत्वपूर्ण कागजात 'गेस्टापो' के पास थे, इसलिए 'गेस्टापो' के अधिकारियों ने कुछ महीनों के अभ्यास के बाद नूर के नाम से ब्रिटिश गुप्तचर विभाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

को संदेश भेजना प्रारंभ कर दिया. ब्रिटिश अधिकारियों को संदेह हुआ. उन्होंन अपनी शंका के निवारण के लिए नूर के व्यक्तिगत जीवन से संबद्ध अनेक प्रश्न भेजे, नूर के कागजातों और डायरी से उन प्रश्नों के उत्तर पाकर जर्मनों ने ब्रिटिश अधिकारियों को सही जवाब दिये, इससे ब्रिटिश अधिकारी संतुष्ट हो गये. ब्रिटिश अधिकारियों की इस असावधानी से फ्रांस में ब्रिटिश गुप्तचरों का जाल छिन्न-भिन्न हो गया क्योंकि उनके संदेशों से प्राप्त जानकारी के आधार पर 'गेस्टापो' ने छापा मार-मारकर मित्र राष्ट्रों के लगभग सभी गुप्तचर फ्रांस के विभिन्न हिस्सों में पकड़ लिये. यही नहीं, इन झूठे संदेशों के प्रभाव में आकर ब्रिटिश अधिकारियों ने फ्रांस में अन्य बहुत-से गुप्तचर भेजे, जो सीधे 'गेस्टापो' के चंगुल में आ फंसे.

नूर को फोर्जहाइम नामक कुख्यात कारागार में रखा गया. एक अंधेरी बदबूदार सीलन-भरी कोठरी में इस दुस्साहसी युवती को लोहे की मोटी-मोटी जंजीरों से बांधकर रखा गया. उसे इतनी यातनाएं दी गयीं कि वह कंकाल-मात्र बनकर रह गयी. लेकिन उसकी रगों में वीर टीपू सुलतान का रक्त था तभी तो इतनी यातनाएं देने के बावजूद नाजी उससे एक भी रहस्य नहीं खुलवा सके.

सितंबर 1944 में उसे तीन अन्य महिला ब्रिटिश गुप्तचरों के साथ दाचो कारागार में भेजा गया. यहां उसे एक दीवार की ओर मुंह करके घुटनों के बल खड़ा किया गया. एक जरमन अधिकारी ने पिस्तौल से निशाना साधा और एक गोली पीछे से नूर की गर्दन को चीरती हुई निकल गयी. साहस, निष्ठा और पराक्रम की प्रतीक वह वीर नारी वहीं गिरकर मृत्यु को प्राप्त हो गयी.

बाद में पता चला कि फ्रांस में ब्रिटिश संगठन का प्रमुख हेनरी दैरीकोर्ट गद्दार हो गया था. दरअसल वह जर्मनों के लिए जासूसी कर रहा था और फ्रांस में उतरने के साथ ही नूर का भाग्य तय हो चुका था.

नूर को पकड़वाने में उसके साथी गुप्तचर हैनरी गैरी की बहिन रैनी गैरी का भी सहयोग था. युद्ध की समाप्ति के बाद प्राप्त जर्मन कागजातों से यह रहस्य खुला. रैनी पर ब्रिटिश अधिकारियों ने नूर को पकड़वाने के आरोप में मुकद्दमा चलाकर दंडित भी किया. □

पतिव्रता

एक गांव में वीरवर नाम का बढ़ई अपनी पत्नी कामदमनी के साथ रहता था. कामदमनी के काम उसके नाम के विपरीत थे. वह कामासक्त स्त्री थी. उसके गांव के अनेक पुरुषों से संबंध थे. गांव में कामदमनी के चरित्र को लेकर तरह-तरह की बातें होती थीं. धीरे धीरे ये बातें वीरवर के कानों तक भी पहुंची. उसने इन बातों का सच-झूठ जानने का निश्चय किया.

एक दिन वीरवर कामदमनी से बोला, "मैं कुछ दिनों के लिए परदेश जा रहा हूं.तुम मेरे लिए थोड़ा-सा कलेवा बना दो!"

कामदमनी मन ही मन यह सोचकर बहुत ही खुश हुई कि कुछ दिन तो आनंद से गुजरेंगे.

सुबह उसने पति को कलेवा देकर विदा किया और उसके जाते ही स्वयं भी अपने यार देवदत्त के पास जाकर उसे रात्रि को घर आने का न्योता दे आयी.

उधर वीरवर पूरा दिन जंगल में बिताकर सांझ को पिछवाड़े के दरवाजे से घर में घुस आया और खाट के नीचे छुप गया. थोड़ी देर बाद देवदत्त आया और उसी खाट पर बैठ गया. उसे देखकर वीरवर को बहुत क्रोध आया. वह उसे मारने का विचार करने लगा. फिर सोचा कि इन्हें अभी मारना उचित नहीं. जरा देखूं तो इनके इरादे क्या हैं?

देवदत्त के आने के थोड़ी ही देर बाद कामदमनी भी घर का दरवाजा बंद कर वहां आ पहुंची. देवदत्त ने हाथ बढ़ाकर कामदमनी को खाट पर खींच लिया. इसी असावधानी में कामदमनी का पांव खाट के नीचे छिपे वीरवर के शरीर से छू गया.

कामदमनी तुरंत समझ गयी कि हो न हो यह मेरा पति वीरवर ही है जो मुझे रंगे हाथों पकड़ने के लिए यहां छिपा बैठा है. अब यह अवश्य ही मुझे मार डालेगा. अतः कुछ उपाय सोचना चाहिए.

कामदमनी तो इस दुश्चिंता में पड़ी हुई थी उधर देवदत्त इन सबसे अनभिज्ञ उसे भोगने को उतावला हो रहा था. वह कामदमनी को आलिंगन में लेने को बढ़ा.

कामदमनी ने उसे अपने से दूर धकेलते हुए कहा, "मैं पतिव्रता सती सावित्री स्त्री हूं. यदि तुम मुझे छुओगे तो मैं तुम्हें शाप दे दूंगी..."

देवदत्त की समझ में नहीं आया कि इसे हुआ क्या है? उसने कामदमनी की तरफ देखा. जवाब में कामदमनी ने मुंह से कुछ न कहकर आंख और हाथ के इशारे से उसे समझाया कि यहां हम दोनों के अलावा कोई और भी मौजूद है. कामदमनी की चतुराई पर मन ही मन खुश होते हुए देवदत्त ने कहा, "यदि तुम सती सावित्री हो तो मुझे बुलाकर क्यों लायी थीं."

वह बोली, "आज सुबह जब में चंडिका देवी के मंदिर में गयी थी तब एकाएक देवी ने भविष्यवाणी की कि तुम छः महीने में विधवा हो जाओगी." मैंने देवी से प्रार्थना की कि यदि तुम यह जानती हो तो मेरे पति के प्राण बचाने का उपाय भी अवश्य जानती होगी. कृपा करके वह उपाय भी बता दीजिए. मैं अपने प्राण देकर भी उनकी रक्षा करूंगी."

देवी ने मेरी करुण प्रार्थना सुनकर कहा, "उपाय है तो सही पर उसका होना न होना एक बराबर है."

मैंने फिर प्रार्थना की कि जो भी उपाय हैं आप बता दीजिये मैं उसे अवश्य पूरा करूंगी.

तब देवी ने कहा, "यदि तुम एक रात पर-पुरुष के साथ व्यतीत कर लोगी तो तुम्हारे पति के ऊपर आये बुरे ग्रह टल जायेंगे." इसीलिए मैंने तुम्हें बुलाया है.

खाट के नीचे छुपा मूर्ख वीरवर पत्नी की बात सुनकर इतना प्रसन्न हुआ कि उसी क्षण बाहर निकलकर पत्नी को आलिंगनबद्ध करके बोला, "तुम सती सावित्री स्त्रियों में अग्रणी हो. पति की प्राण रक्षा के लिए तुमने पर-पुरुष का संसर्ग जैसा घृणित काम करके भी अपने सतीत्व को लांछित नहीं होने दिया. आज तुम्हारी भक्ति और बुद्धि ने ही मुझे अकाल-मृत्यु से बचाया है. मैं व्यर्थ ही लोगों की बातों में आकर तुम्हारे चरित्र पर शक करने लगा था. मुझे क्षमा कर दो देवि!" फिर देवदत्त से बोला, "मेरा अहोभाग्य जो आप मेरे घर आये और आपकी कृपा से ही मुझे नया जीवन मिला." □

पंचतंत्र से

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल की महफिल में दिल्ली की शमां

बाला दुबे

अठारहवीं शताब्दी के डगमगाते मुगलों का बिखरता हिंदुस्तान. उन दिनों समुद्री तट पर विलायती मल्लाह आपस में पंजे लड़ा रहे थे. जिसे जहां जगह मिलती वह वहीं धंसने लगा था. अंग्रेजों के अदने से एक दिलेर लुटेरे जॉब चारनंक ने काली घाट गांव के पास अपना अड्डा जमा लिया था. और फिर देखते ही देखते वे बंगाल की अंगुली पकड़कर पांउचे तक आ पहुंचे थे. जब इसकी खबर मुर्शिदाबाद में बैठे नवाब सिराजुद्दौला को लगी तो उसने 'हूं' कहकर सिर्फ सर हिला दिया था. फिलहाल तो उसकी शादी का जश्न मनाया जा रहा था. दूर-दूर से कोयल जैसी आवाजवाली तवाइफें बुलायी जा रही थीं

और उस दिन दिल्ली में भी बुलावा आ गया—मुन्नी के लिये. मुन्नी का नाम पूरी दिल्ली में महक रहा था. उसकी आवाज का जादू नवाबों-महाराजाओं के सर पर चढ़कर बोल रहा था. जब वह गाती तो उनके दिल शमां की तरह पिघलने लगते. कई दिल वालों ने दिल्लगी की कोशिश भी की मुन्नी से, पर मुन्नी की नजर से इनायत नहीं टपकी. मुन्नी दिल्ली की लरजती हुई शमा जिसके इर्दगिर्द सैकड़ों जले हुए पंख पड़े हुए थे—रईसों के, राजाओं के, नवाबों के. वैसे कीमती मुसलमानी लिबास से ढका मुन्नी का असली रूप कुछ और ही था. वह ब्राह्मण की बेटी थी—सुदामा से भी गरीब ब्राह्मण बालमुकुंद की बेटी.

आगरे के सूबे में सिकंदराबाद राऊ गांव में रहती थी वह. बालमुकुंद बामन दो जून की रोटी नहीं जुटा पाता और टब्बर में पांच बच्चे रोटी के टुकड़े के लिये चिल्ल-पों करते रहते. मुन्नी उसकी तीसरी बेटी थी. बालमुकुंद के पास गाहे-बगाहे दिल्ली का बिस्सू ढारी आ जाता था. वैसे बिस्सू की नजर थी पैनी. उसी ने मुन्नी को बारीकी से परखा था और उसे लगा कि बालमुकुंद की गुदड़ी में एक लाल भी पड़ा हुआ था. बिस्सू ढारी सुगना बाई के कोठे पर तबला बजाता था. लगे हाथ कायदे की लड़कियों को औने पौने में सौदा क़रके उन्हें दिल्ली के चावड़ी बाजार में बेच भी आता था. चावड़ी बाजार में रूप की आढ़ती होती थी. इसी थोक बाजार की सुगना बाई भी मंजी हुई आढ़तिया थी. पत्थर की शक्ल में हीरे उसके यहां आते और फिर उन्हें वह तराशती थी. फिर तराशे हुए यही हीरे रईसों के दिलों को कांच की तरह काट डालते.

बिस्सू ने ही बालमुकुंद और उसकी बीवी को ऊंच नीच समझाया. फिर गरीबी और भूख ने ममता का गला घोंट ही डाला. मोम के दिल से पत्थर के आंसू टपकने लगे. सौ रुपयों में बिस्सू मुन्नी को लेकर दिल्ली पहुंचा था. सुगना बाई ने मुन्नी को अपनी तीखी नजरों से परखा और फिर दो सौ रुपये बिस्सू के हाथ पर रख दिये.

दूज के चांद जैसी मुन्नी फिर अपनी पूर्णिमा की ओर तेजी से बढ़ी. रूप और आवाज की दुधारी तलवार लेकर वह महफिलों में जब उतरी तो उसने अपने कद्रदानों को नीम बिस्मिल कर दिया. सुगना बाई के 'दलिद्दर' दूर हो गये. फिर वह बड़ी नर्मी से मुन्नी से मिन्नतें करती कि फलां नवाब साहब ने उसकी नथ के पचास हजार लगाये हैं, फलां महाराजा तो एक लाख तक देने को तैयार हैं, पर मुन्नी ने अपनी नाक में पड़ी हीरो-पन्नों की नथ को 'उतारना' तो क्या उसे किसी को छूने तक नहीं दिया. सुगना बाई खिसिया-खिसिया जाती पर मुन्नी हंसकर टाल जाती. आखिर मुन्नी का भी तो कोई सपना था. अपने आकाश में वह अपना इंद्रधनुष स्वयं बनाना चाहती थी—हीरे, पन्ने, माणिक, नीलम, पुखराज से जड़ा हुआ इंद्रधनुष. और वह अपने रूप के सौदागर का इंतजार करती रही—कब आयेगा वह, कब वह गर्व से सर उठाकर सुगना बाई की ओर देख कर कहेगी, 'देख अम्मीं, तुमने अपनी मुन्नी की उड़ान को देखा.' और बंगाल से दावतनामा आज आ ही गया था. किस्मत उसे पुकार रही थी और मुन्नी भी गाफिल नहीं थी.

और मुन्नी चल दी—बंगाल के सूबेदार के दरबारी मुजरे के लिए. नवाब सिराजुद्दौला—क्रूर, कानों का कच्चा, जल्दबाज और अपने नाना नवाब अलीवर्दी खां के लाड़-प्यार से बिगड़ा हुआ. वैसे उसके नाना अलीवर्दी खां ने अवसर के निमंत्रण को हाथ से जाने नहीं दिया था. नवाब मुर्शिदकुली खां का वह अदना-सा हुक्का-बरदार था—मिर्जा बंदे नाम था. फिर किस्मत की बैसाखियों के सहारे वह परसू, परसा, परसराम बनता चला गया. पहले मिर्जा बंदे, फिर मिर्जा महम्मद अली और फिर अलीवर्दी खां. उसने फिर एक परंपरा को भी तोड़ कर दिखलाया—उसने हरम नहीं बनाया. अपनी इकलौती बीवी के साथ ही जिंदगी की मंजिलें पूरी कर डालीं. पर कुदरत ने उसकी किस्मत के चांद में भी एक धब्बा छोड़ ही दिया—उसे कोई बेटा नसीब नहीं हुआ, सिर्फ तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटियां ही हुईं. मंझली बेटी के बेटे सिराज को फिर उसने गोद ले लिया और अपना सारा प्यार उस पर उड़ेल दिया. तभी तो सिराज उद्दौला बिगड़ता गया. हद तो तब की जब उसने अपनी बड़ी मौसी घसीटी बेगम के मोती झील वाले महल को लुटवाया और लूटा हुआ माल अपने महल में भरवाया—मंसूरगंज में. फिर अपने मौसा नवाब नवाजिश मुहम्मद के जीवन काल में ही उनके वफादार नायब हुसेनुद्दीन और हुसेनकुली खां को पकड़वाया था. हुसेन-कुली खां का तो भरी दोपहरी में मुर्शिदाबाद की गली में कत्ल ही करवा डाला था. और फिर छोटी मौसी मेहरुन्निसा के साथ क्या किया. माना कि मेहरुन्निसा ऐय्याश हो गयी थी और उसका संबंध उसी के पति ढाका के सूबेदार के नायब के साथ हो गया था पर सिराजुद्दौला ने भी तो उसे भयंकर सजा दी थी. जब मेहरुन्निसा के चरित्र के खिलाफ उसी के पति ने अपने ससुर नवाब अलीवर्दी खां से शिकायत की तब सचरित्र अली वर्दी खां ने सिराजुद्दौला को तहकीकात के लिये ढाका भेजा था. और सिराजुद्दौला ने नायब सूबेदार का सर कलम करवा डाला. उसी दिन से उसकी मौसी मेहरुन्निसा तो उसकी जानी दुश्मन बन गयी थी. वह डसने के लिए मौका ढूंढ रही थी और किस्मत से मौका हाथ लग ही गया.

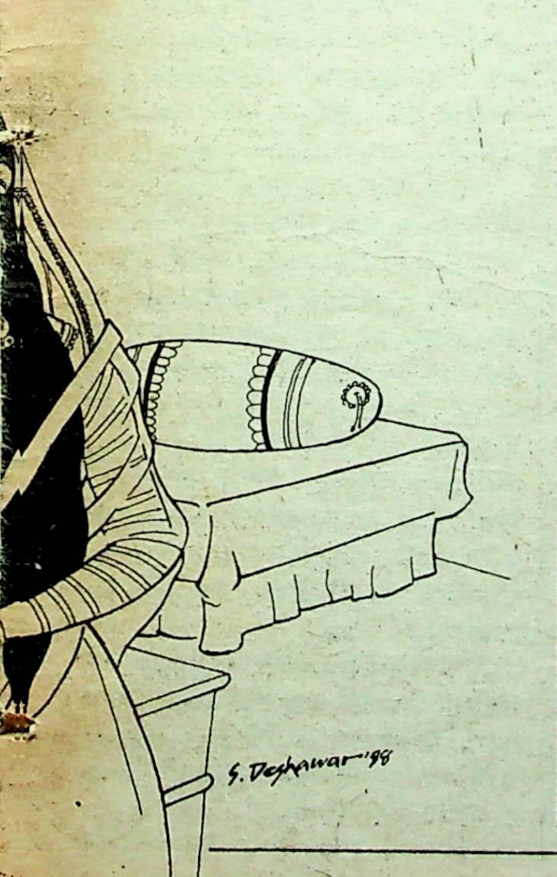

दरबार में जश्न मनाया जा रहा था. जिस वक्त दिल्ली की मुन्नी बेगम को गायन के लिये बुलाया गया उस वक्त सिराजुद्दौला को ना जाने क्या सूझी कि उसने मुन्नी को सिर्फ छेड़ा ही नहीं बल्कि ऐसी छींटाकशी कर दी जिससे मुन्नी की आंखों में लाल तैरने लगे. आज तक किसी ने उसे भरी महफिल में परेशां नहीं किया था. यह जानते हुए कि वह दिल्ली से कोसों दूर परदेस में अकेली घिरी हुई है उसने समझदारी से ही काम लिया. और भाग्य भी इसी नाजुक मौके पर उस पर मुस्करा उठा. दरबार में बैठे वजीर जाफर ने मुन्नी की हिमायत ली और इस कदर उस पर हमदर्दी उढेली कि मुंहफट नवाब सिराजुद्दौला को भी अपनी ढीली रास को काबू में करना पड़ा. तब मुन्नी ने डबडबायी आंखों से मीर जाफर की ओर देखा था. और तभी उसके दिल में मुहब्बत गूंजी जैसे कोई गुंबद में चिल्लाया हो. 'देख क्या रही है मुन्नी. अरी पहचान. यही तो है वह, जिसका तू इंतजार कर रही थी.' उसकी आंखों से निकले मीठे तीर फिर जाफर को बींधते चले गये.

चिलमन में बैठी मेहरुन्निसा ने यह सब कुछ देखा. वह तो उड़ती हुई चिड़िया के पंख तक गिन लेती थी. उसने मुन्नी की आंखों से निकले दोनों संदेशों को जान लिया—प्रेम और घृणा के मूक संदेशों को. और उसी दिन से मेहरुन्निसा चेत गयी. वह जान गयी थी कि मुन्नी के दिल में दो अग्नि कुंड धधक रहे हैं—मीर जाफर के लिये प्रेमाग्नि का कुंड, सिराजुद्दौला के लिये घृणा का अग्नि कुंड. मेहरुन्निसा ने दोनों अग्नि कुंडों को अंजुली भर के आहुति दी. यह उसी की सधी हुई चाल थी जिसने मीर जाफर को मुन्नी के मन के साथ बांध दिया. और मुन्नी भी मीर जाफर की ओर बरबस खिंचती चली गयी. भरी महफिल में उसकी लाज भी तो मीर जाफर ने ही बचायी थी. और फिर मीर जाफर कोई लल्लू-पंजू भी तो नहीं था. वह बंगाल के सूबेदार का दायां हाथ था जिसमें उसने सोने की तलवार पकड़ रखी थी. धन और वैभव दोनों उसकी मुट्ठी में थे. मेहरुन्निसा ने फिर मीर जाफर को बुलवा कर समझाया था राब से पहले उसने मुन्नी को मुन्नी बेगम बनाया और मीर जाफर के महल की शमां बनवा दिया. इसके बाद ही मेहरुन्निसा और मुन्नी बेगम ने मिलकर षड्यंत्र बुना था—अपने शत्रु सिराजुद्दौला के खिलाफ. मेहरुन्निसा को प्रसन्नता तो तब हुई जब उसने देखा कि मुन्नी इन कामों में उससे भी कई मंजिल आगे बढ़ी हुई है. फिर मुन्नी ने अपनी घृणा पर धार रखना शुरू किया था, एक ही बार में सिराजुद्दौला के घमंडी सर को काटने के लिये.

अपने वश में किये प्रेमी और पति मीर जाफर को उसने ही पट्टी पढ़ायी थी. उसके हरेक इशारे पर मीर जाफर नाचने लगा और फिर एक रात वह ढकी हुई पालकी में बैठकर गया था लार्ड क्लाइव के पास. जैसा भी मुन्नी बेगम ने उसे पढ़ाया था उसी तरह वह तोते की तरह बोला था. लार्ड क्लाइव ने इस दावत को परिस्थितियों की कृपा-वर्षा माना और वह तैयारी करने लगा. पलाशी के मैदान में ही सिराजुद्दौला का भाग्य-सूर्य हमेशा के लिये अस्त हो गया. फिर बदहवास होकर सिराजुद्दौला भागा था भगवान गोला की ओर. और जब भूख ने उसे खिचड़ी खाने पर मजबूर किया तब उसकी कीमती जूतियां देखकर ही उस फकीर दानाशाह ने उसे पहचान लिया. फकीर दानाशाह—जिसके नाक-कान कभी इसी सिराजुद्दौला ने कटवा दिये थे. दानाशाह ने ही फिर उसे पकड़वाया.

मुन्नी बेगम ने दानाशाह को इतनी दौलत दी कि वह निहाल हो गया. और मुहम्मदी बेग ने फिर सिराजुद्दौला का सर धड़ से अलग किया था. सिराजुद्दौला के मृत शरीर को हाथी पर डालकर घुमाया गया. मुन्नी बेगम के इशारे पर ही उस हाथी को उसी जगह लाया गया जिस स्थान पर कभी हुसैनकुली खां की लाश को सिराजुद्दौला के हुक्म से लाया गया था. प्राकृतिक न्याय ने तब अपना क्रूर मजाक किया था. जिस जगह पर हुसैनकुली खां की लाश से खून टपका था उसी जगह सिराजुद्दौला की लाश से भी खून टपका और जमीन उसे पी गयी.

मीर जाफर की गोद में लेटी मुन्नी बेगम उस दिन निहाल हो गयी थी. अपने अपमान का बदला वह ले चुकी थी तभी सोने के थाल में हीरे-मोती भरे सिराजुद्दौला की मौसी मेहरुन्निसा भी मुन्नी बेगम के महल की ओर नजर लेकर आ रही थी. उसकी भी छाती आज ठंडी हो गयी थी—ताजा पड़ी बर्फ जैसी ठंडी. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सॉल बैलो, फिलिप रॉथ और नॉर्मन मेलर का मानना है कि....

'औरत जानवर है, उनका स्थान पिंजरे में है!'

बात उन दिनों की है, जब पश्चिम में नारी-स्वातंत्र्य आंदोलन चरम सीमा की ओर अग्रसर था.

इस आंदोलन की एक प्रमुख नेत्री विवयन गार्निक ने 'द विलेज वॉयस' नामक एक अनजाने पत्र में 'ये पुरुष स्त्रियों से घृणा क्यों करते हैं?' शीर्षक से एक तीखा लेख लिखा. जिन पुरुषों के नाम इस चुभते हुए लेख में लिये गये थे, उनमें नोबेल-पुरस्कार विजेता अमरीकी साहित्यकार सॉल बैलो, उपन्यासकार फिलिप रॉथ और अपने को 'हेमिग्वे का एक मात्र उत्तराधिकारी' मानने वाले, हमलावर साहित्यकार नॉर्मन मेलर भी थे. अपेक्षाकृत अनजान, किंतु प्रभावशाली पत्र 'द विलेज वॉयस' को विवियन ने विशेष रूप से इसलिए चुना था, क्योंकि मेलर इसके संस्थापकों में से एक थे.

इन तीनों को स्त्री-द्वेषी बताते हुए, विवियन ने कहा, "अवरुद्ध मानसिक विकास वाले इन तीनों लेखकों में मेलर सबसे अधिक स्त्री-द्वेषी हैं. कुछ समय पूर्व, मेलर ने उपन्यासकार हेनरी मिलर के व्यक्तित्व व कृतित्व पर 'जीनियस एंड लस्ट' नामक एक पुस्तक लिखी थी. और उसमें मिलर का मनो-विश्लेषण करते हुए लिखा था, "मिलर स्त्री को भोगने में रुचि रखते थे, लेकिन प्रेम किये बिना. उनकी जर्मन मां ने उन्हें कभी प्रेम नहीं किया. और संभवतः इसी कारण वे आजीवन स्त्रियों से घृणा करते रहे." मेरी राय में, मिलर के बारे में कही गयी मेलर की यह बात उन के बारे में ज्यादा मौजूं है. स्वयं उनका सारा लेखन और जीवन इस बात का गवाह है कि ढेर सारी स्त्रियों से ढेर सारा प्यार पाने के बावजूद वे समस्त स्त्री-जाति से सख्त नफरत करते थे. बहुत पहले उन्होंने ऑरसन वैल्स से कहा था, 'औरत जानवर है, उनका स्थान पिंजरे में है.' वे स्वयं हर युवा व सुंदर महिला से फ्लर्ट करने को तैयार रहते हैं, मगर उनकी बीवी ऐसा करे, तो जैसा कि खुद उन्होंने एक बार कहा था, वे उनकी हत्या भी कर सकते हैं. मेलर ही नहीं अपने को प्रगतिशील और उदार विचारों का माननेवाला हर बड़ा साहित्यकार स्त्रियों के बारे में ऐसे ही संकीर्ण और दकियानूसी खयाल रखता है."

विवियन के इन आरोपों का न कभी मेलर ने जवाब दिया, न सॉल बैलो ने, न फिलिप रॉथ ने. इससे उनके प्रशंसकों को यह मानने पर मजबूर होना पड़ा कि विवियन के आरोप काफी दमदार हैं.

मेलर ने कई विवाह किये. मगर जैसे ही किसी पत्नी ने अपना खुद का कैरियर शुरू किया, वे उससे कटना शुरू कर देते थे "औरत का काम घर में बैठकर बच्चे पैदा करना है. बाहर जाकर मर्दों से स्पर्धा करना नहीं", यह था कामकाजी स्त्रियों के बारे में उनका सुनिश्चित मत, जिस पर वे हमेशा कायम रहे हैं, और जोरदार वकालत करते रहे हैं.

नारी-स्वातंत्र्य-आंदोलन की नेत्रियों से मेलर की मुठभेड़, जो कभी समाप्त नहीं हुई, और आज तक जारी है, 'टाइम' के एक संपादक के उकसाने पर शुरू हुई थी. उसने मेलर से कहा, "ये नेत्रियां, आपको अपने आंदोलन का सबसे जबर्दस्त विरोधी मानती हैं. 'टाइम' को आपके विचार जानने और प्रकाशित करने में गहरी रुचि है." मेलर अपने विचार व्यक्त करने के लिए तैयार हो गये. नारी-स्वातंत्र्य आंदोलन से जुड़ी उसकी मुखर नेत्रियां क्या कहती हैं यह जानने के लिए उन्होंने हाल ही में प्रकाशित 'सेक्सुअल पॉलिटिक्स' नामक पुस्तक पढ़ी, केट मिलेट नाम की एक नवोदित लेखिका द्वारा लिखित यह पुस्तक आगे जाकर, इस आंदोलन की 'बाइबिल' मानी जाने लगी. पुस्तक के एक अध्याय में लेखिका ने विवियन गार्निक के तर्क को आगे बढ़ाते हुए कहा था, "1920 और 1960 के दरम्यान सेक्स के क्षेत्र में अति-सुधार और अति-क्रांति विचारों को जन-मानस में प्रतिष्ठित करने का 'संदेहजनक श्रेय' जिन तीन मूर्धन्य कथाकारों को जाता है, वे हैं—हेनरी मिलर, डी.एच. लॉरेंस और नार्मन मेलर. ये तीनों ऐसी सामाजिक व्यवस्था के हिमायती थे, जिसमें स्त्रियां पुरुषों के संपूर्ण नियंत्रण में उनकी दासी बनकर रहती हों. मेलर की सुप्रसिद्ध कृति 'एक अमरीकी स्वप्न' का तो स्वर ही यह है— 'अपनी बीवी का कत्ल करो, और बाद में सुख-चैन से रहो'. पाठक को यह बताया गया कि नायक रोजाक कैसे एक स्त्री की हत्या करके, और दूसरी के साथ अप्राकृतिक मैथुन करके 'मर्द' बनता है.. मेलर चाहते हैं कि हर स्त्री चरित्रवान हो, गर्भपात जैसे 'कुकर्म' के बारे में सोचे भी नहीं, और संतति निरोध का जमकर विरोध करे, और पुरुष की वासना—पूर्ति करते हुए उसकी इच्छानुसार, धड़ाधड़ बच्चे पैदा करती जाये. वे हिटलर के जमाने में पैदा हुए होते, तो वह उन्हें अपना प्रचाराध्यक्ष बना लेता."

"एक मजा यह भी है," मिलेट आगे लिखती है, "उपन्यासकार मेलर को निश्चेष्ट हीरोइनें पसंद नहीं हैं. उसकी मर्दानगी का तकाजा है कि हीरोइन सक्रिय और सचेष्ट हो, थोड़ी जुझारू भी ताकि उसे दमित और वशीकृत करके अपनी मर्दानगी पर गर्व किया जा सके. मुझे मेलर के इन प्रतिक्रियावादी विचारों में कोई रुचि न होती, यदि मुझे यह न बताया गया होता कि अमरीकी पुरुषों की नयी पीढ़ी मेलर के इन विचारों से, जो नारी के उत्पीड़न में विश्वास से संबंधित हैं, अत्यधिक प्रभावित है."

और जैसा कि इस पुस्तक की आलोचना करनेवाली नारी-स्वातंत्र्य आंदोलन की अन्य नेत्रियों ने लिखा, "जो पुरुष नारी के उत्पीड़न में विश्वास करता है, उसके लिये नारी-देह-व्यापार करना आसान हो जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. वह एक अनपढ़ और असभ्य नारी-देह-व्यापारी से ज्यादा खतरनाक हो सकता है, कारण वह नारी की संवेदनशीलता पर जोरदार प्रहार करके उसे जड़ से समाप्त कर सकता है.''

व्यक्तिगत कारणों से मेलर समय पर 'टाइम' को नारी-स्वातंत्र्य आंदोलन पर अपने विचार नहीं भेज पाये, और इस बीच 'द सैक्सुअल पालिटिक्स' एक बहुचर्चित और विचारोत्तेजक पुस्तक बन गयी, जिसने विश्वव्यापी लोकप्रियता अर्जित की. 'टाइम' ने, जो इस पुस्तक के प्रसंग में मुखपृष्ठ पर नॉर्मन मेलर का चित्र छापना चाहता था, उनके विचार न आने पर उनके स्थान पर मिलेट का चित्र छापा.

इस घटना ने मेलर को स्त्रियों और उनके अधिकारों के बारे में नये सिरे से सोचने को मजबूर किया. उन्हें अंतर्निरीक्षण करने पर मजबूर होना पड़ा. उनके पिछले चार विवाह बुरी तरह असफल रहे थे, और इसका जीता-जागता प्रमाण थे, जगह-जगह पर बिखरे छितरे उनके बच्चे. क्या अकारण, बिना किसी उत्तेजना के, अपनी एक पत्नी पेरेल पर चाकू से प्रहार करके उन्होंने यह नहीं दिखा दिया था कि वे स्त्रियों को निरादर की दृष्टि से देखते हैं? क्या उनके अनगिनत प्रेम-प्रसंग यह नहीं सिद्ध करते कि वे स्त्री को मात्र भोग्या मानते हैं? क्या उनका यह विचार कि जीविकोपार्जन के लिए स्त्री कुछ न करे, यह नहीं दर्शाता कि वे स्त्री को पुरुष के समान अधिकार पाने योग्य नहीं मानते?

उन्हें लगा कि नारी-स्वातंत्र्य और नारी-अधिकारों के बारे में पुनर्विचार कर उन्हें लिखना ही होगा. स्वयं उनका अस्तव्यस्त जीवन उनसे इसकी मांग कर रहा है. उन्होंने तय किया कि अपना अधूरा उपन्यास पूरा करते ही वह इस विषय पर, जिसने उन्हें झकझोर कर रख दिया था अवश्य लिखेंगे.

तभी, एक दिन 'हार्पर्स' के संपादक विली मॉरिस ने उन्हें फोन किया, और बताया कि नारी-स्वातंत्र्य आंदोलन से जुड़ी कुछ नारियों ने अभी हाल में उन्हें घेर कर काफी लताड़ सुनायी, और काफी बुरा-भला कहा. मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा, क्योंकि नारी की स्वतंत्रता के बारे में मेरे विचार वैसे नहीं हैं, जैसा कि वे सोचती हैं. मैं बहुत दुखी हूं, और तुमसे मिलना चाहता था.

नारी स्वातंत्र्य आंदोलन की कुछ नेत्रियों ने विश्व विख्यात तीन उपन्यासकारों को स्त्री-द्वेषी घोषित करते हुए एक कठघरे में खड़ा करा दिया है... कौन हैं वे तीन उपन्यासकार? क्या वे वास्तव में स्त्री-द्वेषी थे? और यदि थे तो हमारी दृष्टि में उनकी यह मानसिकता न सिर्फ स्त्री-द्वेष ही है अपितु स्त्री-द्रोह भी है.

दोनों एक रेस्तरां में मिले. वहां मेलर ने मॉरिस से कहा, ''जिस उपन्यास पर मैं आजकल काम कर रहा हूं, उसके पूरा होते ही मेरा इरादा बर्र के छत्ते में हाथ डालने का, अर्थात् नारी-स्वातंत्र्य आंदोलन पर एक जोरदार पुस्तक लिखने का है. सौ सुनार की तो एक लुहार की.''

उपन्यास के समाप्त होने पर, एक महीने जूझते रहने के बाद, मेलर ने 'द प्रिजनर ऑफ सेक्स' पुस्तक (शब्द-संख्या : लगभग 50,000) पूरी कर डाली. इन उपद्रवी नारियों ने उन्हें 'मर्दानगी—संप्रदाय का बंदी' कहा था, वह अब सबको बतायेगा कि बेकार की चिल्लपों करनेवाली ये नारियां खुद 'सेक्स की बंदनियां' हैं.

पांडुलिपि को सबसे पहले पढ़ा मॉरिस ने. पढ़कर उसने कहा, ''जानता हूं, इस लेख को पूरा छापकर मेरी नौकरी चली जायेगी, मगर यह जोखिम लेकर भी मैं इसे छापूंगा. यह लेख 'हार्पर्स' जैसे प्रतिष्ठित और जाने-माने पत्र में ही सबसे पहले छपना चाहिये.''

किताब के 'हार्पर्स' में छपते ही जैसे तूफान आ गया. पत्र के 121 वर्ष के इतिहास में किसी एक अंक का इतना जोरदार स्वागत नहीं हुआ, जितना इस अंक का हुआ. दुगुनी प्रतियां छापनी पड़ीं. लेकिन, पत्र के मालिकों को मेलर के क्रांतिकारी विचार पसंद नहीं आये, और संपादक मॉरिस को इस्तीफा देना पड़ा.

क्या कहा था मेलर ने अपनी इस किताब में, जिसके कारण पत्र के पौने चार लाख के करीब पाठकों और करोड़ों अमरीकी महिलाओं में खलबली मच गयी? मेलर ने कहा था :

''नारी स्वातंत्र्य आंदोलन के बारे में मेरा स्पष्ट मत यह है कि यह नारियों से संबंधित हर प्राकृतिक नियम का उल्लंघन करता है, और कुछ शून्य मस्तिष्क वाली महिलाओं ने अपने दंभ की खातिर इसे शुरू किया है.

''टेक्नालॉजी ने सब कुछ बदल कर रख दिया है. पुरुष हीरो नहीं रहे, और स्त्रियां हीरोइन नहीं रहीं, और स्त्री-सुलभ गुणों से रहित हो गयीं.

''स्त्रियां सेक्स की बंदनियां हैं, क्योंकि वे सेक्स को कोई अर्थ प्रदान करना चाहती हैं. सेक्स को जो अर्थ दिया जाये, वह ग्रहण कर लेगा, और अंत में वह जीवन की हर असफलता, बुराई, कमजोरी और परेशानी को भी अर्थों के बढ़ते हुए दायरे में समेटकर, जीवन को एक अभिशाप बनाकर रख देगा.

'मिलेट सेक्स की बंदिनी ही नहीं, शत्रु भी है, क्योंकि उसका सरोकार न प्रेम से है, न भावनाओं से, जिनके बिना सेक्स खोखला और निरुद्देश्य हो जाता है. यदि प्रकृति की यह मंशा होती कि स्त्री और पुरुष दोनों समान हों, उनके अधिकार समान हों, तो वह ऐसी व्यवस्था करके ही दोनों की रचना करती.

'हार्पर्स' में प्रकाशन के बाद, 'प्रिजनर ऑफ सेक्स' पुस्तकाकार भी प्रकाशित हुई, और उसे प्रशंसा भी मिली और निंदा भी. लेकिन, मेलर ने कहा, ''मैंने जो लिखा है, वह मेरा सुनिश्चित मत है, और किसी को खुश करने या उससे समझौता करने के उद्देश्य से मैं उसे बदलने के लिये तैयार नहीं हूं.''

अपने को हेनरी मिलर और डी.एच. लारेंस से भिन्न बताते हुए, मेलर ने लिखा, ''मिलर मन ही मन स्त्रियों से डरते थे, और अपनी रचनाओं में उनकी अवमानना और मान-मर्दन इसलिए करते थे, ताकि अपने को उनके साथ यौन-क्रिया के लिए मनावैज्ञानिक रूप से तैयार कर सकें.'' लारेंस सेक्स को मोक्ष का साधन मानते थे और सेक्स का जुगाड़ करने के लिये ही स्त्री पर हावी होते थे. किंतु उनकी आलोचना करनेवाली नासमझ मिलेट यह भूल जाती है कि दोनों की कल्पना स्त्रियों जैसी नम्य और वश्य थी. मिलेट के शब्दों के समान पुरुषोचित नहीं थी.'' □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतःपुर की कुंआरी

श्याम शर्मा

तारा पचास पार कर चुकी थी. वह 17 वर्ष की थी जब यहां आयी थी. अब तो महाराजा मदनसिंह जी भी स्वर्ग सिधार चुके थे और यह अंतःपुर हवेली का एक हिस्सा बनकर किराये पर चढ़ चुका था. महाराजा के लड़के अब राजकुमार नहीं थे. एक तो दिल्ली जाकर कहीं सरकारी अफसर बन गया था और दूसरा किशन सिंह पड़ा-पड़ा हवेली का किराया खाता रहता था. तारा अंतःपुर की बारादरी के पीछे अस्तबल की कोठरी में पड़ी रहती थी. अब इनके घर का कामकाज करके वह अपना गुजारा करती थी. ये दोनों लड़के न जाने किस रानी और किस दासी के थे. पर महाराजा के बुढ़ापे की संतान थे. महाराजा ने जवानी का सुख तो खूब भोगा था, अंतःपुर में दासियों और रानियों की संख्या सोलह सत्रह तक थी. उस वक्त रियासत थी. महाराजा के एक इशारे पर ही पास या दूर गांव की लड़की उन्हें पेश कर दी जाती थी. फिर महाराजा और हवेली का वैभव ही ऐसा था कि प्रजा और कर्मचारियों को चमत्कृत कर देता था. राजस्थान की अन्य रियासतों में महलों के साथ हवेलियां नजर भी आती थीं पर इस रियासत की गरीबी का तो ठिकाना ही नहीं था. बस महाराजा के महल के आसपास कुछ हवेलियां थीं. वह भी दीवानों और दरबारियों की. फिर तो पक्की दीवारों के भीतर कच्चे मकान ही दिखायी पड़ते थे. यह राजस्थान का भीतरी इलाका था. पानी की कमी का तो ठिकाना ही क्या लेकिन तरबूज की फसल अच्छी-खासी होती थी. जिन्हें मंडियों में बेचने के लिए ऊंटों के काफिले गुजरते रहते थे. इस रियासत में ओढ़नों और आंगियों की दस्तकारी भी थी. इसी रियासत के बहुत से लोग अन्य बड़ी रियासतों में जाकर धंधा करने लगे थे पर उनके परिवार यहीं रहते थे और उनकी आय का अधिकतर हिस्सा यहां आ जाता था. इस गरीबी में महाराजा किशन सिंह की हवेली और उनका रहन-सहन सभी को चरम सीमा का वैभव नजर आता था.

तारा को तो उसका बाप त्रिलोकी ही यहां सोलह सत्रह वर्ष की अवस्था में छोड़कर गया था. करता भी क्या. वे सात बहनें थीं. भाई एक भी नहीं था. बस दो ऊंट थे जो मंडी में तरबूज लाने ले जाने के काम आते थे और उन्हीं से घर का खर्च चलता था.

महाराजा की हवेली के ऊंटों में से एक ऊंट त्रिलोकी लेना चाहता था बहुत सस्ते दामों पर. कभी-कभी महाराजा उदार होकर या प्रसन्न होकर भी ऊंट दे दिया करते थे. त्रिलोकी इसीलिए तारा को साथ लेकर एक दिन हवेली गया था क्योंकि लड़कियों में तारा ही बड़ी थी और रंग सांवला होते हुए भी तारा का बदन सांचे में ढला हुआ-सा लगता था. आकर्षण उसके नाक नक्श का भी था पर सबसे अधिक आकर्षण तो उसके बालों का था जो खुलने पर कमर से नीचे तक आ जाते थे. बाप होते हुए भी त्रिलोकी कभी-कभी अपनी बेटी को देखकर सहम जाता था. सोचने लगता था कहां इसने इस गरीब घर में जन्म ले लिया. बिना खाये पिये और गरीबी की हालत में तो इसका यह हाल है अगर कहीं खाते पीते घर में जन्म लेती तो बस स्वर्ग की अप्सरा ही जैसी लगती. उसे पूरा विश्वास था कि एक बार महाराजा की इस पर नजर पड़ जाये तो ऊंट तो बिना पैसे के मिल ही जायेगा साथ ही महाराजा की नजरों में भी आ जाऊंगा. फिर किसी न किसी काम से वह फिर बुलवायेंगे और जब महाराजा को पता लगेगा कि मेरे घर में तो बस लड़कियां ही हैं तो गरीबी का यह सारा झंझट ही खत्म हो जायेगा.

वह एक दिन सबेरे तारा को लेकर पहुंच ही गया था. महाराजा हवेली के चौक में बने चबूतरे पर बैठे थे. और लोग कम थे सो महाराजा की निगाह सीधे तारा पर पड़ गयी. त्रिलोकी की तरफ देखकर महाराजा ने सीधे ही पूछ लिया, "या कुंण है तेरी छोरी है के?"

त्रिलोकी चाहता यही था, महाराजा की निगाह पहले तारा पर ही पड़े. हाथ जोड़कर बोला, "हां! अन्नदाता, बड़ी छोरी है."

"तो तेरे और कितां एक छोरी है?" महाराजा ने थोड़ी उत्सुकता दिखाते हुए कहा.

त्रिलोकी को मानो मुंह मांगी मुराद मिल गयी. बोला, "अन्नदाता छह हौर हैं."

त्रिलोकी में दिलचस्पी होने के लिए महाराजा के लिए इतनी जानकारी काफी थी. तुरंत बोले, "अब तू कांई आयो है."

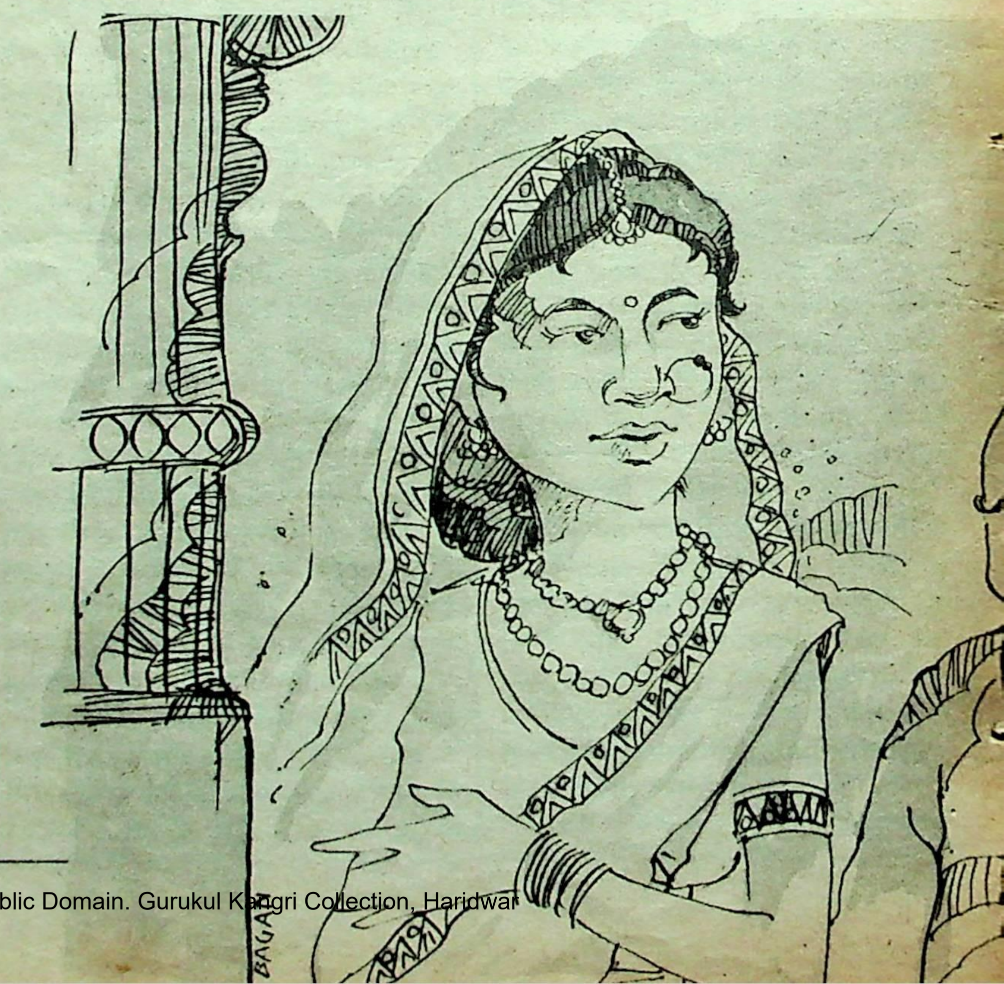

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिलोकी ने मौका देखकर अपना मकसद कह दिया. ''अन्नदाता, एक ऊंट मिल जावे तो म्हारो काम चल जा सी.''

महाराजा ने ऊंट देने का आदेश तो जारी कर दिया पर तारा की ओर देखकर बोले, ''या घरों में के करें? उठे महल में भेजो कुछ काम कर सी. तेरो बोझ भी कम होसी.'' और त्रिलोकी को राजी होते देर नहीं लगी थी. तारा भी प्रसन्न थी और त्रिलोकी ऊंट के बदले में तारा को छोड़ गया था.

अबोध तारा को कुछ पता नहीं था. उसे उसका बाप यहां क्यों छोड़ गया है. वह तो सात बहनों के परिवार में घर का सारा काम काज और चख-चख से बच गयी थी और हवेली की चमक-दमक देखकर वह और भौर हो गयी थी. फिर जब उसे महल के अंतःपुर में एक दासी लिवा ले गयी तो वह वहां की सजधज और रानियों दासियों की भड़कीली पोशाक देख कर सोचने लगी थी—क्या उसे भी यही पोशाक मिल जायेगी.

अंततः वह अन्य रानियों और दासियों की पोशाक से भी चमकीली पोशाक में एक रात अंतःपुर के सबसे सजे हुए कमरे में धकेल दी गई गयी थी. महाराजा किशनसिंह उस रात जब कमरे में घुसे और तारा ने उन्हें देखा तो वह हतप्रभ रह गयी.

तारा को महाराजा पर दया आयी. उसका भय और आशंकायें न जाने कहां गयीं. उसने महाराजा को आगे बढ़कर सहारा दिया और पलंग पर बिठा दिया....

पचास-पचपन के बीच का नाटे कद का एक काला-सा आदमी सफेद धोती और गुलाबी मिर्जई पहने हुए उसकी तरफ बढ़ रहा था. तारा अब समझ गयी थी कि उसे महल में इस शानशौकत की क्या कीमत चुकानी पड़ेगी. वह सहम गयी और कमरे के कोने में जा खड़ी हुई. महाराजा के बार-बार बुलाने और अनुनय विनय करने पर भी वह उनके पास नहीं आयी थी. महाराजा जब कोने की ओर बढ़ रहे थे तो उनके पैर कांप रहे थे. उनके चेहरे पर क्रोध का भाव तनिक भी नहीं था, विवशता और परेशानी उनके चेहरे पर साफ झलक रही थी. तारा को महाराजा पर दया आयी. उसका भय और आशंकाएं न जाने कहां गयीं. उसने महाराजा को आगे बढ़कर सहारा दिया और पलंग पर बिठा दिया. महाराजा तारा के इस व्यवहार पर इतने मुग्ध हुए कि आधा समय उन्होंने तारा के साथ आमने सामने बैठकर बिताया और फिर न जाने कब वह निद्रामग्न हो गये. तारा कुछ देर तक सोते हुए महाराजा का काला और झुर्रियों भरा चेहरा देखती रही और फिर न जाने कब सो गयी. सबेरे खिड़की से झांकती हुई हल्की धूप ने जब तारा को जगाया तो महाराज किशन सिंह कमरे से जा चुके थे.

तारा अंतःपुर की रानियों और दासियों में से एक थी पर कोई नहीं जानता था महाराजा के साथ एक दिन बिताने पर भी तारा-तारा ही थी न वह रानी बनी और न दासी, महाराजा की हर रात अब तारा के कमरे में ही व्यतीत होती थी. वह कहीं किसी और कमरे मे जाते ही नहीं थे. महाराज अब बीमार रहने लगे थे. वह अब अपने कमरे में ही पड़े रहते थे. बारी-बारी से रानियां, दासियां उनका हाल पूछने जाती थीं. अंतःपुर से महल के उनके कमरे तक चमकीले भड़कीले कपड़ों में रानियां दासियां आती जाती रहती थीं. और अंतःपुर से महल तक का गलियारा दिन भर गुलजार रहता था. पर तारा को किसी ने महाराजा के कमरे तक जाते नहीं देखा था. वह अपने ही कमरे में रहती और आने जाने वाली दासियों से महाराजा का हाल पूछ लेती. महाराज किशन सिंह की हालत और खराब होती गयी. एक दिन समूचे महल में तहलका-सा मच गया. कुछ देर तक महल के कर्मचारी और अंतःपुर की रानियां, दासियां महाराजा के कमरे की ओर दौड़ भाग करती दिखायी पड़ीं और अचानक खबर मिली कि महाराज स्वर्ग सिधार गये. तारा भी कमरे से बाहर निकली और रानियों-दासियों की भीड़ में शामिल हो गयी.

किशन सिंह के बाद अंतःपुर रानियों-दासियों से सूना हो गया. तारा ने इस अंतःपुर में पांच वर्ष दुनिया की नजरों में महाराजा किशन सिंह की सर्वाधिक चहेती के रूप में बिताये. पर वह जानती है पहली रात को जब महाराज किशन सिंह वासना की भूख लेकर उस पर टूटनेवाले थे तब उसने क्या कह कर महाराजा किशन सिंह को ऐसा शांत किया कि महाराजा का अंतःपुर से मोह भंग हो गया. वह फिर तारा के सिवाय अंतःपुर के किसी और कमरे में नहीं देखे गये. महाराजा तारा के साथ बिताई गई उस रात के बाद से ही निढाल से हो गये थे. वह अंदर ही अंदर घुलने लगे थे. अधेड़ उम्र में अपने को युवा दिखाये रखने की चाह भी उनमें से चुक गयी थी—धीरे-धीरे महाराजा को अनेक बीमारियों ने आ दबाया था. इलाज के प्रति भी महाराजा उदासीन रहने लगे थे.

तारा यहां से नहीं गयी और जैसी वह अंतःपुर में उस रात महाराजा के उसके कमरे में प्रवेश करने से पहले थी वैसे ही आज भी है. वह अब तक भी पुरुष पाश से मुक्त थी. पर आज पचास की तारा साठ पैंसठ से भी ऊपर की लगती थी. तारा ने उस रात महाराजा से अपने शरीर को बचाकर वह घड़ी तो टोल दी पर दुनिया की नजरों में वह अंतःपुर की उन्हीं रानियों और दासियों में से थी जो महाराजा की वासना तृप्ति का साधन बनी थीं, लेकिन कौन जानता है तारा इस अंतःपुर की कुंआरी थी. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनर्तकी कलावती और कंकलि

कश्मीर के प्राचीन लेखकों में क्षेमेंद्र (जन्म : सन् 900) नामक कवि और नाटककार का एक अलग स्थान है. उनकी संगीत, नृत्य आदि ललित कलाओं में गहरी रुचि थी. स्वयं धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति होते हुए भी उन्होंने पाखंडी धार्मिक व्यक्तियों के कार्यकलापों के बारे में कई व्यंग्यपूर्ण रचनाएं लिखी थीं. समकालीन गुप्तचरों, विष कन्याओं, कुटनियों तथा लंपट लोगों का चित्रण करनेवाली उनकी एक रचना है—'समायामाजिका' प्रस्तुत है— सार—संक्षेप

कश्मीर राज्य के प्रावरपुरा नामक राज्य में कलावती नाम की एक नर्तकी रहती थी, जो अपने मोहक तथा उत्तेजक सौंदर्य और काम-कला में निपुणता के कारण, केवल 20 वर्ष की आयु में अपने राजा की प्रिय नर्तकी बनकर राज नर्तकी के पद पर प्रतिष्ठित हो गयी थी.

परम सुंदरी थी कलावती. उसके बाहु-मृणाल में बंधा राजा जब भी उसे देखता, उसकी बड़ी-बड़ी आंखों के मृग-वन और नाभि-कमल की अथाह गहराइयों में खो जाता. पाकर भी वह उसे पाने में असमर्थ रहता. उसके अणु-अणु में रमण करके भी उसे कभी जान नहीं पाया.

राज्य का सारा राज-वैभव कलावती के भोग के लिये प्रस्तुत था. नहीं भोगती थी उसे, तो उसके पीछे घूमता रहता था कि मुझे भोगो. मगर काफी भोगने के बाद भोग से गहरी अरुचि हो गयी थी कलावती को. उसे तलाश रहती थी किसी की जो उसे धनी और सुरक्षित रख सके, उसे वह अनुभूति करा सके, जो भोग के अतिक्रमण से उपलब्ध होती है. भोग क्षणिक है, धन व सुरक्षा स्थायी है, ऐसी मान्यता हो चली थी उसकी.

... एक दिन उसने अपनी छत से एक अधेड़ गंजे, स्थूलकाय और अनाकर्षक नाई को देखा. न जाने क्या देखा उसने उस नाई में कि उसे बुला भेजा.

कंक नाम के इस नाई ने देखा कि सुंदरी कलावती म्लान-मुख लिये उदास बैठी है. उनके विषाद का कारण उसकी समझ में नहीं आया. क्या दूसरों पर अपने रूप का जादू करने वाली पर स्वयं किसी ने जादू कर, उसे अपने वश में कर लिया है. या.....?

कलावती ने अपनी मनोव्यथा का कारण स्वयं उसे बताया, "कंक! मेरी मां कर्मग्रीवा को एक कुटिल वैद्य ने दो दिन पूर्व विष देकर मार डाला. उसके बिना मैं एकदम बेसहारा हो गयी हूं. तुम्हें देखकर लगा कि शायद तुम मेरी सहायता कर सको. तुम मुझे निर्भरणीय और विश्वसनीय लगते हो. और मैं आदमियों को परखने में प्रायः गलती नहीं करती."

"मैं आपकी सहायता के लिये प्रस्तुत हूं, देवि! किंतु, एक प्रश्न है."

"बोलो."

"वह कुटिल वैद्य आपकी माता को विष देकर चला गया, और आपने उसके विरुद्ध राजा से कोई शिकायत नहीं की. आप तो राजनर्तकी हैं, और राजा आपका प्रिय करने के लिये सदा प्रस्तुत रहते हैं."

कलावती कुछ क्षण चुप रहने के बाद बोली, "मेरे और मेरी माता के इस राज्य में असंख्य शत्रु थे, और हैं. कुछ ने ईर्ष्यावश हमसे शत्रुता मोल ले रखी है, और कुछ ने अपने लोभ के कारण. यह वैद्य लोभी भी था, और कामुक भी, मेरा निःशुल्क उपयोग करना चाहता था, और ऊपर 'दक्षिणा' भी चाहता था. उसके इरादे जानकर मेरी माता ने उसकी शिकायत राजा से की थी, जिसने उसे आश्वासन दिया था कि वह वैद्य के विरुद्ध शीघ्र ही सख्त कार्यवाही करेगा. वैद्य के राजदरबार में अनेक गुप्तचर हैं. उनसे इस वैद्य को पता चल गया कि मेरी मां ने उसके विरुद्ध राजा से शिकायत की है. उसने एक शक्तिवर्धक औषधि देने के बहाने उसे विष दे दिया. अब जो होना था, सो तो हो गया. राजा तो वैद्य के विरुद्ध कोई न कोई कार्यवाही करेंगे ही. संभवतः उसे मृत्युदंड दें. लेकिन, उससे मेरी मां तो मुझे वापस नहीं मिल जायेगी, जो हर शत्रु, हर षड्यंत्र से मेरी रक्षा करती थीं. गुप्तचर्या में वे इतनी निपुण थीं कि असाध्य मामलों में स्वयं राजा भी उनसे परामर्श लेते थे. उनकी गुप्तचरी के कारण, एक बार राजा के प्राण तक बचे थे."

कंक ने कहा, "तो आप अपनी मां के स्थान पर उनके समान योग्य गुप्तचर चाहती हैं."

"हां, ऐसी महिला-गुप्तचर, जो चौबीस घंटे मेरे साथ रहकर. मेरी रक्षा कर सके. मरने-मारने में भी निपुण हो. मेरे व्यवसाय में पुरुष-गुप्तचर अधिक सहायक नहीं हो सकता."

"मेरे पास एक ऐसी महिला है. कंकलि है उसका नाम. आप जैसी धनी, सुसंस्कृत तथा प्रतिष्ठित राजनर्तकी की सेवा में आकर वह हर्षित तो होगी ही, गौरवान्वित भी अनुभव करेगी."

"उसके बारे में तुम कितना जानते हो?"

"मैं उसके बारे में सब कुछ जानता हूं, क्योंकि मैं उसे तब से जानता हूं, जब वह छोटी बच्ची थी. उसका जन्म परिहासपुर में एक पंथशालापाल के परिवार में हुआ था: दूसरों को अपनी लच्छेदार बातों में उलझाकर उनके भेद जान लेने और चोरी करने की आदतें उसे बचपन से ही थीं. वह पंथशाला में ठहरनेवाले यात्रियों का सामान चोरी कर लिया करती थी. और उनके गुप्त भेद जानकर उनमें झगड़ा कराने में भी उस्ताद थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी इन आदतों से तंग आकर उसके पिता ने उसे घर से निकाल दिया. उस समय उसकी आयु मात्र सात वर्ष थी. किसी ने उसे पकड़कर हाट में बालिका-दासी के रूप में बेच दिया. जिस व्यापारी ने उसे खरीदा था, उसे मद्यपान का शौक था. एक दिन जब वह नशे में धुत था, तब वह उसे और मदिरा पिलाकर, उसका धन और सामान लेकर भाग गयी. व्यापारी के धन से उसने एक दूसरे नगर शंकरपुर में जाकर एक घर खरीदा, और वहां सुख से रहने लगी. वहां उसने और धन कमाने के उद्देश्य से गणिका का धंधा आरंभ किया, जो अच्छा चल निकला था, लेकिन जब उसने अपने ग्राहकों की चोरी करना भी आरंभ किया, तो ठप्प होने लगा, इतना ही नहीं, इस कारण अधिकांश प्रेमी उसके शत्रु हो गये, और कुछ तो उसकी जान के प्यासे हो गये. तब उनसे निपटने के लिये चोरी की आदत छोड़ी और गुप्तचर्या का नया धंधा अपनाया, जो ज्यादा लाभदायक तो था ही, उसमें उसे अपना शरीर भी नहीं बेचना पड़ता था."

कलावती कंकलि की कहानी बड़े ध्यान से सुन रही थी. उसने कंक को कुछ क्षणों का विश्राम लेते देखकर पूछा, "अब उसने चोरी करना बिलकुल छोड़ दिया है न? मैं चोरों को बिलकुल पसंद नहीं करती. मुझे उनसे सख्त नफरत है."

"नहीं, वह आपके यहां चोरी बिल्कुल नहीं करेगी. मैं इसका आश्वासन देता हूं."

"उसके गुप्तचरी के अनुभवों के बारे में कुछ जानते हो?"

"हां, मैं उन्हीं अनुभवों पर आ रहा था. उसके इस शौक के बारे में जानकर प्रतापपुर नाम के एक छोटे से राज्य के राजा ने उसे अपने यहां नौकर रख लिया और उसे 'विषकन्या' के रूप में अपने विरोधियों के पास भेजने लगा. उनके इरादों के बारे में जानकर वह उनकी पूर्व-सूचना अपने मालिक को देने लगी. कुछ दिन तक उसने इस राजा की अच्छी सेवा की, और उसे उसके विरुद्ध रचे जा रहे अनेक षड्यंत्रों की पूर्व सूचना देकर, उसे आगाह किया, लेकिन यहां भी वह अपनी चालबाजी और धूर्तता से बाज न आयी."

"क्या किया उसने?" कलावती ने पूछा.

"उस राजा का एक रिश्तेदार भी उसकी भांति एक छोटे से राज्य का राजा था. अपने मालिक की ओर से उसकी जासूसी करते करते वह उसके रिश्तेदार से प्यार करने लगी, और उसे अपने मालिक की सुरक्षा व्यवस्था, सेना, अस्त्र-शस्त्र आदि के सब भेद बता दिये. उसका लाभ उठाकर, प्रतापपुर के राजा के रिश्तेदार ने उसकी हत्या कर दी, और स्वयं प्रतापपुर का राजा बन गया. मगर, राजा बनते ही उसने पहला काम यह किया कि कंकलि की, जिसने उसे प्रतापपुर का राज्य दिलवाया था, छुट्टी कर दी. और, इतना ही नहीं, उसने अपने सब पड़ोसी राज्यों के राजाओं को भी उससे दूर रहने के लिये आगाह कर दिया. उसका कहना था कि जिस प्रकार उसने अपने पहले मालिक-प्रतापपुर के राजा-के प्रति विश्वासघात किया, उसी प्रकार, एक दिन अपने नये मालिक या प्रेमी के प्रति भी विश्वासघात कर सकती है. उसका क्या भरोसा? इस प्रकार से सब राजा उससे सावधान हो गये."

"इस घटना का स्वयं उस पर कैसा प्रभाव हुआ?"

"काफी हितकारी प्रभाव हुआ. उसने जान लिया कि गुप्तचर को सफल होने के लिये प्रामाणिक तथा निष्ठावान होना चाहिये. अत्यधिक मांसाहार और मद्यपान से उसने अपना शरीर भी काफी भद्दा, स्थूल और आनकर्षक कर लिया था. स्थूलता के कारण वह पहले जैसी सक्रिय भी नहीं रही."

"फिर उसका गुजारा कैसे चलता है?"

"गुजारे लायक धन है उसके पास, जो उसने बड़े जतन से छिपा-बचाकर रखा है. उसकी आय का एक स्रोत और भी है. आजकल वह कृत्याश्रम के एक बौद्ध-विहार में भिक्षुणी के रूप में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहती है, मगर चोरी-छिपे गुप्तचर बनने के इच्छुक व्यक्तियों को गुप्तचर्या का प्रशिक्षण देती है. मैं स्वयं उसका प्रशिक्षार्थी रह चुका हूं, और विश्वास से कह सकता हूं कि गुप्तचर्या की शायद ही कोई ऐसी विद्या हो, जिसका ज्ञान उसे न हो."

"क्या तुम उसे मेरे लिये काम करने को राजी कर सकते हो? मैं चौबीसों घंटे उसे अपने साथ ही रखूंगी, उसकी सब आवश्यकताओं की पूर्ति करूंगी, और जितना वेतन उसे अपेक्षित होगा, दूंगी."

"मेरा ख्याल है, मैं उसे राजी कर सकूंगा. लेकिन, इससे पहले, मुझे यह देखना होगा कि वह है कहां. पिछली बार मैंने उसे कृत्याश्रम के बौद्ध-विहार में एक भिक्षुणी के रूप में देखा था. लेकिन वह आज भी वहां होगी, यह कहना कठिन है, क्योंकि वह एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं टिकती."

"तुम ये स्वर्ण-मुद्राएं लो और फौरन उसकी खोज में निकल जाओ. मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इन मुद्राओं को उसकी खोज में ही व्यय करोगे, और वापस लौटकर मुझे अवश्य सूचित करोगे कि तुम्हारे प्रयासों के क्या परिणाम निकले."

"आप विश्वास रखें देवि! मैं आपके साथ विश्वासघात नहीं करूंगा, और कंकलि को अपने साथ लेकर ही आपके पास वापस आऊंगा."

कंक के जाने के बाद, कलावती ने राजा के प्रमुख गुप्तचर को बुलाया. कलश नाम का यह प्रमुख गुप्तचर कलावती के गुप्त प्रेमियों में से था. इतना गुप्त था उनका प्रेम कि उन दोनों को छोड़कर किसी और को, राजा तक को भी—इस गुप्त प्रेम की जानकारी न थी. कलश कलावती के लिये सब गुप्त सूचनाएं लाने को तैयार रहता था. सिवाय राजमहल और राजदरबार की गुप्त सूचनाओं के. वहां उसके विरुद्ध क्या षड्यंत्र कौन बना रहा है, आदि आदि सूचनाएं एकत्र करने की जिम्मेवारी कलावती की मां की थी.

कलश को उसके योग्य स्नेह-सम्मान देने के पश्चात, कलावती ने इधर उधर की बातें करने के बाद उससे पूछा, "क्या आप कंकलि नाम की किसी महिला गुप्तचर से परिचित हैं? सुना है उसके कई वेश हैं, कई नाम हैं, कई पेशे हैं."

"क्या आपको उसके साथ कोई अप्रिय अनुभव हुआ है?" कलश ने कलावती की आंखों में आंखें डालते हुए पूछा.

"नहीं, लेकिन उसके बारे में काफी कहानियां सुनी हैं. उत्सुकतावश जानना चाहती थी कि उनमें कितना सच है, कितना झूठ?"

मदिरा-पात्र को धीरे-धीरे समाप्त करने के बाद, कलश ने कहना आरंभ किया, "कंकलि ने एक बार मुझसे कहा था—व्यक्ति यदि बुद्धिमान हो, तो न उसे अच्छे स्वास्थ्य की आवश्यकता है, न अच्छे व्यक्तित्व की. बुद्धि मात्र से वह धन भी अर्जित कर सकता है और यश भी. उसने अपनी इस मान्यता को अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया है. वह एक अत्यंत साधारण महिला है. उसके पास न सौंदर्य है, न व्यक्तित्व, न अन्य कोई विशिष्ट गुण. किंतु अपनी असामान्य बुद्धि के बल पर उसने ऐसे सुखों को भोगा, जिसकी कामना नरेश भी करते रहते हैं, और ऐसी जोखिमभरी जिंदगी भी बितायी है, जिसकी कल्पना भी दुःसाहसिक मानी जायेगी. लोग उसे अपराधी मानते हैं, मगर मैं उसे कलाकार अपराधी कहता हूं, क्योंकि वह स्वलाभ के लिये अपराध नहीं करती, स्वांतः सुखाय अपराध करती है. मैंने विदेशों में काफी भ्रमण किया है, और तर्की, चीन, श्रीलंका आदि देशों के अलावा अपने देश के सुदूर प्रांतों बंगाल, विदर्भ, कर्नाटक आदि में उसकी ख्याति की कहानियां सुनी हैं."

"आपके वर्णन से लगता है कि वह एक विलक्षण महिला है."

"निःसंदेह."

"आजकल वह कहां है?"

"वह कब कहां होगी, यह उसके अलावा और कोई नहीं जानता. वैसे, मुझे अपने गुप्तचरों से उसके समाचार मिलते रहते हैं. सबसे ताजे समाचार के अनुसार वह विजयेश्वर नामक स्थान में थी. वहां उसने यह प्रचार किया था कि वह कश्मीर के एक मंत्री की पुत्री है. उसकी इस बात पर विश्वास कर एक धनी व्यापारी ने उसे अपनी वेतनभोगी परामर्शमंत्री नियुक्त किया, ताकि वह अपने 'पिता' मंत्री को इस बात पर राजी कर सके कि वह राज्य की ओर से उस व्यापारी का ज्यादा से ज्यादा माल, साधारण से अधिक मूल्य पर खरीदे. दाद देनी पड़ेगी उसकी हिम्मत और चतुराई की कि उसने उस मंत्री पर अपना प्रभाव जमा लिया और उसे धनी व्यापारी का काम करने के लिए रजामंद कर लिया. अब वह काफी सुख से है."

"मैं सोच रही थी कि वह मेरे पास आ जाये तो वह मुझे मेरे शत्रुओं और विरोधियों से, जिनकी संख्या कम नहीं है, बचा सकती है."

"ओह तो आप इसलिए कंकलि में इतनी रुचि ले रही थीं."

"मुझे तुम्हारी सच्ची राय की आवश्यकता है, कलश! मां के बाद मेरी कोई रक्षिका और संरक्षिका नहीं रही. क्या वह उनका स्थान ले सकेगी?"

कलश ने कुछ देर सोचकर कहा, "वह चाहे तो उनका स्थान ले सकती है, और अपने प्राण संकट में डालकर भी अपने प्राण बचाने में भी समर्थ है वह. लेकिन, उसके साथ दो समस्याएं हैं, पहली वह अत्यधिक चंचल है, और दूसरे वह अत्यधिक आवेगी भी है. यदि....."

"हां, यदि....."

"यदि कोई विश्वसनीय व्यक्ति आपकी ओर से उस पर लगातार जासूसी करके उसे उसकी इन दोनों कमजोरियों और प्रवृत्तियों से परे रख सके, तो वह आपके लिये उपयोगी सिद्ध हो सकती है. यद्यपि मैं राजा का मुख्य गुप्तचर हूं, किंतु वह मेरा अतिक्रमण कर राजा की जासूसी करने और उनसे मनचाहा कार्य कराने में भी समर्थ है. आपके विरोधियों को भी वह अपनी बुद्धि के बल पर धूल चटा सकती है."

"मेरे पास एक आदमी है—कंक नाम का....."

"वह गंजा नाई? आप उसे कैसे जानती हैं? उसे कंकलि ने ही गुप्तचर्या में प्रशिक्षित किया था, और कुछ दिन तक उसने मेरे अधीन भी काम किया है. मेरा खयाल है वह कंकलि पर अच्छी जासूसी कर सकेगा."

"और, जरूरत पड़ने पर उस पर जासूसी करने के लिये आप तो हैं ही." कहकर कलावती कलश के और निकट खिसक आयी...... □

प्रस्तुति : हंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिया-तंत्र

एक अनजाने गांव में सूर्यास्त के समय देवशर्मा नाम का सन्यासी पहुंचा. वहां उसे एक जुलाहा अपनी पत्नी के साथ मद्यपान के लिए जाते हुए मिला. सन्यासी ने उनसे कहा, ''हम तुम्हारे गांव में सूर्यास्त के समय पहुंचे अतिथि हैं. इस गांव में किसी को जानते भी नहीं हैं. तुम हमें एक रात अपने यहां आश्रय देकर आतिथ्य धर्म का पालन करो.''

जुलाहे ने सन्यासी की बात सुनकर अपनी पत्नी से कहा, ''तू सन्यासी को घर ले जा और उचित रीति से सत्कार कर. मैं तेरे लिए खूब मद्य लेकर आऊंगा.''

जुलाहे की स्त्री को उस शाम अपने यार देवदत्त के पास जाना था. इसलिए वह सन्यासी को झटपट घर लायी और उसे एक खाट पर विश्राम करने को कहकर अच्छी तरह सजधज कर घर से निकल पड़ी. मगर ठीक तभी सामने से अपने पति को आता देखकर वह डरकर घर की ओर भागी. घर पहुंचते ही सबसे पहले श्रृंगार पोंछा फिर पहले पहने हुए वस्त्र ही पहन लिये.

जुलाहे ने अपनी स्त्री को सज-धज कर बाहर जाते हुए देख लिया था. घर में घुसते ही जुलाहे ने स्त्री से पूछा, ''कलंकनी. तू सजधज कर किस के पास जा रही थी.'' उसने सकपकाते हुए कहा, ''मैं तेरे पास से आने के बाद घर पर ही थी, तू मद्य से मतवाला हो न जाने अंटशंट क्या बक रहा है.''

पत्नी की जल्दी में हुई उल्टी-पुल्टी वेशभूषा देखकर और झूठी बातें सुनकर जुलाहे का क्रोध और बढ़ गया. और उसने अपनी पत्नी को डंडे से मार-मारकर अधमरा कर दिया. जब इस पर भी उसका क्रोध शांत नहीं हुआ तो उसने पत्नी को आंगन के एक खंभे के साथ बांध दिया और खुद भी अत्यधिक नशे में होने के कारण जल्दी ही सो गया.

जुलाहे को सोता जानकर उसकी स्त्री की सखी नाइन आयी और बोली, ''देवदत्त तुम्हारा इंतजार कर रहा है, अभी तक तुम उससे मिलने क्यों नहीं गयीं?''

उसने कहा, ''मैं उसके पास नहीं जा सकती. मुझे दुष्ट पति ने बहुत मारा है. मेरा सारा शरीर मार से दुख रहा है. मैं इस दशा में वहां कैसे जा सकती हूं. तू उससे कह दे आज मिलना नहीं हो सकेगा. दूसरे यह भी पास ही में सो रहा है. अभी सोकर उठेगा तो मुझे बंधा न पाकर बाद में और मारेगा.''

तब नाइन ने कहा, ''यह नशे में चूर है, सुबह होने से पहले नहीं उठ पायेगा. तब तक तो तू देवदत्त से मिलकर आ भी जायेगी. इसलिए मैं तुझे छुड़ा देती हूं. और तेरी जगह मैं बंध जाती हूं. अगर इस बीच यह उठ भी गया तो भी इसे पता नहीं चलेगा कि तू कहीं गयी है. तू जल्दी से देवदत्त की इच्छा पूरी कर के आ.''

इसके बाद नाइन की ने उसे बंधन रहित किया और उसके स्थान पर स्वयं बंध गयी. उसके जाने के थोड़ी ही देर बाद जुलाहा उठा, उसका नशा और क्रोध कुछ

कम हो गया था. वह खंभे पर बंधी नाइन के सामने जाकर बोला, ''तू कसम खा कि अब कभी घर से बाहर नहीं निकलेगी. कभी उल्टा न बोलेगी तो मैं तुझे खोल देता हूं.''

नाइन ने सोचा कि अगर मैं कुछ बोली तो यह आवाज से जान जायेगा कि मैं कोई और हूं. इसलिए वह जवाब में कुछ नहीं बोली. जुलाहा बार-बार उससे यही पूछता रहा. जब नाइन ने कई बार पूछने पर भी जवाब नहीं दिया तब जुलाहे का क्रोध और बढ़ गया और उसने पास ही पड़े चाकू से उस की नाक काट दी. फिर बोला, ''तू क्या सोचती है मैं तेरी खुशामद ही करता रहूंगा. तू अब खंभे से ही बंधी रह.'' और फिर से सो गया.

जुलाहे की स्त्री देवदत्त से मिलकर वापस आयी तो नाइन से बोली, ''तू ठीकठाक तो है न. मेरे जाने के बाद ये उठा तो नहीं?''

नाइन ने कहा, ''नाक के अतिरिक्त सारे अंग सही हैं. तेरे पति ने मेरी नाक काट दी है. मैं स्वरभेद के कारण कुछ बोल तक नहीं सकी.'' फिर सखी को पिछली सारी कहानी सुनाकर बोली, ''अब तू मुझे जल्दी से खोल जिसमें मैं अपने घर जाऊं.''

थोड़ी देर बाद जुलाहा फिर उठा और पत्नी से बोला, ''तू अब भी नहीं बोलेगी तो मैं तेरे कान काट लूंगा!'' जुलाहे के इरादे जान उसकी स्त्री प्रलाप करते हुए बोली, ''हे भगवान, ये मुझ जैसी सती-सावित्री स्त्री को बेमतलब डांट और मार रहा है. यदि मेरा सतीत्व अखंडित है और मैंने मन से कभी दूसरे पुरुष की इच्छा नहीं की है तो मेरी नाक पहले जैसी कर दे.'' थोड़ी देर चुप्पी साधकर उसने प्रसन्न भाव से अपने पति से कहा, ''देख, देख, मेरी नाक फिर जस की तस हो गयी है. ये सब मेरे सतीत्व के कारण ही हो सका.''

जुलाहे ने मशाल की रोशनी में अपनी स्त्री को देखा तो उसकी नाक को पहले जैसी ही पाया, जबकि जमीन पर नाक का एक कटा हुआ टुकड़ा पड़ा था और जमीन खून से भी रंगी हुई थी. अपनी स्त्री के सतीत्व को सच्चा जान कर जुलाहा उससे क्षमा मांगने लगा. □

पंचतंत्र से.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदावत

अजय श्रीवास्तव

शाम के झुटपुटे में, अमराई के पास झाड़ियों में सरसराहट सुनकर, नशे के बावजूद लीडर के पूरे बदन में सिहरन-सी दौड़ गयी. फिर भी नशे की झोंक में उनके मुंह से निकल ही गया, "कौन है बे...?"

आवाज के साथ ही झाड़ियों में से कोई निकलकर भागा, खरगोश की तरह उछलकर मरगिल्ला-सा लड़का. न जाने कौन, लेकिन उसी झोंक में लीडर ने फिर भी पहचान लिया कि किरपलवा है! किरपलवा, यानी रग्घू चौधरी का लड़का, यानी उनके खास प्रतिद्वंदी रघुनाथ चौधरी का सपूत होगा कोई बीसेक साल का. लेकिन यहां क्या कर रहा था.... लीडर ने सोचा.

मार्च का आखिर है. गेहूं की कटाई के दिन हैं. खलिहानों में गेहूं की पूलियों के ढेर लगने लगे हैं. कहीं-कहीं दौनी शुरू हो गयी थी. हवा में भी भूसे की अजीब-सी गंध मिली रहती है. चूंकि अब भी शाम जल्दी ढल जाती है, अंधेरा जल्दी घिर आता है, लिहाजा शाम के वक्त खेतों की ओर लोग कम ही नजर आते हैं. हां, चमार टोले की औरतें जरूर दिन भर खेतों में घास खोदती दिख जाती हैं. लेकिन, वे भी शाम ढलने से पहले अपने-अपने घरों को लौट आती हैं या लौट आने की कोशिश करती हैं.

हवा में अब वह जाड़ोंवाली नमी नहीं रही, लेकिन मस्ती से बहती हवा ने लीडर को एक बार फिर सिहरा दिया है, 'कहीं किरपलवा भी तो नहीं!'

अचानक कोटरों में धंसी उनकी आंखें सड़कवाले खंभे के बल्ब की तरह दिप्-से चमक उठीं. फिर-खुद-ब-खुद बुझ भी गयीं. उन्हें लगा कि एक सुनहरी मौका उनके हाथ से निकला जा रहा है, जब वह रग्घू चौधरी को गांव में नीचा दिखा सकते थे. मार की कितनी ही चोटें उन्हें याद हो आयीं, जो उनके खयाल से रग्घू चौधरी के इशारे पर ही उन्हें पड़ी थी. नशे के बावजूद उन्हें अपनी चोटें दर्द करती-सी लगीं और अनजाने ही उनका दायां हाथ बायें कंधे को सहलाने लगा.

सारा गांव जानता है, किरपलवा के बाप रघुनाथ चौधरी से लीडर की पुरानी अदावत है. रघुनाथ चौधरी उनके बाप के चचेरे भाई, यानी लीडर के चाचा हैं. लीडर के मां-बाप उनके छुटपन में ही चल बसे थे. उन्हें और उनके छोटे भाई को दादी ने पाला था. अपने बाबा को लीडर ने कभी नहीं देखा. दादी बताती थीं, पूरे गांव में उनका हल सबसे ऊंचा था और जब लीडर के बाप मरे थे, तब भी बहुत जमीन थी. लेकिन, सब तो रघुनाथ ने हथिया ली, बचा क्या!

यों गांव में लीडर के बहुत-से चचा-ताऊ हैं, लेकिन लीडर को कोई घास नहीं डालता. है भी क्या उनके पास जो कोई पूछे उन्हें! ले-देकर एक टूटा-फूटा दो कमरों का घर है. किसी जमाने में पक्का रहा होगा. पक्के से मतलब गारे से चिनी गयी लाल ईंटोंवाली दीवार और पटियन की छत से है, जो जमाने से झड़ते-झड़ते दम तोड़ गयी हैं. जगह-जगह से ईंटें खिसक आयी हैं. कमरों के कच्चे फर्श पर अर्सा हुआ भूसा, गोबर और मिट्टी की लिपाई नहीं हुई. कमरों के पीछे आंगन में अब भी दादी के जमाने की मिट्टी की आधी दीवार बची हुई है, जिस पर फूस का छप्पर डालकर दादी ने रसोई बनायी थी. मिट्टी का चूल्हा तो जाने कब का बह-खप गया. लेकिन वहां कमरे की दीवार अब भी काली नजर आती है.

अब तो लीडर ने घर जाना भी छोड़ दिया है. यहीं सड़क पर छुटकू की चाय की दूकान में रात गुजारते हैं. आज भी लीडर पूरे गांव में आवारागर्दी करते घूमते हैं. छुटकू तो पिटते-पिटते कुछ काम-धंधा करने लगा था, लेकिन लीडर बाज नहीं आया! धीरे-धीरे उन्होंने शराब पीना भी शुरू कर दिया. और आज हालत यह है कि वह बिना शराब के रह नहीं सकते. अब उन्हें खुद भी याद नहीं कि कब और कैसे उन्होंने शराब पीनी शुरू की थी.

नशे की झोंक में लीडर कब छुटकू की दूकान में आ गये उन्हें खयाल ही न रहा. छुटकू कब का दूकान बढ़ाकर जा चुका है. बीड़ी सुलगाने के लिए जैसे ही उन्होंने दियासलाई जलायी, उनकी निगाह किसी अर्द्धनग्न सिने तारिका की फ़ोटोवाले कैलेंडर पर पड़ी. लीडर ने एक गहरी सांस ली और उंगली जलने के एहसास से ही उनकी उंगलियों ने तीली छोड़ दी.

दूकान में बिजली नहीं है. घुप्प अंधेरे में बार-बार लीडर के बीड़ी का कश खींचने से हल्की रोशनी होती है. फिर धीरे-धीरे बीड़ी का लाल सिरा मध्यम पड़ जाता है. लीडर एक और तीली जलाकर तारिका की तस्वीर बड़े गौर से देखते हैं. यों झरने के पास गीले कपड़े में लिपटी पत्थर पर बैठी हुई तारिका की, धूल-मिट्टी से चीकट, इस तस्वीर को लीडर ने सैंकड़ों बार देखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा. लेकिन, इस तस्वीर ने आज उन्हें पहली बार आकर्षित किया है. वह तस्वीर को एक बार फिर देखना चाहते हैं लेकिन उनकी दियासलाई में तीलियां कम रह गयी हैं. उनका नशा कम हो चला है और वह पेशाब करने के लिए सड़क पर निकल आते हैं.

दरअसल, सिने तारिका वाले कैलेंडर की तस्वीर उन्हें भैरव मोची की लड़की परबतिया जैसी लगी. बहुत दिनों से निगाह है लीडर की परबतिया पर. देखने में सुंदर नहीं है, लेकिन बदन की गठन ऐसी है कि लीडर जैसे सैकड़ों मरते हैं उस पर. अचानक उनकी आंखें एक बार फिर चमक उठीं और उन्हें लगा कि उन्होंने बाजी मार ली. अनायास कितने ही बीते दिन उन्हें याद हो आये, 'अब शायद कई दिनों तक पैसे की तंगी नहीं रहेगी. लेकिन, अगर बिरादरी पर कोई बात....' नहीं, अब वह ज्यादा नहीं सोचेंगे. बहुत सोचने से माथा खराब होता है उनका.

परबतिया के खयाल ने लीडर को बुरी तरह परेशान कर दिया है. कई-कई जोड़तोड़ के बाद भी उसे पा नहीं सके थे. कई मर्तबा हाथ-वाथ पकड़ने की भी कोशिश की, लेकिन परबतिया भी दबंग है. फिर, अब पहलेवाली स्थिति भी नहीं रही कि कुछ ज्यादा जोर-जबर्दस्ती कर पाते. अगर ऐसा करते तो ख्वामखाह झगड़ा-फसाद होता और पूरा गांव भी साथ नहीं आता.

चमारों की इस स्थिति पर अब लीडर अक्सर मन मसोसकर रह जाते हैं. वरना वह भी दिन थे जब लीडर जैसों के सामने चमारों की चूं-चपड़ करने की भी हिम्मत न थी. अब तो इनके पर निकल आये हैं. बात-बात में पट्ठे गज भर की जबान चलाते हैं और लाठी तान लेते हैं.

लेकिन लीडर चमारों से निपटना जानते हैं. सुबह जब वह छुटकू की दूकान पर चाय के साथ अखबार पढ़ने बैठे, तो उन्होंने बलात्कार की खबरें दो-दो बार पढ़ीं. लेकिन अखबार की इस

नये हस्ताक्षर

आम खबर में उन्हें कोई खास बात नजर नहीं आयी. फिर भी, दुकान पर खबर सुननेवाले दूसरे गांववालों को लीडर ने अखबार के अलावा भी एक खबर सुनायी.

आनन-फानन में यह बात पूरे गांव में फैल गयी कि कल शाम किरपलवा ने परबतिया के साथ गलत काम किया. चमरौटे में बुजुर्गों के दिल धक् से रह गये. नौजवानों का खून खौल उठा और वे लाठियां तलाश करने लगे. भैरव का तो जैसे दम ही निकल गया, परबतिया भी ठगी-सी रह गयी, 'कल शाम तो मैं घर ही थी, गलत काम कब हो गया!'

दूसरी ओर रघुनाथ चौधरी मूंछों में मुस्कराये, 'हूं... लड़का जवान हो रहा है.' लेकिन फिर चौंके, 'कल शाम तो किरपलवा शहर गया था. फिर कब उसने गलत काम किया!' वह समझ गये कि यह किसकी शरारत है. उनका मन लीडर को जूता लगाने का करने लगा. लेकिन फिर भी, पूरे गांव में यह चर्चा आम रही. बहुत देर तक अंधे के कुएं के पास झाड़ियों में छिपे लीडर ने कई बीड़ियां एक साथ फूंकने के बाद न्याय का पक्ष चुना और चमरौटे में पहुंच गये. रह-रहकर उन्हें अपनी पिटाई की आशंका घेर लेती रही. लेकिन, कुछ कानूनी बातों की उलट-फेर से उन्होंने नौजवानों को शांत किया और आश्वासन दिया, "बेफिकर रहो, मैं तुम्हारे साथ हूं. रग्घू चौधरी से अदावत है तो क्या मैं इसीलिए न्याय का रास्ता छोड दूंगा!" फिर थोड़ी देर तक टोले के बुजुर्गों से गुफ्तगूं करते रहे.

तो भी, लीडर की कोशिशों के बावजूद कई दिनों तक पुलिस ने गांव की ओर रुख नहीं किया. पुराना यार है दारोगा लीडर का. लीडर का सारा प्लान सुनकर दारोगा ने खीसें निपोड़ दीं, "क्यों मेरी वर्दी उतरवाये है! रघुनाथ चौधरी पर हाथ डालना खेल है क्या?" लेकिन लीडर की पुरानी सेवाओं को याद कर परबतिया को हासिल करने के लिए वह तैयार हो गया और प्लान तय करके उसने लीडर को चमरौटे में जायजा लेने के लिए भेजा. लिहाजा, साइकिल से उतरते हुए व्यस्त-सा बनकर चमरौटे के बुजुर्ग प्रधान कलट्टर से लीडर बोले, "दद्दा, रपट किये तो कित्ते दिन हो गये लेकिन पुलिस भी हम गरीबों की नहीं सुनती. अब देखो न, वह जानती है कि हमारे पास पैसा नहीं है, लेकिन पुलिस केस हाथ में तभी लेगी जब उसे पैसा दिया जायेगा."

लीडर की बात खत्म होते-होते कुछ और भी जुट आये. नौजवान लीडर की बात सुनकर एक बार फिर भड़क उठे. पुलिस का रवैया सब जानते हैं. उसके किये-धिये कुछ नहीं होने वाला. जो करना होगा खुद ही करना होगा, वरना इस तरह की वारदात बढ़ेंगी. आज परबतिया कल कोई और, आखिर कब तक चलेगा ऐसा!

अंततः चमरौटे के नौजवानों का सब्र जवाब दे गया. रोष में भरे नौजवानों में से किसी ने कहा, "जाओ चौधरी! हम खुद निपट लेंगें. हमें किसी की मदद नहीं चाहिए."

नौजवानों का आक्रोश देखकर लीडर और प्रधान कलट्टर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों समान रूप से आशंकित हुए. दोनों को ही लगा अब ये लौंडे न जाने क्या गुल खिलायेंगे. जहां बूढ़ा प्रधान टोले की बर्बादी के प्रति आशंकित था, वहीं लीडर को गांव में पूरा समर्थन न मिलने की वजह से अपने अनिष्ट की आशंका सताने लगी.

बूढ़े की आंखों में कितने ही दृश्य साकार हो उठे. वह उन दृश्यों की पुनरावृत्ति नहीं चाहता, लिहाजा अब बूढ़े प्रधान का विचार है कि मामला गांव के ही स्तर पर रफा-दफा कर दिया जाय. न मालूम रघुनाथ चौधरी ने पुलिस को कितना खिलाया-पिलाया है! टोलेवाले कहां से लायेंगे उतना! हर घर की तस्वीर बूढ़े प्रधान की आंखों में तैर-गूदड़ियों के बिछावन, झोल खाती चारपाइयां, टूटे-फूटे छप्पर, कांसे-पीतल और मिट्टी के बर्तन, कुछ ढोर-डंगर और, और भी कितना कुछ.

लेकिन, वृद्ध प्रधान के विचार से न लीडर सहमत हुए और न चमरौटे के नौजवान. वे एक बार फिर कसमसाये थे, लेकिन आगवाली बात ने उन्हें खाली कसमसाने भर दिया. जबकि लीडर को परबतिया के हाथ से निकल जाने की आशंका है. अपनी इस आशंका को छिपाते हुए लीडर ने चमरौटे को आश्वस्त किया, "नहीं दद्दा, मेरे होते क्यों डरते हो! अगर आज वह मामला यहीं रुक गया तो फिर समझो यह रोज का किस्सा हो जायेगा."

फिर सुझाव भी दे डाला, "ऐसा करो, हर घर से रुपिया-दो रुपिया चंदा करके मुझे दे दो, मैं सारी बात संभाल लूंगा."

जब से बात फैली है, परबतिया तभी से रो-रोकर आंखें सुजा रही है. मां नहीं है उसकी और भैरव की समझ में नहीं आ रहा कि वह कैसे उसे समझाये! वह जानता है अपनी बिटिया को, अगर उसके साथ ऐसा कुछ होता तो अब तक परान दे देती. लेकिन, गांव-जवार के लोगों को कौन समझाये!

आखिरी जूते को फ्रेम पर चढ़ाकर भैरव उठा तो शाम गहरा चली थी. घर के सामनेवाले जिस नीम के नीचे वह जूते गांठा करता है, उस पर चिड़ियां जाने कब से चहचहा रही हैं. रोज तो इनकी चहचहाहट सुनते ही वह धंधा समेट लेता है, लेकिन आज लगता है काफी देर हो गयी.

भैरव के आंगन में कदम रखते ही गाय और बछड़े ने एक साथ बा...बा... की गुहार लगायी. उसने देखा आज फिर किसी ने उनके सानी-पानी की फिक्र नहीं की थी. कोठरियों में दिया-बत्ती नहीं किया गया था और चूल्हा भी आज फिर ठंडा था. इसका मतलब है आज भी रोटी-पानी उसी को करना होगा.

देख आया है भैरव, परबतिया जाने कब रोते-रोते सो गयी थी. उसको जगाना ठीक न समझकर वह खुद रस्सी-बाल्टी लेकर कुएं की ओर चल दिया.

परबतिया को समझाने के लिए शब्दों के अभाव से भैरव रोने-रोने को हो आता है. लेकिन, हर बार रेत का सूखा सागर उसकी आंखों में तैर जाता है. जाने कब मर गया आंख का पानी! परबतिया की स्थिति उसके लिए असह्य हो चली है. कुएं की जगत पर खड़े-खड़े बार-बार उसका मन कुएं में छलांग लगाने को करता है. अचानक कुत्तों से, जो लड़ते या खेलते कुएं तक चले आये हैं, चौंककर भैरव ने जल्दी-जल्दी हाथ चलाये और पानी भरकर घर की ओर चला.

लीडर की भी तो यही इच्छा थी कि एक बार परबतिया चौकी तक आ जाय तो दारोगा जी के साथ वह भी.... केस बहुत गंभीर है.... पूरे मामले की तहकीकात खुद दारोगा साहब को करनी होगी. परबतिया का बयान दर्ज करना होगा. बयान चौकी में ही दर्ज किया जायेगा. परबतिया को चौकी में आना होगा. अकेली.... और दारोगा साहब का प्लान तय हो गया. नहीं आयेगी तो पूरे टोले में आग लगा दी जायेगी, अखबार की खबर की तरह! और, उन्होंने अखबार की उस खबर को काले बाल प्वाइंट से घेर दिया.

"परबतिया कहां है?" नीम तले बैठे भैरव मोची से दारोगा ने कड़कदार आवाज में सवाल दागा.

भैरव मोची का दिल बैठने लगा. लेकिन, तब तक पूरा चमारटोला नीम तले इकट्ठा हो चुका था. लीडर की दगाबाजी से लोग पहले ही गुस्साये हुए हैं, ऊपर से दारोगा का आना उन्हें आशंकित कर गया है. और जब दारोगा ने कहा, "परबतिया को आज शाम चौकी में आकर बयान दर्ज कराना होगा," तो टोलेवालों को कोई शकशुबहा नहीं रह गया.

"क्यों साहब, बयान क्या यहीं दर्ज नहीं किया जा सकता?" भीड़ में से किसी की आवाज सुनकर दारोगा साहब चौंके, "ओह! तो कानून बघारना आ गया है मादर....." नौजवानों के तमतमाये चेहरों को देखकर घाघ दारोगा समझ गया कि लौंडे टोले की इज्जत के लिए मर मिटेंगे.

उसने फौरन पैंतरा बदला, "अरे केस गंभीर है. बयान तो दर्ज करना ही होगा."

"तो यहीं क्यों नहीं दर्ज कर लेते! और जो लीडर ने रपट लिखायी थी, उसकी भी नकल दे दो दारोगा साहब!"

दारोगा साहब गुस्सा काबू न कर सके और बिफर पड़े, "अबे यह कौन साला पुलिस के मामले में टांग अड़ा रहा है! तुम्हें क्या मालूम कि जब तक बयान दर्ज नहीं होता, कोई मामला नहीं बनता. और जब मामला नहीं बनता तो रपट नहीं लिखी जाती."

"तो दारोगा साहब! हमें तो कोई रपट नहीं लिखानी. न बयान दर्ज कराना है, न मामला बनाना है. फिर, बिना महिला पुलिस के परबतिया को हम चौकी भी नहीं भेज सकते और शाम के वक्त तो कतई नहीं."

दारोगा समझ गया कि अब ये लोग जाहिल नहीं रहे. फिर एक साथ इतने लोग, उसका साहस वैसे ही जवाब दे गया. अकेला भैरव होता हो अब तक डांट-डपटकर मतलब निकाल चुका होता. लेकिन, अकेला चना भला कैसे भाड़ फोड़ता! लिहाजा, बहस को आगे न बढ़ाना ही बेहतर समझकर लीडर को कोसता हुआ दारोगा वापस चल दिया. जाते-जाते धमकी दे गया, "अब के कोई फसाद किया तो सबको गिरफ्तार कर लूंगा." पीछे से कोई फिक्क से हंस दिया. दारोगा के जबड़े भिंच गये, लेकिन खून का घूंट पीकर चला गया.

धीरे-धीरे भीड़ छंट गयी. बूढ़ा प्रधान कलट्टर कुछ देर भैरव के पास बैठा रहा. फिर वह भी चला गया. भैरव भी घर के अंदर गया. अंदर जाते ही दिल धक्क-से रह गया. कोठरियों के दरवाजे खुले हुए हैं. परबतिया का कहीं अता-पता नहीं है. रस्सी बाल्टी भी अपनी जगह नहीं है, 'कहीं ऐसा तो नहीं कि वह कुएं में छलांग लगा दे!' आशंकित-सा भैरव घर के बाहर निकला ही था कि परबतिया पानी भरकर आती दिखायी पड़ी. उसकी जान में जान आयी और वह दुबारा नीम की छांव की ओर मुड़ गया रह-रहकर उसे दारोगा की धमकी याद आ रही है. □

बी-125, सावतपुर, दिल्ली-110094

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेत-कन्या

सुभद्रा सिंह

इंद्रलोक की अप्सरा के समान अपूर्व सौंदर्य से दूसरों को सम्मोहित कर दे ऐसी सुंदरी को देखकर भला कौन अनुमान लगा सकता था कि इस कोमलांगी का हृदय इस्पात के समान कठोर होगा?

अमरीकी माता पिता के घर में एक सुंदर कन्या ने जन्म लिया. नाम रखा गया एमी एलिजाबेथ थोर्पे. एमी का असली नाम अधिक दिनों तक नहीं रहा. समय के साथ-साथ एमी विस्मृति के गर्भ में चली गयी और निखरती गयी सिथिया. अभूतपूर्व सौंदर्य की स्वामिनी ही नहीं थी वह. अपार प्रतिभा, योग्यता और दुःसाहस भी सिथिया में कूट-कूटकर भरे थे.

ब्रिटिश राजनीतिक आर्थर पैक से 1930 में सिथिया (तब एमी) ने विवाह रचाया. किंतु शीघ्र ही पता चल गया कि दोनों के रास्ते अलग-अलग दिशाओं को जाते हैं. यह खुले दिल की उच्चाकांक्षी युवती वह संकीर्ण और शुष्क स्वभाव का बनावटी व्यवहार वाला. फिर भी उसने अपने पति से तलाक नहीं मांगा. एक राजनयिक की पत्नी के रूप में सिथिया को अनेकानेक देशों की यात्रा का अवसर मिला. धीरे-धीरे वह राजनीति के गुर सीखने लगी. इसी प्रकार की एक यात्रा में उसे अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने का अवसर भी प्राप्त हुआ. ब्रिटिश गुप्तचर विभाग ने पोलैंड प्रवास के दौरान उसे ब्रिटेन के लिये जासूसी करने का आमंत्रण दिया. एमी तो ऐसे सुनहरे अवसर की तलाश में ही था. यहीं उसका नामकरण किया गया 'सिथिया'.

पोलैंड निवास के दौरान ब्रिटिश गुप्तचर विभाग द्वारा नियुक्त होने के बाद अपनी अदाओं के तीरों से विदेश मंत्रालय के एक उच्च पदाधिकारी को घायल करने में सिथिया सफल हो गयी और चेकोस्लोवाकिया तथा जर्मनी आदि के बारे में उसने अनेक महत्वपूर्ण राजनैनिक सूचनाएं ब्रिटेन को दीं. उन्हीं दिनों ब्रिटिश गुप्तचर विभाग को इस बात की भनक लगी कि पोलैंड के इंजीनियर किसी रहस्यमय कोड की भाषावाली मशीन बनाने का प्रयास कर रहे हैं जिसका प्रयोग जर्मनी के गुप्त कार्यों के लिये किया जायेगा. अगर इस कोड का भेद किसी प्रकार मिल जाय तो हिटलर के बढ़ते कदम को रोकने में मदद मिलेगी. इस कोड का पता लगाने का भार सिथिया को सौंपा गया. धीरे-धीरे उसने अपने रूप का जाल फैलाना शुरू किया. वह महत्वपूर्ण व्यक्तियों को अपने यहां आमंत्रित करती, उनके यहां दावतों में दिल खोलकर हिस्सा लेती. कभी-कभी बिना बुलाये ही किसी बहाने किसी से मिलने पहुंच जाती. जब देखती कि शिकार उसके शिकंजे में पूरी तरह फंस गया है तो उससे धीरे-धीरे सूचनाएं निकालती रहती और अपने काम की सूचनाएं अपने साथियों को पहुंचा देती. अंत में उसने पोलिश कोड मशीन के रहस्य का पता लगा ही लिया. फिर तो उसका काम ही हो गया अलग-अलग देशों की गुप्त संकेत भाषा का पता लगाना और उसे अपने साथियों तक पहुंचा देना.

ब्रिटिश एजेंटों में उसका नाम पोलैंड की कोड मशीन का भंडाफोड करने के कारण अब सम्मान से लिया जाने लगा. इसी कारनामे के कारण 1941 में ब्रिटिश सिक्यूरिटी कोआर्डीनेशन के मुखिया विलियम स्टीफेसन को जब इटली और फ्रेंच दूतावासों के अंदर जासूसी करने के लिये एजेंटों की आवश्यकता हुई तो उसने सिथिया को ही चुना. वाशिंगटन में उसने अपना डेरा एक आलीशान मकान में जमाया. ये 1941 के हलचल भरे दिन थे. इधर हिटलर का आतंक सिर पर मंडरा रहा था. उधर मुसोलिनी अपने पैर पसारने की जोड़-तोड़ में था. वाशिंगटन में सिथिया को 'शीघ्र मोहिनी' के रूप में ख्याति मिल गयी. वह भी महत्वपूर्ण

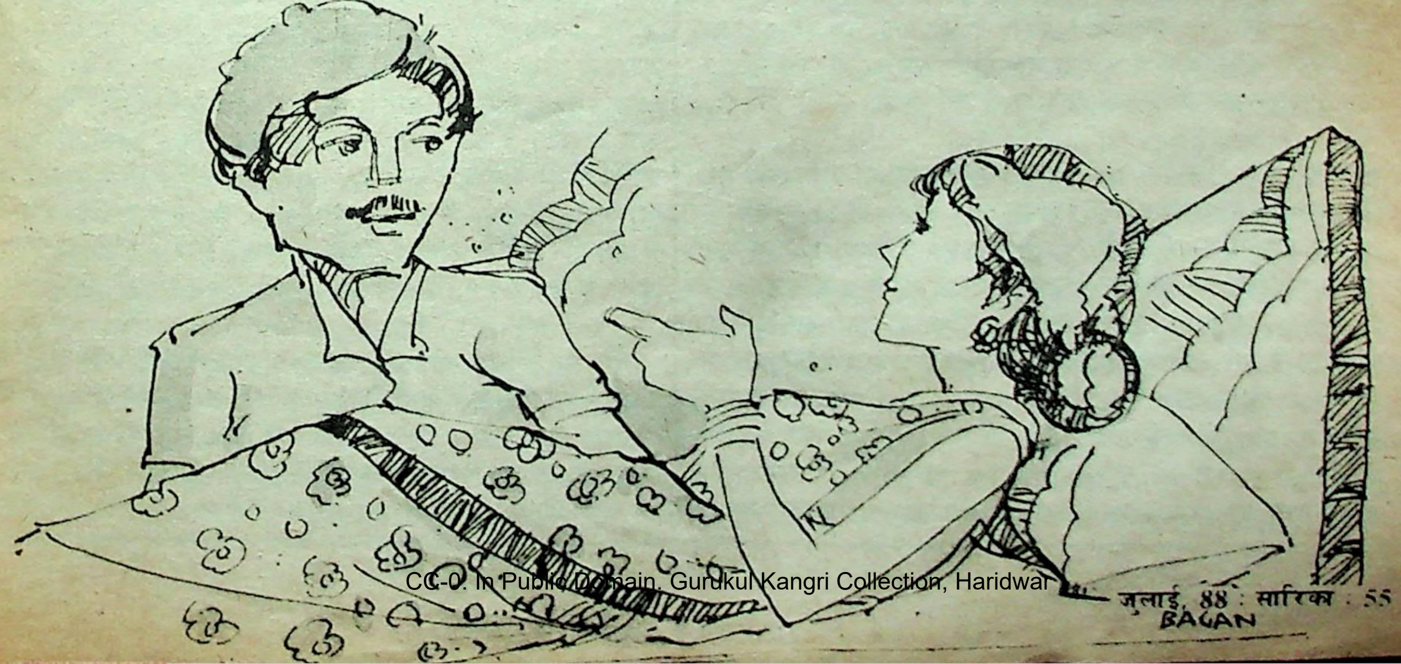

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तियों से घुल-मिल गयी. सभी उसके सामीप्य के लिये एक दूसरे से होड़ लेने लगे. इन्हीं में था, मुसोलिनी का नौसैनिक 'अटैची' अल्बर्टो लाइस. अपने मतलब का जान, सिथिया ने उसको मुहब्बत का चारा फेंका. जब उसने देखा कि लाइस उसके प्रेम में डूब चुका है, एक दिन वह उसके सामने जा खड़ी हुई.

"लाइस मुझे तुमसे बहुत जरूरी बात करनी है."

लाइस बेचारा कुछ समझा नहीं. उसने सोचा मेरी प्रेयसी आज कोई प्यार भरी मनुहार करने आयी है. उसने हाथ बढ़ाकर सिथिया को अपनी ओर खींचा. "मेरी प्यारी सिथिया! जरा बताओ तो तुम्हें चाहिए क्या? तुम्हारे लिये तो मेरी जान भी हाजिर है."

सिथिया ने उसका हाथ धीरे से अलग हटाया और कहा, "क्या तुम मुझे इतना प्यार करते हो कि अपनी जान भी दे सकते हो?"

"हां-हां. इसमें भी कोई संदेह है. जरा एक बार कहकर तो देखो."

"मुझे तुम्हारी जान नहीं चाहिए. किंतु जो कुछ मैं कह रही हूं वह ध्यान से सुनो. मैं मित्र राष्ट्रों की गुप्तचर हूं और इटली के विरुद्ध उनकी सहायता करने में तुम्हारी मदद चाहती हूं. तुम्हें अपना भेद इसलिये बता रही हूं कि मुझे तुमसे प्रेम है. बोलो मेरी मदद करोगे?" सिथिया ने लाइस के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर कहा.

लाइस को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था, कि भोली-भाली-सी लगनेवाली उसकी प्रेयसी मित्र राष्ट्रों की जासूस है. किंतु सिथिया का जादू उसके सिर पर पूरी तरह चढ़ चुका था. सिथिया के हाथों में हाथ दिये उसने मोहाच्छादित अवस्था में पूछा, "मुझसे तुम क्या चाहती हो?"

"इटली द्वारा प्रयोग में लाये जानेवाले कोड संकेतों की जानकारी चाहिए मुझे." सिथिया ने बेखौफ हो बांकी मुसकान के साथ जवाब दिया.

मंत्र-बिद्ध की भांति लाइस ने समस्त गुप्त संकेतों को लाकर सिथिया के नाजुक हाथों में धर दिया. एक पल के लिये भी उसके ध्यान में न आया कि उस जैसा उच्च अधिकारी कैसा राजद्रोह करने जा रहा है.

ये गुप्त संकेत जब सिथिया ने जाकर मित्र राष्ट्रों को सौंपे तो सभी हक्के बक्के रह गये. सिथिया ने दुश्कर लगने वाले काम को किस सफाई से अंजाम दिया था. अब सिथिया को लाइस से कोई मतलब नहीं रह गया था. उसने ए.बी.आई. को लाइस की गतिविधियों के बारे में सूचना भेज दी जिसने इटली के दूतावास को मजबूर कर दिया कि वह लाइस को इटली वापस भेज दे.

इटली में जब सिथिया अपनी कारगुजारियों में व्यस्त थी, फ्रांस पर हिटलर का शिकंजा कस चुका था. अब सिथिया ने अपनी नजरें फ्रांस के दूतावास पर जमायीं. वहां से उसे अपने मतलब का व्यक्ति खोज निकालने में अधिक समय नहीं लगा. वह व्यक्ति था भूतपूर्व पायलट कैप्टन चार्ल्स ब्राउजे, जो राजदूत के प्रेस अधिकारी का पद भार संभाल रहा था. लड़ाई से पहले भी ब्रिटिश गुप्तचर विभाग में कार्य किया था. किसी कारणवश अब वह ब्रिटिशों से चिढ़ता था. अमरीकियों से भी उसे नफरत थी. उन्हें वह घटिया समझता था जिन्हें राजनीति की समझ नहीं थी. यह ब्राउजे सिथिया का अगला शिकार बना. धीरे-धीरे उसने ब्राउजे के आसपास जाल बिछाना शुरू किया. जल्दी ही उसे शिकार को काबू में करने में सफलता मिल गयी. बात यहां तक बढ़ गयी कि सिथिया भी उसी होटल में रहने लगी जहां ब्राउजे सपत्नीक रह रहा था. यहीं सिथिया को सुराग मिला कि मातीनिक द्वीप पर फ्रांसीसियों का खजाना है जिसमें काफी सोना है और नाजी भी उस खजाने की फिराक में है. उसने तुरंत अपने साथियों को आगाह किया. ब्रिटिश गुप्तचरों ने आनन-फानन कार्यवाही कर उस खजाने को नाजियों के पहुंचने से पहले ही अपने कब्जे में कर लिया. बाद में यही सोना ब्रिटेन ने अमरीका से कर्ज प्राप्त करने में जमानत के रूप में प्रयोग किया ब्राउजे से ही सिथिया को अमरीका में सक्रिय ज़र्मन एजेंटों की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी हासिल हुई.

एक बार फिर फ्रांसिसी नौसैनिक गुप्त संकेतों को जानने का भार 'संकेत कन्या' सिथिया पर डाला गया. किंतु काम इस बार इतना आसान नहीं था क्योंकि समस्त गुप्त संकेत दूतावास के स्ट्रांग रूम' में रखे जाते थे. काफी सोच-विचार के बाद सिथिया ने एक योजना बनाई. इस योजना में उसने ब्राउजे को भी शामिल किया जो उसके प्रेम में दीन-दुनिया भुला चुका था. उन्होंने फ्रेंच दूतावास के रात्रि चौकीदार के पास जाकर कहा, "हम बहुत मुश्किल में पड़ गये हैं. तुम हमारी कुछ सहायता कर सको तो तुम्हारा एहसान होगा."

चौकीदार उन दोनों को रात में वहां देखकर वैसे ही विस्मित था. उसने प्रश्न किया, "कहिये! मैं भला आपकी क्या सहायता कर सकता हूं?"

बस केवल इतना कि हमें दूतावास के अंदर रात में मिलने और प्रेम करने का अवसर दे दो." सिथिया ने अपना जादू चौकीदार पर चलाया. मेनका-सी सुंदरी अपने नाजुक होंठों से परेशानी बताये तो कौन ऐसा कठोर हृदय होगा जो पिघल न जाय?

रास्ते की पहली रुकावट दूर हुई. चौकीदार को इस उपकार के बदले एक भारी रकम देना मंजूर किया गया. वे चौकीदार के लिये नित नयी शराब की बोतलें भेंट में लाते जिसमें बेहोशी की दवा मिली होती. दोनों प्रेमी अब बेधड़क दूतावास के अंदर रातें गुजारने आने लगे. इधर वे प्रेम में मग्न रहते, उधर चौकीदार दवा के नशे में छक सोता रहता. तीसरी ओर सिथिया के साथी फ्रेंच नौसैनिक गुप्त संकेत चिन्हों की नकल करते रहते. गुप्तचर विभाग के विशेषज्ञ जितनी सफाई से दल के लिये ताले खोलते उतनी ही सफाई से नकल करने के बाद बंद भी कर देते. किसी को जरा भी शक नही हो पाया. फिर भी एक दिन नशा बीच में ही टूटने पर चौकीदार ने सावधानीवश यह देखने के लिये कि अंदर क्या हो रहा है चाबी के छेद में से अंदर का नजारा देखने की कोशिश की. पर जब देखा कि अंदर प्रेमी प्रेम करने में मग्न हैं तो निश्चिंत हो फिर से खर्राटे लेने लगा. इस प्रकार कई रातों के अथक परिश्रम के बाद ब्रिटिश गुप्तचर सारे संकेतों की नकल करने में सफल हुए. बाद में सिथिया के इस कार्य की भी सराहना हुई.

युद्ध समाप्ति के बाद 'संकेत कन्या सिथिया' ने अपने पति की मृत्यु के बाद ब्राउजे से ही विवाह कर लिया, जिसने अपनी पत्नी से नाता तोड़ लिया था. काफी लंबे विवाहित जीवन के बाद बड़े-बड़े खतरों से बचकर जीवित निकल आनेवाली संकेत कन्या का अंत, कैंसर से जूझते हुए 1961 में हुआ. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमोचन एक बला

वे नहीं माने. करवा ही लिया अपने कथा संग्रह का विमोचन. समारोह में थोड़ी चखचख भी हुई क्योंकि विशेष रूप से आमंत्रित एक प्रगतिशील लेखक ने भाषण कुछ इस तरह शुरू किया, ''दोस्तो! सच तो यह है कि इनकी मैंने कोई भी कहानी नहीं पढ़ी है. पढ़ना तो दूर रहा निमंत्रण मिलने से पहले मैं जानता भी नहीं था कि ये कहानियां लिखते हैं क्योंकि व्यावसायिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होनेवाली ट्रैश रचनाएं मैं पढ़ता नहीं, न ही भविष्य में पढ़ने की कोई संभावना है इसलिये मैं इनकी कहानियों के बजाए हिंदी कहानी की दशा पर बोलूंगा...'' इस संवेदनहीन और क्रूर आघात से उस कथाकार को कितनी पीड़ा हुई होगी इसका अनुमान लगाया जा सकता है.

सवाल उठता है कि यह पुस्तक विमोचन क्यों करवाये जाते हैं? क्या यह किसी तरह का साहित्यिक कर्मकांड है? पहले यह मर्ज सिर्फ कवियों तक सीमित था, अब कथाकार भी इसके शिकार हो गये हैं. इस तरह की तमाम गलत परंपराओं की तरह यह भी देश की राजधानी से शुरू हुई है. दूसरे शहरों में कुछ लेखक पुस्तक प्रकाशित होने पर दिल्ली पहुंचते हैं और अपनी गाढ़ी या पतली कमाई का एक हिस्सा दिल्ली शहर में विमोचन कराने पर खर्च करते हैं. लेखक गांठ का पूरा दिखाई दे तो भाई लोग कॉकटेल पार्टी भी झटकने में नहीं चूकते

खूंटा और खूंटे

लघु पत्रिका प्रकाशित करने का जुनून लेखकों पर क्यों सवार होता है और इस जद्दोजहद से गुजरते हुए उन्हें और परिवार के लोगों को किस किस्म की तकलीफों से गुजरना पड़ता है, इसका लेखा जोखा टिप्पणी या निबंध के बजाए कहानी के रूप में पढ़ना चाहते हों तो आनंद अस्थाना की कहानी 'खूंटे' को पढ़ें. यह उनके सद्यप्रकाशित कथा संकलन 'गिरोह तथा अन्य कहानियां' में संकलित है.

'खूंटे' की तर्ज पर पत्रिकाबाजी को हम भी दुखती हुई रग ही मानते थे कि कलकत्ता में एक तेज तर्रार युवा संपादक ने हमें सिक्के का दूसरा पहलू दिखाया. इनका कहना है कि तथाकथित अव्यावसायिकता महज एक छद्म भर है. पत्रिका चाहे कितनी ही लघु क्यों न हो उसके जरिये बहुत से काम बनाए जा सकते हैं. एक बहुचर्चित पत्रिका के बारे में उन्होंने बताया कि संपादक महोदय स्वयं एक प्रिंटिंग प्रेस के मालिक हैं. पत्रिका के तेवरों के बल पर और आला अफसरान की रचनाएं छाप कर न सिर्फ सरकारी विज्ञापन मिलते हैं बल्कि प्रेस के लिये अच्छा खासा जॉब वर्क भी मिल जाता है, आकर्षक दरों पर. इसमें घाटे का प्रश्न ही पैदा नहीं होता. लघु पत्रिका के संपादकगण आपसी व्यवहार और लेनदेन का पूरा ध्यान रखते हैं. अति विशिष्ट व्यक्ति (वी.आई.पी.) न सही विशिष्ट व्यक्ति का दर्जा तो मिल ही जाता है. हिंदी में ऐसे कई नान-प्रैक्टिसिंग राइटर्स हैं जो लघु पत्रिका की संपादकी के दम पर साहित्य में जिंदा हैं.

एक मित्र का कहना है कि लगातार दर्जन भर कहानियां संपादक के अभिवादन और खेद सहित लौट आने पर गुस्से और खीझ की एक सात्विक परिणति लघु पत्रिका प्रकाशित करने का निर्णय लेने में होती है. दो तीन अंक निकलते निकलते न सिर्फ कहानियों का लौटना बंद हो जाता है बल्कि उन पर चर्चा भी होने लगती है. इस लिहाज से तो यह कोई महंगा सौदा नहीं है. क्यों आनंद अस्थाना जी?

खाकी लेखक

आज की हिंदी कहानी साहित्येतर जीविका से जुड़े लेखकों के हाथों में है. सफेद कालरवाली प्रतिभाओं के दिन गये. विश्वविद्यालयी हिंदी अध्यापकों और उच्च मध्य वर्गीय शालीन गृहणियों की कहानियां अब पाठकों को उबाने लगी हैं. तकनीशियनों, चिकित्सकों, वैज्ञानिकों और लघउद्यमियों की तरह पुलिसकर्मी भी कथालेखन के क्षेत्र में सक्रिय हुए हैं. सिपाही-दारोगा-थानेदार तो अभी हाथ में डंडा ही पकड़े हैं परंतु दो-तीन युवा पुलिस अधिकारी नियमित रूप से लेखन कार्य में संलग्न नजर आते हैं. इनकी आमद का कोई भी संबंध साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त अराजकता से नहीं है.

हाथ में वाकी टाकी, तन पर खाकी वर्दी, सर पर पी कैप वाले विभूति नारायण राय से बातचीत करके जल्दी ही मालूम पड़ गया कि उनका हृदय विशुद्ध साहित्यकार का हृदय है.—'साहित्य से तो मैं छात्र जीवन से ही जुड़ा हूं, पुलिस की नौकरी तो बाद में लगी.' भारतीय पुलिस की जनमानस में जो छवि है, उसके कारण हमारे मन में भले ही पूर्वाग्रह रहें परंतु जब मैंने विभूति नारायण का उपन्यास 'शहर में कर्फ्यू' पढ़ा तो मुझे उनके इस कथन पर विश्वास हो गया कि 'यह साहित्य ही है जिसने दस वर्ष की पुलिस की नौकरी में भी मेरी संवेदनशीलता को बचाए रखा'. 'शहर में कर्फ्यू' एक सशक्त और प्रामाणिक कृति है जो कि न सिर्फ सांप्रदायिकता की आड़ में समाज के ठेकेदारों द्वारा की जा रही जन विरोधी कार्यवाइयों के विरुद्ध कथा साहित्य में नया मोर्चा खोलती है बल्कि युवा पीढ़ी के पुलिस अधिकारियों के मानवीय दृष्टिकोण के अस्तित्व के बारे में निश्चित सूचना भी देती है.

अहिल्या बनने की मजबूरी

हिंदी कहानी में सेक्स और सेक्सवाद से संजीव और कात्यायिनी बेवजह चिंतित हैं. अपने यहां तो अभी मुग्धा नायिका युग ही चल रहा है जहां नायक को थरमस देते हुए नायिका का हाथ छू जाता है तो तन बदन सिहर उठते हैं जैसा कि सरयू शर्मा की घनघोर रूमानी कहानी सीप (हंस-मई 88) में होता है हालांकि मूल कथ्य वर्जनाओं को तोड़ने से ही संबंधित है जिसमें 37-38 वर्ष की तथाकथित प्रौढ़ किंतु आकर्षक देहयष्टि वाली कुमुदिनी शुक्ला (जो कि दो जवान लड़कियों की मां है और विवाहित जीवन के दो दशक एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुमसुम प्रोफेसर के साथ बिता चुकी है) पति की अनुपस्थिति में एक सागर अध्ययन दल के साथ छोटे जहाज पर, सौम्य-सुदर्शन एवं वयस के अनुकूल धीर-गंभीर मणिकांत के प्रति आकर्षित होती है परंतु भरपूर अवसर मिलने पर भी सलवार कमीज में ही समुद्र में गोता मारकर अपने में मग्न हो जाती है. बाद में मणिकांत की देह यष्टि को उजागर करते तन से गीले वस्त्रों को हाथ से दूर करती वह मुग्धा और जड़ होकर, अहिल्या की तरह शिला बन जाती है.

इसी कड़ी में एक और कहानी-गीतांजलि श्री की 'दोपहर' (कहानियां-मार्च 88). इसकी नायिका अपनी स्वतंत्रसता के प्रति सचेत और सतर्क तो इतनी है कि छः वर्ष के रोमांस के बाद भी मंगनी तोड़ देती है मगर सुंदर, सुडौल विजय पर मुग्ध बनी रहती है. सौम्य, भले-भोले चेहरे वाला लेखक अमरेंद्र भी अच्छा लगता है. एक दोपहर वह अपने दड़बे में हमेशा की तरह अकेली होती है कि एक के बाद एक दोनों नायक प्रगट होते हैं. तीनों पहले चाय फिर साथ बैठकर व्हिस्की पीने लगते हैं. तीन पैग पीने के बाद विद्रोहिणी मगर मुग्धा नायिका खाना बनाने रसोई में चली जाती है, दोनों युवक शतरंज खेलने में मसरूफ हो जाते हैं और उसे एकदम भुलाकर अपनी अपनी चालें चलने लगते हैं. वह कुर्सी पर बैठ कर सो जाती है, अहिल्या की तरह शिला हो जाती है. जाहिर है कि हिंदी को सेक्स से कोई खतरा नहीं है, न ही सेक्सवाद से क्योंकि लगभग सभी उपलब्ध नाकिकाएं फ्रीज्ड हो चुकी हैं और नायक तो शरच्चंद्रियन थे, वही रहेंगे.

सच्चे हमदर्द

एक हैं-युवा कथालोचक. आप महिला लेखकों के जबर्दस्त पक्षधर और सच्चे हमदर्द हैं. आपकी मान्यता है कि लिंग के आधार पर कथाकारों का विभाजन नहीं होना चाहिए. इसके विरुद्ध आवाज के लिये आप पत्रिकाओं के महिला कथाकार विशेषांकों में महिला कथाकार की कहानियों पर सच्ची-हमदर्दी के साथ लिखते हैं. इनकी प्रिय कथाकारों की सूची देखकर यदि आप किसी आधार भूमि की खोज न कर पायें तो ढूंढकर सबके चित्र एक साथ रख कर देख लें. इनकी चयन प्रक्रिया समझने में देर नहीं लगेगी. □

नयी पत्रिकाएं

जो सब कहीं है

इन्द्रप्रस्थ भारती

वर्ष १ अंक २ अप्रैल-जून १९८८

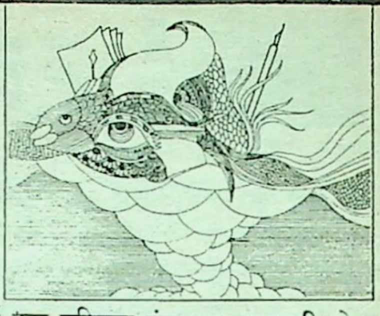

हिंदी अकादमी, दिल्ली की स्थापना हुए अभी कुछ ही वर्ष हुए हैं लेकिन तमाम विवादों और गुटों से परे यह जिस गति से हिंदी की सेवा में संलग्न है उसके पीछे निश्चित रूप से इस संस्था के सचिव, जाने-माने भाषाविद् डा. नारायणदत्त पालीवाल और हिंदी अकादमी के सलाहकार मंडल की एक सुनिश्चित दृष्टि-संपन्नता का योगदान रहा है. डा. नारायणदत्त पालीवाल संभवतः इकलौते ऐसे अधिकारी हैं जो एक लंबे समय से अधिकारी नहीं बल्कि भाषाविद् के रूप में जाने जाते रहे हैं. पर्वतीय भाषांचल के प्रति किए एक भाषावैज्ञानिक के रूप में उन्होंने जो योगदान दिया है वह चिरस्थायी और ऐतिहासिक महत्व रखता है.

हिंदी अकादमी की अब तक की महत्वपूर्ण कार्य और उपलब्धियां इस प्रकार रही हैं: साहित्यिक गोष्ठियां, सम्मेलन, परिचर्चाएं आयोजित करना, राष्ट्रीय कवि सम्मेलन आयोजित करना, साहित्यकारों का सम्मान, साहित्यिक कृति को पुरस्कृत करना, नवोदित, विश्व-विद्यालयीय छात्रों, स्कूली छात्रों को उनकी रचनात्मकता के लिए पुरस्कृत करना, दिल्ली के साहित्य अथवा लोक-साहित्य पर शोध कार्य के लिए छात्रवृत्तियां देना, साहित्यकारों, छात्रों, हिंदी सेवी संस्थाओं, लघु पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देना.

और अब इन तमाम उपलब्धियों से बढ़कर एक और महत्वपूर्ण काम हिंदी अकादमी ने अपने हाथों में लिया है—प्राचीन-अर्वाचीन, समकालीन और आगामी-रचनाकारों को एक खुला मंच देने का, जिस का नाम है—**इंद्रप्रस्थ भारती**, यानी हिंदी अकादमी से प्रकाशित साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका. सर्वश्री अक्षयकुमार जैन, कन्हैयालाल नंदन, गोपाल प्रसाद व्यास, डा. गोपाल शर्मा, विजयेंद्र स्नातक, विनोद कुमार मिश्र, विष्णु प्रभाकर के परामर्श और **डा. नारायणदत्त पालीवाल** के संपादन में शुरू हुई इस पत्रिका **इंद्रप्रस्थ भारती** के पहले ही अंक पर **ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता कवि-कथाकार डा. सच्चिदानंद राउतराय की राय कुछ इस प्रकार रही: मुझे विश्वास है कि आप अपने प्रयास में सफल होंगे. पत्रिका जिस रूप में प्रकाशित की गई है वह सराहनीय है. यह धीरे-धीरे एक ऐसी साहित्यिक पत्रिका का रूप ले लेगी जिसका अभाव रहा है. मुझे प्रसन्नता है कि अकादमी ने अपना दायित्व निभाया है और एक सुरुचिपूर्ण पठनीय एवं आकर्षक साहित्यिक पत्रिका प्रारंभ की है.**

और अब इस आकर्षक पत्रिका का दूसरा अंक इन दिनों बाजार में है, जिसमें चित्रा मुद्गल, यादवेंद्र शर्मा चंद्र, रमेश गुप्त, सुरेश उनियाल की ताजा कहानियां, अजित कुमार, दिविक रमेश, राजेंद्र उपाध्याय, धीरेंद्र अस्थाना की कविताएं, डा. प्रभाकर माचवे, प्रेम जनमेजय के व्यंग्य, कुछ समीक्षाएं, गुजराती, डोगरी, बल्गारियन रचनाओं के अनुवाद और, और भी बहुत कुछ है, जो पठनीय है.

मगर यहीं एक सवाल जन्म लेता है कि यह सब सामग्री तो वही है जो यदि 'इंद्रप्रस्थ भारती' में नहीं छपती तो कहीं और छप जाती. ऐसे में क्या यह ज्यादा अच्छा नहीं होता कि इंद्रप्रस्थ भारती उस सामग्री को छापने में पहल करती जो कहीं और नहीं छप सकती, क्योंकि वह न तो बिकाऊ होती है, न सहज पठनीय. मगर वह होती है चिरस्थायी महत्व की. डा. नारायणदत्त पालीवाल ने जो काम अपने लेखन के जरिए किया, यदि इस पत्रिका को भी उसी दिशा में एक मील के पत्थर की तरह स्थापित करते तो निश्चय ही इंद्रप्रस्थ भारती को भीड़ से अलग अपनी पहचान बनाने से कोई नहीं रोक पाता या रोक पायेगा. □

—कांता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी तो...

गोपाल शेखरन

कोई बीस वर्ष पुरानी बात है. उन दिनों मैं एक सरकारी संस्थान के अध्यक्ष-पद पर नियुक्त था. मैं अब स्वीकार करता हूं कि यह पद मुझे मेरी योग्यता के आधार पर नहीं मिला था. वास्तव में यह पद मुझे राजनीतिक पैंतरेबाजी के कारण मिला था.इस पद पर आसीन होते ही मेरे व्यक्तित्व में अभूतपूर्व परिवर्तन आया. मेरे चलने-फिरने और बातचीत करने का ढंग बदल गया. रास्ते में मिलने वाले लोगों के देखने के मेरे ढंग में न जाने कैसा परिवर्तन आया कि मैं लोगों को तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगा. मुझे स्वयं ऐसा लगता था कि मेरा व्यक्तित्व दुगना हो गया है. जब मैं अपने दरबार में बैठा होता तो मुझे लगता कि मुझ में कोई अदृश्य शक्ति भरी हुई है और मैं सबके लिए एक टेढ़ा और खतरनाक व्यक्ति हूं.

मुझसे मिलने-जुलने वालों का सारा दिन तांता बंधा रहता और मेरा अधिकांश समय बड़े-बड़े लोगों से मेल-मुलाकात में बीत जाता. संस्थान में मेरा काम अपनी पार्टी के लोगों को खुश रखना ही था. फिर मैंने अपने कर्तव्य का पालन किया, केवल अपनी पार्टी के लोगों का भला किया, जिससे सर्वत्र मेरी प्रशंसा होने लगी.

यह क्या मैं सबका उचित अनुचित काम कर रहा था. पर मेरा एक छोटा-सा काम नहीं हो पा रहा था. मेरे सगे भाई ने अपने ही प्रांत की एक परीक्षा पास की थी. प्रदेश के जनसंपर्क अधिकारी के पद के लिए कुछ स्थान रिक्त थे. लिखित परीक्षा में मेरे भाई ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया. पर इंटरव्यू में उसे बहुत पीछे छोड़ दिया गया और उसके बाद योग्यता सूची में उसका नंबर छठा हो गया.

यह शायद इसलिए किया गया, क्योंकि प्रदेश में जनसंपर्क अधिकारियों के केवल पांच स्थान रिक्त थे. अतः प्रथम पांच को नियुक्तिपत्र मिल चुके थे.

अब यदि एक स्थान और रिक्त घोषित कर दिया जाता... तो मेरे भाई का काम बन जाता. अब आप अनुमान लगा सकते हैं कि यह काम कितना छोटा और सरल था. पर सभी यही कहते थे कि काम कठिन है. मैंने भरपूर जोर लगाया. उन सबसे मिला जिनके मैंने बड़े-बड़े काम किये थे. मैंने अपने प्रभाव का पूरा प्रयोग किया. तब मुझे पता लगा कि मैं कितने पानी में था.

मेरा छोटा भाई प्रतिदिन सायंकाल आ जाता और पूछता, "भाई साहब काम बना या नहीं."

उस समय मेरा जी डूब मरने को करता, जब मैं कहता, "अभी नहीं हुआ."

दूसरे दिन मैं फिर हाथ-पांव मारने शुरू कर देता. दफतर में जो भी मेरे पास अपना काम कराने आते, उसे मैं पहले अपना काम बता देता. साथ में यह भी कह देता, "तुम मेरा काम कराओ, मैं आप का काम तुरंत कर दूंगा."

फिर मैं इधर से उधर और उधर से इधर टेलीफोन करता रहता और अपने पदाधिकार की दुहाई देता और काम न होने पर मुझे कितना दुःख होगा... इस ओर भी तनिक संकेत कर देता. जब कोई बड़ा व्यक्ति मुझे टेलीफोन करता तो मन होता कि उसे टेलीफोन पर ही गालियां सुना दूं.

फिर एक व्यक्ति का टेलीफोन आया, "भाई, आपका काम मुख्य मंत्री ने अपने अधिकार क्षेत्र में ले रखा है. सचिव महोदय से बात हो गई है, उन्होंने कहा है कि कोशिश कर के देखेंगे, शायद काम हो जाए."

यह सब टेलीफोन मुझे राजनीतिक हथकंडों की तरह लगे. मैं उस व्यक्ति को भी खरी-खोटी सुनाना चाहता था पर कुछ सोचकर चुप हो गया.

अंदर का वातावरण देखकर मैं स्तब्ध रह गया एक क्षण को तो मुझे लगा कि मैं किसी गलत जगह पर आ गया हूं... मैंने देखा कि एक मेज पर शराब के गिलास सजे पड़े थे और एक मर्द और दो युवतियां संदिग्ध स्थिति में बैठी थीं...

अब मुझे यह आभास होने लगा था कि लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए कितनी चालाकी और धूर्तता से काम लेते हैं. एक मैं था कि सब के काम किये जा रहा था... बिना किसी प्रतिफल की इच्छा के ... पर मेरा काम करवाने के लिए सबकी नानी मर जाती. मैं उन कई नेताओं से कह चुका था जो यह दावा करते थे कि मुख्य मंत्री उनकी जेब में है, पर कोई मेरे काम नहीं आ रहा था. ...

मैंने प्रदेश की राजधानी में भी टेलीफोन किया—

मुख्य मंत्री के एक विशेष सहयोगी को, जो मुझसे एक काम करा चुका था.

वह बोला, "मुख्य मंत्री महोदय बहुत सत्यनिष्ट और निष्पक्ष व्यक्ति है. किसी के प्रभाव में आकर अनुचित काम नहीं करते पर आप निश्चिंत रहें, मैं आपका काम अवश्य करा दूंगा. हर कीमत पर आपका काम करा दूंगा.'

उस सायंकाल को मैंने अपने भाई को उसके कुछ कहने से पहले ही कह दिया था, "भाई, एक विशेष व्यक्ति के जिम्मे काम लगा दिया है, अब हमारा काम एक सप्ताह में अवश्य हो जाएगा."

एक सप्ताह बाद मैंने फिर उस विशेष व्यक्तित्व को टेलीफोन किया तो उसने उत्तर दिया, "भाई, कोशिश हो रही है, मुख्य मंत्री दिल्ली गए हुए थे. एक सप्ताह और लग जाएगा."

मैंने पूछा, "मुख्यमंत्री किसका कहना अधिक मानते हैं? अन्य किसी को कहूं क्या?"

"मुख्यमंत्रीजी वैसे किसी की सिफारिश नहीं मानते. मगर मेरा कहना नहीं टालेंगे, हां, यदि उनका कोई पुराना साथी उनसे कह दे, तो वे काम कर देते हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने फिर टेलीफोन दौड़ाए पता करना चाहा कि मुख्य मंत्री का पुराना साथी कौन हो सकता है. किसी ने संकेत दिया कि वह ऐसा व्यक्ति भी हो सकता हैं जो मुख्य मंत्री जी के साथ जेल गया हो. फिर मैंने यह जानकारी भी प्राप्त की कि मुख्य मंत्री के जेल के साथी कौन-कौन थे...

तभी मुझे ध्यान आया कि मैं तो बेकार शून्य में भटक रहा था. मैं अपने सगे फूफाजी को भूल ही गया था जो कई बार जेल जा चुके थे. फूफाजी उन दिनों राज्य के महत्वपूर्ण सेवाश्रम के निर्देशक थे...

मैंने एकाध से फूफाजी के बारे में पूछताछ की तो मुझे बताया गया कि फूफाजी से बढ़ कर इस समय मुख्य मंत्री के निकट कोई नहीं है. वे मुख्य मंत्री के साथ जेल भी काट चुके हैं. मुख्य मंत्री पिछले वर्ष उन्हें राज्य का मंत्री भी बनाना चाहते थे, पर उन्होंने इंकार कर दिया था.

मैं अब निश्चिंत था कि अब मेरा काम हो जाएगा. मैं दूसरे दिन ही अपने दफ्तर की जीप लेकर सेवाश्रम चल पड़ा. उन्हें राज्य के मंत्री मंडल में शामिल करने का निमंत्रण मिला पर उन्होंने सदा इंकार कर दिया. सारी आयु गांवों के गरीबों और दलितों की सेवा करते रह गए. इस आयु में भी गांव-गांव भटक रहे हैं. अगर वे राजनीति में आ जाते तो या तो राज्य के मुख्य मंत्री होते या केंद्र में मंत्री होते.

इस प्रकार फूफाजी के बारे में सोचते-सोचते मैं सेवाश्रम पहुंच गया. सौभाग्य से फूफाजी किसी गांव में न होकर सेवाश्रम में ही थे. कुछ देर उनके दफ्तर में ठहरकर में उनके साथ उनके निवास स्थान गया जो आश्रम के कोने में था. फूफीजी का मुझे देखकर खुशी का ठिकाना न रहा और वह मुझे देख-देखकर मुस्कराए जा रही थी. फिर वे मेरे पास बैठ गई.

यह सुनकर फूफाजी गंभीर हो गए. एक-दो क्षण वे कुछ सोचने लगे, फिर ऐसे बोले जैसे मुझ से बात न कर अपने आपसे बात कर रहे हों—यह तो सिफारिश करने की बात है, क्या नैतिक दृष्टि से यह उचित होगा? आज तो नैतिक मूल्यों का अधःपतन हो रहा है—उसके मूल में यही बात है कि अयोग्य व्यक्ति सिफारिशों के सहारे ऊंची पदवियों पर बैठ गए हैं.

फूफाजी के ये शब्द सुनकर मेरे तन-बदन में आग लग गई. मैंने भावावेश में कहा, ''फूफाजी, जब लिखित परीक्षा में मोहन का स्थान द्वितीय और बिना सिफारिश इंटरव्यू के बाद छठा हो गया. इंटरव्यू में सिफारिशें चल गई. यदि आप मोहन की सिफारिश करते हैं तो आप योग्य व्यक्ति को समुचित स्थान दिलवाएंगे. आपका यह काम सिफारिश नहीं, बल्कि एक सामाजिक बुराई के विरुद्ध आपकी लड़ाई होगी.''

इस पर फूफाजी वैसे ही बोले जैसे मुझ से बात न कर सामने रखे मेज से बात कर रहे हों, ''तुम्हारी इस दलील का आधार केवल अटकल पच्चू और अनुमान-मात्र है. यह किसी साक्ष्य पर आधारित नहीं हो सकता है, उम्मीदवारों का चयन योग्यता के आधार पर हुआ हो.''

यह सुनकर मैंने फूफाजी की ओर देखना छोड़ दीवार की ओर देखना आरंभ कर दिया. कई क्षणों तक मैं नहीं बोला.

फिर मैंने कहा, ''फूफाजी, सभी कह रहे हैं कि इंटरव्यू में हेरा-फेरी हुई है. जिनको लेना था उनसे सरल प्रश्न किए गए, जिन को नहीं लेना था, उनसे कठिन से कठिन प्रश्न किए गए.''

मुझे लगा कि फूफाजी मेरी दलील से सहमत हो गए हैं. पर उन्होंने जो बोला उससे मेरा दिल टूट गया. मेरा उनसे विश्वास उठ गया. फिर वे बोले, ''भाई, यह काम मैं नहीं कर सकता, मैंने जीवन पर्यंत किसी की सिफारिश न करने की शपथ ली हुई है.''

पर यह तो सिफारिश नहीं पर योग्य व्यक्ति को समुचित स्थान दिलाने वाली बात है...

भाई मैंने आज से लगभग पच्चीस वर्ष पहले प्रदेश के उस महापुरुष के सामने शपथ ली थी जिसने देश की आजादी की लड़ाई में लाठियां खाकर अपनी जान न्यौछावर कर दी. उन्होंने हमें स्वयम् शपथ दिलाई थी कि हम किसी निजी स्वार्थ के लिये भाई भतीजावाद, स्वजन पक्षपात और भ्रष्टाचार का आश्रम नहीं लेंगे.

यह सुनकर मैं स्तब्ध रह गया. मुझे बड़ा दुःख हुआ. मैं कुछ न कह सका. जिस महापुरुष का नाम लिया गया था, उनके प्रति मेरे मन में श्रद्धा कूट-कूट कर भरी थी. उस महापुरुष ने सदा सत्यनिष्ठा का आश्रय लिया, सिद्धांतों पर डटे रहे और उन के बलिदान ने देश में एक नयी जागृति ला दी थी.

मैं जल्दी-जल्दी खाना खाकर उठ बैठा. और बिना फूफाजी और फूफीजी को प्रणाम किए वहां से निकल पड़ा. बाहर निकल कर मेरे मन में आया कि उस महापुरुष को कोसूं, उन्हें भला बुरा कहूं. पर उसी समय उस महापुरुष का चेहरा मेरे सामने घूमने लगा. मेरा मस्तक उनके सामने नतमस्तक हो गया, मुझे फूफाजी से तनिक भी शिकायत न रही. वास्तव में वे महापुरुष धन्य थे जिनके संसर्ग में मेरे फूफा जैसे आदमी आए और अभी तक वे सिद्धांतों पर डटे हैं, अपनी शपथ नहीं भूले, भ्रष्ट आचरण से दूर हैं और ग्राम सेवा में लगे हैं, वास्तव में महापुरुष प्रातःस्मरणीय थे.

ऐसे सोचते-सोचते मैं चौराहे पार करता गया और घर पहुंच गया. जब मैं घर पहुंचा तो दिन ढल चुका था.

पर संयोग ऐसा हुआ कि दूसरे दिन तो बहुत प्रभावशाली

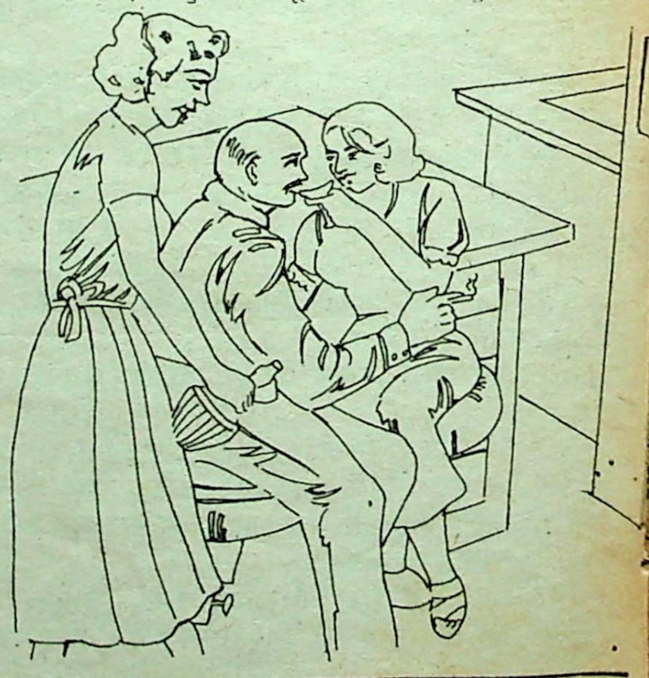

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति, अपना काम कराने मेरे दफ्तर में आये. उनमें एक मेरा पुराना मित्र था, जिसने मुझे इस संस्थान में नियुक्त कराने में बड़ी भूमिका निभाई थी. उसने दूसरे व्यक्ति का मुझसे इस प्रकार परिचय कराया, ''इनसे मिलिए यह हैं, चंपतरायजी, आप जानते हैं कि यह किस के भतीजे हैं.''

मैंने पूछा, ''किसके.''

''यह हमारे प्रदेश के महान सपूत....के भतीजे हैं.''

मैंने उस महापुरुष का नाम सुनकर अपने चेहरे पर अपना चश्मा लगा लिया जिससे वे दोनों मेरे चेहरे पर छाए वास्तविक भावों को न जान पायें. चश्मा लगाकर मैंने कहा, ''ओह, बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर. हमारा सौभाग्य है जो इतने बड़े महापुरुष के भतीजे के दर्शन हुए.''

मैं मन ही मन प्रसन्न था. मैं जानता था कि चंपतरायजी मेरी सहायता कर सकते थे. मैंने चंपतराय का टेलीफोन नंबर लिख लिया और उनका काम करने का वचन दे दिया.

सायंकाल छुट्टी होने पर मैंने दफ्तर की जीप ली और चंपत राय के यहां पहुंच गया. उनका दफ्तर बंद हो चुका था, पर चंपतरायजी वहीं थे. चंपतरायजी ने स्वयम् उठकर मेरा स्वागत किया. मुझे अपने यहां देखकर वे गद्गद् हो गए. वे मुझे देखकर उछल पड़े.

अंदर का वातावरण देखकर मैं स्तब्ध रह गया. एक क्षण तो मुझे ऐसे लगा कि मैं किसी गलत जगह पर आ गया हूं. उसी समय चंपतराय मुझे देखकर उछल पड़े और मेरा स्वागत करते हुये बोले, ''धन्यभाग्य, हमारे जो इतने अच्छे अवसर पर इतने बड़े आदमी यहां आए हैं, हमारा दफ्तर आज पवित्र हो गया.''

मैंने देखा, एक मेज पर शराब के ग्लास सजे पड़े थे और मेज पर एक मर्द और दो युवतियां संदिग्ध स्थिति में बैठी थीं.

मैं उस मेज के पास वाले सोफे पर बैठ गया. चंपतरायजी बोलें, ''आज हमारे दफ्तर को कैसे पवित्र किया.''

''भाई एक काम आ पड़ा है, शायद केवल आप ही उसे करा सकते हैं!''फिर मैंने वही रटी-रटाई कहानी सुनाई जो कइयों को पहले सुना चुका था.

सारी कहानी सुनने के बाद चंपत राय बोले, ''यह कौन-सा कठिन काम है.'' फिर उन्होंने टेलीफोन का रिसीवर उठाया और एक नंबर मिला कर बोले, ''भाई तुम मुख्य मंत्री के विशेष कृपा पात्र हो, इसलिए काम मैं तुम्हें सौंप दूं. न हुआ तो मैं शहर में रहने लायक नहीं रहूंगा.''

फिर कुछ क्षणों तक चंपतरायजी पूर्ण संतुष्ट भाव से टेलीफोन सुनते रहे, स्पष्ट लग रहा था कि काम के होने में कोई संदेह नहीं था. तभी चंपतराय बार-बार हां-हां कह रहे थे.

फिर वे मुझसे बोले, ''हो गया आपका काम.''

फिर उन्होंने दूसरा टेलीफोन मिलाया और भूमिका बांधने के बाद बोले, ''भाई, एक छोटा-सा काम है, मुख्य मंत्री से केवल एक नंबर बढ़वाना है, किसी कीमत पर यह काम होना चाहिए, समझे किसी कीमत पर.''

यह कहकर उन्होंने फिर टेलीफोन पटक दिया और बोले, ''आपका काम कल ही हो जाएगा. मुख्य मंत्री जो जानते हैं कि मैं किसका भतीजा हूं, फिर उनके दो विशेष सहयोगियों को साथ ले जाऊंगा, हाथ पकड़कर करा लूंगा आपका काम.''

फिर इसी जोश में उन्होंने फिर रिसीवर उठाया और नंबर मिला कर बोले, ''भाई, पहचाना मुझे, मैं अमुक महापुरुष का भतीजा बोल रहा हूं. एक छोटी-सी सिफारिश करानी है, मुख्य मंत्री से.''

कुछ सुनने के बाद वे बोले, ''वाह-वाह, नेता हो तो आप जैसा,'' फिर उन्होंने मेरे भाई का सारा विवरण उन्हें लिखवा दिया.

''वाह, हो जाएगा, धन्यवाद, धन्यवाद, हां, हां, रविवार की पार्टी यहीं होगी, सारा प्रबंध होगा,'' अभी आ जाओ, अभी हो सकता है, मैंने बड़ा भारी प्रबंध कर रखा है.''

फिर टेलीफोन पटककर बोले, ''हो गया साहब आपका काम.'' फिर उन्होंने इशारा किया. दोनों युवतियों ने जाम भरने आरंभ कर दिए. उन दोनों युवतियों के हावभावों को देखकर मुझे मानसिक क्लेश हुआ. मुझे अपनी आंखों पर और जो कुछ मैं देख रहा था, पर विश्वास नहीं हो रहा था. मेरा मन बार-बार यह क्या हो रहा है, यह क्या हो रहा है, कह रहा था.

दोनों युवतियां मेरी ओर अजीब तरह से देख रही थीं. उन दोनों के दृष्टिपात्र मुझ पर एक भारी प्रहार और आघात के समान लग रहे थे. मुझे ऐसे लग रहा था कि मेरे सामने एक ऐतिहासिक घटना घट रही है, चंपतराय और मुझ जैसे लोगों को पूर्ण आजादी मिल चुकी है.'' हमारी लोहे की हथकड़ियां कट गई हैं, पर उनके स्थान पर सोने की हथकड़ियां पहन ली हैं.

जो कुछ मैं देख रहा था, मेरे ऊपर पाशविक लाठियों के प्रहार के समान था, फिर भी मैं जिंदा खड़ा था.

तनिक भी विरोध का भाव मेरे मन में नहीं था,

दोनों युवतियों ने पुनः जाम उठाकर मुझे निमंत्रण दिया तो मैं भावावेश में आ गया और एक विक्षिप्त व्यक्ति की तरह चिल्ला उठा, ''मैं नहीं पीता, मैं नहीं पीता.''

मेरे इस असामान्य व्यवहार को देखकर चंपत राय ने भी नाराजगी और आक्रोश के लहजे में मुझसे कहा, ''पीते नहीं हो, तभी तो एक छोटे से काम के लिए मेरे पास आए हो, अगर तुम नित ऐसी महफिल जमाते तो कभी इस छोटे से काम के लिए मेरे पास न आते.'' □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खबर

ज्योति जैन

रीता अपने आंगन में खड़ी प्रकृति की अद्‌भुत छटा का रसपान कर रही थी. उसे प्रकृति की लीला अनुपम व अद्‌भुत नजर आ रही थी. तभी अंदर से आवाज आयी—जिसने उसकी तन्मयता को तोड़ दिया. वह आवाज की ओर मुंह करके देखने लगी. उसकी प्यारी भाभी ने उसके हाथ में चाय का प्याला व दैनिक अखबार सौंप दिया. वह भाभी की ओर कृतज्ञता पूर्वक देखने लगी.फिर उसने अखबार के पृष्ठ पर नजर दौड़ाई. संपूर्ण देश के समाचार देनेवाले समाचार पत्र में उसकी नजर एक खबर पर अटक गयी—'उदयपुर से बारात बैरंग वापस.' खबर पढ़ते ही वह अपनी भाभी की ओर अपलक निहारती हुई अतीत में खो गयी...

शीला आंटी उन दिनों कितनी खुश थीं जब उनकी प्यारी लाड़ली इकलौती बिटिया अपने पिया के घर जाने की तैयारी कर रही थी.

रश्मि दुल्हन के रूप में बदल रही थी. सारे घर में चहल-पहल मची हुई थी. आंटी के रिश्तेदार और संबंधी सभी उपस्थित थे. रीता भी अपने भाई रंजन और पिताजी के साथ वहीं पर थी. पिताजी अच्छे पड़ोसी होने का कर्तव्य निभाने में व्यस्त थे. रंजन भी इंतजामात में जुटा था और स्वयं वह रश्मि को सजाने-संवारने में जुटी हुई थी.

''बारात आ गयी...,'' ''बारात आ गयी...'' चारों ओर शोर-सा छा गया था और सभी इधर-उधर दौड़ने लगे थे. चारों तरफ खुशियां मनाई जाने लगी थीं और रूप रश्मि दुल्हन के भेष में परियों की रानी बनी खुशियों के साथ आंखों में पानी भरे सोच रही थी कि आखिर वह आज अपनों से अलग होकर परायों के देश में जायेगी. और सभी परायों को अपना बनायेगी.....

फेरे का समय आने पर दुल्हन को लाकर बिठा दिया गया. जब दूल्हे को लाने के लिये कहा गया तो दूल्हे के पिताजी ने आंटी से बीस हजार रुपये लाने को कहा. आंटी सुनकर दंग रह गयीं! वे सोच रही थीं कि आखिर उन्होंने कब रुपये देने को कहा था? लेकिन दूल्हे के पिताजी जहरीली मुस्कान लिये हुये अपनी बात दोहराते रहे. उन्होंने ऐलान कर दिया कि यदि रुपये नहीं मिले तो बारात वापस ले जायेंगे.

आंटी के काटो तो खून नहीं! वहां मौजूद सभी लोगों ने दूल्हे के पिता को बहुत समझाया, कि वह विधवा बेचारी इतनी बड़ी रकम नहीं दे सकती. वह तो अपना ही गुजारा बड़ी कठिनाई के बाद कर पाती है. जिस पर वह अपनी बेटी के विवाह के लिये पहले ही सारे जेवर बेच चुकी है. आखिर अब कहां से लायेंगी इतना रुपया.

आंटी भी बहुत गिड़गिड़ायीं और दूल्हे के पिता को बहुत समझाया-बुझाया लेकिन सब व्यर्थ. बाराती भी दूल्हे के पिता का ही समर्थन कर रहे थे. आंटी रोये जा रही थीं और बार-बार याचना कर रही थीं कि यह उनकी इज्जत और बिटिया की जिंदगी का सवाल है, लेकिन उनकी याचना का उन लोगों पर कोई असर नहीं पड़ रहा था.

सारी खुशियां अब तक गम में बदल चुकी थीं. रश्मि तो मानो जड़ हो गयी थीं. उसके चेहरे की रौनक चली गयी.वह लगभग बेहोश-सी होती जा रही थी. उसकी आंखें मानो सावन की घटा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवांकुर

देश के तमाम महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के जरिये आज कैसी प्रतिभाएं सामने आ रही हैं, लेखन के प्रति उनमें कैसा लगाव है...और रचनात्मकता के संदर्भ में वे क्या सोच रहे हैं. इस स्तंभ के अंतर्गत ऐसी नयी प्रतिभाओं की तलाश करते हुए हर माह एक उभरते रचनाकार की कहानी प्रकाशित की जायेगी. रचना भेजते समय यह न भूलें कि अपने विभागाध्यक्ष अथवा संस्थान के प्रधान का इस आशय का प्रमाण पत्र भेजना अनिवार्य है रचनाकार संस्थान में अध्ययनरत है और 'सारिका कहानी मंच' का सदस्य है.

यदि आपकी संस्था में 'सारिका कहानी मंच' नहीं है और आप विधिवत इसका गठन करना चाहते हैं तो 'नवांकुर' स्तंभ के कूपन की कटिंग लिफाफे पर पते के साथ चिपका कर संपादक से पत्र व्यवहार करें? रचनाएं भेजते समय भी कूपन का प्रयोग अनिवार्य है.

बन गयी थीं. वह अपने आप को कोस रही थी; कि आखिर वह लड़की बनकर इस दुनिया में क्यों आयी? उसकी आंखों के सामने दहेज देने में असमर्थ अपनी मां का चेहरा और वे सब किस्से आने लगे जो उसने पढ़े थे.

तभी उसे रीता की जानी-पहचानी आवाज सुनाई दी.

रीता ने अपने भाई रंजन को बुलाकर जाने क्या कहा और समझाया कि वह अपनी बहिन के कहे अनुसार न चाहते हुये भी उस पर अमल करने के लिये तैयार हो गया. वह जानता था कि वह अभी तक इस लायक नहीं है... लेकिन वह अपनी हठी बहन के पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह चला गया. रीता भी आखिर मजबूर थी. वह भी तो एक लड़की ही है और उसे यह कदम उठाना लाजिमी लग रहा था.

रश्मि को दुल्हन बनाकर मंडप में लाया गया. फेरे पूरे हुये. किसी रिश्तेदार ने कन्यादान भी कर दिया. आंटी और रीता के पिता अभी तक लड़के के पिता से मिन्नतें कर रहे थे. रीता जब दूल्हा-दुल्हन को बाहर ले गयी और आंटी व पिताजी से आशीर्वाद देने को कहा तो लड़के के लालची पिता उसे फटी-फटी आंखों से देखते रह गये!

...और तब भी इस शहर से बारात वापस हुई थी. तब भी बिन दुल्हन दूल्हा वापस हुआ था. लेकिन तब यह खबर इतनी भर नहीं थी...

रीता मन ही मन चाह रही थी—काश, इस बार भी खबर उतनी ही बड़ी होती! □

53बी, बसुंधरा स्टेट बैंक कालोनी
जहांगीराबाद, भोपाल (म.प्र.)

जासूस ऊर्सला

सन् 1932.

उन दिनों ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में जर्मन-यहूदी प्रोफेसर कूंजिसवी अर्थशास्त्र पढ़ाता था. ऊर्सला कूंजिसवी उसी की बेटी थी. उसकी शादी रूडोल्फ हैमबर्गर से हुई थी जो कि रूसी एजेंट था. सबसे पहले इन दोनों ने संघाई में अपना मोहरा बढ़ाया. सन् 1935 में रूडोल्फ पकड़ा गया पर ऊर्सला कानून की अंगुलियों से फिसलती हुई स्विटजरलैंड भाग गयी. अपनी दोनों बेटियों के साथ वह फिर मांट्यक्स में रहने लगी. ऊर्सला ने फिर से तानाबाना शुरू कर दिया. फिर जेनीवा में उसे एक दिन रूसी जासूस चक्र 'लूसी' का रेडियो मॉनिटर अलेकजेंडर फुट मिला था. ऊर्सला ने उसे अपने गिरोह में ले लिया, फुट ने सबसे पहले ऊर्सला बहन बर्गिट से संपर्क किया जो उन दिनों उत्तरीय लंदन में रह रही थी.

सन् 1940 में रूसी जासूसी संस्था के.जी.बी. ने ऊर्सला का तबादला इंग्लैंड कर दिया. ऊर्सला ने ऑक्सफोर्ड में अड्डा जमा लिया. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वह जासूसी-रेडियो पर महत्वपूर्ण रहस्य-पूर्ण खबरें भेजती रही. उसके पिता प्रोफेसर कूंजिसकी ने बड़ी मदद की क्योंकि उनका प्रवर अधिकारियों से काफी मेल मिलाप भी था.

फुट ने ऊर्सला को एक आकर्षक साम्यवादी जासूस कहा है.

और जब फुट अगस्त 1947 में अपने घर इंग्लैंड लौटा था तब उसी वर्ष पुलिस ने चिपिंग नाटर्न नामक गांव में रह रही ऊर्सला से कुछ पूछताछ की थी. उन दिनों ऊर्सला अपने दूसरे पति लिओन ब्युटर्न के साथ रह रही थी. पुलिस ने कार्यवाही का बहाना यह बनाया था कि ऊर्सला ने पहले पति हैंबर्गर के रहते हुए दूसरा नाजायज विवाह कर लिया है. उसने इस आरोप का खंडन किया पर यह भी माना कि इससे पहले वह एक रूसी जासूस रह चुकी है, पर उसने यह काम बहुत पहले छोड़ दिया है., पता नहीं क्यों पुलिस ने कार्वाही में ढील डाल दी और बाद में उन्हें इस बात का पछतावा भी हुआ खासतौर से जबकि 'एटम जासूस' क्लॉज फरा ने अमरीका से लौटकर ऊर्सला को ही अपनी रिपोर्ट दी थी. फरा एटम बम की खबरें इक्ट्ठा करने में जुटा था. वह दो बार अमरीका भागा था उसे 1941 और 1943 में ऊर्सला ही ने न्यूयार्क में स्थित हैरी गोल्ड के पास भिजवाया था.

ऊर्सला ने कच्ची गोलियों नहीं खेल रखी थीं. उसने इंग्लैंड में कई ब्रिटिश जासूसों को अपनी मुठ्ठी में रख छोड़ा था. यहां तक कि यह बात भी विख्यात हो चुकी थी कि ऊर्सला ने ब्रिटिश एम.आई. पांच नामक सर्वश्रेष्ठ जासूसी संस्था के प्रमुख अधिकारी सर राजट हालिस को भी फोड़ रखा था पर उसने साफ इंकार कर दिया कि वह ऊर्सला से कभी मिला भी है.

लेकिन जिस दिन ब्रिटिश एम.आई. पांच के अफसर ऊर्सला के यहां पूछताछ को पहुंचे उसके दूसरे ही दिन ऊर्सला अपने पति ब्युटर्न के साथ पूर्वीय बर्लिन चली गयी और फिर वे दोनों कभी नहीं लौटे. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयपुर की नूरजहां-रस कपूर

बाला दुबे

सन् 1803. कछवाहों का गढ़-जयपुर. वे मैदान में विकराल भैरव थे तो रनिवास में कामदेव. रघुकुल के इन दावेदारों के यहां एक 'रघुकुल रीत' यह भी थी कि उन्होंने भी एक छोटा-सा इंद्र का अखाड़ा अपने यहां बना रखा था.

जब महाराजा प्रतापसिंह गद्दी पर थे तो उनके बारह रानियां थीं पर उन पर छाई रही सिर्फ दीदार बख्श भगतन ही. वैसे और भी छोटे-छोटे चांद उनके महल में चकमते-दमकते-रंगराय, कस्तूरी राय, गतिसरस, गतिरंग राय, श्याम तरंग और रस प्रवीण. पर महाराजा प्रतापसिंह दीदार बख्श की चांदनी में ही नहाया किये और दीदार बख्श की तूती पूरे जयपुर में गूंजी.

महाराजा प्रताप सिंह के बाद उनका जवां मर्द बेटा गद्दी पर बैठा-जगतसिंह. जगत सिंह ने भी जयपुर में पलती हुई 'रघुकुल रीत' को निभाया. वैसे महाराजा जगत सिंह भी प्रणय-क्षेत्र में अपने पिता से उन्नीस नहीं बैठा. उसने भी तेरह रानियां और 18 खवास पातुरें रखी. उसके गले की माला की मोती थी—रूप रस, जैतराम, चंदन चर्चा, केसर चर्चा, कमलबदन, सरसराय, निरत विलास, गतिसरस, सुंदर विलास, गोगा, जैठी, सुख समाज, प्रभाती, प्रवीण राय, कुनणीभगतन, रसकपूर, भगतण, चंदा बीबी, ग्यानी पड़दायत और मगन राय. पर उसके प्रणय-अकाश में भी एक ही चंद्रमा दमका-रसकपूर. रसकपूर भगतण-रामावत साधुओं की जाति की रूप-शिखा. जोधपुर के महाराजा विजयसिंह के काल में रामावत साधुओं की बेटियों ने गाने-नाचने का धंधा शुरू किया था. वैसे तो वे वैष्णव थे और उनके इष्टदेव हनुमान थे. सारंगी और तबले की तान पर उनकी रूपवान बेटियां नृत्य करती और फिर देह-व्यापार भी करने लगीं. सब कुछ करने पर भी वे खाने-पीने में पुरानी ही थीं.—मांस, मदिरा, यहां तक कि प्याज लहसुन और गाजर तक को नहीं छूती. ना जाने प्रकृति की अपार कृपा उन पर कैसे हुई कि उनके कुल में अप्सरा ही जन्म लेतीं. रस कपूर भी यौवन रस में डूबी हुई थी. संगमरमर जैसा रंग, पान से रचे जैसे ओंठ, चलती फिरती मछली जैसी. जब नाचती तो सैकड़ों विश्वामित्र एक साथ आह भरते और टीपदार आवाज में सुर भरती तो कानों में मिश्री भर जाती.

जगतसिंह तो उसके पहले ही वार में घायल हो गये थे और रस कपूर उनके ऊपर ऐसी छाई जैसे मरु भूमि में भूले भटके सावन के बादल छा जाते हैं. यहां रूप की आराधना के अतिरिक्त जगत सिंह ने विद्या और कला की भी परवरिश की. संगीत और नृत्य पर उसकी निजी कृपा बरसती रही. महाकवि पद्माकर भी जगतसिंह के दरबार में पुजे और काफी समय तक वहीं रहे. पदमाकर ही ने तो जगतसिंह से कहा था—

'जय जयपुर सुरपुर सहारा
जो जाहिर चहूं और

उसके पिता सवाई प्रतापसिंह ने बड़े परिश्रम से 'पोथी खाना' बनाया था जिसमें उनके रचे हुए बीस से अधिक ग्रंथ मौजूद थे. सन् 1778 में चारों वेदों की संपूर्ण प्रतियां एक फ्रांसीसी प्रतापसिंह के पोथी खाने से ही ले गया था. इसी फ्रांसीसी विद्वान लेफ्टिनेंट कर्नल एंटोनियों लुई हेनरी पोलियर ने सन् 1786 में अपना संग्रह ब्रिटिश म्यूजियम को दे डाला था.

महाराजा जगत सिंह ने पिता की विरासत में वृद्धि की. न जाने कहां कहां से पुस्तकें जुटायीं और पोथी खाना लबालब भर गया. और एक दिन पीनक में इसी जगतसिंह ने पुस्तकालय का आधा हिस्सा रस कपूर को दे डाला.

रस कपूर ने अपने रूप का शिकंजा कसना शुरू कर दिया था. जगतसिंह उसके हरेक इशारे पर नाचने लगा. वह दरबार में बैठती. जो रानियों को नसीब नहीं हुआ वह रुतबा उसने पाया. जगतसिंह इस कदर उस पर लट्टू हुआ कि उसने आधा आमेर ही रस कपूर के नाम कर दिया. उसे वह 'आधे आमेर की रानी' कहता था पर जयपुर के निवासी उसे 'जयपुर की नूरजहां' कहते थे. निःसंदेह वह, राजस्थान की धरती पर जन्मी, दूसरी नूरजहां ही थी. जब जगतसिंह हाथी पर बैठकर जयपुर की सड़कों से गुजरता तो रस कपूर उसके बगल में हौदे में बैठती. भाग्य की अपार कृपा पाकर रस कपूर को फिर अभिमान तो होना ही था. उसी के कहने पर उसके पालतू प्रेमी जगतसिंह ने अपने प्रधानमंत्री मिश्र शिवनारायण को आदेश दिये थे 'जब भी आप रस कपूर को सम्बोधित करेंगे तो उन्हें 'बाई जी' कह कर बोलेंगे.' उस दिन प्रधानमंत्री के दिल पर सियाह काला सांप लोटा था. वह अंदर ही अन्दर मुस्कराया 'घमंड ही तो सर्वनाश का सूचक होता है, शिव नारायण. रावण जैसा पराक्रमी भी घमंड में ही मारा गया. इसके घमंड को और पानी दो. नाश का पेड़ उगाओ, नाश होने ही वाला है.' और फिर एक और शिगूफा खिला. राजपूत सरदारों और जागीदारों को भी आदेश मिला, "रस कपूर को वही आदर दिया जायेगा जो आप लोग रानियों को देते हैं." तब खलबली मची थी. मूंछों पर ताव देने वाले सरदारों के हिये में फिर ज्वालामुखी फूटी थी. और फिर जगतसिंह जब किसी दरबार या महफिल में जाता तो बगैर रसकपूर के जाता भी तो न था. पग पग पर सरदारों को मन मसोस कर खून का घूंट पीना पड़ता था. फिर उन्हीं सरदारों के बीच एक दमदार सरदार उठा दूणी का राव-चांद सिंह. और एक दिन उसने एक, दिन खुलकर सरदारों को भड़काया. रस कपूर की अवहेलना की. अब जगतसिंह को पता चला कि उसने चिढ़कर राव चांद सिंह पर उसकी जागीर की चार साल की आय का जुर्माना कर दिया जो लगभग दो लाख रुपया होता था. जगतसिंह ने तभी बर्रों के छत्ते में हाथ डाल दिया था. दरबार में षडयंत्र सुलगने लगा पर अभी सही बेला नहीं आ पायी थी. राव चांद सिंह और मंत्री दीना राम बहुरा ने मिलकर जाल बिछाना शुरू कर दिया और तभी जिस समय का उन्हें इन्तजार था आ पहुंचा. राज्य की हालत भी उस समय पतली थी. माचेड़ी के राव ने तलवार की नोंक पर जयपुर का टुकड़ा भेद कर अपने लिये स्वतंत्र रियासत तराश ली थी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलवर. पिता के काल में लड़ी तुंगा की लड़ाई और बार-बार मराठों की चौथ की घौंस ने भी जय मंदिर का खजाना रीता ही कर डाला था. और तभी रसिक जगतसिंह के सामने किसी खवास के उदयपुर की सुंदरी राजकुमारी कृष्णाकुमारी का रूप बखान दिया. तब जगतसिंह कृष्णा कुमारी को पाने को बेचैन हो उठा था. और उसने उदयपुर के राना भीमसिंह को सुपाड़ी और पान भिजवा दिया. उधर जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने भी कृष्णा कुमारी का हाथ थामने की जिद ठान रखी थी. कृष्णा कुमारी की सगाई जोधपुर के महाराजा मीरसिंह से हो चुकी थी पर अभाग्यवश वह विवाह से पहले ही मर गया. तब मानसिंह ने दावा किया कि कृष्णा कुमारी को जोधपुर में ही सुसराल बनानी पड़ेगी—मीरसिंह गया तो क्या उसकी जगह जोधपुर का महाराजा मानसिंह जो आ गया है. फिर सिंधिया और हिमायतियों का जोर शुरू हुआ.

सिंधियां और होल्कर ने जोधपुर का साथ दिया तो जयपुर के जगतसिंह ने अंग्रेज सेनापति लार्ड लेक का दामन पकड़ा. तीन हजार योद्धाओं के साथ चला था जगतसिंह और उसे रोकने चल पड़ा था जोधपुर का मानसिंह. फिर युद्ध रंग पर आया था. मराठी सहायता रखीदी जाने लगी और फिर अमीर खां पिंडारी भी तो अपने लुटेरे पिंडारियों को लेकर मधु-मक्खियों की तरह भनभना रहा था. किसी ने ठीक ही कहा है कि जब दो सांड लड़ते हैं तो खेत का ही नुकसान होता है. जयपुर और जोधपुर के इन सांडों ने राजस्थान की धरती खरोंच डाली. राज्य कोश के खजाना तेजी से खिसकने लगा था. मराठों, अंग्रेजों आर पिंडारियों ने अपनी दुकानें सजा ली थीं—सोना चांदी दो और हमारी सेना की मदद लो. और फिर उस दुष्ट अमीर खां पिंडारी ही ने तो महाराणा भीमसिंह को सलाह दी थी—'कृष्णा कुमारी के हाथ में जहर का प्याला दे दो. बस यही एक चारा है.''

और गुलाब सी महकती कृष्णा कुमारी जहर पीकर सो गयी. फिर जोधपुर और जयपुर के दूल्हे सर लटकाये हुये वापस आये थे. कृष्णाकुमारी को पाने की होड़ बड़ी मंहगी पड़ी. क्योंकि तभी तो उस बेईमान अमीर खां ने थके मांदे इन राजपूतों पर हमला किया और दोनों को ही जी भर कर लूटा.

कृष्णाकुमारी-कांड ही रस कपूर के दुर्भाग्य का कारण बना. जयपुर के सरदार लोग थोथी राजपूती जिद के कारण टूट चुके थे. और जब वे मुंह लटकाये हुए जयपुर आये तब उन्हें घरेलू शत्रु रस कपूर का खयाल उठ आया. तब तक तो रानियां भी उनके साथ षडयंत्र में मिल चुकी थी. एक बार फिर आगे भड़की. अबकी बार तो और भी खतरनाक बन गई थी लपटें. सरदारों और मंत्रियों वे अबकी बार और ही बीड़ा उठाया था—'जगतसिंह को गद्दी से उतारो.'

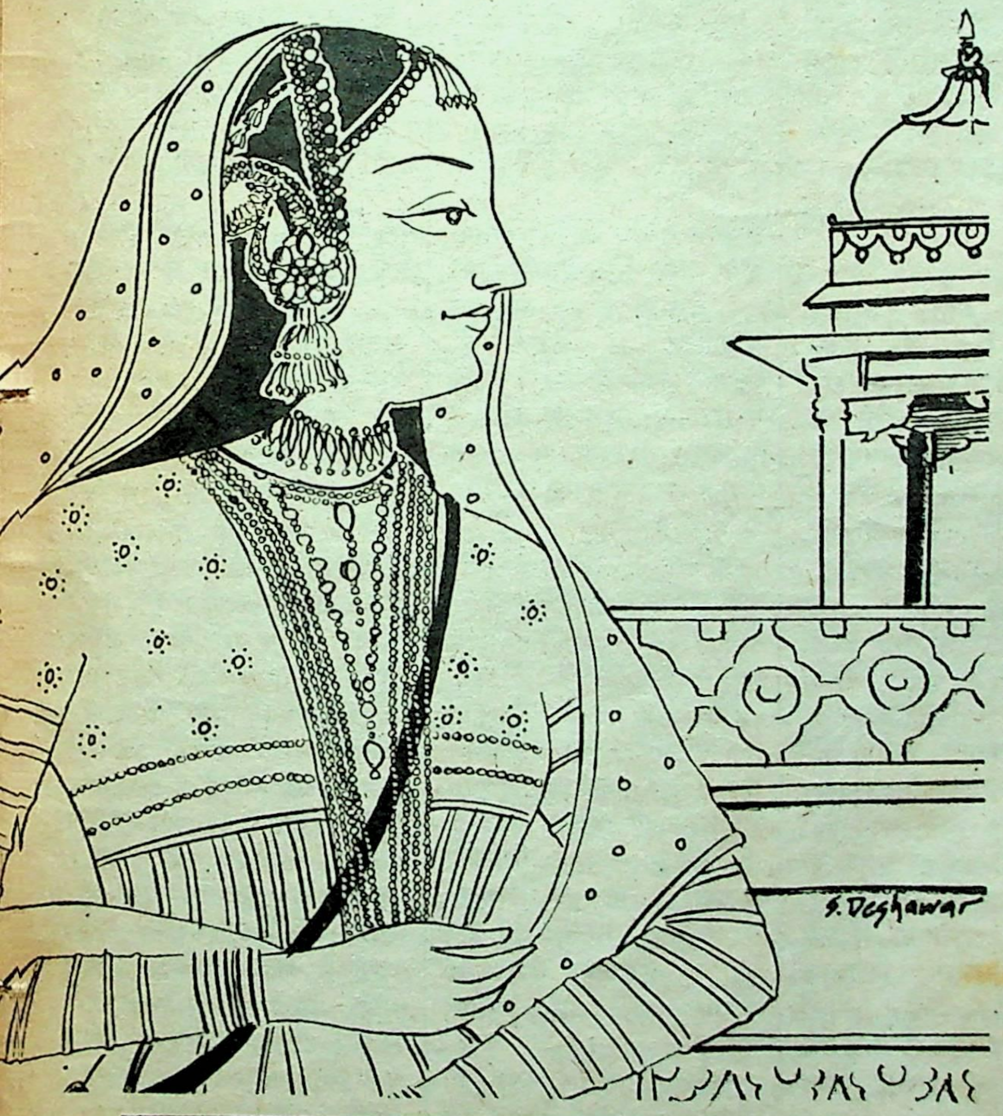

जगतसिंह भाग्य के दोराहे पर असहाय सा खड़ा था. और तभी उसके नमक हलाल सलाहकारों ने उससे कहा 'सिर्फ एक घर बचा है महाराज और एक ही मोहरा. मोहरा तो पिट जायेगा पर शह बच जायेगी.'

और उन्होंने इस मोहरे को उसके घर से उठाया और दूसरे घर में बैठा दिया. हां-रस कपूर को ड्योढ़ी के 'रस विलास' से उठाकर नाहरगढ़ के किले में बैठा दिया. इस काम में दूणी के राव चांद सिंह और मंत्री दीनाराम बहुरा का मुख्य प्रयास था. उन्होंने जगतसिंह के कान भरे थे— 'रस कपूर केवल आप की ही नहीं है, और भी कृपा-मात्र हैं उसके. जगतसिंह पर प्यार उढ़ेलनेवाली रस कपूर को दुश्चरित्र करार करके ही नाहरगढ़ के किले में बंदी बनाया था.

जयपुर राज्य पर अंकुश तानने वाली, आधे आमेर की रानी', जयपुर की नूरजहां का अंत भी दुखद हुआ—जहांगीर की नूरजहां जैसा. जगतसिंह फिर उससे भी मिलने तक नहीं गया और नाहरगढ़ के उस किले में ही रस कपूर घुट घुट कर मर गयी. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी पौद

आप अच्छा साहित्य पढ़ते हैं और स्वयं लेखक बनना चाहते हैं... पर कहीं कुछ ऐसा अवरोध आ जाता है कि आप लिख नहीं पाते. इस स्तंभ के अंतर्गत, ऐसे अनुभव प्रकाशित किये जायेंगे जो 'नयी पौद' की दिक्कतों को सामने रखें. आप क्या और क्यों लिखना चाहते हैं... स्पष्ट करते हुए अपनी कठिनाइयां चित्र सहित 300 शब्दों में लिख भेजिए. लिफाफे पर यह कूपन चिपकाना न भूलें.

'नयी पौद' स्तंभ
सारिका
10 दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

बावजूद इसके

कलावंतीसिंह सुमन, रांची

पहले तो यह मालूम नहीं था कि जो कुछ लिख रही हूं वह साहित्य है. आत्म-संतुष्टि के लिये लिखती थी. जिन आस्थाओं को टूटते देख टूटन का दर्द, बेचैनी और उससे उपजा आक्रोश रचनाओं में उतर आता था वे आस्थाएं साहित्यिक क्षेत्र में व्याप्त अव्यवस्था को देखकर और टूटीं.

वादों की राजनीति भी अब मिटनी चाहिये. मैं कोई वाद नहीं जानती, न ही किसी कला या उसके सिद्धांत को पहचानती हूं. मेरी कसौटी मेरी आत्मा होती है वह जिसे परखती है, स्वीकार करती है, उसे अपने में आत्मसात कर लेती है, उसे सींचती है. धीरे-धीरे वह किंतु विस्तार पाता है और तब कागज पर उतर जाता है अपना आकार लेकर. रचनाप्रक्रिया की वास्तविक ईमानदारी यही है.

इस सबके बावजूद नयी पौद यह जानती है कि जो सचमुच प्रतिभाशाली है वह अपने तेज से समस्त कालिमा को पछाड़कर दिवाकर-सा आलोकित होगा ही. विसंगतियों के प्रति अब उसके पास रचनात्मक रोष के साथ एक सकारात्मक आस्था भी है.

कल हमारा है

अभयकुमार गोयल, औरंगाबाद

तुलसी का मानस तब पढ़ना शुरू कर दिया जब केवल पढ़ना पढ़ना ही सीखा था. शुरू में अर्थ नहीं समझता था, धीरे-धीरे समझने लगा था. मानस ने मुझमें साहित्य के अध्ययन की रुचि पैदा की. बाद में बहुत कुछ पढ़ा भी. पिछले कुछ वर्षों में हमारे नैतिक मूल्यों में तेजी से जो ह्रास हुआ है उससे लिखने छटपटाहट महसूस हुई.

क्या लिखना चाहता हूं? वही जो हमारे चारों तरफ घट रहा है ताकि आने वाली पीढ़ी के लिए वह एक दस्तावेज की तरह काम आये. क्यों लिखना चाहता हूं? शायद मैं भी नहीं जानता, शायद लिखकर हल्का महसूस करता हूं. माना आज हमारा नहीं है, पर हमें विश्वास है कल हमारा होगा ही.

प्रारंभ कहां से करूं?

नरेंद्रसिंह पटेल, बिदिशा

जब समाज की विसंगतियों एवं बिषमताओं को देखता हूं, तो मन आंदोलित हो उठता है. वर्तमान समय में समाज बाहर से सभ्य एवं पुरातन काल से विकसित दिखता है. परंतु समाज अंदर से काला कलुषित हो चुका है.

गरीबों के मसीहा दिखने-वाले राजनीतिज्ञों के महलों की नींवें गरीबों के खून-पसीने से निर्मित हो रहीं हैं.

बस इसी तरह की बातें मन-मस्तिष्क को हिलाकर रख देतीं हैं. कुछ कर गुजरने की आकांक्षा जाग्रत होती है. मंन करता है जादू की छड़ी घुमाकर, सबको सत्यता, समता एवं समानता का पाठ पढ़ा दूं. इसलिए लेखन के माध्यम से क्रांति लाना चाहता हूं.

कठिनाई केवल एक है. लेखन प्रारंभ कहां से करूं एवं कैसे करूं. भावावेश में आकर कहानी एवं लेख का सृजन कर लेता हूं. एवं किसी भी पत्रिका के लिए प्रेषित कर देता हूं. लेकिन कुछ दिनों बाद रचना संपादक जी के 'धन्यवाद एवं खेद सहित' वापस आ जाती है. बस, निराशा घेर लेती है और आगामी रचनाएं अधूरी ही रह जाती हैं.

धुंधलका कब हटेगा?

मनोरमा शर्मा, अमरोहा

कभी कभी बहुत इच्छा होती है मन में पनपते माहौल को विस्तार से उतार देने की. अंतर्मन में बैठे रहस्यों, स्वयं भोगी अनुभूतियों को उद्घाटित करने की. और मैं मानती हूं कि अच्छे साहित्य के पठन-पाठन से ही मुझ में यह समझ-बूझ आयी है. बहुत मन करता है अपने चारों ओर पनपती अमानवीय भावनाओं के परिणामस्वरूप अपने मन में उमड़ती घुमड़ती अनुभूतियों को समेटकर शब्दों का सुंदर संसार रच देने की पर जब लिखने बैठती हूं तो सब भ्रमित हो जाता है. स्पष्ट आकर बन ही नहीं पाते. अभिव्यक्ति की निरीहता से सारी कसमसाहट ढीली पड़ जाती है. अच्छा साहित्य ज्ञान, बुद्धि, विवेक को विकसित करता है भावनाओं को प्रगाढ़ता देता है. लेकिन लिखना नहीं सिखा सकता. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेडूसा

ग्रीक पौराणिक कथाएं एक ओर प्रेम और वीरता की तो दूसरी ओर ईर्ष्या, द्वेष, सत्ता और प्रतिष्ठा की ऐसी कहानियां हैं जो मानवीयता के प्रत्येक पक्ष और स्वभाव को उजागर करती हैं. भारतीय पौराणिक कथाओं में जिस तरह इंद्र श्रेष्ठ और शक्तिशाली, कामुक और डरपोक है, किसी के, कैसे भी संकल्प और तपस्या से उसका सिंहासन डगमगाने लगता है... ठीक इसी तरह ग्रीक पौराणिक कथाओं में ज्यूस सर्वशक्तिमान होने के साथ-साथ डरा हुआ है. वह अत्यधिक कामुक है. उसकी संतानें इधर-उधर बिखरी पड़ी हैं. इंद्र के दरबार में सुंदर अप्सराओं की भरमार है तो ज्यूस के दरबार में अतीव सौंदर्य की स्वामिनी एफ्रोडाइट (वीनस) उपस्थित रहती है. इंद्र जहां अपने सिंहासन को सुरक्षित रखने के लिए उर्वशी, रंभा और मेनका के सौंदर्य जाल का लाभ उठाता है, वहीं ज्यूस की पत्नी हेरा ज्यूस के कामुक स्वभाव पर तो कोई प्रतिबंध नहीं लगा पाती पर उसके विपरीत ज्यूस की प्रेमिकाओं को दंडित करने में कोई कसर बाकी नहीं रखती.

जहां ज्यूस का प्रेम सुंदरियों और नव यौवनाओं पर प्रायः छलकता रहता है, वहीं वीर पुरुषों पर उसका क्रोध वज्र की तरह गिरता है. ज्यूस का कोपभाजन सर्वप्रथम मानव वीर प्रम्थ्यूस को होना पड़ता है. प्रम्थ्यूस को अद्भुत यातनापूर्ण दंड देने के बाद भी ज्यूस का क्रोध शांत नहीं होता. वह अपनी मानस पुत्री एथिनी के सहयोग से रोग दूर करने वाली तमाम औषधि युक्त जड़ी बूटियां पृथ्वी से चुरा कर ले जाता है, और उन्हें ओलिंपस पर उगा देता है.

विषकन्याओं के बैर-बाण

हरिप्रकाश त्यागी

प्रम्थ्यूस ओलिंपस से आग और अन्य उपहार लाकर मानव समाज को भेंट कर चुका था और अब चट्टान पर पड़ा दारुण पीड़ा का दंड भोग रहा था. उधर पृथ्वी पर मानव-समाज सुख और समृद्धि की ओर बढ़ रहा था, जिसका नेतृत्व प्रम्थ्यूस का भाई एपीमिथ्यूस कर रहा था. ज्यूस को यह सहन नहीं हुआ. क्योंकि पृथ्वी पर दुखदायी ठंड, भूख, रोग, वृद्धावस्था और मृत्यु से उनका कोई संबंध नहीं था. पृथ्वी पर भी आलिपस की तरह आनंद और प्रसन्नता थी... ज्यूस ने सोचा कि आग को स्वीकार करने वाला मनुष्य समाज भी अपराधी है. इसलिये इसको भी दंडित होना पड़ेगा. ज्यूस जानता था कि अभी तक स्त्री की रचना नहीं हुई. ज्यूस के सोचने भर की आवश्यकता थी कि देवताओं के सहयोग से श्रेष्ठतम रूप की स्वामिनी पंडोरा की रचना हुई, और उसे एपीमिथ्यूस को उपहार स्वरूप भेंट किया गया. प्रम्थ्यूस ने अपने भाई-एपीमिथ्यूस को चेतावनी दी थी कि ज्यूस के किसी भी उपहार को ग्रहण न करें. परंतु एपीमिथ्यूस ने पंडोरा को सहर्ष स्वीकार कर लिया. पंडोरा अपने साथ स्वर्ण की डोरी से बंधा एक स्वर्ण कलश भी लायी थी. पंडोरा और एपीमिथ्यूस सुखी और प्रसन्न जीवन बिता रहे थे. एपीमिथ्यूस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे एक पल को अलग नहीं होने देता. एपीमिथ्यूस उस दिन अपने मित्रों के साथ नाच रहा था. पंडोरा अपने कक्ष में अकेली थी. उसका ध्यान अपने साथ लाये स्वर्ण कलश पर पड़ा और उत्सुक्तावश उसे खोलने लगी. पंडोरा स्वर्णकलश की अंतिम गांठ खोल रही थी कि एपीमिथ्यूस नृत्यनिमंत्रण लेकर कक्ष में घुसा. अंतिम गांठ खुली और स्वर्ण कलश से निकल सहस्त्रों छोटे, छोटे पंखों वाले जीव कमरे में भर गये. इन विषाक्त जीवों ने एपीमिथ्यूस और पंडोरा को काटना शुरू किया. इनके विष से पंडोरा और एपीमिथ्यूस अचेत हो गये. कुछ विषाक्त जीव कक्ष से निकल बाहर खड़े मनुष्य समाज और एपीमिथ्यूस के दोस्तों को भी काटने लगे. फिर क्या था, वह सभी बेहोश होने लगे. वास्तव में ज्यूस ने इस कलश में रोग-व्याधि, वृद्धावस्था और मृत्यु को बंद करके पृथ्वी पर पंडोरा के साथ भेजा था.

इस तरह के ज्यूस के कामों का बराबर विरोध होता रहा. पृथ्वी में ज्यूस से अपने पुत्रों का प्रतिशोध लेने के लिए टॉरटॉरस के संसर्ग से भयानक पराक्रमी पुत्र टॉयफून को जन्म दिया. टॉयफून जब अपने विशाल पंख खोले, पर्वताकार भुजाएं लिये, मुंह से आग उगलता ओलिंपस की ओर बढ़ा, तो भयातुर देवता ज्यूस के साथ ओलिंपस छोड़ भागे. एथिनी को देव सम्राट की कायरता पसंद नहीं आयी. ज्यूस और टॉयफून फिर आपस में गुंथ गये. अंत में टॉयफून ने ज्यूस की हंसिया (जिससे उसने अपने पिता की हत्या की थी) छीन कर टॉयफून ने उसके शरीर की सभी शिराएं निकाल कर ज्यूस को अपंग बना दिया. वह अब अपनी आंखों की पुतली जिनसे वीरता और क्रोध बरसता था, हिला भी नहीं सकता था. टॉयफून ने ज्यूस की शिराओं को एक भालू की खाल में बंद कर एक गुफा में छुपा दिया, और उसकी चौकीदारी अपनी बहन डेलफिना को सौंप दी. डेलफिना अनेक सर्पों के पांव वाली भयानक विषधर युवती थी. नानास के अनुसार डेलफिना ज्यूस के स्नायु तंत्र की रक्षा नहीं कर सकी. ज्यूस के स्नायु-तंत्र कोलाने का भार कैडमस को सौंपा गया. कैडमस वीणा बजाता हुआ डेलफिना के पास आया. डेलफिना कैडमस के वीणावादन पर मुग्ध हो गयी. मुग्धावस्था में ही कैडमस ने वीणा के तारों के लिये ज्यूस की शिराएं मांगी, और चुरा कर ले गया. यह स्पष्ट है कि कैडमस की सहायता को आये अपोलो ने मुग्धावस्था में एक ही बाण से विषधर डेलफिना का काम तमाम कर दिया. ज्यूस के मरणासन्न शरीर को ओलिंपस पर लाया गया, जहां उसने दिव्य भोजन और पोषक पेय द्वारा पुनः शक्ति प्राप्त की. उधर टॉयफून को मृत्युलोक के विषाक्त फल खिलाकर शक्तिविहीन कर दिया.

समुद्र देवता पॉसायडन और एफीमीडिया के जुड़वां पुत्र एलूडियस थे. वे सुंदर, शक्तिशाली और दैत्यकार थे. कम उम्र में ही एलूडियस भाइयों ने अपने को देवताओं से श्रेष्ठ मानना शुरू कर दिया. उन्होंने सबसे पहले युद्ध देवता एरीज के अस्त्र-शस्त्र छीन जंजीरों में बांध एक लकड़ी के बक्से में बंद कर दिया. देवता पॉसायडन के पुत्रों के विरुद्ध युद्ध नहीं करना चाहते थे. एलूडियस भाइयों ने देवताओं को और अपमानित करने के लिये ओलिंपस का घेरा डाल दिया. उनका विचार हेरा और आर्तेमिस के अपहरण करने का था. इस विचार को जान आखेट की

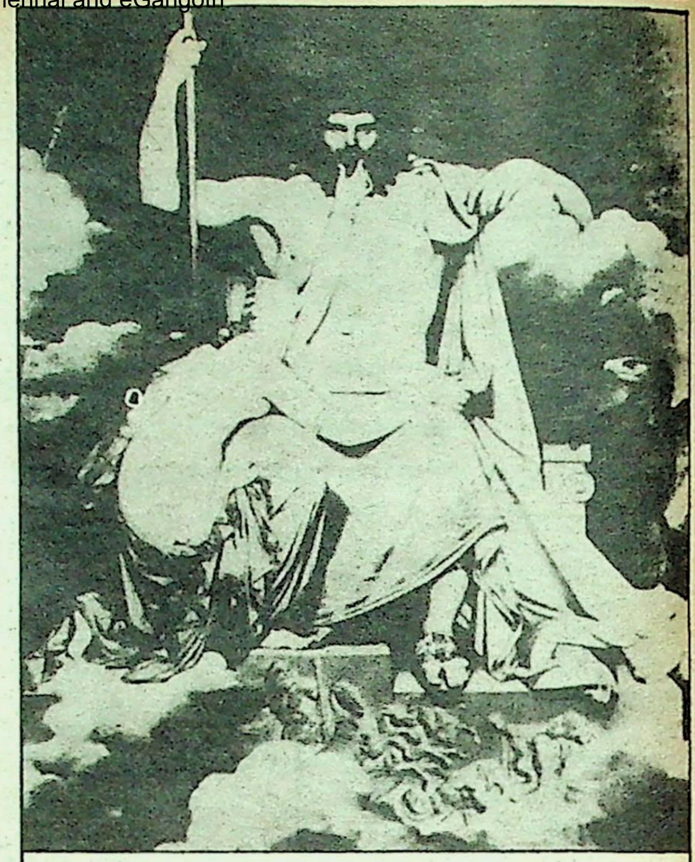

'ज्यूस और थेटिस' : अगस्त डोमेनीक इंग्रा

देवी आर्तेमिस आगे आयी और एलूडियस भाइयों में से एक ऊट्स को संदेश भेजा कि अगर वह ओलिंपस का घेरा उठा लें तो ऊट्स को वह नैक्सस द्वीप में मिलेगी. वह ऊट्स जैसा सुंदर पराक्रमी वीर पाकर अपने को धन्य समझेगी. ऊट्स को अपना स्वप्न साकार होता दीख पड़ा. जबकि दूसरा भाई एफीयल्टीज ईर्ष्या से जलने लगा. नैक्सस जाते हुए मार्ग में ही दोनों में झगड़े शुरू हो गये. एफीयल्टीज बड़ा होने के नाते पहले सहवास चाहता था जो ऊट्स को बिल्कुल पसंद नहीं था.

झगड़ा जब उग्रता की सीमा पर था तो दूध-सी उज्जवल, चंचल हिरणी-सी आर्तेमिस दिखाई दी. आखेट प्रेमी भाइयों ने भाले उठा लिए तभी आर्तेमिस गायब हो गयी दोनों भाई इधर उधर खोजते रहे. आर्तेमिस कभी यहां, तो कभी वहां दिखाई पड़ती. दोनों भाई अलग अलग दिशाओं में खोजते-खोजते आमने-सामने आ पहुंचे थे. आखिरकार बीच के कुंजों में आर्तेमिस खड़ी दिखाई दी. ऊट्स ने पूरी शक्ति से भाला फेंका. एफीयल्टीज ने भी ऐसा ही किया. आर्तेमिस अचानक गायब हो गयी. और दोनों भाईयों के भाले एक दूसरे का सीना पार कर गये. आर्तेमिस के साथ भोग कल्पना मात्र ही सिद्ध हुआ.

उस दिन वन में आर्तेमिस ही नहीं एरिस्टेयस का पुत्र एक्टेयॉन भी शिकार करता घूम रहा था. आर्तेमिस थक कर झरने में नहा रही थी. दुर्भाग्य-वश एक्टेयॉन भी इधर आ निकला, और छुप कर आर्तेमिस को देखने लगा. यह ऐसा अप्रतिम सौंदर्य था जिसे देवता भी नहीं देख सकते थे. आर्तेमिस को झाड़ियों में छुपे एक्टेयॉन का एहसास हुआ. आर्तेमिस ने पलट कर देखा तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

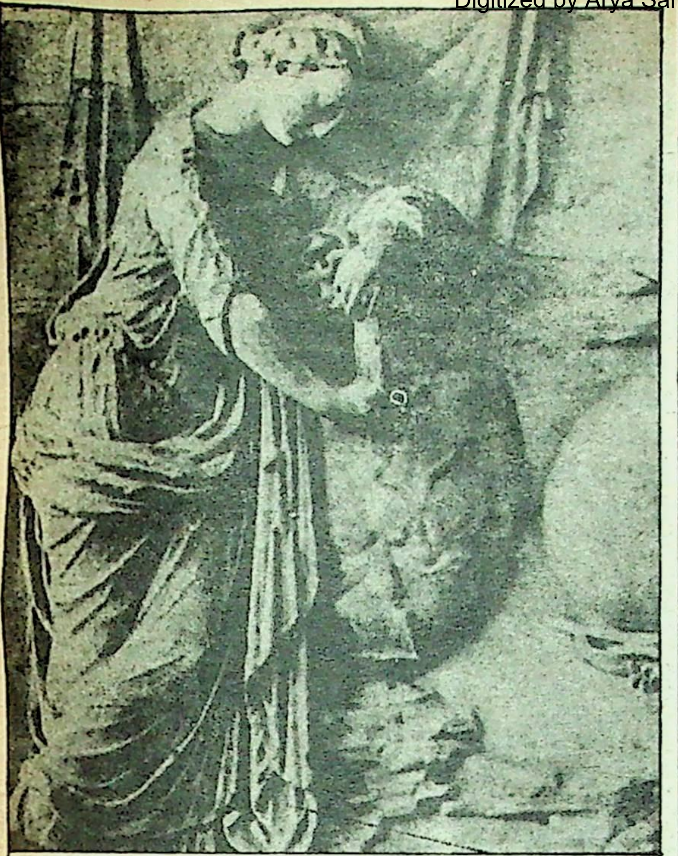

'पंडोरा' : ई.पू. छठी शताब्दी का मूर्तिशिल्प

एक्टेयॉन की आखों में भोग-लिप्सा तैर रही थी, और उसकी दृष्टि आर्तेमिस के सौंदर्य पर जमी थी. आर्तेमिस के धनुष-बाण दूर पड़े थे. अतः आर्तेमिस ने झरने के पानी को अपनी अंजलि में भरा मंत्र पढ़े और एक्टेयॉन के शरीर पर फेंकते हुए कहा, "जाओ, और संभव हो सके तो बताओ कि तुमने आर्तेमिस को नग्न अवस्था में देखा है." इधर पानी की बूंदें एक्टेयॉन के शरीर पर पड़ीं और उधर एक्टेयॉन पलक झपके ही बारहसिंगे में बदल गया. पीछे से आते एक्टेयॉन के पचास शिकारी कुत्तों ने उसे अपना शिकार बना लिया. एक्टेयॉन अपने शिकारी कुत्तों को यह भी नहीं बता पाया कि मैं ही तुम्हारा स्वामी हूं.

थीबी के राजा एंफियन की पत्नी निओबी के पास गर्व करने लायक संतान, सुख, समृद्धि और सौंदर्य सभी कुछ था. एक बार निओबी ने अपोलो और आर्तेमिस की मां लिटो की पूजा में दखलदांजी की थी. लिटो हेरा के अतिरिक्त किसी को भी अपने समकक्ष नहीं मानती थी. लीटो के सम्मान में होने वाले एक उत्सव में नियोबी ने कहा, "दर-दर भटकने वाली बेघर बार लिटो की पूजा तुम क्यों कर रहे हो? उसके पास गर्व करने लायक है ही क्या? एक औरत-नुमा बेटा अपोलो और एक आदमी-नुमा लड़की आर्तेमिस. मेरे पास सात शक्तिशाली बेटे और सात रूपवान कन्याएं हैं. मेरे पास सातगुणा गौरवपूर्ण संपत्ति है."

एक पर्वत की चोटी पर बैठी लिटो ने निओबी के ये शब्द सुने. उसने अपोलो और आर्तेमिस को बुला भेजा. देखते ही देखते अपोलो के छः बाणों ने छः बेटों का काम तमाम कर दिया. आर्तेमिस ने महल में काम करती निओबी की छः कुमारियों को मौत के घाट उतार दिया. यह सुनकर पिता एंफियन ने आत्महत्या कर ली, और निओबी एक पत्थर की शिला में बदल गयी. अपनी बौद्धिक चतुराई से एक बेटा एमीक्लास और एक बेटी मैलीबोइया बच गयी. यानी निओबी की गौरवपूर्ण दुनिया लीटो के बेटे-बेटी अपोलो आर्तेमिस के कारण कुछ पल में ही बरबाद हो गयी.

आर्तेमिस की तरह ही ज्यूस की मानस-पुत्री एथिनी भी दंड देने में किसी से कम न थी. अखंड ब्रह्मचर्य का पालन करने वाली एथिनी युद्ध के शस्त्रों सुसज्जित रहती. एथिनी का लालन-पालन ट्रिटन के यहां हुआ. ट्रिटन की एथिनी की उम्र की एक लड़की थी—पैलस. दोनों साथ साथ घूमती-फिरती खेलती-खाती. पर एक दिन दोनों में झगड़ा हो गया. झगड़ा इतना बढ़ा कि दोनों ने धनुष-बाण उठा लिये. एथिनी ने पैलस की हत्या कर दी. एथिनी ईर्ष्या में कुछ कम न थी. लिबिया में आर्कने नाम की एक लड़की रहती थी, जो कढ़ाई और बुनाई में सर्वश्रेष्ठ थी. जैसे ही एथिनी को पता चला उसने आर्कने से शर्त लगायी है कि वह उसकी बुनाई-कढ़ाई में दोष निकाल सकती है. आर्कने ने एक बड़े पर्दे पर कढ़ाई की, नीला सागर उस पर तैरता एक बलिष्ठ सफेद सांड, उस पर बैठी बिखरे बालों और हवा में लहराते अपने आंचल को समेटती भयभीत यूरोपे. काढ़े गये इस चित्र में कैलिस्टो की यंत्रणा और इओ की करुणा जनक कहानी उभर रही थी. एथिनी यह न देख सकी. उसने पर्दे को फाड़ कर टुकड़े-टकड़े कर दिये. और आर्कने को अनंत काल तक बुनते रहने का शाप दे दिया. फलस्वरूप आर्कने मकड़ी बन गयी, जो आज भी लगातार बुनती रहती है.

'यूरोपे का अपहरण' : चित्रकार बी. सेरोव

ज्यूस जलकन्या थेटिस पर आसक्त था. परंतु एक भविष्यवाणी (थेटिस से पैदा होने वाली संतान ज्यूस से अधिक शक्तिशाली होगी) के कारण ज्यूस को थेटिस के साथ संसर्ग का विचार छोड़ना पड़ा. हेरा ने जब ज्यूस के विरुद्ध षड्यंत्र किया था, तब थेटिस और एथिनी के सहयोग से ज्यूस बंधन मुक्त हुआ था. ज्यूस ने कहा कि वह थेटिस के विवाह में समस्त देवताओं के साथ उपस्थित होगा. थेटिस के विवाह के अवसर पर जब सभी सुंदर युवतियां मूंगे के महल में एक जगह उपस्थित थीं कि अचानक एक सेब आकर गिरा, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

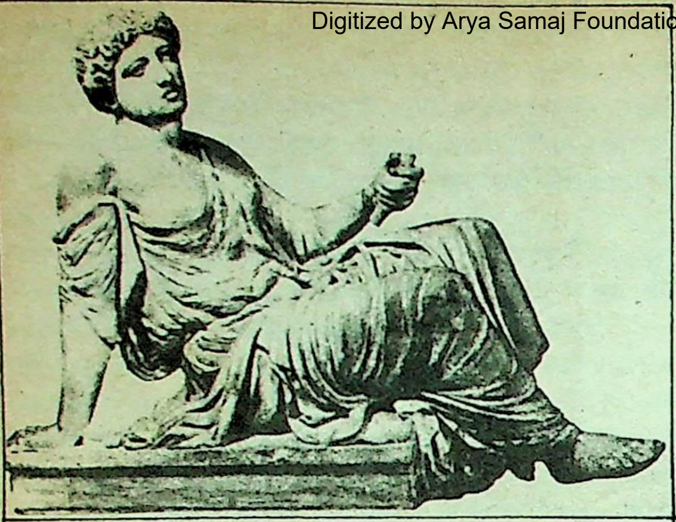

'एथिनी' : ई.पू. पांचवीं शताब्दी का मूर्तिशिल्प

भविष्यवाणी हुई, 'जो इस पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ सुंदरी है वही इस फल को खाये' अपने अपने को सुंदर साबित करने की होड़ सभी युवतियों में लग गयी. परंतु इस सौंदर्य प्रतियोगिता के अंत में तीन ही बचीं. ओलिंपस की सम्राज्ञी हैरा, ज्यूस की मानसपुत्री एथिनी, तथा अतीव सौंदर्य की स्वामिनी एफ्रोडाइट, ज्यूस जूपिटर इस प्रतियोगिता का फैसला करने से बच गया. उसने कहा एड़ा पर्वत पर रहने वाला गडरिया पेरिस ही नारी-सौंदर्य का सच्चा पारखी है. अतएव वही निर्णय देगा. ज्यूस का संदेश और तीनों सुंदरियों को साथ लेकर संदेशवाहक हेमीज एड़ा पर्वत पर पहुंचा. सबसे पहले हेरा ने कहा, "परिस! अगर तुमने मुझे सर्वश्रेष्ठ घोषित किया, तो मैं तुम्हें एशिया का स्वामी बना दूंगी. धन संपदा तुम्हारे पैरों में लौटेगी."

अब एथिनी की बारी थी. एथिनी ने कहा, " ओ पेरिस! अगर तुमने मुझे सर्वश्रेष्ठ सुंदरी घोषित कर निर्णय मेरे पक्ष में दिया तो मैं तुम्हें विश्व का सबसे अधिक बुद्धिमान व्यक्ति बना दूंगी. तुम्हारी कीर्ति विश्व में सब जगह फैलेगी."

अंत में एफ्रोडाइट आयी. प्रातःकालीन कोमल सरस समीर के झोंके सी. पेरिस का रोम-रोम पुलकित हो उठा. नग्न एफ्रोडाइट पेरिस के इतना करीब आ गयी कि कभी-कभी उसके अंग अनायास ही पेरिस को छू जाते. कमल की पखुड़ियों जैसे होठ हिले. कंठ से मधु मिश्रित शब्द पेरिस के कानों में पड़े, "पेरिस! तुम सा सुंदर युवक इस पूरे देश में नहीं हैं. मैं समझ नहीं पा रही कि तुम इस कठोर पर्वत पर चौपायों के बीच अपना यौवन क्यों बरबाद कर रहे हो. तुम्हारी एक झलक के लिए हजारों सुंदरियां अपना जीवन ध्वस्त करने को तैयार हैं. किसी सभ्य देश चले जाओ. मैं विश्वास दिलाती हूं कि विश्व की सबसे सुंदर रमणी तुम्हारी पत्नी होगी."

अनायास पैरिस का हाथ उठा और सेब अतीव सौंदर्य की स्वामिनी एफ्रोडाइट की हथेलियों में आ गया. एफ्रोडाइट तीनों लोकों की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी घोषित हुई. जाहिर है एथिनी चिढ़ गयी. एफ्रोडाइट ने अपना वादा पूरा किया. विश्व सुंदरी स्पार्टा के राजा मेनिलिएस की पत्नी हेलन पैरिस की अंकशायिनी बनी. पैरिस हेलन का अपहरण कर ट्राय ले गया. एथिनी ने स्पार्टा का साथ दिया. ट्राय और स्पार्टा वर्षों युद्ध की आग में झुलसते रहे. यहां तक कि हथियार कम पड़ गये. एथिनी अपने भाई हेरा के पुत्र हेफास्टस के पास हथियार लेने पहुंची. हेफास्टस को उसके चाचा पॉसायडन ने पहले ही उकसा दिया था. चूंकि एक तरह से एफ्रोडाइट पॉसायडन की बेटी थी. हेफास्टस ने एथिनी को गोद में लेना चाहा एथिनी हेफास्टस का आशय समझ गयी. दोनों में युद्ध हुआ. इस युद्ध में ही हेफास्टस का वीर्य एथेंस के पास जमीन पर गिर पड़ा. पृथ्वी को गर्भ रहा. पृथ्वी ने एरिकथोनियस नाम के बच्चे को जन्म दिया. और कहा कि इसका लालन-पालन एथिनी को ही करना चाहिए. एथिनी मान गयी. उसने बच्चे को एक बक्से में रखकर एथेंस के सम्राट सेक्राप्स की तीन पुत्रियों के हवाले कर दिया. उत्सुकता वश एक दिन सेक्राप्स की तीनों पुत्रियों ने इस बक्से को खोल कर देख लिया. वे भयभीत हो चीखने-चिल्लाने लगीं. और बदहवासी की हालत में महल में कूद कर आत्महत्या कर बैठीं. ऐसा क्या देख लिया था बक्से में? कहते हैं कि बच्चे एरिक्थोनियस के शरीर में पैरों की जगह दो बड़े-बड़े सांप थे.

'एफ्रोडाइट' : लूव संग्रहालय में पांचवी शताब्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेलरफेन लीशिया पहुंचता है. लीशिया का राजा बेलरफेन को किमेरे को मारने का आदेश देता है. किमेरे का जन्म पृथ्वी से हुआ था. किमेरे का सिर शेर का, बांहें शेर के पंजों जैसी थी. शरीर बकरी का और पूंछ जहरीले नाग जैसी थी. इसका जन्म मैडूसा के मरते समय जो रक्त की बूंदें पृथ्वी पर गिरी थीं, उनसे हुआ था. एथिनी बेलरफेन के स्वप्न में आती है. और पैगासस नामक दिव्य घोड़े को वश में करने के लिए एक लगाम देती है, जिस पर चढ़कर बेलरफेन नाग जाति के इस विचित्र जंतु किमेरे का मार डालता है.

सेरिफॉस का राजा पॉलिडिकटीज, डैनी के रूप पर आसक्त था. डैनी ज्यूस के संसर्ग से परसियस को जन्म दे चुकी थी. डैनी और परिसयस पॉलिडिकटीज के कृपा पात्र थे. डैनी पॉलिडिकटीज के अनेक विवाह प्रस्तावों को परसियस की देखभाल का बहाना बना ठुकरा चुकी थी. परसियस जब युवा हुआ तो पॉलिडिकटीज ने दोनों का अपमानित करने के लिए एक समारोह आयोजित किया, जिसमें परसियस खाली हाथ आया. पॉलिडिकटीज ने भरी सभा में कहा "हमारे यहां कुछ ऐसे विदेशी युवा हैं जो हमारे टुकड़ों पर पलना अपना गौरव समझते हैं."

परसियस इस व्यंग्य-वाक्य को न सह सका. उसने कहा, "इसमें कोई संदेह नहीं कि मेरे पास सम्राट को देने के लिए कुछ नहीं. परंतु मुझे अपने श्रम और शक्ति पर विश्वास है. सम्राट आदेश दे जो उन्हें चाहिए वह उनके चरणों में होगा. "असभ्य लड़के तुझे इतना ही घमंड है तो जा मेरे लिए गारगन मैडूसा का सिर लेकर आ."

गारगन बहिनें यूरियल एथेनो और मैडूसा तीन बहनें थीं. अपूर्व सुंदरी मैडूसा एक बार अपने रूप की तुलना एथिनी से कर बैठी. एथिनी ने श्राप दे डाला. मैडूसा का दूध सरीखा रंग काले रंग में बदल गया. एड़ी तक लहराती मैडूसा की स्वर्णिम रेशम-सी केश राशि भयंकर काले नागों में बदल गयी. चांद-सा सुंदर चेहरा इतना डरावना हो गया कि जो उसकी तरफ देखता रक्त जम जाता और वह पत्थर बन जाता. मैडूसा का वध करना किसी

'आर्तेमिस' : ई.पू. पांचवीं शताब्दी

के वश में न था. पर परसियस पॉलिडिक्टीस को वचन दे चुका था. पॉलिडिक्टीज और परसियस की बातचीत एथिनी सुन चुकी थी. मैडूसा से एथिनी की पुरानी शत्रुता थी सो एथिनी परसियस की सहायता को आ पहुंची. उसने परसियस से कहा मैडूसा के पंख हंस जैसे सफेद हैं, जबकि अन्य बहनों के पंख गिद्ध के समान. एथिनी ने पीतल का चमकता हुआ एक दर्पण देते हुए कहा कि याद रहे मैडूसा की आंखों में अद्‌भुत भयानक शक्ति है. तुम उसकी मृत्यु के बाद भी उसकी तरफ नहीं देखोगे. इस दर्पण में देखकर घातक वार करोगे.

आकर्षक गीत

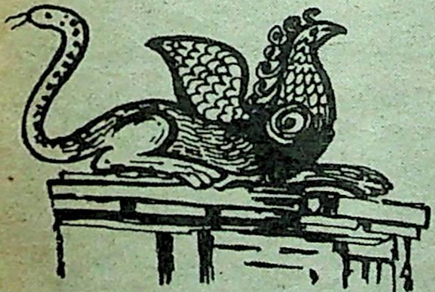

ओडिसियस जब इथाका के लिये चला तो सेसी ने अपनी मायावी शक्ति से संकटों को देख लिया और ओडिसियस को आगाह कर दिया. ओडिसियस का जलयान सायरन बहनों के द्वीप पहुंचा. सायरन बहिनों के मुख स्त्रियों जैसे परंतु शरीर चिड़ियों जैसा था. इनके पंख भी थे परंतु ये उड़ नहीं सकती थीं. एकिलो और फारकीज इनके माता-पिता थे. हेडीज ने जब पर्सीफनी का अपहरण किया तो इन्होंने पर्सीफनी की सहायता नहीं की. ये बहनें बहुत अहंकारी थीं और किसी के भी सामने अपना सिर नहीं झुकाती थीं. इस कारण अफ्रोडाइट ने इनका रूप बदल कर रख दिया था. ये बहनें भयानक गीत गाती थीं जिसकी धुन और बोल इतने आकर्षक होते कि अपने आप पर नियंत्रण रखना मुश्किल होता. यात्री इनकी ओर खिंचे चले आते और समुद्र में डूब जाते. ओडिसियस ने जलयान के सायरन द्वीप पहुंचने से पहले अपने नाविकों के कान मोम से बंद कर दिये. ओडिसियस का जलयान जब सायरन द्वीप पहुंचा तो ओडिसियस ने स्वयं गीत सुनाना चाहता था. गीत की आवाज ओडिसियस के कानों में पड़ी वह मचल उठा चीखना चिल्लाता रहा पर उसकी चीख ने नहीं सुनी. जलयान सायरन द्वीप से पार निकल गया. अपनी इस हार को देख कर सायरन बहनों ने समुद्र में कूद कर आत्महत्या कर ली. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परसियस जब चट्टान पर पहुंचा तब मैडूसा बेसुध सोयी पड़ी थी. चांदनी में बेहोश पड़ी विकराल मैडूसा को देख कर परसियस का खून जमने लगा. परसियस ने दर्पण में देख कर सधा हुआ वार किया और एक झटके में गिर धड़ से अलग हो गया. परसियस ने सिर को एक चमड़े की थैली में रखा और चल दिया. पॉलिडिक्टीज समझ रहा था कि गारगन देश से परसियस का लौटना असंभव है. परसियस को राज दरबार में लौटा देख कर पॉलिडिक्टीस ने पूछा, ''ले आये मैडूसा का सिर.'' परसियस ने थैले से मैडूसा का सिर निकाल अपनी गर्दन पीछे घुमा पॉलिडिक्टीज के सामने फेंक दी. देखते ही देखते सभी दरबारी पत्थर बन गये.

थीब्ज के राजा लॉएस का विवाह आयोकास्ट से हुआ. काफी समय बीतने पर जब संतान हुई तो देव मंदिर में प्रार्थना करने पहुंचे. वहां भविष्यवाणी हुई कि तुम्हारा पुत्र तुम्हारा हत्यारा होगा, और अपनी मां से विवाह कर देश को अपमानित करेगा. लॉएस और आयोकास्ट यह जानकर दुखी मन से महल में लौटे. उन्होंने बच्चे के हाथ पैर बांध एक बक्से में बंद कर समुद्र में फेंक दिया. बक्सा बहता-बहता सियान के राजा पॉलिबस की निसंतान रानी पेरीबोइया के हाथ लगा. पेरीबोइया ने प्रसव-वेदना का नाटक किया और प्रचारित करवा दिया कि उसको पुत्र की प्राप्ति हुई है. सूजे पैरों वाला थीब्ज का राजकुमार ईडिपस धीरे-धीरे युवा हुआ. उसे धीरे-धीरे इस बात का पता चल गया कि वह पिता की हत्या करेगा वह पॉलिबस को ही अपना पिता मानता है. सो उसने महल छोड़ दिया. इधर-उधर खाक छानता ईडीपस थीब्ज पहुंचा. रास्ते में उसने एक बूढ़े की हत्या की. थीब्ज पर उन दिनों रानी आयोकास्ट का भाई क्रियों राज कर रहा था. थीब्ज उन दिनों भयानक राक्षसी स्फिंकस से भयाक्रांत था. वह दानवी टायफून या किमेरे की संतान थी. इसका सिर स्त्री का और धड़ शेरनी का था. पूंछ की जगह हजारों सांप थे और कंधों पर बाज जैसे शक्तिशाली पंख. वह एक उंचे पर्वत की चोटी पर बैठी रहती थी और आने जाने वाले से एक प्रश्न करती. प्रश्न का उत्तर न पा कर उसे चट कर जाती. स्फिंकस के डर से कोई बाहर नहीं निकलता था. सो व्यापार चौपट हो गया और फसलें तबाह हो गयीं.

स्फिंकस ने घोषणा की थी कि जब उसे उसके प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा तो वह थीब्ज छोड़कर चली जायेगी. थीब्ज के काफी दुस्साहसी युवक स्फिंकस का शिकार बन चुके थे!

आयोकास्ट के भाई क्रियों ने घोषणा की कि जो इस स्फिंकस से थीब्ज को छुटकारा दिलाएगा और महारानी आयोकास्ट उससे विवाह करेगी.

ईडिपस के लिए जीवन व्यर्थ था. क्रियो की घोषणा सुन ईडिपस ने थीब्ज के लिए जीवन की बलि देना उचित समझा. वह उस पर्वत की ओर बढ़ चला, जहां स्फिंकस बैठी थी. सांय-सांय करता पथरीला इलाका, चारों ओर स्फिंकस द्वारा मारे गये प्राणियों की हड्डियों के ढेर स्फिंकस की हुंकार ही कभी-कभी पूरे सन्नाटे को भंग करती. ईडिपस सहज भाव से उस पहाड़ की तलहटी में पहुंचा जिस पर स्फिंकस बैठी थी. ईडिपस ने पूरी ताकत से चिल्लाकर कहा, ''पूछो क्या सवाल है.'' स्फिंकस ने अपनी गर्दन घुमायी. भयानक लाल लाल आंखें चमक उठीं. ईडिपस पर दृष्टि गड़ा स्फिंकस ने पूछा, ''वह कौन-सा प्राणी है जो सुबह चार पैरों पर दोपहर में दो पैरों पर और शाम को तीन पैरों पर चलता है, वह प्राणी तो मनुष्य है जो अपने जीवन की प्रातः वेला बचपन में दो हाथों और दो पैरों पर चलता है. यौवन की दोपहरी में दो पैरों पर तथा वृद्धावस्था की सांझ में एक छड़ी के सहारे तीन पैरों पर चलता है.''

स्फिंकस ने भयानक चीत्कार किया. उसने अपनी हार मान ली और उड़कर फीशियम पर्वत की घाटी में गिर कर दम तोड़ दिया.

ट्राय ने दस वर्षों तक चलने वाले युद्ध से तंग आकर एथिनी को एक षड्यंत्र सूझा. उसने इस षड्यंत्र की जानकारी ओडिसियस को दी जिससे ट्राय की हार निश्चित हो गयी. वह था विशालकाय लकड़ी का घोड़ा जिस पर लिखा था, ''अपनी सकुशल सुरक्षित यात्रा के लिए ग्रीक वासियों की एथिनी को भेंट.'' यह घोड़ा ट्राय नगर की सीमा पर खड़ा था नगर वासी चाहते थे कि इसे खींच कर नगर में ले जायें. घोड़े को नगर में ले जाने का विरोध संत लायकून कर रहा था. उसने कहा, ''यह सब झूठ है. मुझे. तो इस कहानी में कुछ चाल दिखाई देती है.''

अगले दिन लायकून जब समुद्र देवता के लिए एक सांड की बलि देने की तैयारी कर रहा था तो समुद्र से निकलकर दो भयंकर सांपों ने लायकून के दोनों लड़कों को अपनी चपेट में ले लिया. लायकून कटार ले कर झपटा, लेकिन सांपों ने उसे भी अपनी कुंडली में कस लिया. देखते-देखते तीनों वहीं ढेर हो गये. कहते हैं एथिनी ने ही लायकून को दंड देने के लिए इन भयंकर सांपों को भेजा था. □

स्किला

हैक्टी और फारकीज की बेटी स्किला बहुत सुंदर थी. नदी का देवता ग्लाकस उसके रूप के आकर्षण में फंस गया. ग्लाकस का स्किला के आकर्षण में जाना ईर्ष्यालु एंफीत्राइत को पसंद नहीं आया. उसने नदी में कुछ विषैली जड़ी बूटियां मिला दी. नदी में नहाते समय स्किला का रूप परिवर्तन हो गया. वह अब छह कुत्तों के मुंह वाली और बारह हाथों पैरों वाली भयानक दानवी बन गयी, जिसकी पूंछ में विषैले सांप फुंफकारते थे.

वह दो चट्टानों के मध्य से गुजरने वाले समुद्र के मुहाने पर बैठी रहती, और जलयानों के गुजरते समय यात्रियों की हड्डियों का चूरा बनाकर निगल जाती. स्किला से बचना मुश्किल था. ओडिसियस का यान जब इधर से गुजरा तो स्किला ने अपने छह मुंह से छह नाविक पकड़ लिये. ओडिसियस उनको तड़पते छटपटाते देखते रहने के अलावा कुछ न कर सका, स्किला इन छह नाविकों को निगलने में लगी हुई थी। तभी ओडिसियस का यान स्किला की सीमा से बाहर निकल गया □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

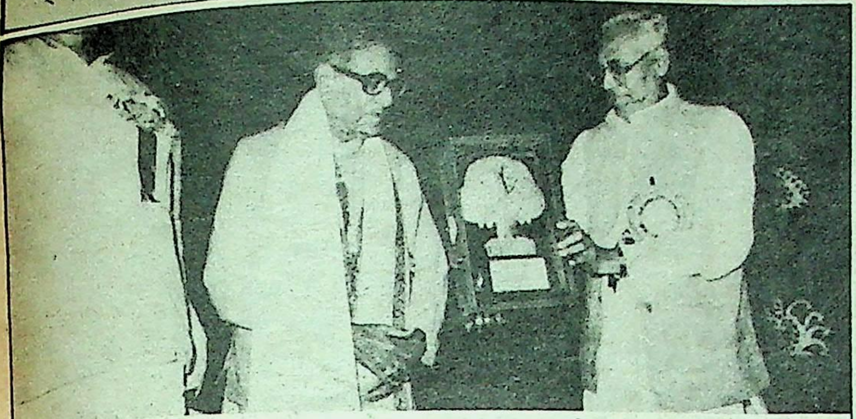

अमृतलाल नागर को 'डा. राजेंद्र प्रसाद शिखर सम्मान'

राजभाषा विभाग, बिहार सरकार के तत्वावधान में, 22 मार्च, 1988 को हिंदी के तपःपूत साहित्यकार पद्मभूषण श्री अमृतलाल नागर को 'डा. राजेंद्रप्रसाद शिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया. एक लाख रुपये का यह सर्वोच्च पुरस्कार बिहार के मुख्यमंत्री सुकवि श्री भागवत झा आजाद ने चादर एवं बोधिवृक्ष के प्रतीक के साथ श्री नागर जी को सादर समर्पित किया.

रवींद्र भवन, पटना में आयोजित इस सारस्वत समारोह का प्रारंभ मंगलगान से हुआ. राजभाषा निदेशक एवं हिंदी के स्तंभ हस्ताक्षर डा. भगवती शरण मिश्र ने आगत महानुभावों का स्वागत करने के क्रम में नागर जी के विशाल साहित्यिक व्यक्तित्व के प्रति हिंदी-जगत की श्रद्धा-भावना को मार्मिक अभिव्यक्ति दी. उन्होंने कहा कि आज हिंदी को जो विश्वव्यापी प्रतिष्ठा मिल रही है, उसमें नागर जी का योगदान स्पृहणीय है. इनकी जीवनधारा निष्काम कर्म और अनासक्त भक्ति से संभरित है. इन्होंने अतीत और वर्तमान की सांस्कृतिक गरिमा के समन्वय का सफल प्रयत्न किया है.

इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री श्री भागवत झा 'आजाद' ने कहा कि शिखरस्थ कथाशिल्पी श्रीनागर ने अपनी कालजयी कृतियों के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिंदी को बहुमुखी बलिष्ठता प्रदान की है और हिंदी-वाङ्मय की अद्यतन आहटों से परिचित होने के लिए श्रीनागर की कृतियों का पारायण परम अनिवार्य है.

अपने अध्यक्षीय भाषण में बिहार सरकार के मानव संसाधन विकास एवं राजभाषा मंत्री डा. नागेंद्र झा ने हिंदी भाषा और साहित्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुए साहित्यकारों के प्रति समाज एवं सरकार के दायित्वों की विस्तृत चर्चा की और कहा कि साहित्यकारों का सम्मान करना किसी भी सुसंस्कृत समाज का सर्वोपरि कर्तव्य है.

बिहार हिंदी प्रगति समिति के अध्यक्ष एवं सुप्रसिद्ध समीक्षक डा. कुमार विमल ने श्री नागर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विविध पक्षों को उजागर करते हुए कहा कि श्री नागर सर्जनात्मक प्रतिभा के शुभ्र पुरुष हैं.

पुरस्कार-ग्रहण करने के पश्चात् अपने भाषण के दौरान श्री नागरजी ने बिहार के सारस्वत अतीत का अत्यंत कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया और कहा कि साहित्यकारों को जन-मन की धड़कनों का सफल चितेरा होना चाहिए.

—कृपालकुमार

आधुनिकता का सही अर्थ

पिछले दिनों दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग और हिंदी अकादमी के संयुक्त तत्वाधान में 'छायावादी काव्य परंपरा और आधुनिकता का संधिकाव्य' विषय पर दो दिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया. इस अवसर पर छायावादी काव्य को आधुनिक हिंदी काव्य की महत्वपूर्ण धारा बताते हुए प्रो. तारकनाथ बाली का कहना था कि इसके ऐतिहासिक महत्व और संवेदना की व्यापकता की उपेक्षा हुई है. यही नहीं, छायावाद का समर्थन भी गलत पक्षों को लेकर किया गया है. छायावाद का महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि छायावादी काव्यधारा संकीर्णता का अतिक्रमण कर मानवता वादी धारा को मजबूत करती है.

सेमिनार का उद्घाटन करते हुए प्रो. मुनिस रजा ने किसी भी देश या साहित्य-परंपरा के लिये आधुनिकता के समुचित समन्वय को जरूरी बताते हुए कहा कि विकास परंपरा ही आधुनिकीकरण का नाम है.

अध्यक्ष प्रो. विजयेंद्र स्नातक ने छायावाद के प्रमुख चार कवियों के काव्य के संदर्भ में आधुनिकता और परंपरा के समन्वय की चर्चा की. हिंदी विभाग के प्रमुख प्रो. तारकनाथ बाली ने स्पष्ट किया कि छायावादी काव्य के व्यापक परिदृश्य से हम परिचित नहीं हो पाये हैं. छायावादी काव्य विश्वयुद्धों के बीच का काव्य है. इसकी हर श्रेष्ठ रचना के मूल्यों में युद्ध की भयावहता है.

दूसरे सत्र में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में दो आलेख पढ़े गये. 'छायावाद में आधुनिकता का पूर्वाभास' विषय पर रवींद्र भ्रमर का आलेख आधुनिक हिंदी कविता को छायावाद से ही प्रारंभ मानता प्रतीत हुआ.

दूसरे दिन डा. रमेश कुंतल मेघ की अध्यक्षता में प्रातः कालीन सत्र प्रारंभ हुआ. मुख्य अतिथि श्री गांगडे ने अपने भारत के गौरव को भूल जाने को रेखांकित करते हुए उसे फिर से जगाने की बात उठाई. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलगाववाद की चुनौतियां और प्रगतिशील लेखन की परंपरा

बिहार प्रगतिशील लेखक संघ के नौवें राज्य सम्मेलन (अप्रैल, 88) में शामिल होते हुए सर्वश्री भीष्म साहनी, गुलाम ख्वानी ताबां, शेखर जोशी, सोमदत्त, कामतानाथ, डा. काशीनाथ सिंह, डा. अब्दुल बिस्मिल्लाह, राजीव सक्सेना, डा. सुरेंद्र, डा. बच्चन सिंह, रविभूषण, मधुकर सिंह, डा. खगेंद्र ठाकुर, वीरेंद्र यादव, अरुण कमल, राजेंद्र कुमार आदि ने अपने वक्तव्यों के माध्यम से जातिवाद, रूढ़िवाद, सांप्रदायिकता, फिरका-परस्ती और अलगाववाद की खुली गीदड़भभकियों को चुनौती देते हुए जहां इसकी रूहानी खिलाफत की, वहीं 'समकालीन कविता में वैचारिक संघर्ष' तथा 'समकालीन कहानी और यथार्थ' विषयक दो खुली गोष्ठियों पर बहस मुबाहिसा भी किया.

सासाराम के कविवर कन्हैया नगर में बिहार प्रलेस के दो दिवसीय अधिवेशन कर उद्घाटन करते हुए गुलाम ख्वानी ताबां ने कहा, ''अभी तक साहित्यकारों ने सांप्रदायिकता, जातिवाद और अलगाववाद को अहमियत नहीं दी है लेकिन इस समस्या ने हमारे सामने आज एक शैतानी शक्ल अख्तियार कर ली है. तब यह हरेक मायनों में लाजिमी हो जाता है कि तमाम अदीब अपने हथियार (कलम) से अलगाववाद की खिलाफत कर उसे नेस्तनाबूत की कसौटी पर कायम करें.''

गुलाम ख्वानी ताबां के उद्घाटन भाषण का पूर्ण समर्थन देते हुए डा. बच्चन सिंह का कहना था कि प्रगतिशील लेखक संघ अलगाववाद का सर्वथा विरोध करे और सांप्रदायिकता को अपनी संवेदना बना ले. वरिष्ठ आलोचक डा. सुरेंद्र चौधरी ने भी सांप्रदायिकता की पुरजोर खिलाफत की और अपने आलोचकीय दृष्टिकोण से इसे एक भयावह अंजाम बतलाया. राजीव सक्सेना ने पाठक और लेखक के आपसी गठबंधनों को जहां मजबूत बनाने पर जोर दिया, वहीं रामेश्वर सिंह काश्यप का मानना था कि ''साहित्य आज अप्रासंगिक हो गया है. लोग कार, जीप खरीद सकते हैं, लेकिन साहित्य की किताब नहीं.'' सत्र को मुकम्मल मुकाम तय कराते हुए डा. खगेंद्र ठाकुर ने सन् 1936 से लेकर अब तक के प्रगतिशील आंदोलन की मीमांसा की.

सम्मेलन का एक दृश्य

संयोजन समिति के सचिव अभय के अनुसार इस अधिवेशन में कुल 227 लेखकों ने हिस्सा लिया. धन्यवाद ज्ञापित करते हुए शंकर ने इस अधिवेशन के बाद लेखकों की जिम्मेवारियां और बढ़ जाने का अहसास दिलाया. □

कृपा शंकर

'प्रेमचंद महेश सम्मान' एवं 'वाणी पुरस्कार' समारोह

11 मई, 1988 को नयी दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में हिंदी के वरिष्ठ कवि श्री शमशेर बहादुर सिंह ने श्री कृष्ण सुकुमार, सुश्री दुर्गा हाकरे, और डॉ. रंजना अरगड़े को वाणी प्रकाशन की ओर से प्रारंभ किये गये क्रमशः 'प्रेमचंद महेश सम्मान' एवं 'वाणी पुरस्कार' से सम्मानित किया.

समारोह का शुभारंभ करते हुए हिंदी के सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने कहा कि आज मानो यहां हिंदी कविता की आधी शताब्दी जीते-जागते रूप में मौजूद है. सभागार हिंदी की कई पीढ़ियों के कवि-लेखकों और साहित्य-प्रेमियों से खचाखच भरा हुआ था. नामवरजी ने कहा कि यह उपस्थिति किसी काव्यानुभूति से कम नहीं है.

पुरस्कार अर्पित करने के बाद शमशेरजी ने कहा कि मैं बड़े समारोहों से बचता रहा हूं पर आज यहां आकर अच्छा लग रहा है. उन्होंने कहा कि अध्ययन की और भाषाएं सीखने की कोई आयु-सीमा नहीं है. अस्सी के करीब आकर भी मैं संस्कृत सीखना चाहता हूं.

उन्होंने कहा कि अध्ययन, समझ तथा संवेदना का विस्तार ही हमें वनस्पतियों, पशु-पक्षियों और मनुष्य दलों को ठीक से समझने में सहायक होता है. विभिन्न देशों की संस्कृतियों, साहित्य और कलाओं को जब तक हम अपनी ही थाती नहीं मानेंगे तब तक हमारी संवेदना विकसित नहीं होगी और एक पत्ती, एक कोंपल भी मानों हमें अपना भेद नहीं बताएगी.

अध्यक्ष पद से बोलते हुए बाबा नागार्जुन ने आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि इससे लेखकों-कवियों के मिलन का जो अवसर सुलभ हुआ है, वह इसी तरह फिर-फिर आना चाहिए. शमशेरजी का स्वर इतने दिनों बाद सुनकर हम सब आनंदित हुए हैं.

त्रिलोचन शास्त्री ने पुरस्कृत लेखकों की पुस्तकों का लोकार्पण किया. निर्णायक मंडल के सदस्यों में से डॉ. निर्मला जैन और डॉ. रामदरश मिश्र ने पुरस्कृत कृतियों की विशेषताओं पर प्रकाश डाला. सभा का संचालन डॉ. नित्यानंद तिवारी ने किया.

समारोह में सर्वश्री डॉ. प्रभाकर माचवे, लक्ष्मीकांत वर्मा, अवधनारायण मुद्गल, कुंवर नारायण, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह, राजेंद्र यादव जैसे सुपरिचित कवि-लेखक मौजूद थे. हिंदी की युवा और युवतम पीढ़ी के अनेक रचनाकार भी एक बड़ी संख्या में उपस्थित थे.

—बीथिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक कवि की प्रार्थना और नर-कंकाल पर खड़ी सभ्यता

ब्रजेश्वर मदान

फिल्मों की विष-कन्याओं पर यह लेख शुरू करते हुए; मुझे लातीनी अमरीकी कवि एर्नेस्तो कार्दिनल की एक कविता याद आ गयी. मर्लिन मनरो के लिए एक प्रार्थना, इस कविता का मंगलेश डबराल द्वारा किया गया हिंदी अनुवाद 'वर्तमान साहित्य' के मई 88 अंक में छपा है. कविता का वह अंश अत्यंत ही अर्थपूर्ण है जिसमें कवि कहता है— "जब वह बच्ची थी तो उसने सपने में देखा (टाइम्स पत्रिका के मुताबिक) कि वह एक चर्च में नग्न खड़ी है/जमीन पर लोटती अपार भीड़ के सामने/और लोगों के सिर बचाने के लिए उसे चलना पड़ रहा है पंजों के बल/प्रभु तुम हमारे सपनों को मानसिक चिकित्सकों से ज्यादा अच्छी तरह जानते हो./चर्च घर गुफा/सबके सब कोख की सुरक्षा के प्रतीक हैं/बल्कि इससे भी अधिक हैं. यह/तो साफ है ये सिर प्रशंसकों के सिर हैं/पर्दे पर जाती रोशनी शहतीर के नीचे तमाम सिर लेकिन मंदिर ट्वेंटियथ सेंचुरी फॉक्स का स्टूडियो नहीं है/कविता बहुत लंबी है और पर्दे पर विषकन्याओं की कहानी उससे भी ज्यादा लंबी है. विष कन्याओं के संदर्भ में मुझे यह कविता याद आना अजीब नहीं लगा कि इसके साथ ही 'सारिका' में छपी सुधीश पचौरी की टिप्पणी 'अंधों के लिए एक प्रार्थना', जिसमें वह कहते हैं—मीडियम दज द मैसेज (माध्यम ही संदेश है.) एक वाक्य नहीं बल्कि एक मुहावरा है. विश्व स्तर पर संचार माध्यमों, खासकर टी.वी. को लेकर चली बहस में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से यह सूत्र गूंजता रहा है.

हम यहां, माध्यम ही संदेश है या नहीं, इस बहस में नहीं उलझेंगे. लेकिन इतना जरूर है कि ट्वेंटियथ सेंचुरी में यह माध्यम विष कन्याओं का भी मौत का संदेश लेकर आता है. यह लंबी कहानी है किस किस तरह फ़िल्म के पर्दे पर विष कन्या पर जन्म हुआ. कहते हैं बहुत पहले लंदन में एक प्रदर्शनी में एक पेंटिंग दिखायी गयी. जिसका नाम था 'अरब डैथ'. इस पेंटिंग में एक खूबसूरत औरत के साथ नर-कंकाल दिखाया गया था. मतलब साफ था, उस औरत ने पुरुष का खून चूस कर उसे कंकाल बना दिया. यह पेंटिंग बहुत लोकप्रिय हुई और इसको ही आधार बनाकर एक नाटक लिखा था, 'अरब डैथ'.

हालीवुड के निर्माता विलियम फॉक्स को उस पेंटिंग और नाटक से ही 'विष-कन्या' का ख्याल आया. सिनेमा के पर्दे के लिए एक ऐसी औरत की तलाश शुरू हुई जो उस पेंटिंग की स्त्री की तरह सुंदर हो. जो दर्शकों के सिर से रोशनी की शहतीर में से गुजर सके और जब वह स्त्री मिल गयी, तो उसे उन्होंने 'मेकप' से उस पेंटिंग वाली औरत का ही रंग रूप दे दिया. उसके लिए पोशाकें भी अरेबियन सिलवायी गयीं. यही नहीं 'अरब डैथ' को उलट कर ही उसका नाम उन्होंने 'थैडा बैरा' रखा. एक तरह से वह फिल्म के पर्दे की पहली विष-कन्या थी. सेक्स का प्रतीक उन्होंने बूढ़ी औरत को बनाया था. उसके बाद हालीवुड में उस औरत के रूप बदलते रहे. उसके बाद आयी 'रैड हैडड' हीरोइन. कहते हैं कि इसकी तलाश हालीवुड के निर्माताओं ने लोकप्रिय उपन्यासों में ही लेखिका ईलिएन गोल्डविन नाम की एक लेखिका की मदद से की. जिसके उपन्यास में हीरोइनों के बालों का रंग लाल होता था. लाल बालों को अश्लील समझा जाता था. उसकी मदद से हीरोइन तलाश की गयी. क्लोरा बो, इस लेखिका का कहना था कि सेक्स अपील आंखों में होती है और स्क्रीन टेस्ट में ये परंपरा पड़ी कि पूरा चेहरा ढककर सिर्फ आंखें खुली छोड़ दी जाती हैं. हालीवुड में फिल्मों के बोलने के साथ इस हीरोइन का आकर्षण खत्म हो गया. क्योंकि उसकी आवाज भौंडी थी. इसके बाद हीरोइन के बालों का रंग सुनहरा हुआ और उसके रूप में ब्लोंब लोकप्रिय हुई. सैक्स सिंबल की आवाज हल्की होना जरूरी हो गया. जीन हार्लो के बाद मेवेस्ट और मर्लिन मनरो का नाम आता है. बहुत साफ है कि हालीवुड की फिल्मों में ट्वेंटियथ सेंचुरी ने एक ऐसी संस्कृति को जन्म दिया जो नरकंकाल पर खड़ी है.

जिसके बारे में मर्लिन मनरो के लिए एक प्रार्थना में कवि कहता है—

मंदिर नहीं है ट्वेंटियथ सेंचुरी फॉक्स का ये स्टूडियो
सोने और संगमरमर का ये मंदिर
उसकी देह का मंदिर है
जहां आदम का बेटा हाथ में कोड़ा लिए खड़ा है.
ट्वेंटिएथ सेंचुरी फॉक्स के बनियों को खदेड़ता हुआ
जिन्होंने प्रभु तुम्हारे प्रार्थना घर को चारों के अड्डे में बदल दिया...

मर्लिन मनरो को विषकन्या इस अर्थ में कहा है कि सिनेमा की दुनिया में स्त्री का इस्तेमाल लोगों ने दर्शकों को उनकी वासनाओं का दास बना कर सिनेमा घर के अंधेरे में लूटने के लिए किया. पर्दे का मुंह बांधना और आदर्शों की ऐसी लड़ाई शुरू हुई कि धीरे-धीरे मूल्य गायब हो गये. दो विश्व युद्धों के दरमियान एक ऐसी सभ्यता पनपी कि गर्भ निरोधक गोली के साथ सब प्योरोटियन एथिक्स पर गोली चल गयी.

हमारे यहां भी फिल्मों में विष-कन्याएं हालीवुड के सिनेमा से ही आयी. उनकी नकल पर ही हमारे यहां स्टूडियो बने. शुरू में हमारे यहां पौराणिक साहित्य पर फिल्में बनती थीं. उस जमाने में पर्दे की विष कन्या भी उसके साहित्य से आती थी. इंद्र ऋषियों का तप भंग करने के लिए अप्सराएं भेजता था. यहां फिर उस कवि की कविता याद आती है जो कहता है—

वह प्यार चाहती थी और हमने उसे दी नींद की गोलियां/उसे गम था हमारे संत न होने का/और उसके लिए सुझाए गए मनोविश्लेषण के नुस्खे.

मीडिया इज द मैसेज. देखना यह है कि यह किस का मैसेज है. ये मीडियम किन लोगों के हाथ में है. महत्वपूर्ण प्रश्न यह है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिडिल ईस्ट की माताहारी

भला कोई कह सकता था कि शुलामित किशव कोहन सात बच्चों की मां थी.

वैसे बचपन में उसकी एक अधेड़ के साथ शादी कर दी थी—बेरूत में. कुदरत भी कैसे खेल खेलती है—कहां येरूशलम की जन्मी सीधी-सीधी शुलामित और कहां अरब के पड़ौस में आ बसी. 1940 का साल भी कितनी जासूसी लाग-डांट का समय था. और शुलामित इस भंवर में ऐसी पड़ी कि संवरती गयी.

वैसे श्रीगणेश उसके व्यापारी पति ने ही किया था. एक रात वह चुपचाप बेरूत के तट पर लगे हुए एक ग्रीक जहाज से एक यहूदी को अपने घर लाया और फिर उसे बड़ी खूबी से इजराइल की हद पार करवा दी. शुला कोहन-इसी नाम से उसे पुकारते थे-फिर यहूदी शरणार्थियों को अरब प्रदेश से निकाल कर इजराइल 'स्मगल' करने लगी.

अब वह इजराइल जाकर जासूसी की शिक्षा लेने लगी और वाकई इजराइल का नायाब मोती बन गयी. अब वह खतरों से खिलवाड़ करने लगी. 'पासपोर्ट' बदलकर वह जहाज द्वारा इस्तानबुल पहुंचती और गिरोह को दृढ़ करने में जुट जाती. 'बार मित्जवाह' और साबथ के त्यौहार के दौरान उसने अपना काम तेजी से बढ़ा दिया और 'रहस्य' खरीदने में जुट गयी. जैसा 'रहस्य' वैसे ही कीमत.

लेबनान की जासूस संस्था 'लेबनीज डयूक्सीम ब्यूरो' का एक सजीला जासूस फिर किसी तरह संस्था की लक्ष्मण रेखा पार कर ही गया. और तभी शुला पकड़ी गयी. जब लेबनान की अदालत में उसे लाया गया तब प्रोसीक्यूटर ने कहा था, "यह मिडिल ईस्ट की माता हारी..." देखा जाय तो शुला संपूर्ण यहूदी जाति की जासूस-माता थी. और अदालत ने उसे सजाये मौत सुना दी. सजा सुनकर वह मुस्करायी थी. और न जाने कौन-सा जादू जन्मा उसकी मुस्कराहट से कि उसका मुकदमा फिर से पलटा और इस बार उसे केवल सात वर्ष की सजा सुनायी गयी.

और जब 1967 का 'छः दिवसीय युद्ध' समाप्त हुआ तब शायद उसके देश इजराइल ने उसको सबसे ऊंचा सम्मान दिया. उसे यह गंभीर लेबनी कैदी के बदले में लेबनान से छुड़ा लिया. उसकी सेवा की थाह लेकर ही इजराइल के नेताओं ने उसके समस्त परिवार को बेरूत से इजराइल मंगवा लिया.

कि क्या हमारी फिल्मों में औरत का इस्तेमाल एक ऐसी सभ्यता के लिए नहीं किया जा रहा जो नरकंकाल बनाये.

दोष मर्लिन मनरो का नहीं था. जिसने स्यार बनने का सपना देखा था. और न उन लड़कियों का जो आज सपना देखती हैं. हमारी जरूरत है. यह लेख लिखते हुए मेरी एक ऐसी लड़की से मुलाकालत हुई जिसने बासु भट्टाचार्य की एक फिल्म में काम किया है. उसे दुख था कि बासु दा ने उसे मेकप नहीं करने दिया. उसने कहा, "मैं रोज उन्हें कहती थी बासु दा मुझे मेकप करने दीजिए ना!"

वह कहते, "नहीं करने दूंगा."

मुझे याद आ रही थी कविता की

प्रभु स्वीकार करो इस लड़की को/जो अब जा रही है आपके हजूर में/बिना मेकप के बिना प्रेस एजेंट के/बगैर तस्वीरों के बगैर ऑटोग्राफ दिए हुए/एकाकी जैसे कोई अंतरिक्ष यात्री जाता है/अनंत अंधकार में.

रूप और यौवन की इस दुनिया में खुशी होती है कि बासु भट्टाचार्य जैसा कोई सिरफिरा फिल्मकार लड़की को मेकप नहीं करने दे रहा है.

उस दुनिया में जहां दर्शकों को दास बनाने के लिए फिल्मों में रूप और यौवन का व्यापार चलता है. जो खदेड़ना चाहता है बंबई के लोगों को जिन्होंने प्रभु के प्रार्थना घर को चोरों के अड्डे में बदल दिया है. □

नागों की बस्ती

वीना बाला जैन

कल्लो किशन के पास जाती तो खूब बातें होतीं दोनों में. कभी-कभी जोर से हंस पड़ते दोनों. कल्लो को लगता यही जीवन है, जिसकी उसे बरसों से साध थी. कई बार वह सोचती क्यों न इसी से ब्याह कर ले! पर किशन था कि रोज़ कोई न कोई किस्सा शुरू कर देता और बात आई गई हो जाती.

एक दिन जब कल्लो पहुंची तो किशन सजा-धजा बाहर ही बैठा हुआ था. एकदम बाबूजी सरीखा. बोला, "आओ, मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था, कि सहारा देकर मुझे ले जाओगी!"

'किशन को दीखता नहीं तो क्या हुआ हर रोज खुद ही तो आता-जाता है! आज मेरी ज़रूरत क्यों महसूस होने लगी!' कल्लो सोच ही रही थी कि किशन ने हाथ उसके कंधे पर रख दिया. दरवाजे तक पहुंचते-पहुंचते कल्लो ने महसूस किया कि उसके कंधे पर दबाव बढ़ता जा रहा है. चारपाई पर किशन को बिठा वह अलग होना ही चाहती थी कि किशन बोला, "बैठो कल्लो, ऐसी भी क्या जल्दी है!" उसकी सांसें कल्लो की गरदन से टकरा रही थीं. कुछ ही क्षणों बाद वह किशन की गिरफ्त में थी. फिर कल्लो ने अपने आपको ढ़ीला ही छोड़ दिया था जैसे. मन ही मन उसने तय कर लिया था कि अब वह किशन से ब्याह कर लेने को कहेगी.

कई दिनों तक तो कल्लो हिम्मत ही जुटाती रही. फिर एक दिन उसने किशन से जाकर मन की बात कह ही दी, "क्यूं न हम दोनों ब्याह कर लें!" पर किशन जैसे इस प्रस्ताव से बिल्कुल खुश नहीं हुआ, "कल्लो, मेरा तो ब्याह हो चुका था कबका. तुमसे तो मैंने वक्तकटी के लिए..."

कल्लो को काटो तो खून नहीं, 'तू भी नाग निकला रे! मुझे डस लिया और...' कल्लो चीख-चीख कर कहना चाहती थी पर आवाज़ रुंधकर रह गयी थी. आंखों की बाढ़ थी जो उसे भीतर-बाहर से भिगोये जा रही थी. फिर जाने क्या हुआ कि कल्लो तेजी से भाग निकली... अपनी झोपड़ी में आकर दरवाजा बंद कर लिया. पागलों की तरह अपने ही बाल नोचने लगी. पूरी दुनिया उसे नागों की बस्ती नजर आ रही थी. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक विस्मयकारी उपन्यास

उपन्यास की पहचान इस वैशिष्ट्य पर स्थिर होती है कि उसमें कथाकार ने अपनी नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा द्वारा एक समन्वित प्रभाव उत्पन्न करने वाली मानव-जीवन की गद्यकथा कितनी निर्दोषिता के साथ उपस्थित की है. इस कसौटी पर डॉ. भगवतीशरण मिश्र हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास--सर्जकों के बीच सुप्रतिष्ठित हो गए हैं. कम-से-कम ऐतिहासिक उपन्यास 'पहला सूरज' द्वारा उन्होंने इसी श्रेष्ठता का परिचय दिया था. जिसका अभिनव संधान है उनका सद्य:प्रकाशित पौराणिक उपन्यास 'पवनपुत्र'. यह उपन्यास न केवल इतिहासप्रभित है, न केवल वीरगाथारंजित है, न केवल साहस और ज्ञान का आगार है, अपितु नानापुराण निगमागमसम्मत भी है. रामकथा से अनुप्राणित विविध रामायण-ग्रंथों में निगदित ही नहीं, क्वचिदन्यतोपि ही नहीं-वरन् क्वचिदरुतपूर्वअपि भी है. डॉ. भगवती शरण मिश्र जैसे भ्रमर को न जाने कितनी बार कंटककुशाच्छादित वन-वीथियों के बीच रक्त-रंजित होना पड़ा है और न मालूम कितनी वाटिकाओं के कितने पुष्पों का रस ग्रहण करना पड़ा है; यह पवनपुत्र के पारायण से स्पष्ट होता है. समस्त भारतीय रामसाहित्य और देश-विदेश के हनुमान-धामों की परिक्रमा का सार इस श्रेष्ठ उपन्यास में पुंजीभूत हुआ है. यह उपन्यास डा. मिश्र के गहन अध्ययन, व्यापक अध्यवसाय एवं नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा का द्राक्षारिष्ट है.

'पवनपुत्र' का संयोजन एक आत्म-कथात्मक उपन्यास के रूप में हुआ है. समूची कथा स्वयं पवनपुत्र हनुमान कहते हैं. प्रकारांतर से यह रामकथा के उन प्रसंगों का पुनर्प्रस्तुतीकरण ही है, जहां हनुमान उपलब्ध हैं. गोस्वामी तुलसीदासकृत 'रामचरितमानस' में हनुमान की वंदना तो बालकांड में की गई है, लेकिन उनकी कथा किष्किंधाकांड से ही प्रारंभ होती है. वहां सुग्रीव ने अपने विश्वस्त सचिव हनुमान से कहा है- ''अति सभीत कह सुनु हनुमाना, पुरुष जुगल बल रूप निधाना...'' इस प्रसंग से लेकर उत्तरकांड के उस प्रसंग तक मानस में हनुमान की कथा फैली है, जहां महाकवि ने हनुमान की सेवकाई का बखान किया है-

''हनुमान सम नहिं बड़भागी, नहिं कोउ रामचरन अनुरागी.'' निश्चय ही 'रामचरितमानस' में हनुमान के जन्म परिवार, जीवन-विस्तार, नामकरण की सार्थकता आदि को स्थान नहीं मिला है. मानस के आधार पर हनुमान की कथा को डा. भगवती शरण मिश्र ने अपने इस उपन्यास में आठवें अध्याय से तेतालीसवें अध्याय तक विस्तार दिया है. इसके पूर्व पवनपुत्र के जन्म और बाल्यकाल का विवरण, भगवान शंकर के साथ बालक हनुमान का अयोध्या आगमन, श्रीराम की सेवा, गुरु विश्वामित्र के साथ श्रीराम के प्रयाण पर उन्हीं के निर्देशानुसार गंधमादन पर्वत पर माता अंजना के पास निवास, माता अंजना के आदेश से सुग्रीव के पास आगमन जैसे सारे मानसेतर रामकथाओं का सहारा लिया गया है. 'आनंद रामायण' के आधार पर डा. मिश्र ने हनुमान के जन्म की रोचक कथा उपस्थित की है. 'पवनपुत्र' में उल्लिखित है कि अयोध्या नरेश दशरथ द्वारा संपन्न पुत्रेष्ठि यज्ञ के पश्चात् एक चील सुमित्रा के हाथ से क्षीर ले उड़ी और वही क्षीरान्न पवनदेव की कृपा से अंजना के

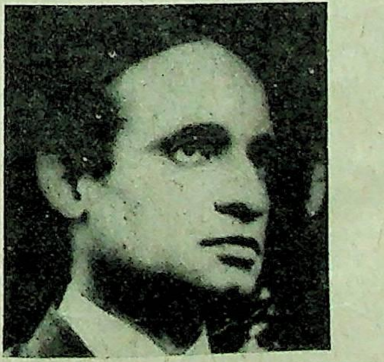

पवनपुत्र : (उपन्यास)
कृतिकार : डा. भगवतीशरण मिश्र
प्रकाशक: राजपाल एंड संस, दिल्ली-6
मूल्य : साठ रुपये, पृ. 360

हाथों में गया, जिससे हनुमान का जन्म हुआ. यह एक अल्पप्रसिद्ध कथा है. डा. मिश्र ने अपने उपन्यास में कई प्रसिद्ध प्रसंगों के लिए भी संदर्भ-संकेत दिए हैं, जबकि इस अप्रचलित जन्मकथा का कोई संदर्भ नहीं दिया गया है. 'आनंद रामायण' आदि ग्रंथों के आधार पर ही डा. मिश्र ने अहिरावण की कथा भी उपस्थित की है. हनुमानपुत्र मकरध्वज और पिता भगवान शंकर के साथ पवनपुत्र के युद्ध का प्रसंग वाल्मीकि और तुलसी की रामकथा में नहीं है. इस उपन्यास में अंकित हनुमान द्वारा सिंदूर लेपने की कथा, चुटकी बजाने की सेवा, शनिदेव को पराभूत करने की घटना, मंथरा के साथ विवाह कराने का मजाक और सीता द्वारा हनुमान को अपने हाथों से खिलाने की घटना जैसी बहुत सारी घटनाओं को जनश्रुतियों से ग्रहण किया गया है. हनुमान की इन सारी कथाओं के आधार पर डा. मिश्र ने अपने आराध्य का उदात्त चरित्र उपस्थित किया है.

अतुल बल के धाम स्वर्ण पर्वत के समान कांतियुक्त शरीर वाले दैत्यरूपी वन को ध्वस्त करने के लिए अग्निपुंज, ज्ञानियों में अग्रगण्य, समस्त गुणों के निधान, वानरों के स्वामी, भगवान श्रीराम के प्रिय भक्त पवनपुत्र श्री हनुमान का गुणकीर्तन करते हुए उपन्यासकार डा. भगवती शरण मिश्र ने अपनी कथाकारी और चरित्र-संकल्पना को सकल गुण निधान पर अधिक केंद्रित किया है. यही कारण है कि उनके पवन पुत्र सारी कलाओं, सारे कार्यों, सारी ज्ञानराशियों का संवहन करते हैं. कथाकार ने बताया है कि सबसे पहले हनुमान ने ही शिला-खंडों पर रामकथा उत्कीर्ण की थी, जिसे देखकर आदिकवि वाल्मीकि हताश हो गए थे. और अपनी व्यथा श्रीराम से कही थी. आदिकाव्य रामायण को अमरता देने के लिए श्रीराम ने हनुमान को शिलांकित रामकथा नष्ट करने का आदेश दिया. यह प्रसंग हनुमान को महाकवि सिद्ध करता है. उन्हें नाटककार बनाने के लिए ही 'हनुमन्नाटक' को हनुमान के साथ जोड़ा गया है. डा. मिश्र ने संगीतज्ञ, वैयाकरण, काव्यशास्त्री, कवि, ज्ञानी, तपस्वी, भक्त आदि तमाम भूमिकाओं में हनुमान को प्रतिष्ठित किया है. इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए उन्होंने हनुमान-कथा के सभी ज्ञात-अज्ञात प्रसंगों का आकलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है. भले ही इस क्रम में कुछ परिवर्तन भी हुआ है.

पवनपुत्र की श्रेष्ठता के मूल में केवल डा. मिश्र के आराध्य की परित्र-संकल्पना और आत्मकथा ही नहीं, अपितु हनुमान की पूजा-अर्चना के स्थलों का पर्यटन भी है. देश-विदेश के विभिन्न मंदिरों में उपलब्ध हनुमान के विविध मूर्ति रूपों की व्यापक परिक्रमा पवनपुत्र के उत्तरार्ध में की गयी है.

डा. भगवती शरण मिश्र की उपन्यास-कला ने कथा-संयोजन, चरित्र-विन्यास और संकल्प की प्रभावधर्मिता के समानांतर भाषा का अनूठा आकर्षण भी फैलाया है. उनकी कथा-भाषा कई स्थलों पर बाणभट्ट की 'कादंबरी' और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'बाणभट्ट की आत्मकथा' का स्मरण दिलाती है. जैसे—अगर किसी सर्प की मणि खो जाये, अगर किसी अकिंचन का कहीं प्राप्त पारस पत्थर विलुप्त हो जाये, अगर किसी साधक के संपूर्ण जीवन के तप पर अकस्मात् पानी फिर जाये, अगर किसी वीर का बड़ी साधना से उपलब्ध दिव्यास्त्र हाथों से निकल जाये, अगर किसी जननी का एकमात्र सुत सहसा काल-कवलित हो जाये, अगर किसी सौभाग्यवती का सौभाग्य सूर्य युवावस्था में ही अस्त हो जाये, अगर वृद्धावस्था में किसी की आजीवन संचित पूजी दस्युओं के हाथ पड़ जाये, अगर चंद्रमा को अपनी शीतलता और सूर्य को अपने ताप से रहित होना पड़े अगर सागर को बूंद-बूंद से वंचित होना पड़े, अगर अग्नि को अपनी दाहकता और अंतरिक्ष को अपनी अनन्तता से शून्य होना पड़े, जैसी स्थिति इन सबों की होती, उससे भी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति मेरी हुई. जब मैंने सुना कि मेरे आराध्य और उनके अनुज का अपहरण हो गया.
(पवनपुत्र-पृष्ठ 188-189)

.इसमें संदेह नहीं कि डा. भगवती शरण मिश्र का यह उपन्यास हिंदी रामभक्तिपरक साहित्य का नवीनतम विस्मयकारी उत्थान है. इस शोध केंद्रित कृति में डा. मिश्र ने न केवल प्राक्तन और अर्वाचीन हनुमानपरक चिंतन एवं सृजन का समन्वयन किया है, अपितु पौराणिक-सांस्कृतिक कथा लेखन का एक ऐसा कीर्तिमान स्थापित किया है— जहां तक पहुंचना आसान नहीं है. □

डा. वचनदेव कुमार

भारतीय संस्कृति और अध्यात्म के वैचारिक प्रभाव

उनहत्तर परिच्छेदों में विभक्त 360 पृष्ठों का यह ग्रंथ अथ से इति तक संपूर्णतः समुज्ज्वल है—कथ्य और कला दोनों ही धरातलों पर. 'नदी नहीं मुड़ती', 'सूरज के आने तक' तथा 'पहला सूरज' के माध्यम से डॉ. मिश्र ने यह तथ्य बहुत पूर्व ही उजागर कर दिया है कि उनके लेखन का लक्ष्य विषयप्रवण व्यग्र विश्व-जीवन की अधोमुख मनस्विता को उद्दीप्त करना है. 'पवनपुत्र' जीवन को आत्मा की दृष्टि से देखने का एक दिव्य मंत्र-ग्रंथ है. आत्मा की दृष्टि से देखने पर सभी प्राणियों में सर्वभूतांतरात्मा के दर्शन होते हैं. आत्मज्ञानी प्राणी सब में आत्मा के ही दर्शन करता है. यही मनुष्य की समदर्शिता है. शास्त्र का वचन है कि प्रतिक्षण हमको यह देखना चाहिए कि हमारा जीवन पशुओं के समान है या सत्पुरुषों के समान.

प्राचीनता और आधुनिकता की, परंपरा और प्रतिभा की, प्राच्य और पाश्चात्य की सानुपातिक अन्विति उपस्थापित कर 'पवनपुत्र' से यह प्रमाणित कर दिया है कि अपनी कल्पनाशील सृजयशीलता के सहारे पुरा-कथाओं के बीच से अत्याधुनिक अवधारणाओं को प्रक्षेपित करने की डॉ. मिश्र में अपूर्व क्षमता है. विषयगत विचार, रचनात्मक उत्कृष्टता तथा बहुकोणीय वैचारिक परिपक्वता का ऐसा अनोखा सामंजस्य संपूर्ण हिंदी-साहित्य में दुर्लभ है. धर्म, राजनीति, संस्कृति, सभ्यता और शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. मिश्र मानवीय भावनाओं और मानवतावादी दृष्टिकोण कल्याणकारी धवल पक्षों की प्रतिष्ठा करते हैं, जो उनके दृष्टिकोण पर भारतीय संस्कृति और अध्यात्म के वैचारिक प्रभाव का परिचय देते हैं.

उपन्यासकार ने दर्शन, विज्ञान, इतिहास, काव्यशास्त्र, मनोविज्ञान आदि के प्रभूत मनन-मंथन के उपरांत पहले अपने को वैचारिक स्तर पर समृद किया है और फिर अपने मौलिक चिंतन को एक अत्यंत रुचिकर कथा-भंगिमा की जिस भाषा में मुखरता प्रदान की है, वह एक आचार्य द्वारा प्रयुक्त गहन विचारों की गूढ़-संश्लिष्ट परंपरा की संवाहिका समास और समाहार शक्ति से भरपूर अत्यंत उन्नत और व्यंजक भाषा के रूप में सामने आती है. 'पवनपुत्र' की भाषिक ओजस्विता पाठकों का वशीकरण मंत्र-सा फूंक देती है. अथाह भाव-संपदा के साथ-साथ डॉ. मिश्र विलक्षण अभिव्यंजना के भी अधिपति हैं. इनके आदेशों पर भाषा नयी-नयी भंगिमाएं ग्रहण करती है. अंतस को आनंदित तथा बुद्धि को चमत्कृत करनेवाली भाषा पर इनका अडोल आधिपत्य है. 'पवनपुत्र' में शिल्पगत अभिनवता और कलात्मक कौशल का चरमोत्कर्ष उजागर हुआ है. कथोपकथन तत्व का समावेश मुख्यतः कथा-प्रवाह को अग्रेषित करने, पात्रों की व्याख्या करने तथा लेखक के उद्देश्य को स्पष्ट करने की दृष्टि से हुआ है. इनमें उपयुक्तता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, उद्देश्यपूर्णता, अनुकूलता, संबद्धता, मनोवैज्ञानिकता तथा भावात्मकता आदि गुणों के साथ-साथ शैलीगत अनेकरूपता भी विद्यमान हैं. यहां वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, भावात्मक, विचारात्मक तथा उद्बोधनात्मक शैलियों की छटाएं देखते बनती हैं. प्रस्तुत उपन्यास यशस्वी लेखक के विस्तृत-व्यापक गंभीर अध्ययन, मनन, चिंतन एवं अनुभूतियों के आलोक से भास्वर है. श्री हनुमान की जीवन-गाथा का जैसा सांगोपांग और वैशिष्टपूर्ण वैज्ञानिक अंकन इस ग्रंथ में उपलब्ध है, वह अन्यत्र दुर्लभ है. हनुमान से संबद्ध शायद ही कोई ग्रंथ हो, जिस पर डॉ. मिश्र की सतर्क एवं सूक्ष्म दृष्टि न पड़ी हो-और समस्त उपलब्ध सामग्रियों को उपन्यासकार ने इस प्रकार सजा दिया है कि वे सब-की-सब ग्रंथ का अविभेद्य अंश बन गयी हैं. भारतीय मनीषा की 'अंतर्धारा' में अवगाहन करने वाले प्रत्येक साहित्यानुरागी एवं साहित्यसाधक के अध्ययन-कक्ष में इस ग्रंथ की एक प्रति रहनी ही चाहिए.

कुणाल कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा पहेली : मई 1988 के पुरस्कार विजेता तथा सर्वशुद्ध हल.

मई 1988 की कथा पहेली के हजारों प्रतियोगियों में इस बार केवल एक प्रतियोगी ही एक अशुद्धियुक्त हल भेजने में सफल हो सका है. सर्वशुद्ध हल कोई भी प्रतियोगी नहीं भेज सका है. पांच प्रतियोगी दो-दो अशुद्धियों के साथ द्वितीय स्थान पर रहे हैं. इस बार पुरस्कार राशि का एक भाग प्रथम पुरस्कार के रूप में एक अशुद्धि युक्त हल भेजने वाले प्रतियोगी को दिया जा रहा है और दूसरा भाग पांच प्रतियोगियों में बराबर-बराबर बांटा जा रहा है.

पुरस्कार विजेताओं के नाम व पते इस प्रकार हैं :–

प्रथम पुरस्कार (सौ रुपये)

1. मोना नेमा, 77 डी., विद्याविहार, पिलानी, राजस्थान.

द्वितीय पुरस्कार (बीस रुपये प्रत्येक)

1. निशा निशांत, 139 एफ., लोको शेड, रेलवे कालोनी, किशन गंज, दिल्ली-110006.
2. नरेंद्र शर्मा, आकाशवाणी, बीकानेर.
3. गगन श्रीवास्तव, 411-ए, इंडिया ऑप्टिग, रेलवे कालोनी, ट्रांसपोर्ट नगर, कानपुर-
4. करुणा वर्मा, द्वारा बी.पी. वर्मा, बी-14 ए, सेक्टर 11 ए, खेतड़ी नगर, झुंझनू (राजस्थान).
5. राजेंद्र मिश्र, 22/73, महावीर नगर, लंगड़े की चौकी रोड, आगरा.

... और यह रहा कथा पहेली का सर्वशुद्ध हल

1. हिंदीतर भाषाओं की रचनाएं अधिक हैं.
2. 'कंकू.'
3. सच्चिदानंद राउतराय का पुरस्कार वर्ष (पृष्ठ 11 पर) 1985 प्रकाशित हो गया है जबकि यह 1986 होना चाहिए.
4. श्रीमती रमारानी जैन.
5. उड़िया भाषा के 'माटीमटाल' उपन्यास का अंश.
6. पृष्ठ 24.
7. 'बाढ़ में' कहानी का कुत्ता.
8. उर्दू, तेलुगु, मराठी, तमिल, असमिया, पंजाबी.
9. आशापूर्णा देवी ने 'प्रथमप्रतिश्रुति', 'सुवर्णलता' और 'बकुलकथा' में.
10. सभी ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेताओं के साथ पहले विजेता गो. शंकर कुरुप और अब तक के अंतिम विजेता सच्चिदानंद राउतराय सबसे ऊपर एक दूसरे के सामने हैं.

सारिका कथा पहेली

कहानियां गौर से पढ़िये और 200 रुपये के पुरस्कार जीतिए

नये स्तंभ 'सारिका कथा-पहेली' में भाग लेने के लिए आप सभी आमंत्रित हैं. प्रतियोगियों को 'सारिका' के इसी पृष्ठ पर पूर्तियां भेजनी होंगी. पूर्तियां सादे कागज पर न भेजें. इस कथा-पहेली के सभी प्रश्न 'सारिका' जून 1988 अंक पर आधारित हैं. कार्यालय में डाक द्वारा हल प्राप्त होने की अंतिम तिथि 20 जुलाई 1988 है. पुरस्कार विजेताओं के नामों की घोषणा सितंबर 1988 के अंक में दी जायेगी.

प्रतियोगियों के लिए विशेष

दूर-दराज के जिन इलाकों में पाठकों तक 'सारिका' देर से पहुंचती है वे 'सारिका कथा पहेली' में अपनी पूर्तियां 20 तारीख के बाद भी भेज सकते हैं. पूर्तियां भेजते समय यह उल्लेख अवश्य होना चाहिए कि 'सारिका' आप तक देर से पहुंची.

सारिका कथा पहेली : जून 1988

1. अपनी करनी पर पश्चाताप .... की .... कहानी में सामने आया है.
2. अजनबी होते हुए भी एक-दूसरे के प्रति विश्वास करने का प्रसंग .... कहानी में है.
3. .... रचना में एक राजनीतिक नारा बदलने का संदर्भ आया है.
4. "माध्यम ही जगत के साथ हमारे संबंध व प्रकार्य के स्तर एवं रूप को नियंत्रित करते हैं." यह कथन .... का है.
5. इस अंक की सर्वश्रेष्ठ कहानी .... है.
6. सिकंदर के पास चंद्रगुप्त ने अनमोल उपहार के रूप में विषकन्या .... को भेजा था.
7. विषकन्याओं का चुनाव .... वर्गों से किया जाता था.
8. बहुत दिनों के बाद प्रमुख पात्र के मुस्कराने की घटना .... की .... कहानी में वर्णित है.
9. .... कहानी में सर्वनाम के जरिये प्रमुख पात्र सामने आया है.
10. 'अपने नाम के विपरीत आचरण करना' .... कहानी में चरितार्थ हुआ है.

नाम.................................आयु...........................

पता ....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरक्षित जीवनयापन

विशेष परिशिष्ट

सुरक्षित रहन-सहन और आर्थिक सुरक्षा के लिए भारतीय जीवन बीमा, साधारण बीमा, अच्छे खाद्य पदार्थ और दवाएं उपलब्ध होना लाजिमी है.

इस दिशा में भारत में साधारण बीमा का व्यवसाय भारतीय साधारण बीमा निगम और उसकी सहयोगी कंपनियों—नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, कलकत्ता, न्यू इंडिया एश्योरेंस कं.लि. बंबई, ओरिएंटल इंश्योरेंस कं.लि. नई दिल्ली और यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कं.लि. मद्रास....द्वारा किया जाता है. सामाजिक सुरक्षा और विकास की इस दिशा में भारतीय जीवन बीमा निगम की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है. यही वजह है कि प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी निगम के कर्मियों को शुभकामनाएं देते हुए एक संदेश में कहते हैं'' प्रतिकूल परिस्थितियों में सुरक्षा और लोगों में मितव्ययिता की आदत को बढ़ावा देना जीवन बीमा के मूल सिद्धांत हैं. अपने ३० वें वार्षिकोत्सव के दिन जीवन बीमा अपनी विशिष्ट सेवाओं के लिए अपने अतीत का विश्लेषण कर गौरवान्वित अनुभव कर सकता है.

जीवन बीमा के लिए आवश्यक है कि यह देश के कोष संवर्धन में और भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करे. इसे चाहिए कि यह हमारे समाज के कमजोर और अभावग्रस्त वर्गों की सहायता के लिए और भी नयी और लाभप्रद योजनायें विकसित करें.

भारतीय जीवन बीमा निगम का उदय एक सितंबर १९५६ को हुआ. आज यह अपनी प्रतिबद्धताओं और विश्वास के साथ विशिष्ट सेवाएं प्रदान करता हुआ राष्ट्र के एक महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थान के रूप में प्रगति विस्तार के साथ चौथे दशक में प्रवेश कर रहा है. जन-कल्याण के लिए जीवन बीमा निगम ने अथक प्रयत्न किये हैं. निगम पूरे विश्वास के साथ दावा कर सकता है कि राष्ट्रीय-करण के बाद तमाम क्षेत्रों में इसने उल्लेखनीय प्रगति की है. यह एक संवेदनशील संस्था के रूप में उभर कर सामने आयी है.

जीवन बीमा निगक से जुड़ा लक्ष्य प्रारंभ से ही स्पष्ट था व्यक्तिगत स्तर पर हजारों रोटी कमाने वाले बीमाधारकों की अकाल मृत्यु पर उनके परिवार को या वयोवृद्ध हो जाने पर स्वयं उनको व्यक्तिगत संरक्षण प्रदान करना और राष्ट्रीय स्तर पर लोगों की बचत का संग्रहण करते हुए उसे दूसरे रचनात्मक या उत्पादक निवेशों में लगाना....

देश की आर्थिक व्यवस्था में साधारण बीमा का महत्वपूर्ण स्थान है. आर्थिक विकास में जोखिमों से सुरक्षात्मक भरपायी करने का काम साधारण बीमा व्यवसाय करता है. भारत में साधारण बीमा व्यवसाय, भारतीय साधारण बीमा निगम तथा उसकी ४ निम्नलिखित सहयोगी कंपनियों द्वारा किया जाता है.

नेशनल इंश्योरेंस कं. लि., कलकत्ता, न्यू इंडिया एश्योरेंस कं. लि. बंबई. ओरिएंटल इंश्योरेंस कं. लि. नई दिल्ली और यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कं. लि. मद्रास ये कंपनियां निम्न प्रकार के क्षेत्रों में बीमा करती है.

अग्निकांड बीमा, मैरीन इंश्योरेंस, मोटर इंश्योरेंस, मेडीक्लेम इंश्योरेंस, विदेश चिकित्सा बीमा. ग्रामीण शिल्पी, बायोगैस प्लांट, ग्रामीण कुटर उद्योगों के लिए विस्त बीमा योजना पशु बीमा योजना, फसलों का बीमा, पशु-चालित गाड़ियों का बीमा.

यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया के माध्यम से आयकर बचायें

समाज के विभिन्न हिस्सों के हितों के अनुरूप कुछ आकर्षक योजनाएं.

१. यूनिट स्कीम-१९६४ (यू.एस.-६४)

(अ) समस्त प्रवासी/अप्रवासी व्यक्ति शामिल हो सकते हैं.

(ब) विकासमान लाभांश (वर्ष १९८५-८६ के लिए १५.२५%) का वार्षिक भुगतान

(स) लाभांश के बार-बार निवेश की सुविधा

(द) बैंक लोन/आसान भुगतान के लिए धरोहर

(य) हस्तांतरणीय

२. यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान १९७१ (यू.एल. आई.पी.)

(अ) १८ से ५०½ वर्ष आयु वर्ग के प्रवासी व्यक्ति योजना में शामिल हो सकते हैं.

(ब) १०/१५ वर्ष में वार्षिक/अर्धवार्षिक समान किस्तों में देय—४,००० से ४०,००० के बीच किसी 'इनवेस्टमेंट प्लान' का चुनाव करें.

(स) वार्षिक/अर्धवार्षिक अंशदान पी.एफ/एल.आई.सी./जैसी आय में से कटाने की सुविधा.

(द) जीवन सुरक्षा.

(य) प्रतिव्यक्ति १५,००० की मुफ्त दुर्घटना सुरक्षा.

(र) अधिक लाभ (वर्ष १९८५-८६ के १२.५% लाभ)

(ल) किसी भी स्तर पर भुगतान की सुविधा.

(व) पूर्ण होने पर अधिक लाभ.

३. चिल्ड्रन गिफ्ट ग्रांट फंड १९८ (सी.जी.जी.ए.फ.)

(अ) समस्त प्रवासी/अप्रवासी व्यक्ति १५ वर्ष कम आयु के बच्चे को भेंट दे सकते हैं.

(ब) भेंट अपरिवर्तनीय है और बच्चे के साथ बढ़ती है.

(स) १२½% वार्षिक लाभांश दर से ६ वर्ष में दुगनी हो जाती है, २१ वर्ष में यह १२ गुना हो ज है.

(द) प्रत्येक पांच वर्ष में बोनस

(य) २०,००० तक की भेंट गिफ्ट-टैक्स से मुक्त है.

(र) भेंट बच्चे की आयु २१ वर्ष होने पर परिपक्व होती है. १८ वर्ष आयु होने पर निकालने क विकल्प.

४. मंथली इनकम यूनिट स्कीम विद ग्रो (एम.आई.एस.जी.)

(अ) सबके लिए पांच वर्षीय जमा योजना.

(ब) मासिक देश १२% वार्षिक लाभ जिसके लि चैक एड्वांस में भेजे जाते हैं.

(स) तीन वर्ष बाद सममूल्य पर भुगतान

(द) पूर्ण होने पर न्यूनतम २% लाभ

५. ग्रोथ इनकम यूनिट स्कीम (जी.आई.यू.एस.)

(अ) समस्त प्रवासी योजना में शामिल हो सकते हैं.

(ब) ५½ वर्ष में दुगनी से भी ज्यादा राशि.

(स) बार-बार अर्धवार्षिक लाभ प्राप्त करें जो योजनावधि में १२.५% से १४% तक बढ़ता है.

(द) परिपक्वता पर न्यूनतम २% बोनस की गारंटी

६. कैपिटल गेंस यूनिट स्कीम (सी.जी.एस.)

(अ) कैपिटल गेंस टैक्स से छूट

(ब) विकासमान लाभांश (वर्ष १९८५-८६ के लिए ८¾%) का वार्षिक भुगतान

(स) तीन वर्ष बाद भुगतान की सुविधा

सामान्य : सुरक्षा, निश्चिता, विकासमान लाभांश और आसान भुगतान के अतिरिक्त यूनिट्स से १०,०००/ रु. तक होने वाली आय पर आयकर छूट (७,०००/- यूनिट्स और अन्य उल्लिखित निवेशों पर तथा ३,०००/- यूनिट के लिए अतिरिक्त बिक्री वर्ष के दौरान सीमित अवधि के लिए खुलती है. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी जीवन सार्थक हो जाता है जब वो मां बनती है.

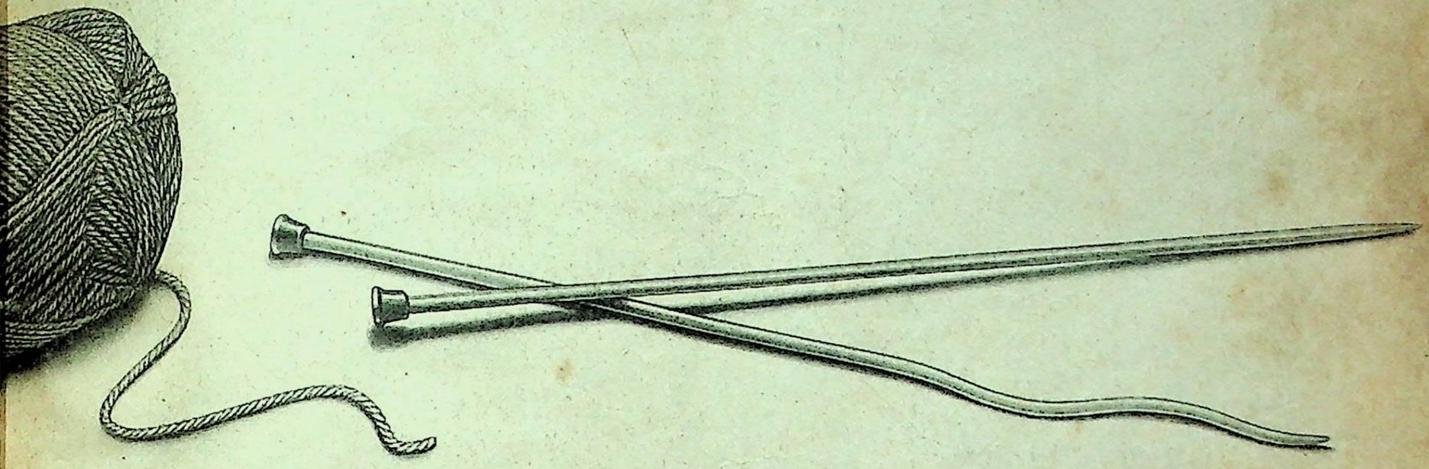

लेकिन एक स्वस्थ शिशु की मां.

'अनबॉर्न चाइल्ड वेलफेअर स्कीम' — बच्चे के जन्म से पहले ही उसकी भलाई के लिए बनाई गई यह देश में अपनी तरह की पहली योजना है और शायद विश्व भर में भी पहली. यह योजना बच्चों के कई तरह के जन्म-दोषों पर लागू होती है. गर्भधारण से ३ माह के अंदर कभी भी यह पॉलिसी ली जा सकती है.

इस पॉलिसी में चार अलग-अलग प्रीमियम-राशियां रखी गई हैं : रु. २००, रु. ५००, रु. १००० और रु. १५००. क्रमशः इनकी बीमा-राशियां हैं रु. १०,०००, रु. २५,०००, रु. ५०,००० और रु. ७५,०००.

बच्चे में जन्म के समय अगर कोई ऐसा दोष हुआ जो इलाज से ठीक हो सकता है तो न्यू इंडिया एश्योरंस, पॉलिसी धारक को इलाज के खर्च का भुगतान करेगी. लेकिन यह राशि बीमा राशि के ५०% से अधिक नहीं होगी. बच्चे में स्थायी आंशिक दोष होने पर कंपनी, बीमे की बाकी रकम का उतना भाग किसी बैंक या यूनिट ट्रस्ट में जमा कर देगी, जो कि किसी अधिकृत चिकित्सक के प्रमाण-पत्र पर आधारित होगा. और चिकित्सक का प्रमाण-पत्र इस बात पर निर्भर करेगा कि स्थायी आंशिक दोष कितना गंभीर है. स्थायी और संपूर्ण दोष की अवस्था में कंपनी, इलाज के खर्च के बाद बची बीमा-राशि की रकम, किसी बैंक या यूनिट ट्रस्ट में जमा कर देगी जिसका ब्याज पॉलिसी धारक को मिलेगा.

अधिक जानकारी के लिए
कृपया अपने नजदीक के
न्यू इंडिया एश्योरंस कार्यालय से संपर्क करें या लिखें :

अनबॉर्न चाइल्ड वेलफेअर स्कीम,
यूएनटीबी विभाग,
न्यू इंडिया एश्योरंस कंपनी लिमिटेड,
न्यू इंडिया एश्योरंस बिल्डिंग,
८७ महात्मा गांधी रोड, फोर्ट,
बम्बई ४०० ०२३.

न्यू इन्डिया एश्योरन्स

दि न्यू इन्डिया एश्योरन्स कं. लि.
THE NEW INDIA ASSURANCE CO. LTD.

जनरल इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन ऑफ़ इन्डिया की एक सहायक कंपनी.

ASP-NIA 360/88 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वादभरे लिज्जत पापड़

लिज्जत पापड़ उद्योग की सफलता का इतिहास कितना रोचक और स्पृहणीय है. यह इस छोटे से तथ्य से जाना जा सकता है कि २७ वर्ष पहले लिज्जत ने अपना प्रारंभ महज ७ महिला सदस्यों से किया था. आत्मनिर्भरता के जरिये शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा को महत्ता दिलाने का जो उपदेश कभी विनोबा भावे ने दिया था.... लिज्जत ने उसके लिए एक ठोस उदाहरण इस रूप में प्रस्तुत किया है कि यह प्रतिवर्ष ५० प्रतिशत के हिसाब से उन्नति करता चला आ रहा है. दरअसल, इस सोसाइटी को समझने के लिए 'द बेसिक कांट्स एंड ट्रेडिशंस ऑफ अवर इस्टीट्यूशन' बुकलेट को पढ़ना चाहिए. फिलहाल इसका वार्षिक टर्न ओवर करीब १६ करोड़ रुपये है. राजस्थान, कर्नाटक, पंजाब और अन्य राज्यों में भी अपनी शाखाएं खोलने के विचार के साथ-साथ यह सोसायटी सदस्य संख्या लगभग २२,००० करने पर विचार कर रही है ताकि वार्षिक टर्न ओवर करीब ५० करोड़ तक बढ़ाया जा सके.

मारुति का पौष्टिक खाद्य तेल

एक कहावत है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है. यानी जो व्यक्ति शरीर से चुस्त और दुरुस्त होगा, उसका मस्तिष्क भी उतना ही बुद्धि और विवेक से संपन्न होगा.

पहली बार मारुति ब्रांड ने विदेशी तकनीक से बिनौले का खाद्य तेल उत्पादित किया. इसे माइक्रो रिफांइड प्रक्रिया से बनाया गया है और इसकी बनाने की प्रक्रिया को अन्य खाद्य तेल उत्पादकों ने नहीं अपनाया. यह अति आधुनिक मशीनों द्वारा बनाया गया है और यह स्वच्छ वातावरण में निर्मित है जो कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है. इसके परिणाम काफी स्वास्थ्यवर्धक रहे हैं.

झंडु फार्मेसी की स्वास्थ्यवर्धक दवाएं

झंडु फार्मेस्युटिकल लिमिटेड पिछले ७५ वर्ष से भी अधिक बरसों से आयुर्वेद के विकास में जुटी हुई संस्था. आयुर्वेद की सेवा में समर्पित.

इस संस्था ने आज के आधुनिक दौर में बहुत से लोगों के दृष्टिकोण को बदला है. उनमें विश्वास जगाया है और इस देश की सदियों पुरानी परंपरा को जन-जन तक पहुंचाया है. झंडु आयुर्वेदिक दवाएं बनाने वाली कोई एक संस्था मात्र नहीं रह गयी बल्कि एक आंदोलन का प्रतीक बन चुकी है. जिसे देश और विदेश में एक सम्मान मिला है. यह महान उपलब्धि है कोई साल दो साल में नहीं मिली बल्कि तीन चौथाई सदी की कोशिशों का परिणाम है.

यूं तो हर संस्था की सफलता के पीछे कई हाथ होते हैं. लेकिन असल में झंडु की सफलता का श्रेय उसके प्रेरणा पुरुष श्री झंडु भट्टी जी को जाता है. उन्होंने इस संस्था की आधारशिला रखी और उन्हीं के नाम पर इसका नाम रखा गया झंडु. जो आगे चल कर झंडु फार्मेस्युटिकल लिमिटेड हुआ. झंडु की दवाएं और अन्य स्वास्थ्यवर्धक पदार्थ हमें भला-चंगा बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगला अंक

आंखों पर पट्टी बांधे
हाथ में तराजू लिये खड़ी दीखती
न्याय की देवी
अंधी है या गांधारी?
जिसका राजदंड भीष्म पितामह के
वंशजों के हाथ में है तो मगर
वे भी क्या भीष्म की तरह कभी-कभार
राजदंड के इस्तेमाल में कोताही करके
महाभारत की स्थितियां पैदा नहीं
कर देते?
तभी तो सुकरात, गैलीलियो और तिलक
जैसे मसीहा पुरुषों के साथ अंधेर
होता है!
कैसी है इन काले कोटधारी
हंसों की अजीब दुनिया

इस बार सारिका
आपको ले जा रही है
इन्हीं के अजीबोगरीब
संसार में कुछ ऐसे
मुकदमों की दास्तां सुनाने
जिन्होंने कानून के पंडितों
को पशोपेश में डाल दिया,
जिनके फैसले नजीर बन
गये और जिन्होंने दुनिया की
बड़ी से बड़ी हस्ती को कटघरे
में ला खड़ा किया...

साथ ही

जो सुलझ जाती है गुत्थी फिर से उलझाता हूं मैं...

न लिखने या सबसे कम सक्रिय होने के बावजूद आलोचना ही नहीं समूचे हिंदी साहित्य के केंद्र में नामवर जी पिछले तीन दशकों से बने हुए हैं...सुलझी हुई गुत्थियों को बराबर उलझाते जाने की उनकी चतुर रणनीति इसका कारण है या उनका वह व्यक्तित्व जिसे उनके गुरु आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने बड़े डीलडौल की साकार मेधा कहा था...खुद नामवरजी से बातचीत के जरिए तलब कर रहे हैं उदय प्रकाश और सुधीश पचौरी.

...त्यों-त्यों प्रगट होई उर अंतर कांच कलश जल झाई

गोविंद मिश्र के नव्यतम उपन्यास 'धीर-समीरे' का एक और रोचक प्रसंग.

और साथ में...

● प्रहसन, रहस्य-रोमांच, अपराध कथा, किस्से कचहरी के, अरेबियन नाइटस उर्फ किस्सा अलफ-लैला, रुपहली रातें, धारा के विरुद्ध, फाइल पढ़ि पढ़ि जग मुआ और सभी स्थायी स्तंभ.

सनसनीखेज दास्तानों का ऐतिहासिक दस्तावेज

हर महीने पत्रिका की कीमत पर
एक समूची किताब का भरा- पूरा संसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-प्रसिद्ध श्रृंखला

पुस्तक महल की 30 पुस्तकों का
एक अनूठा प्रोजेक्ट

■ प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री ■ प्रत्येक पुस्तक सैंकड़ो दुर्लभ चित्रों से सुसज्जित ■ सरस कथा शैली ■ फोटोटाइप सैट ■ बढ़िया कागज पर आफसैट छपाई ■ बहुरंगी आवरण ■ वाजिब दाम

मूल्य: 15/- प्रत्येक
डाकखर्च: 4/- प्रत्येक
एक साथ चार पुस्तकें मंगाने पर **डाकखर्च माफ**

इस श्रृंखला का मूल उद्देश्य एक औसत पाठक को अंतर्राष्ट्रीय जगत से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करना है।

कुल मिलाकर प्रत्येक पुस्तक अपने क्षेत्र से संबंधित सभी उल्लेखनीय पक्षों को पूर्ण रूप से उजागर करने वाला एक सचित्र **'मिनि एनसाइक्लोपीडिया'** है।

उदाहरणार्थ 'रोमांचक कारनामे' में सरकंडे की नाव में की गई 13,000 मील की समुद्री यात्रा जैसी अनेक सच्ची कथाएं हैं तो 'खोजे' में मिट्टी के तेल, पेनिसीलीन आदि खोजों के पीछे छिपे प्रयासों का रोचक विवरण है। 'अनसुलझे रहस्य' में बरमूदा ट्राइएंगल से लेकर भूत-प्रेतों तथा रक्त मिलाकर शराब पीने वाली जातियों तक के रहस्य हैं तो 'खेल और खिलाड़ी' व 'वैज्ञानिक' क्रमशः जीवनी प्रधान पुस्तकें हैं। 'विनाश-लीलाएं' में प्रकृति के प्रलयंकारी रूप का चित्रण है तो 'दुर्घटनाएं' में मानवीय भूलों से हुई मर्मांतक तबाहियों का लेखा-जोखा है। 'गुप्तचर संस्थाएं' तथा 'जासूस' में मकड़े के जालों सी फैली जासूसी संस्थाओं तथा उनमें कार्यरत जासूसों की रोमांचकारी गतिविधियां हैं तो 'प्रेरक-प्रसंग' किसी भी जहाज की तरह भटके हुए मन के लिए प्रकाश-स्तंभ है।

इस श्रृंखला में प्रकाशित पुस्तकें:

विश्व-प्रसिद्ध.... 1. खोजें 2. अनसुलझे रहस्य 3. रोमांचक कारनामे 4. युद्ध 5. 101 व्यक्तित्व 6. धर्म, मत एवं सम्प्रदाय 7. खेल एवं खिलाड़ी 8. रिकॉर्ड्स-I 9. रिकॉर्ड्स-II 10. वैज्ञानिक 11. विनाश - लीलाएं 12. दुर्घटनाएं 13. गुप्तचर संस्थाएं 14. जासूस 15. प्रेरक-प्रसंग 16. चिकित्सा-पद्धतियां 17. जासूसी-कांड।

तैयारी में/प्रैस में:-

• बैंक-डकैतियां • क्रूर हत्यारे • सभ्यताएं • खजाने • राजनैतिक हत्याएं • खोजी-यात्राएं • स्कैण्डल।

आमंत्रण:-

प्रोजक्ट में योगदान के लिए विद्वान लेखक तथा अनुवादक संपर्क साधें।

अपने निकट के बुकस्टॉल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टॉलों पर मांग करें अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता:-

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली -110006

शो रूम: 10-B नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

ब्रांच आफिस: 22/2 मिशन रोड (... राव कम्पाउंड), बंगलौर-560027

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आम जनता के हितकार्य में सदैव प्रस्तुत

महाराष्ट्र राज्य की स्थापना के आज २८ वर्ष पूरे हो चुके हैं. ''आम जनता का आधार'' जैसे शिवछत्रपति के लोकोत्तर राजनीति के आदर्श को आधार मान कर महाराष्ट्र सरकार ने गत २८ वर्षों में गरीबों के कल्याण की नीति को मूलाधार माना और अनेक जनहित योजनाएं तैयार करके उन्हें क्रियान्वित किया.

प्रधानमंत्री के नये २० सूत्री कार्यक्रम, ''गरीब व दुर्बल घटकों का जीवन-आधार'' को क्रियान्वित करने में महाराष्ट्र राज्य सदैव आगे की पंक्ति में रहा है.

किसान, खेतमजदूर, श्रमिक, ग्रामीण जनता, आदिवासी, अनुसूचित जाति-जमाति व विमुक्त जाति के लोग, झोपड़पट्टीवासी और शहरी जनता जैसे तमाम सामाजिक घटकों के हितों की प्रयत्नपूर्वक रक्षा करके महाराष्ट्र सरकार ने छत्रपति शिवाजी महाराज के आज्ञापत्र में घोषित ''प्रजेच्या हितकार्यीं सादर असावे'' आदर्श को मूर्तरूप दिया है.

आज महाराष्ट्र दिवस के इस मंगल अवसर पर जनसाधारण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुन: दोहराते हुए महाराष्ट्र सरकार आम जनता को इस बात का यकीन दिलाती है कि ''हमारी सरकार'' आम जनता के हितकार्य में सदैव प्रस्तुत है.

डीजीआइपीआर
महाराष्ट्र परिचय केंद्र
नयी दिल्ली-११०००१
द्वारा वितरित—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar